विषय-सूची

Modern Hindi Vyakaran Series.

माडर्न हिन्दी-व्याकरण

प्रथम पुस्तक

(नवीन शिक्षण-शैली के आधार पर)

वर्नाक्युलर और ऐंग्लोवर्नाक्युलर स्कूलों की

कक्षा ३ व ४ के लड़कों और लड़कियों

के लिये

घमंडीलाल शर्मा, बी० ए०, एल० टी०, विशारद

जे० ए० एस० हाई स्कूल, खुर्जा

गुप्ता ब्रादर्स एण्ड को०

खुर्जा (यू० पी०)

[मूल्य ३ आने

अभ्यास १

नीचे लिखे हुए (वाक्यों) में संज्ञाओं के नीचे रेखा खींचो :—

१—गोपाल और उसका लड़का घर पर है।
२—दूध में मिठास और चिकनाई है।
३—लोहा और कोयला इङ्गलिस्तान में बहुत होता है।
४—गुरुजी बीमारी में भेड़ का दूध पीते हैं।
५—उस नगर से लोग कितने तोते और मैना लाये थे ?

अभ्यास २

छूटी हुई जगहों में संज्ञाएँ लिखकर वाक्यों को पूरा कर दो :—

१—यह — क्या कहता है।
२—उस सेना की — हुई।
३—इस — में कम — हैं।
४—हम — के साथ — जाएँगे।
५—से — बड़ा होता है।
६—— की आज्ञा मानो।

अभ्यास ३

अपनी पुस्तक में से दस संज्ञाएँ छाँटो और बताओ कि हर एक संज्ञा किसका नाम है।

हरा तोता। लाल गुलाब। मोटा आदमी।
ऊँचा पहाड़। बुरी स्त्री। मीठा रस।
चौड़ा महल। बूढ़ा नौकर। खट्टा नीबू।

अभ्यास १

नीचे के वाक्यों में विशेषणों के नीचे रेखा खींचो :—

१—ठंढी हवा मनुष्य को नीरोग बनाती है।
२—मोटा आदमी पतले लड़के को मारता है।
३—बीमार बालक को हलका और गरम जल दो।
४—नयी और पुरानी बातों में बड़ा अन्तर है।
५—छोटे बालक बूढ़े आदमियों में खेलते हैं।

अभ्यास २

रीता, ठंढा, पका, पैनी, धनी—इन विशेषणों में से छाँट छाँट कर छूटी हुई जगहों में लिखो और वाक्यों को ठीक कर दो :—

१—गरमी में——पानी अच्छा लगता है।
२—यह तलवार बड़ी है।
३—उस लोटे में दूध नहीं है, वह——है।
४— — आम मीठा होता है।
५— — आदमियों के पास धन होता है।

४—मेरे बदले उसे बुला ला।

५—किसके संग पढ़ते हो?

अभ्यास २

छूटे हुए स्थानों में सम्बन्ध बोधक लगाकर ठीक कर दोः—

१—दीपक के——अँधेरा रहता है।

२—पक्षी पेड़ के——और मनुष्य उसके——रहते हैं।

३—राजा के——और—— सेना थी।

४———हवा के कोई नहीं जी सकता।

५—पुस्तकों——खेलने मत जाओ।

अभ्यास ३

मोटे लिखे हुए शब्द सम्बन्ध-बोधक हैं या क्रियाविशेषण? हर वाक्य के सामने लिख दोः—

१—पृथिवी के **नीचे** क्या है? २—वह **नीचे** गया।

३—**बाहर** बैठो। ४—नगर के **बाहर** नदी है।

५—दोनों **साथ** रहो। ६—आँधी के **साथ** पानी आया।

किसी २ सम्बन्ध बोधक के साथ संज्ञा की विभक्ति का, के, की आदि आती हैं, जैसे, 'राम के पास' में 'पास' के साथ 'के' और किसी किसी के साथ यह विभक्ति नहीं आती, जैसे, 'बालकों समेत, में विभक्ति 'समेत' के साथ नहीं है।

—०—

भूमिका

यह पुस्तक 'माडर्न व्याकरणमाला' की प्रथम पुस्तक है जिसमे व्याकरण को सरस और सरल बनाने का सफल प्रयत्न किया गया है। इसकी दो विशेषताएँ हैं —

(१) प्रत्येक पाठ में महीन टाइप में ऐसे व्यजक सङ्केतों का समावेश है जो नवीन परिपाटी द्वारा अध्यापन मे सहायक हो।

(२) शैली ऐसी है कि बालकों को निष्क्रिय श्रोतामात्र न बने रहकर निरन्तर कुछ न कुछ विचारना या करना ही पड़े, और पाठ में से उनकी रुचि न हटने पाए।

प्रत्येक पाठ तीन भागो मे विभक्त है :—

(अ) में प्रश्नोत्तर द्वारा बालको से ही उदाहरण निकलवा कर अभीष्ट विषय का ज्ञान कराना।

(आ) मे इस सिद्धान्त या विषय पर विशेष ध्यान दिलाना और परिभाषा का नाम निकलवाना।

(इ) में प्रतिपादित वस्तु का दृढीकरण और अभ्यास।

सर्वथा नूतन पद्धति के अनुकूल लिखो जाने के कारण विषय-विवेचन में सर्वत्र व्यवहार-दृष्टि से काम लिया गया है जिससे वर्नाक्युलर और ऐंग्लो वर्नाक्युलर स्कूलो की कक्षा ३,४ के लड़कों और लड़कियो के लिये वस्तुत. उपयोगी सिद्ध हो। प्रत्येक विषय का उदाहरणो द्वारा अति सरल भाषा में प्रतिपादन किया है। व्याकरण को रचना से पृथक् नही किया, प्रत्युत दोनों की अभिन्नता और एकता पर विशेष ध्यान दिया है। अनेक अभ्यास-प्रश्न दिये गये हैं जिससे अलिखित रचना और शुद्ध प्रयोग मे बालकों की प्रवृत्ति हो। सम्पूर्ण पुस्तक 'सुगम से कठिन' क्रम के अनुसार है।

में से हर एक को बोलने के लिये किसी दूसरे अक्षर की आवश्यकता है या नहीं। है, अ इत्यादि स्वरों को। ये बिना स्वर की सहायता के नहीं बोले जा सकते। इत्यादि]

याद रखो—

१—(जो अक्षर, बिना किसी दूसरे अक्षर की सहायता के बोले जा सकते हैं उनको स्वर कहते हैं।)

२—(जो अक्षर स्वर की सहायता से बोले जाते हैं उनको व्यंजन कहते हैं।)

स्वर ११ होते हैं और व्यंजन ३३ होते हैं; सब ऊपर (१) में लिखे हैं।

अब पहले चार स्वरों को फिर पढ़ो। फिर दूसरे सात स्वरों को पढ़ो। पहले चारों में से हर एक को बोलने में जितना समय लगता है उससे दूना समय सातों में से हर एक को बोलने में लगता है।

(जिन स्वरों को बोलने में कम समय लगता है उनको ह्रस्व स्वर कहते हैं।)

(जिन स्वरों को बोलने में ह्रस्वों से दूना समय लगता है उनको दीर्घ स्वर कहते हैं।)

माडर्न हिन्दी व्याकरण

प्रथम पुस्तक

पाठ १—वाक्य (Sentence) सेन्टेन्स

(अ) [तुम्हारा क्या नाम है ? मेरा नाम रमेश है । वह क्या कर रहा है ? वह पुस्तक पढ़ रहा है । राम कहां रहता है ? राम एक गांव में रहता है । तुम खेलने को कै बजे जाओगे ? मैं खेलने को पांच बजे जाऊँगा । इत्यादि]

तुम्हारे बताये हुए शब्दों के सब समूह नीचे लिखे हैं; उनको पढ़ोः—

१—मेरा नाम रमेश है ।	नाम रमेश ।
२—वह पुस्तक पढ़ रहा है ।	पुस्तक पढ़ रहा ।
३—राम एक गाँव में रहता है ।	एक गाँव में ।
४—मैं खेलने को पाँच बजे जाऊँगा ।	खेलने को पाँच बजे ।

[बायीं ओर लिखा हुआ शब्दों का पहला समूह क्या बताता है ? मेरा नाम । हां, इस समूह से पूरा अर्थ समझ में आता है । क्या सीधी ओर लिखा हुआ पहला समूह भी पूरी बात कह कर नाम बताता है ? नहीं, इस समूह से पूरा अर्थ नहीं निकलता । इत्यादि]

(आ) ऊपर पहली पाँति में लिखी हुई संज्ञाओं में से हरएक एक प्रकार की सब वस्तुओं का नाम है; और दूसरी पाँति की संज्ञाओं में से हरएक किसी एक ही वस्तु का नाम है।

याद रखो—

१—जो संज्ञा एक प्रकार की हर वस्तु का नाम होती है उसे जातिवाचक संज्ञा कहते हैं।

२—जो संज्ञा किसी एक ही वस्तु का नाम होती है उसे व्यक्तिवाचक संज्ञा कहते हैं।

(इ) नीचे के वाक्यों में मोटे छपे हुए सब शब्द व्यक्तिवाचक और महीन छपे हुए सब जातिवाचक संज्ञाएँ हैं; उनको ध्यान से देखो:—

१—**हिमालय** सब पहाड़ों में ऊँचा है।

२—**कलकत्ता** और **कानपुर हिन्दुस्तान** के बड़े नगर हैं।

३—**चम्पा** और **शीला** इस लड़के की बहन हैं।

४—साँप ने बिल में से निकल कर मेरे मित्र को काटा?

५—यह घर **ताजमहल** से मिलता है।

(आ) बाँयीं ओर जो शब्दों के चार समूह लिखे हैं उनमें से हर एक से पूरा अर्थ समझ में आता है।

याद रखो—

शब्दों के जिस समूह से पूरा अर्थ समझ में आता है उसे वाक्य कहते हैं।

(इ) नीचे लिखे हुए शब्दों के समूह सब वाक्य हैं; उनको ध्यान से देखो:—

१–तुम पढ़ते हो।

२–वह सो गया है।

३–श्याम कल पाठशाला नहीं गया था।

४–तुम इस कुर्सी पर क्यों नहीं बैठते हो ?

५–यह कबूतर उड़ जाएगा।

अभ्यास १

नीचे लिखे हुए शब्द-समूहों में जो वाक्य हैं, उनके नीचे रेखा खींचो :–

१—उसने चूहा पकड़ा। २–मेरी माता बीमार।

३—राम और श्याम। ४–पिताजी आ गये।

५—हम सब हँसेंगे। ६—मै उठा।

७—वे सब लड़कियाँ आज। ८—पाठशाला खुलती।

९—आप उस नगर को जाएँगे। १०—गाड़ी छूट गयी।

१—तुम हम से उस की बात मत कहो।

(पुरुषवाचक)

२—यह उनसे अच्छा है। (निश्चयवाचक)

३—कोई किसी को क्यों सताए; सब को ईश्वर ने बनाया है। (अनिश्चयवाचक)

४—तुमसे कौन पूछता है कि तुमने क्या किया ?

(प्रश्नवाचक)

५—जिस ने तुमको बुलाया है उसी के पास जाओ। (सम्बन्धवाचक)

अभ्यास १

सर्वनाम पाँच प्रकार के होते हैं; उनको अच्छी तरह से याद करो:—

१—पुरुषवाचक सर्वनाम। २—निश्चयवाचक सर्वनाम।
३—अनिश्चयवाचक सर्वनाम। ४—प्रश्नवाचक सर्वनाम।
५—सम्बन्धवाचक सर्वनाम।

अभ्यास २

सर्वनाम छाँटो और उनके भेद बताओ:—

१—तुमने मेरे भाई को क्या दिया था ?
२—आप सब को बुरा कहते हैं।
३—हम तो यह जानते हैं कि जो सोता है सो खोता है।

अभ्यास २

नीचे के शब्द-समूहों में कुछ अपनी ओर से मिलाकर हर एक को वाक्य बना दो :—

१—वह एक —— है। २—तुम कहाँ —— ?
३—साँप ने —— काटा। ४—नीचे ——
५—हमने उनको —— ६—— ——और—— पढ़ रहे हैं।

अभ्यास ३

नीचे दो कोष्ठों में कहीं के कहीं कुछ शब्द लिखे हैं, दोनों में से एक एक लेकर ऐसा मेल मिलाकर लिखो कि वे मिल कर वाक्य बन जाएँ :—

हमारा कुत्ता	उस पेड़ पर थी।
वह बालक	भोजन नहीं करूँगा।
मैं	खा गयी थी।
उनकी एक पुस्तक	किसी को नहीं काटता।
वह चिड़िया	बड़ी देर से खेल रहा है।

पाठ २—संज्ञा (Noun)

(अ) [दो लड़कों के नाम लो। दो जानवरों के नाम बताओ। अपने कमरे की दो वस्तुओं के नाम लो। दो जगहों के नाम बताओ। इत्यादि]

२—गुरुजी ने संकेत से सबको बुलाया।
३—घर से दूर नदी के तट पर उसकी दुकान है।
४—माता तुमको मिठाई लाती है।
५—भाई! नाक से सूँघो।

अभ्यास २

माता, बालक, कवि, वह, तुम—के रूप सब कारकों में और दोनों वचनों में लिखो।

पाठ २—क्रिया के काल (Tenses of Verbs)

(अ) [तुम क्या करते हो? मैं लिखता हूँ। क्या तुमने कल भी लिखा था? मैंने लिखा था। अगले सोमवार को कौन लिखेगा? मैं लिखूँगा। इत्यादि]

तुम्हारे बोले हुए वाक्य नीचे लिखे हैं; उनको पढ़ो:—

१—मैं लिखता हूँ। २—मैंने लिखा। ३—मैं लिखूँगा।

[पहले वाक्य में क्रिया बताओ—लिखता हूँ। लिखने का काम कब होता है अब या अब से पहले? अब, इसी समय। दूसरे वाक्य में लिखने का काम अब हो रहा है या इस समय से पहले बीते हुए समय में हुआ? इस समय से पहले बीते हुए समय में हुआ। तीसरे वाक्य में लिखने का काम अब हो रहा है या बीते हुए समय में हुआ या आगे आने वाले समय में होगा? आगे आने वाले समय में होगा। इत्यादि]

तुम्हारे बताये हुए सब नाम नीचे लिखे हैं; उनको पढ़ो:-

राम, सोहन। हाथी, गाय।

कुर्सी, चौकी। कमरा, दिल्ली।

[बताओ पहला शब्द किसका नाम है? एक लड़के का। तीसरा शब्द किसका नाम है? एक जानवर का। इत्यादि]

(आ) ऊपर मोटे लिखे हुए शब्दों में से हर एक किसी आदमी, जानवर, वस्तु या जगह का नाम है।

याद रखो :-

जो शब्द किसी आदमी, जानवर, वस्तु या जगह का नाम होता है उसे संज्ञा कहते हैं।

(इ) नीचे लिखे हुए वाक्यों में जो शब्द मोटे छपे हैं वे सब संज्ञाएँ हैं; उनको ध्यान से देखो:-

१-मेरा भाई खेत पर है

२-उसकी दवात में स्याही नहीं है।

३-आम और अंगूर मीठे हैं।

४-पिताजी मेरे लिये पुस्तक और पेन्सिल लाएँगे।

५-अकबर ने दिल्ली में बहुत दिन तक राज किया।

१३—सुलतान नासिरुद्दीन

ईसा की तेरहवी शताब्दी मे दिल्ली मे नासिरुद्दीन नाम का एक सुलतान राज्य करता था। वह बड़ा ही दयालु तथा न्याय-परायण था। नासिरुद्दीन सुलतान अल्तमश का पौत्र था। यो तो मुसल्मान बादशाहो मे अकबर भी बड़ा दयालु तथा गुणग्राही था, परन्तु विद्यानुराग, न्याय-परायणता, और कर्तव्य-निष्ठा मे नासिरुद्दीन प्राय सभी से बढ़कर था।

नासिरुद्दीन के लड़कपन मे उसका एक चाचा दिल्ली का सुलतान था। वह बडा ही निष्ठुर और विलासी था। वह रात-दिन अपने भोग-विलास मे मग्न रहता था, प्रजा के सुख-दुख की ओर उसका तनिक भी ध्यान न था। इससे, प्रजा उससे बहुत रुष्ट थी। कुछ दिनो के बाद उसे सन्देह हुआ कि कही प्रजा की सहायता से नासिरुद्दीन मुझे सिंहासन से हटा न दे, इस भय से उसने उसे तथा उसकी पत्नी को कारागार मे डाल दिया।

नासिरुद्दीन को पढ़ने-लिखने से बड़ा प्रेम था। वह सदा अच्छी अच्छी पुस्तके पढता रहता था। इससे कारागार मे उसे तनिक भी कष्ट नही मालूम पड़ता था। क़ुरान की नकल करके वह जो प्रतियॉ तैयार करता था उन्ही के मूल्य से उसका तथा उसकी स्त्री का निर्वाह होता था। उन दिनो मे प्रेस तो थे ही नही, केवल लिखी पुस्तको का ही प्रचार

(४)

गुजरात के बादशाह को नागौर पर डेरा डाले दो महीने से अधिक बीत गये। तोपें पास न होने के कारण गढ़ जीतने के लिए जब उसके सब प्रयत्न व्यर्थ हुए तब बादशाह ने गुजरात से पुर्तगाली तोपें मँगाईं। उनके आने पर किले के हाथ आने मे सन्देह ही क्या था? पर कहावत है कि—"नर-चेती नहि होत है प्रभुचेती तत्काल"। किला हाथ नहीं आया। मुसलमानों को दुर्दशा के साथ गुजरात लौट जाना पड़ा।

रुद्रसिंह और दिलीपसिंह मे बड़ी शत्रुता थी। क्या वीर रुद्रसिंह दिलीपसिंह के अपमान-पूर्ण वचन भूल सकता था? कभी नहीं।

परन्तु नहीं, उसे वे वचन भुलाने ही पड़े। एक स्त्री विपद् मे फसी है, वह निस्सहाय है। उसने एक वीर से अपना रक्षक बनने की प्रार्थना की है, और फिर राखी भेज कर अपना भाई भी बना लिया है। शिव! शिव!! इस पवित्र बंधन को कौन तोड सकता है? यदि कोई भी स्त्री अपनी रक्षा के लिए किसी सच्चे सामन्त के पास राखी भेजे तो फिर वह कैसे निराश हो सकती है? रुद्रसिंह ने सामन्तो और वीरता के नियमों का उल्लङ्घन नही किया। उन्होंने, प्राण ही क्यों न चले जायँ, पन्ना की सहायता करने की प्रतिज्ञा की।

रुद्रसिंह के पास कुल पाँच सहस्र योद्धा थे। प्रायः सभी सवार थे। उस समय पैदल सेना बहुत लाभदायक और

प्रोनाऊन

पाठ ३—सर्वनाम (Pronoun)

(अ) [गोपाल कहा है ? वह यहा है । उस कोने में कौन लड़का बैठता है ? मैं बैठता हूं । कौन से मास्टर तुमको व्याकरण पढ़ाते हैं ? आप व्याकरण पढ़ाते हैं । क्या तुम्हारी माता के पास पुस्तकें हैं ? उनके पास पुस्तकें हैं । इत्यादि]

तुम्हारी बतायी हुई बातें नीचे लिखी हैं; उनको पढ़ो:—

१—**वह** यहाँ है। २—**मैं** बैठता हूँ।

३—**आप** पढाते हैं ४—**उनके** पास पुस्तकें हैं।

[पहले वाक्य में शब्द 'वह' किसके स्थान पर आया है ? 'गोपाल' के स्थान पर । 'गोपाल' शब्द क्या है ? सज्ञा कहो । इस संज्ञा के स्थान पर कौन सा शब्द आया है ? वह । इत्यादि]

(आ) ऊपर के वाक्यों में मोटा लिखा हुआ हर एक शब्द किसी सज्ञा के स्थान पर आया है ?

याद रखो—

जो शब्द किसी संज्ञा के स्थान पर आता है उसे सर्वनाम कहते हैं।

(इ) नीचे के वाक्यों में जो शब्द मोटे छपे हैं वे सब सर्वनाम हैं; उनको ध्यान से देखो:—

१—**मैं तुम** को भेजूँगा। २—**वह उनके** साथ था।

परन्तु भाग्यवश रुद्रसिंह की टुकड़ी घाटी के ऊपर थी। इससे उसे जीतने में कोई विघ्न न पड़ा। इसी तरह बड़ी अप्रतिष्ठा और दुर्दशा के साथ गुजराती सेना नागौर को पीठ दिखाती हुई भागी। रुद्रसिंह की वीरता और चतुरता ने नागौर को बचा लिया।

(५)

आज नागौर में बड़ा उत्सव हो रहा है। शहनाई, नगाड़े, शङ्ख इत्यादि आनन्द के वाजे वज रहे हैं। नगर में कीर्तन हो रहा है। आज नागौर का पुनर्जन्म हुआ है।

इसी उत्सव और आनन्द के बीच रुद्रसिंह अपने कट्टर योद्धाओं के आगे-आगे राजमहल की ओर आ रहे हैं। उनके तेजस्वी चेहरे से शूरता, वीरता, पराक्रम और उमङ्ग टपक रहे हैं।

उनकी आँखें एक ओर टिकी हुई हैं। उनके दोनो ओर जो लोग जुहार करने को खड़े हुए हैं, उनको उन्हे खबर भी नहीं। एक बार उन्होंने एक मोहिनी मूर्त्ति राजमहल की खिड़की में देखी थी। आज भी उनका ध्यान उसी की ओर लगा हुआ है। धीरे-धीरे यह सामरिक जुलूस उसी खिड़की के नीचे पहुँचा। पहले की-सी एक झलक फिर दिखाई दी। परन्तु, अब की बार की झलक में बड़ा अन्तर था। जिसे रुद्रसिंह देख रहे थे उसके मुखमण्डल पर निराशा, उदासी, हार्दिक वेदना के काले-काले बादल छा रहे थे। यह पन्ना थी। रुद्रसिंह इसे

३—हम आप से मिले थे। ४—यह मेरा है।
५—तू मुझको मत मार। ६—वे तुम्हारे पास थे।

अभ्यास १

सर्वनाम छाँटो और बताओ कि हर एक सर्वनाम किस संज्ञा के स्थान पर आया है ?

१—राम का नौकर बूढ़ा है तो भी वह उसके साथ दौड़ता है।
२—गुरूजी की कुर्सी कहाँ है, उसे उनके लिये लाओ।
३—लड़का बलवान् है, वह व्यायाम करता है।
४—बालक माता से कहते हैं कि हम तुम को ले चलेंगे।
५—रमेश ने कहा मैं आप ही आऊँगा।

अभ्यास २

सर्वनामों के नीचे रेखा खींचो:—

१—मैंने उनको पढ़ाया। २—उसको मेरे पास बुला दो।
३—आप उनको अपने साथ रखे
४—कमला इसे अपना मानती है।
५—अर्जुन ने शत्रु से कहा मैं तुम को मार दूगा।

अभ्यास ३

छूटी हुई जगहों में सर्वनाम लिखो:—

१—क्या——— लाऊँ ? २— ——पास हो गया।
३—— — ——के पास रहे। ४— ———कहाँ हैं ?
५—लड़के—को और - को प्यार करते हैं।

दान देकर लोक-हित सर्वस्व को,
दुःख दीनो का सदा हरता रहे ॥८॥

प्रश्न

१—पाषाण ने रत्न से क्या पूछा ?

२—रत्न ने क्या उत्तर दिया ?

३—इस कविता से तुम्हें क्या शिक्षा मिलती है ?

२३—कृत्रिम सूर्य्य

मनुष्य के स्वास्थ्य के लिए सूर्य्य-प्रकाश की परमावश्यकता है। अनेक विशेषज्ञों का कहना है कि जो मनुष्य धूप में अधिक रहता है उस पर सर्दी-गर्मी का बहुत कम प्रभाव पड़ता है। हमारे लिए यह सौभाग्य की बात है कि हमारे देश मे सूर्य्य के स्वच्छ और तेज प्रकाश की कमी नहीं है। प्रतिदिन कुछ न कुछ धूप हमारे शरीर मे लग ही जाती है। और हम चाहे तो यह अवसर हमको सदैव प्राप्त है कि प्रतिदिन नियमित रूप से धूप-स्नान करके हम अपना स्वास्थ्य ठीक रक्खे। पर हमे आवश्यकता के हिसाब से सदैव धूप मिल जाती है, इसलिए हमे उसके लिए कभी चिन्ता नही करनी पड़ी और न हमने कभी यही सोचा कि जहाँ धूप न हो वहाँ वह कैसे पैदा की जाय। अमरीका आदि देशो मे जहाँ बड़ी ऊँची और घनी बस्तियाँ होती हैं और जहाँ लोग

अडजेक्टीव

पाठ ४—विशेषण (Adjective)

(अ) [तुम कैसा लड़का बनना चाहते हो ? अच्छा लड़का । जाड़े में कैसा कपड़ा पहनते हैं ? गरम कपड़ा । बीमार आदमी कैसा हो जाता है ? दुबला । लड़ाई से कौन नहीं भागता ? वीर सिपाही । इत्यादि]

तुम्हारी बतायी हुई बातें नीचे लिखी हैं; उनको पढ़ो:—

१—**अच्छा** लड़का । २—**गरम** कपड़ा ।

३—**दुबला** आदमी । ४—**वीर** सिपाही ।

[पहले समूह में कैसा लड़का कहा है ? अच्छा । 'अच्छा' शब्द लड़के की क्या बात प्रकट करता है ? एक गुण । 'लड़का, शब्द क्या है ? संज्ञा । 'लड़का' संज्ञा का गुण बताने वाला शब्द कौन सा है ? अच्छा । कपड़ा संज्ञा का गुण प्रकट करने वाला शब्द कौन सा है ? गरम । इत्यादि]

(आ) ऊपर के समूहों में मोटे लिखे हुए शब्द संज्ञाओं का गुण प्रकट करते हैं ।

याद रखो—

जो शब्द किसी संज्ञा का गुण बताता है उसे विशेषण कहते हैं ।

विशेषण जिस संज्ञा का गुण बताता है उसे विशेष्य कहते हैं ।

(इ) नीचे लिखे हुए शब्द-समूहों में जो शब्द मोटे छपे हैं वे सब विशेषण हैं; उनको ध्यान से देखो:—

कारक	
सम्बन्ध	आपका
अधिकरण	आपमें, पर

निज-अर्थक 'आप'

कर्त्ता	आप
कर्म	आपको
करण	अपने से
सम्प्रदान	अपने लिये
अपादान	अपने से
सम्बन्ध	अपना, अपनी, अपने
अधिकरण	अपने में, पर

'सब' के रूप

एकवचन में नहीं होते।

कर्त्ता	सब, सबने
कर्म	सबको
करण	सबसे
सम्प्रदान	सबके लिये, सबको
अपादान	सबसे
सम्बन्ध	सबका
अधिकरण	सबमें, सब पर

सर्वनाम 'सब' में प्रावल्य सूचक अव्यय 'ही' लगाकर 'सभी' शब्द बनता है। इसके रूप नीचे दिये जाते हैं:—

कर्त्ता	सभी, सभी ने
कर्म	सभी को
करण	सभी से

अभ्यास ३

नीचे लिखी हुई संज्ञाओं के साथ विशेषण लगाओ :—

हाथी, हवा, घोड़ा, टोपी, कलकत्ता, तिपाई, दूध, आग ।

अभ्यास ४

नीचे लिखे हुए विशेषणों के साथ विशेष्य लगाओ :—

पहला, सुन्दर, टेढ़ी, भद्दा, काना, नीली, झूठा, बुरी ।

पाठ ५—क्रिया (Verb)

(अ) [राम क्या करता है? राम पढ़ता है। तुम अब क्या करोगे? मैं अब घर जाऊँगा। तुम्हारे पिताजी कहाँ रहते हैं? पिताजी दिल्ली में रहते हैं। उसे किसने बुलाया था? उसे माता ने बुलाया था। इत्यादि]

तुम्हारी कही हुई बातें नीचे लिखी हैं; उनको पढ़ो :—

१—राम पढ़ता है। ३—पिताजी दिल्ली में रहते हैं।
२—मैं घर जाऊँगा। ४—उसे माता ने बुलाया था।

[पहले वाक्य में राम क्या काम करता है ? पढ़ता है। पढ़ने का काम प्रगट करने के लिये कौन सा शब्द प्रयुक्त हुआ है ? पढ़ता है। इत्यादि]

(आ) ऊपर के वाक्यों में मोटे लिखे हुए शब्द किसी काम का होना या करना प्रगट करते हैं।

याद रखो—

जो शब्द किसी काम का होना या करना बताता है उसे क्रिया कहते हैं।

(इ) नीचे के वाक्यों में मोटे छपे हुए शब्द सब क्रियाएँ हैं; उनको ध्यान से देखो :—

१—वह **सोता है**।	२—हम **हँसते हैं**।
३—राम **गया**।	४—श्याम ने चूहा **पकड़ा**।
५—हम **जाएँगे**।	६—वहाँ मत **रहो**।

अभ्यास १

नीचे के वाक्यों में क्रियाओं के नीचे रेखा खींचो :—

१—मक्खी उड़ती है।	२—बालक सो रहा है।
३—उसकी टोपी गिर पड़ी।	४—किसको पुकारते हो ?
५—कहाँ बसोगे ?	६—यहाँ मत दौड़ो।

अभ्यास २

उठा, बेच डाली, कूद पड़ी, पीती हैं, था – इन क्रियाओं में से छांट छांट कर छूटी जगहों में भरो :—

१—मछली जाल मे से पानी में ———

२ – जल्दी —नही तो देर हो जायगी।

३ – उसके साथ कौन ——?

४ – चिड़ियाँ पानी –

५ – उसने अपनी गाय —

पाठ ६—क्रियाविशेषण (Adverb)

(अ) [वह कब आएगा ? वह कल आएगा। पेड़ कहाँ है ? वहा है। मैं कैसे लिखता हूँ ? धीरे। क्या तुम रात को यहा रहोगे ? मैं यहा नहीं रहूंगा। इत्यादि]

तुम्हारी बतायी हुई बातें नीचे लिखी हैं; उनको पढ़ो :—

१—वह कल आएगा। २—पेड़ वहाँ है।

३—आप धीरे लिखते हैं। ४—मैं यहाँ नहीं रहूँगा।

[पहले वाक्य में आने का काम कब होगा ? कल। दूसरे वाक्य में पेड़ का स्थान कहा है ? वहाँ। तीसरे वाक्य में 'धीरे' शब्द क्या बताता

है ? कि काम कैसे होता है। चौथे वाक्य से 'नहीं' शब्द क्या बताता है ? काम का न होना। इत्यादि]

(आ) ऊपर के वाक्यों में मोटे लिखे हुए शब्द काम का कब होना, कहाँ होना, कैसे होना या न होना बताते हैं।

याद रखो—

[जो शब्द काम का कब होना, कहाँ होना, कैसे होना, क्यों होना या न होना आदि बताता है उसे क्रिया विशेषण कहते हैं।]

(इ) नीचे के वाक्यों में जो शब्द मोटे छपे हैं वे सब क्रियाविशेषण हैं; उनको ध्यान से देखो:—

१—वह परसों गया था।

२—आकाश ऊपर है।

३—इधर उधर क्यों फिरते हो ?

४—तुम क्यों आये हो ?

५—वह चुपचाप चला गया।

६—डाकू नहीं मानेगा।

अभ्यास १

नीचे के वाक्यों में क्रियाविशेषणों के नीचे रेखा खींचो:—

१—वह पुस्तक नहीं माँगता।
२—ऊँट कैसा दौड़ता है?
३—जल्दी लिखो, गाड़ी न मिलेगी।
४—तुरन्त उठो और झट वहाँ उसके पास जाओ।
५—यह गाय दूध सवेरे नही देती।

अभ्यास २

भली भांति, प्रतिदिन, क्यों, बहुत, नीचे—इन क्रियाविशेषणों में से छांट छांट कर छूटी हुई जगहों में लिखो:—

१—हम टहलते हैं। २—मैं — नहीं आऊंगा।
३—वह मुझको—जानता है। ४—वे ——नही पढते?
५—यह बालक आज—सोया है।

पाठ ७—संयोजक (Conjunction)

(अ) [यहाँ कौन कौन बैठे हैं? राम और हरि बैठे हैं। इसने क्या कहा? इसने कहा कि वे बैठे हैं। मैं पढता हूं या टहलता हू? आप पढते हैं और टहलते हैं।]

-तुम्हारी बतायी हुई बातें नीचे लिखी हैं; उनको पढ़ो:-

१—राम **और** हरि बैठे हैं।

२—उसने कहा **कि** वे बैठे हैं।

३—मैं पढ़ता हूँ **या** टहलता हूँ?

४—आप पढ़ते हैं **और** टहलते हैं।

[पहले वाक्यों में (राम, हरि) इन दोनों शब्दों को कौन सा शब्द जोड़ता है? और। दूसरे वाक्य में 'कि' क्या काम करता है? 'उसने कहा' वाक्य को 'वे बैठे हैं' वाक्य से जोड़ता है। इत्यादि]

(आ) ऊपर के वाक्यों में मोटे लिखे हुये शब्द दो शब्दों या वाक्यों को जोड़ते हैं।

याद रखो:—

जो शब्द शब्दों या वाक्यों को आपस में जोड़ता है उसे संयोजक कहते हैं।

(इ) नीचे लिखे हुये वाक्यों में जो शब्द मोटे छपे हैं वे सब संयोजक हैं, उनको ध्यान से देखो:—

१—मैं कहता हूँ **कि** वह अच्छा आदमी है।

२—**जब तक** मैं आऊँ तुम यहीं रहना।

३—वह गया था **परन्तु** लौट आया।

४—मत जाओ **क्योंकि** धूप कड़ी है।

५—तुम लिखोगे **या** वह?

अभ्यास १

नीचे के वाक्यों में संयोजकों के नीचे रेखा खींचो:—

१—जाओ और उसे भेज देना।
२—यदि कहो तो मैं आ जाऊँ।
३—उससे कहो कि काम हो गया।
४—खेलोगे या पढ़ोगे ?
५—वह आया पर आपसे न मिल सका।

अभ्यास २

छूटी हुई जगहों में संयोजक लिखो :—

१—वह बूढ़ा है—— है बलवान। २—पुस्तक लोगे——टोपी ?
३—उससे कहो – आ जाय। ४—कोट—अँगरखा में क्या भेद है ?
५—इस भिखारी को रोटी——दो पैसे दे दो।

अभ्यास ३

जहाँ आवश्यकता हो वहाँ संयोजक लगाकर वाक्यों को फिर लिख दो :—

१—लड़का लड़की कहाँ हैं ?
२—गाय घास खाती है कुत्ता नहीं खाता।
३—मुझे सरदी नहीं लगती मेरे पास कम्बल है।
४—उसने पूछा क्या चाहता है ?
५—तुम कह दोगे वह आ जायगा।

प्रपोजिशन

पाठ ८—सम्बन्ध-बोधक (Preposition)

(अ) [राम के पास कौन है ? राम के पास सोहन है। वह लड़का कहाँ खड़ा है ? वह लड़का कमरे के बाहर खड़ा है। मोहन तुम्हारे आगे है या पीछे ? वह मेरे पीछे है। तुम जूतों समेत खेलते हो या उनके बिना ? मैं जूतों समेत खेलता हूं। इत्यादि]

तुम्हारी बतायी हुई बातें नीचे लिखी हैं; उनको पढ़ो:—

१—राम के पास सोहन है।

२—लड़का कमरे के बाहर खड़ा है।

३—वह मेरे पीछे है।

४—मैं जूतों समेत खेलता हूं।

[पहले वाक्य में सोहन का राम के साथ किस बात का सम्बन्ध है ? निकट होने का। इस सम्बन्ध को बताने के लिये कौन सा शब्द प्रयुक्त हुआ है ? पास। 'पास' का प्रयोग किस संज्ञा के साथ हुआ है ? 'राम' के। दूसरे वाक्य में खड़ा होने का काम कमरे के किस ओर है ? बाहर की ओर। 'खड़ा है' क्रिया का सम्बन्ध किस संज्ञा से है ? 'कमरे' से। इस सम्बन्ध को कौन सा शब्द बताता है ? बाहर। 'बाहर' का प्रयोग किस संज्ञा के साथ हुआ है ? 'कमरा' संज्ञा के। इत्यादि]

(आ) ऊपर के वाक्यों में मोटे लिखे हुए शब्द संज्ञा या सर्वनाम के साथ आये हुए हैं और उनका सम्बन्ध वाक्य के दूसरे शब्दों के साथ बताते हैं।

याद रखो—

(जो शब्द सम्बन्ध बताता है उसे सम्बन्ध-बोधक कहते हैं।)

सम्बन्ध-बोधक केवल संज्ञा या सर्वनाम ही के साथ आता है, अकेला आने से वह सम्बन्ध-बोधक नहीं रहता, क्रियाविशेषण हो जाता है, जैसे, कमरे के **बाहर** है (सम्बन्ध-बोधक) **बाहर** है (क्रियाविशेषण)।

(ङ) नीचे लिखे हुए वाक्यों में जो शब्द मोटे छपे हैं; वे सब सम्बन्ध-बोधक हैं; उनको ध्यान से देखो:—

१—नगर के भीतर कितने मन्दिर हैं ?

२ छत के ऊपर घर बना है।

३—बालकों समेत यहां मत रहो।

४—मुझसे आगे मत चलो।

५—गुण रहित आदमी किस काम का।

अभ्यास १

सम्बन्ध-बोधकों के नीचे रेखा खींचो:—

१—भोजन के साथ जल न पियो।

२—कुएँ के भीतर पानी है।

३—उसके दायें बांयें खड़े हो जाओ।

पाठ ६—विस्मयादि-बोधक (Interjection)

अन्तरोक्तमन

(अ) नीचे लिखे हुए वाक्यों को पढ़ो:—

१—ओहो! कैसा उत्तम रूप बनाया है।

२—अरे! तुम कहाँ।

३—आहा! क्या सुन्दर बादल हैं।

४—हाय रे! यह क्या हुआ।

[पहले वाक्य में ओहो! से क्या प्रकट होता है? प्रशंसा। दूसरे वाक्य में अरे! से क्या प्रकट होता है? अचम्भा। तीसरे वाक्य में आहा! क्या प्रकट करता है? आनन्द। चौथे वाक्य में हाय रे! क्या प्रगट करता है? शोक। इत्यादि]

(आ) ऊपर के वाक्यों में मोटे लिखे हुए शब्द प्रशंसा, आनन्द, अचम्भा, शोक आदि प्रगट करते हैं।

याद रखो—

जो शब्द प्रशंसा, आनन्द, अचम्भा, शोक, घृणा आदि बताता है उसे विस्मयादि-बोधक कहते हैं।

विस्मयादि-बोधक का चिह्न (!) है।

(३) नीचे के वाक्यों में मोटे छपे हुए शब्द सब विस्मयादि-बोधक हैं; उनको ध्यान से देखो:—

१—छिः ! कैसा मैला घर है।

२—बाप रे ! मैं तो लुट गया।

३—हाय हाय ! यह क्या हुआ।

४—आहा ! घड़ी पा गयी।

५—वाहवाह ! अच्छा गाया।

६—अरेरे ! मैं क्या करूँ।

७—ओहो ! तुम भी आ गये।

८—शाबाश ! छोटे लड़के।

९—धिक् ! स्त्री पर हाथ चलाते हो।

१०—धन्य हो ! आप बड़े हैं।

अभ्यास १

ऊपर के दस वाक्यों में जो विस्मयादि-बोधक हैं वे क्या प्रगट करते हैं? प्रत्येक वाक्य के सामने लिख दो।

पाठ १०—शब्द-भेद (Parts of Speech)

अब तुम पढ़ चुके कि शब्द आठ प्रकार के होते हैं जो नीचे लिखे हैं:-

१—संज्ञा　　२—सर्वनाम　　३—विशेषण
४—क्रिया　　५—क्रियाविशेषण　　६—संयोजक
७—सम्बन्ध-बोधक　　८—विस्मयादि-बोधक

यही आठ शब्द-भेद हैं।

अभ्यास १

नीचे के वाक्यों में जो शब्द मोटे छपे हैं उनका भेद वाक्य के सामने लिख दो:—

१—उसको **भीतर** बुलाओ।
२—वह घर के **भीतर** है।
३—वह **कहाँ** जाएगा?
४—तुमने उसके **साथ** क्या पढ़ा?
५—तुम्हारी बात **कठोर** है।
६—उसका सुन्दर **रूप** है।
७—इसको **मत** छोड़ो।
८—**उनका** नाम क्या है?
९—**कठिनाई** में न डरो।
१०—विद्यार्थी कहाँ है?

११—या तो पढ़ो या सो जाओ।

१२—ठाली क्यों बैठे हो?

१३—मैं तो उनके साथ जाऊँगा।

१४—तुम इसका भेद नहीं जानते।

अभ्यास २

जहाँ आवश्यकता हो वहाँ संज्ञा की जगह सर्वनाम बदल कर वाक्यों को फिर लिखोः—

कन्याओं ने अच्छा गाया। सब लोग कन्याओं का गीत सुनते रहे। कन्याएँ छोटी छोटी थीं। इसलिये कन्याओं को देखने के लिये लोग दूर दूर से आये। कन्याओं के साथ कन्याओं की माता भी थी। कन्याएँ माता के पास ही कमरे में बैठी थीं। कमरा लम्बा था और कमरे की छत बड़ी सुन्दर थी।

अभ्यास ३

नीचे एक समूह में विशेषण और दूसरे समूह में उनके विशेष्य बे-मेल कहीं के कहीं लिखे हैं; हर विशेषण के मेल का ठीक विशेष्य छाँट कर दोनों को साथ साथ अलग लिख दोः—

विशेषण—पैनी, कठिन, फुर्तीला, उदास, सड़ा, मीठा, पक्की, जली, नरम, काली।

विशेष्य—स्त्री, सड़क, तलवार, प्रश्न, गाय, पान, लड़का, दूध, रोटी, कपड़ा।

अभ्यास (४)

दो कोष्ठ बनाओ; एक में तो नीचे लिखे हुए वाक्यों का हर एक शब्द लिखो और दूसरे में हर शब्द के सामने उसका भेद लिखो इस प्रकारः—
"राम आता है"

शब्द	शब्द-भेद
राम	संज्ञा
आता है	क्रिया

१—वीर सिपाही मर गया। २—ऊँची टोपी मत पहनो।
३—बड़ों के साथ न झगड़ो। ४—उसका काम कब होगा?

पाठ ११—शब्द (Word)

(अ) [राम कहाँ गया। राम घर गया। कौन आया? मैं आया। इत्यादि]

जो कुछ तुमने कहा है वह नीचे लिखा है; उसको पढ़ोः—

१—राम[1] घर[2] गया[3]। २—मैं[1] आया[2]।

[पहला वाक्य अलग अलग कितने टुकड़ों से मिलकर बना है? तीन टुकड़ों से - राम, घर, गया। हर एक टुकड़े का अलग अलग अर्थ

बताओ–'राम' एक लड़के का नाम है, 'घर' एक जगह को कहते हैं, 'गया' बताता है कि राम ने क्या काम किया। हर टुकड़े का अलग अलग कुछ अर्थ है। इत्यादि]

(आ) ऊपर का पहला वाक्य तीन टुकड़ों से मिलकर बना है और दूसरा दो टुकड़ों से, हर एक टुकड़े का कुछ अर्थ है।

याद रखो—

वाक्य के हर एक टुकड़े को जिसका कुछ अर्थ हो शब्द कहते हैं।

पाठ १२—अक्षर या वर्ण (Letter)

(अ) [पाँच शब्द बोलो–राम, घर, गया, मैं, आया। इत्यादि]

तुम्हारे बताये हुए शब्द नीचे लिखे हैं; उनको पढ़ो:—

राम घर गया मैं आया

['राम' के टुकड़े करके मुंह से बोलो। बताओ कौनसी दो ध्वनियाँ मुँह से निकलती हैं? रा–म। अब 'रा' के अलग अलग टुकड़े करके बोलो। बताओ कौनसी दो ध्वनियाँ मुंह से निकलती हैं? र—आ।

इसी प्रकार 'म' में म्—अ दो ध्वनियां निकलती हैं। अब इन चारों (र्, आ, म्, अ) में से किसी ध्वनि के टुकड़े नहीं हो सकते। इत्यादि]

(आ) ऊपर का हर एक शब्द दो या अधिक टुकड़ों से मिलकर बना है। और इस हर एक टुकड़े को बोलने में दो दो ध्वनियाँ निकलती हैं। इनमें से किसी ध्वनि के टुकड़े नहीं हो सकते।

याद रखो—

(उस छोटी से छोटी ध्वनि को जिसके टुकड़े न हो सकें अक्षर या वर्ण कहते हैं)

एक या अधिक अक्षरों के मिलने से शब्द बनता है।

(इ) नीचे लिखे हुए सब अक्षर या वर्ण हैं; उनको ध्यान से देखो:—

१—अ, इ, उ, ऋ।

२—आ, ई, ऊ, ए, ऐ, ओ, औ।

३—क, ख, ग, घ, ङ। च, छ, ज, झ, ञ। ट, ठ, ड, ढ, ण। त, थ, द, ध, न। प, फ, ब भ, म। य, र, ल, व, श, ष, स, ह।

कोई कोई क़, ख़, ग़, ज़, ड़, ढ़ फ़, को भी अलग वर्ण मान लेते हैं।

(ई) में पहली दो पंक्तियों में लिखे हुए ११ अक्षरों को पढ़ो। बताओ उनमें से हर एक को बोलने के लिये किसी दूसरे अक्षर की सहायता लेते हो या नहीं। नहीं, ये सब बिना किसी दूसरे वर्ण की सहायता के बोले जा सकते हैं। अब शेष सब अक्षरों को पढ़ो। बताओ इन

ह्रस्व स्वर चार हैं और दीर्घ स्वर सात हैं, सब ऊपर (इ) में लिखे हैं ?

स्वर के ऊपर एक बिन्दी (ं) को अनुस्वार ; स्वर के ऊपर आधी बिन्दी (ँ) को अर्द्धचन्द्र या चन्द्रबिन्दु और स्वर के पीछे दो बिन्दियों (ः) को विसर्ग कहते हैं ।

पाठ १३—संज्ञा के भेद (Kind of Nouns)

(अ) किसी बे जान वस्तु का नाम लो—नदी, नगर । किसी जानदार वस्तु का नाम लो–लड़का, स्त्री । किसी विशेष नदी और नगर का नाम लो–गंगा, दिल्ली । किसी विशेष लड़का और स्त्री का नाम लो—गोपाल, कलावती । इत्यादि)

तुम्हारी बतायी हुई संज्ञाएं नीचे लिखी हैं; उनको पढ़ोः—

नदी नगर लड़का स्त्री

गंगा दिल्ली गोपाल कलावती

['नदी' किसी एक का ही नाम है या संसार भर की चाहे जिस नदी का ? संसार भर की सब नदियों को नदी कहते हैं । इत्यादि । 'गंगा' संसार भर की सब नदियों को कहते हैं या केवल एक उस नदी को जो हिन्दुस्तान में बहती है ? केवल हिन्दुस्तान में बहने वाली एक नदी को । इत्यादि]

पाठ १४—भाववाचक संज्ञा (Abstract Noun)

(अ) [भले आदमी में क्या गुण होता है ? भलाई । सिपाही का काम क्या है ? लड़ाई । किस दशा में आदमी को भूख नहीं लगती ? बीमारी में । भलाई, लड़ाई, बीमारी कैसे शब्द हैं ? संज्ञाएँ । इत्यादि]

तुम्हारी बतायी हुई संज्ञाएँ नीचे लिखी हैं; उनको पढ़ो:—

भलाई लड़ाई बीमारी

[भलाई किस वस्तु का नाम है ? भले आदमी के गुण का । लड़ाई और बीमारी किन वस्तुओं के नाम हैं ? सिपाही के काम और रोगी की दशा के । इत्यादि]

(आ) ऊपर लिखी हुई तीनों संज्ञाएँ किसी के गुण, काम या दशा के नाम हैं ।

याद रखो—

जो संज्ञा किसी के गुण, काम या दशा का नाम होती है उसे भाववाचक संज्ञा कहते हैं ।

(इ) नीचे लिखे हुए वाक्यों में जो शब्द मोटे छपे हैं वे सब भाववाचक संज्ञाएँ हैं; उनको ध्यान से देखो:—

१—क्रोध में दया नहीं रहती ।

२—चिन्ता और व्याकुलता साथ रहती है ।

३—बुढ़ापा और लड़कपन समान हैं।

४—मेरी चाल और उसकी दौड़ बराबर हैं।

५—दूध में मिठास और चिकनाई दोनों हैं।

अभ्यास १

संज्ञा तीन प्रकार की होती हैं; उनको अच्छी तरह से याद करो :—

१—जातिवाचक संज्ञा। २—व्यक्तिवाचक संज्ञा।
३—भाववाचक संज्ञा।

अभ्यास २

संज्ञाएँ छाँटो और उनका भेद बताओ:—

१—गंगाजी के जल से प्यास नहीं जाती, पर रोग हटता है।
२—मेरा लड़का लाल गुलाब और पीला गेंदा लगा।
३—दूध से घी निकलता है और पेड़े बनते हैं।
४—रामायण में सीता और राम के चरित्र से बड़ी शिक्षा मिलती है।
५—भेड़ चराते समय गड़रिये ने भेड़िया देखा।

अभ्यास ३

छूटी हुई जगह में उचित संज्ञा लिखो और वाक्य के सामने अपनी लगायी हुई संज्ञा का भेद भी लिख दो:—

१—अच्छे लड़के—— से बचते हैं। २—सच्चा ~कभी —— नहीं बोलता। ३—इस गन्ने में ——कम है। ४—मेरे —— का नाम——है। ५—जहाँ जमुना नदी————में मिलती है वहाँ——एक बड़ा नगर है।

पाठ १५—सर्वनाम के भेद
(Kind of pronouns)

(अ) [मैं, हम इत्यादि सर्वनामों को कौन अपने लिये प्रयोग करता है ? बोलने या बात करने वाला। बोलने या बात करने वाले को उत्तमपुरुष कहते हैं । तू तुम इत्यादि सर्वनामों का प्रयोग किसके लिये होता है ? जिससे बात करते हैं। जिससे बात करते हैं उसे मध्यमपुरुष कहते हैं । वह, वे इत्यादि सर्वनाम किसके लिये आते हैं ? जिसके विषय में बात करते हैं। जिसके विषय मे बात करते हैं उसे अन्यपुरुष कहते हैं। इस लेखनी से तुम लिखोगे या यह ? यह लिखेगा। किसने इसकी बात सुनी है ? किसी ने नहीं। कौन हँसता है ? कोई नहीं। मैने क्या कहा ? कौन हंसता है ? कौन पिटता है ? जो काम नही करता है वह पिटता है। इत्यादि]

तुम्हारे बोले हुए वाक्य नीचे लिखे हैं; उनको पढ़ोः –

१—मैं तुम से पूछता हूँ कि वह कहाँ है।

२—यह लिखेगा। ३—किसी ने नहीं सुनी।

४—कौन हँसता है ? ५—जो काम नहीं करता है वह पिटता है।

[पहले वाक्य में तीनों पुरुषों के लिये कौन से सर्वनाम आये है ? मै, तुम, वह। दूसरे वाक्य में लिखने वाला किसी निश्चित आदमी की ओर संकेत करता है या नहीं ? निश्चित आदमी की ओर संकेत करता है। तीसरे वाक्य में 'किसी' किसी निश्चित (या एक) आदमी की ओर संकेत करता है या नहीं ? नही । चौथे वाक्य में 'कौन' सर्वनाम क्या

काम करता है ? प्रश्न पूछता है । पाँचवें वाक्य में 'वह' सर्वनाम के साथ किस दूसरे सर्वनाम का सम्बन्ध है ? 'जो' का । इत्यादि]

(आ) ऊपर पहले वाक्य में मोटे लिखे हुए सर्वनाम तीनों पुरुषों (उत्तम, मध्यम, अन्य) के लिये आये हैं। दूसरे वाक्य का सर्वनाम 'यह' एक निश्चित मनुष्य की ओर संकेत करता है। तीसरे वाक्य में सर्वनाम 'किसी' निश्चित मनुष्य की ओर संकेत नहीं करता। चौथे वाक्य में सर्वनाम 'कौन' प्रश्न पूछता है। पाँचवें में सर्वनाम 'कौन' प्रश्न पूछता है पाँचवें में सर्वनाम 'जो' एक दूसरे सर्वनाम से सम्बन्ध रखता है।

याद रखो—

१—बोलने वाले या बात करने वाले को उत्तमपुरुष, जिससे बात करते हैं उसे मध्यमपुरुष और जिसके विषय में बात करते हैं उसे अन्यपुरुष कहते हैं।

२—उत्तमपुरुष, मध्यमपुरुष, या अन्यपुरुष को बताने वाला सर्वनाम पुरुषवाचक सर्वनाम कहलाता है।

३--जो सर्वनाम किसी निश्चित वस्तु या मनुष्य की ओर संकेत करता है उसे निश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं।

निश्चयवाचक सर्वनाम यदि संज्ञा के साथ उसके पहले आता है तो विशेषण हो जाता है। यह आया है (सर्वनाम), यह मनुष्य (विशेषण)।

४--जो सर्वनाम किसी निश्चित वस्तु या मनुष्य का निश्चय नहीं कराता उसे अनिश्चयवाचक सर्वनाम कहते हैं।

५-जो सर्वनाम प्रश्न पूछता है उसे प्रश्नवाचक सर्वनाम कहते हैं।

६--जो सर्वनाम किसी दूसरे से सम्बन्ध रखता है उसे सम्बन्धवाचक सर्वनाम कहते हैं।

(३) नीचे के वाक्यों में जो शब्द मोटे छपे हैं वे सब पाँचों प्रकार के सर्वनाम हैं; उनको ध्यान से देखो :—

४—किसको बुलाऊँ मेरी तो कोई नहीं सुनता।

५—कभी यह बोलता है कभी वह; मैं किसकी सुनूँ। दूसरे भी तो बैठे हैं।

अभ्यास ३

मोटे छपे हुए सर्वनामों में उत्तमपुरुष का मध्यम, मध्यम का अन्य और अन्यपुरुष का उत्तमपुरुष बदलकर वाक्यों को फिर लिखो:—

१—हम उससे कहेंगे कि तू बीमार है।

२—वह अपनी पुस्तक मुझे देगी।

३—तुम हमारे पास न आया करो।

४—उसने सब टोपियां तुमको दी।

५—उन्होंने तेरा कोट बिगाड़ दिया।

अभ्यास ४

छूटी जगह में कोष्ठ में लिखे अनुसार सर्वनाम लगाकर वाक्यों को ठीक कर दो:—

१—यहां— रहता है? (प्रश्नवाचक)

२————से क्यों लड़ते हैं? (निश्चयवाचक)

३—. —— का घर —— ने नहीं देखा। (पुरुषवाचक, अनिश्चयवाचक)

४ . —— का हाथी——का नाम। (सम्बन्धवाचक, अनिश्चयवाचक)

५———आया —ने लूटा। (सम्बन्धवाचक, अनिश्चयवाचक)

पाठ १६--विशेषण के भेद
(Kinds of Adjectives)

(अ) [तुम कैसी टोपी पहनते हो ? काली टोपी पहनता हूं। यहां कितने लड़के हैं ? यहां बीस लड़के हैं। इस दवात में कितनी स्याही है ? इसमें थोड़ी स्याही है। यह पुस्तक किसकी है ? यह पुस्तक मेरी है। इत्यादि]

तुम्हारी बतायी हुई बातें नीचे लिखी हैं; उनको पढ़ोः—

१—काली टोपी पहनता हूँ।

२—यहां बीस लड़के हैं।

३—दवात में थोड़ी स्याही है।

४—यह पुस्तक मेरी है।

[पहले वाक्य में विशेषण बताओ—काली। यह विशेषण टोपी की क्या बात बताता है ? टोपी का रंग। हां, रंग टोपी का एक गुण है। दूसरे वाक्य में विशेषण 'बीस' क्या बताता है ? लड़कों की संख्या। तीसरे में विशेषण 'थोड़ी' क्या बताता है ? स्याही का नाप या तोल। चौथे वाक्य में विशेषण 'यह' क्या काम करता है ? पुस्तक की ओर संकेत करता है। इत्यादि]

(आ) ऊपर के वाक्यों में मोटे लिखे हुए विशेषण गुण, संख्या, नाप, तोल बताते या संकेत करते हैं।

याद रखो—

१-जो विशेषण किसी वस्तु का गुण

बताता है उसे गुणवाचक विशेषण कहते हैं।

२—जो विशेषण गिनती बताता है उसे संख्यावाचक विशेषण कहते हैं।

३—जो विशेषण किसी वस्तु की नाप या तोल बताता है उसे परिमाणवाचक विशेषण कहते हैं। (परिमाण = तोल)

४—जो विशेषण किसी वस्तु की ओर संकेत करता है उसे संकेतवाचक विशेषण कहते हैं।

(इ) नीचे लिखे हुए वाक्यों में मोटे छपे हुए शब्द चारों प्रकार के विशेषण हैं; उनको ध्यान से देखो:—

१—बूढ़े आदमी की दुबली गाय बड़े खेत में हरी घास खाती है। (गुणवाचक विशेषण)

२—एक बिल्ली दस बीस चूहों को मार खायेगी। (संख्यावाचक विशेषण)

३—बहुत खाना खाने से थोड़ा दूध पीना अच्छा होता है। (परिमाणवाचक विशेषण)

४—ये लड़के उन सिपाहियों से उस दिन लड़े थे। (संकेतवाचक विशेषण)

अभ्यास १

विशेषण चार प्रकार के होते हैं; उनको अच्छी तरह से याद करोः—

१—गुणवाचक विशेषण। २—संख्यावाचक विशेषण।
३—परिमाणवाचक विशेषण। ४—संकेतवाचक विशेषण।

अभ्यास २

विशेषण छाँटो और हरएक का भेद बताओः—

१—यह कुत्ता उस ऊँचे पहाड़ पर गया।
२—चार काम तुम एक घंटे में कर सकते हो।
३—लम्बा आदमी छोटे आदमी से अच्छा होता है।
४—नीले आकाश में चमकीले तारे बड़ी शोभा देते हैं।
५—थोड़ा सा भजन तुमको प्रतिदिन करना चाहिए।

अभ्यास ३

छूटी जगह में वह विशेषण लिखो जिसका नाम वाक्य के सामने लिखा हैः—

१— ——पेड़ —— लकड़ी देगा। (संकेतवाचक, परिमाणवाचक)
२— ——आदमी — घंटे तक रहेंगे। (संख्यावाचक)

३—— बुढ़िया – घरों की स्वामिनी हैं। (संकेतवाचक)
४— ——आदमी——और——आदमियों की समान सेवा करते हैं। (गुणवाचक)
५—बालक ————————पत्नी को लेगा। (संख्यावाचक, गुणवाचक).

अभ्यास ४

नीचे (अ) समूह विशेषणों का है और (आ) समूह उनके विशेष्यों का है। दोनों में से एक एक छाँट कर ठीक मेल मिला कर इस प्रकार लिख दोः-

काला कुत्ता

(अ) गोल, ये, दस, जवान, काला, ऊँचा, नेक, नुकीली, कम, इतनी।
(आ) कुत्ता, पानी, महल, टोपी, आदमी, पुस्तकें, स्त्री, चोटी, लड़के, सरदी।

पाठ १७—क्रिया के भेद (1Knds of Verbs)

(अ) [तुम क्या करते हो ? मैं बैठता हूं। राम क्या करता है ? राम आता है। रमेश क्या करता है ? वह पुस्तक लेता है। इत्यादि]

तुम्हारे बताये हुए वाक्य नीचे लिखे हैं; उनको पढ़ोः -

१–मैं बैठता हूं।
२-राम आता है।

३—रमेश ——— लेता है। ५—रमेश पुस्तक लेता है।
४—माली —— काटता है। ६—माली घास काटता है।

[पहले वाक्य में क्रिया बताओ—बैठता हूँ। क्या इस वाक्य का अर्थ पूरा है या अर्थ पूरा करने के लिये क्रिया में कोई और शब्द जोड़ने की आवश्यकता है ? अर्थ पूरा है, और शब्द जोड़ने की आवश्यकता नहीं है। इत्यादि। तीसरे वाक्य में बताओ—लेता है। क्या इस वाक्य का अर्थ पूरा है या अर्थ पूरा करने के लिये क्रिया में कोई और शब्द जोड़ने की आवश्यकता है ? अर्थ पूरा नहीं है; और शब्द जोड़ने की आवश्यकता है जिससे हम यह जान लें कि क्या लेता है ? अब पाँचवाँ वाक्य देखो। तीसरे वाक्य से इसमें क्या विशेषता है ? तीसरे की क्रिया के साथ एक और शब्द जोड़कर यह बनाया है। अर्थ पूरा करने के लिये 'लेता है' क्रिया के साथ कौन सा शब्द जोड़ा गया है ? पुस्तक। इत्यादि]

(आ) पहले और दूसरे वाक्य से पूरा अर्थ निकलता है; उनकी क्रियाओं के साथ कोई और शब्द जोड़ने की आवश्यकता नहीं है।

तीसरे और चौथे वाक्य से पूरा अर्थ नहीं निकलता; उनकी क्रियाओं के साथ अर्थ पूरा करने के लिये दो शब्द (पुस्तक, घास) जोड़ने पड़े हैं।

याद रखो—

१—जिस क्रिया के अर्थ को पूरा करने के लिये और कोई शब्द नहीं जोड़ना पड़ता उसे अकर्मक क्रिया कहते हैं।

२—जिस क्रिया के अर्थ को पूरा करने के लिये और शब्द जोड़ने पड़ते हैं उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं ।

१—सकर्मक क्रिया के अर्थ को पूरा करने के लिये जो शब्द जोड़ा जाता है वह उस क्रिया का 'कर्म' कहलाता है ।

२—कुछ क्रियाएँ अकर्मक और सकर्मक दोनों ही प्रकार से प्रयोग में आती हैं; जैसे, वह इस समय पढ़ रहा है (अकर्मक) । वह पुस्तक पढ़ रहा है (सकर्मक) ।

(६) नीचे के वाक्यों में मोटे छपे हुए शब्द अकर्मक क्रियाएँ और महीन छपे हुए सकर्मक क्रियाएँ हैं; उनको ध्यान से देखो:—

१—तुम कहाँ रहते हो । ६—वह चित्र देखता है ।
२—लड़की हँसती है । ७—तुम खिड़की खोलते हो ।
३—बालक सो रहे हैं । ८—मैंने काम कर लिया ।
४—हम गये थे । ९—पिताजी पत्र लिखेंगे ।
५—वह आएगा । १०—शीला फल खा रही है ।

अभ्यास १

क्रियाएँ दो प्रकार की होती हैं; उनको अच्छी तरह से याद करोः—

१—अकर्मक क्रिया। २—सकर्मक क्रिया।

अभ्यास २

क्रियाओं को छाँटो और उनका भेद बताओः—

१—अच्छे लड़के अच्छी पुस्तकें पढ़ते हैं।

२—सूर्य पूर्व में निकलता है।

३—पत्थर मत फेंको।

४—उसे वहाँ भेज दो।

५—जल्दी चलो।

६—मैं सबको जानता हूँ।

७—वह लड़का दौड़ा।

८—उनके पास मत ठहरो।

९—किसको बुलाते हो?

१०—वह पानी में कूद पड़ा।

अभ्यास ३

ऊपर के दस वाक्यों में 'कर्म' छाँटो।

अभ्यास ४

नीचे के वाक्यों में जहाँ आवश्यकता हो वहाँ कर्म जोड़ोः—

१—मैंने देखा। २—वह मर गया है।

३—लड़की ने सुनायी। ४—वह बुलाता है।
५—लड़की पी रही है। ६—श्याम हराता है।
७—कौन मारता है ? ८—क्या सोचते हो ?

पाठ १८—वचन (Number)

(अ) [इस जगह कितने लड़के बैठते हैं ? एक लड़का बैठता है। उस कमरे में कौन बैठते हैं ? लड़के बैठते हैं। तुम क्या कर रहे हो ? मैं लिख रहा हूँ। तुम सब क्या कर रहे हो ? हम लिख रहे हैं। यह लड़का छोटा है या बड़ा ? छोटा लड़का है। ये छोटे लड़के हैं या बड़े ? ये छोटे लड़के हैं। इत्यादि]

१—लड़का बैठता है। २—लड़के बैठते हैं।
३—मैं लिख रहा हूँ। ४—हम लिख रहे हैं।
५—यह छोटा लड़का है। ६—ये छोटे लड़के हैं।

[पहले वाक्य में संज्ञा बताओ—लड़का। यह संज्ञा एक को बताती है या बहुत को ? एक को। दूसरे वाक्य में 'लड़के' संज्ञा कितने लड़के बताती है ? बहुत लड़के। तीसरे वाक्य में सर्वनाम बताओ—मैं। यह सर्वनाम एक के लिये आया है या बहुत के लिये ? एक के लिये। चौथे वाक्य में सर्वनाम 'हम' कितनो के लिये आया है ? बहुत के लिये। पाँचवें वाक्य में विशेषण बताओ—छोटा। यह विशेषण कितने लड़कों का गुण बताता है ? एक का। छठे वाक्य में विशेषण 'छोटे' कितने लड़कों का गुण बताता है ? बहुत का। बाँयीं ओर के वाक्यों मे क्रिया एक का काम बताती है या बहुत का ? एक का। सीधी ओर के वाक्यों में क्रिया कितनों का काम बताती है ? बहुत का। इत्यादि]

(आ) बाँयीं ओर के वाक्यों में सब शब्द (संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया) एक के लिये आये हैं; और सीधी ओर के सब शब्द एक से अधिक के लिये आये हैं।

याद रखो –

१—जो शब्द एक के लिये आता है वह एकवचन में कहा जाता है।

२—जो शब्द एक से अधिक के लिए आता है वह बहुवचन में कहा जाता है।

(इ) मोटे छपे हुए शब्द (संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, क्रिया) एकवचन में हैं और महीन छपे हुए बहुवचन में हैं; ध्यान से देखो:—

१—तू उसके भाई से लड़ता है।	५—तुम आदमियों से सब बचते हैं।
२—मेरा कुत्ता दौड़ता है।	६—उनके जूते फटे हैं।
३—किस की पुस्तक खोयी ?	७—किन लोगों ने स्त्रियों को फल दिये ?
४—वह घोड़ा लड़ाई में जाएगा।	८—वे घोड़े लड़ाइयों में जाएँगे

अभ्यास १

वचन दो होते हैं; एकवचन, बहुवचन।

अभ्यास २

नीचे के वाक्यों में से एकवचन के शब्दों को छाँट कर एक कोष्ठ में और बहुवचन के छाँटकर दूसरे में लिखो:—

१—उसके नोकरों ने हमारी टोपियाँ फेंकीं।
२—तेरे ऊँट कहाँ हैं?
३—उस किसान के खेत मारे गये।
४—उस बूढ़ी स्त्री के कितने पुत्र हैं?
५—धनी लोग भी इस भिखारी की सहायता नहीं करते।

अभ्यास ३

एकवचन को बहुवचन में और बहुवचन को एकवचन में बदल कर नीचे के वाक्यों को फिर लिखो:—

१—उन लड़कियों ने मुझे बहुत अच्छा गीत सुनाया।
२—वह कौआ उन पेड़ों के नीचे पड़ा है।
३—उसकी बहनें किसके पास पढ़ती हैं।
४—राजा की सेना भाग गयी।
५—उसके पास जाओ।

पाठ १९—लिंग। (Gender)

(अ) नीचे लिखे हुए वाक्यों को पढ़ो —

१—लड़का पढ़ता है। २—लड़की पढ़ती है।

३—छोटा लड़का पढ़ता है। ४—छोटी लड़की पढ़ती है।

[पहले वाक्य में संज्ञा बताओ—लड़का। यह पुरुषजाति का नाम है या स्त्रीजाति का ? पुरुषजाति का। दूसरे वाक्य में संज्ञा 'लड़की' किस जाति का नाम है ? स्त्रीजाति का। तीसरे वाक्य में विशेषण बताओ—छोटा। यह विशेषण पुरुषजाति की संज्ञा का गुण बताता है या स्त्रीजाति की संज्ञा का ? पुरुषजाति की संज्ञा का। चौथे वाक्य में विशेषण 'छोटी' किस जाति का है ? स्त्रीजाति का। इत्यादि। अब दोनों ओर की क्रियाओं को देखो। उनमें क्या अन्तर है ? बाँयी ओर की क्रियाएँ पुरुषजाति के साथ आयी हैं और सीधी ओर की स्त्रीजाति के साथ। इत्यादि]

(आ) बांयीं ओर के वाक्यों में सब शब्द (संज्ञा, विशेषण, क्रिया) पुरुषजाति के लिये आये हैं और सीधी ओर वाले स्त्रीजाति के लिये।

याद रखो—

१—जो शब्द पुरुषजाति के लिए आता है उसे पुंलिंग कहते हैं।

२—जो शब्द स्त्रीजाति के लिये आता है उसे स्त्रीलिंग कहते हैं।

सर्वनाम का रूप दोनों मे एक सा रहता है —

(इ) नीचे के वाक्यों में मोटे छपे हुए शब्द सब पुँलिंग हैं, और महीन छपे हुए स्त्रीलिंग हैं; उनको ध्यान से देखो:—

१—राजा ने घोड़े देखे।

२—रमेश का नौकर गया।

३—सूर्य अन्न को पकाता है।

४—चन्द्रमा बड़ा सुख देता है।

५—मैं सुन्दर घरों में रहता हूँ।

६—रानी की नौकरानी आयी।

७—सुशीला की पुस्तक पुरानी हो गयी।

८—माता पुत्री को पुचकारती है।

९—नदी की धार ऊँची पहाड़ी से गिरी।

१०—वह लम्बी छड़ी लाती है।

अभ्यास १

लिंग दो होते हैं; १—पुँलिंग २—स्त्रीलिंग

अभ्यास २

पुँलिंग और स्त्रीलिंग छांटकर अलग अलग लिखो:—

१—चमेली का भाई पढ़ता है।
२—श्याम को बीमारी लगी।
३—मैं मौसी से मिलूँगा।
४—उस मंत्री के नाम की चिट्ठी है।
५—इन लोगों की स्त्रियाँ पतली साड़ियाँ पहनती हैं।

पाठ २०—कारक

(अ) [यहाँ कौन बैठता है ? मोहन बैठता है, मैं बैठता हूँ। मैंने किसको पुकारा ? आपने श्याम को पुकारा, मुझको पुकारा। मैंने किससे पढ़वाया ? भाई (उस) से पढ़वाया। सोहन तुम्हारे लिये पुस्तक किसने मोल ली ? पिता ने। (सोहन के) पिता ने किसके लिये पुस्तक मोल ली ? सोहन के (मेरे) लिये। इत्यादि]

तुम्हारी बतायी हुई बातें नीचे लिखी हैं; उनको पढ़ोः—

१ { मोहन बैठता है।
मैं बैठता हूँ।

२ { आपने श्याम को पुकारा
आपने मुझको पुकारा।

३ { भाई से पढ़वाया।
उससे पढ़वाया।

४ { सोहनके लिये पुस्तक ली
मेरे लिये पुस्तक ली।

[वाक्यों के पहले जोड़े में बैठने का काम करने वाले कौन हैं ? मोहन मैं। दूसरे जोड़े में किस पर 'पुकारा' क्रिया का फल रहता है ? श्याम पर, मुझ पर। तीसरे जोड़े में पढ़वाने का काम किसके द्वारा हुआ ? भाई, उस, के द्वारा। चौथे में पुस्तक लेने का काम किसके लिये हुआ है ? सोहन के लिये, मेरे लिये। इत्यादि]

(आ) वाक्यों के पहले जोड़े में मोटे लिखे हुए संज्ञा और सर्वनाम काम के करने वाले हैं दूसरे जोड़े में मोटे लिखे हुए संज्ञा और सर्वनाम पर क्रिया का फल रहता है। तीसरे में उनके द्वारा काम होता है और चौथे में उनके लिये काम किया गया है।

याद रखो—

१—जो काम का करने वाला होता है उसमें कर्त्ताकारक होता है।

कर्त्ता का चिन्ह 'ने' है, कभी कभी यह चिन्ह नहीं आता है।

२—जिस पर क्रिया का फल रहता है उसमें कर्मकारक होता है।

कर्म का चिन्ह 'को' है, कभी यह नहीं भी आता है।

३—जिसके द्वारा काम होता है उसमें करणकारक होता है।

करण का चिन्ह 'से' है।

४—जिसके लिये कोई काम किया जाता है उसमें सम्प्रदानकारक होता है।

सम्प्रदान के चिन्ह को, के लिये, रे लिये, ने लिये हैं।

अभ्यास १

तुमने चार कारक पढ लिये; उनको अच्छी तरह से याद करोः—

१—कर्त्ताकारक
२—कर्मकारक
३—करणकारक
४—सम्प्रदानकारक

अभ्यास २

नीचे के वाक्यों में संज्ञा और सर्वनामों के कारक बताओः—

१—हमने लडको को पढाया।

२—पिताजी हमको आम लायें।

३—कुत्ता नाक से सूंघता है।

४—बिल्ली ने पजो से इसे मारा।

५—रामलाल माता के लिये दवा लाता है।

पाठ २१—कारक (समाप्त)

(अ) [पेड से क्या गिरता है? पेड से फल गिरता है। मैं तुमसे क्या लेता हूं? आप मुझसे पुस्तक लेते हैं। यह पुस्तक किसकी है? यह पुस्तक मेरी (या राम की) है। स्याही और पुस्तक कहाँ हैं? स्याही दवात में और पुस्तक डेस्क पर है। राम से बैठने के लिये कहो। राम बैठ जाओ। इत्यादि]

तुम्हारी बतायी हुई बातें नीचे लिखी हैं; उनको पढ़ोः—

१—पेड़ से फल गिरता है। २—स्याही दवात में है।

३—यह पुस्तक मेरी है। ४—राम! बैठ जाओ।

[पहले वाक्य में फल कहाँ से गिरता है? पेड़ से। हाँ यह बताता है कि फल पेड से अलग होता है। दूसरे वाक्य में पुस्तक किस की है? मेरी। पुस्तक का सम्बन्ध मुझसे है। तीसरे वाक्य में स्याही के ठहरने का स्थान क्या है? दवात। चौथे वाक्य मे किसको पुकारकर या सम्बोधन करके बैठने को कहा है? राम को। इत्यादि]

(आ) पहले वाक्य में 'पेड़' से फल अलग होता है। दूसरे में पुस्तक का 'मेरी' सर्वनाम से सम्बन्ध है। तीसरे में स्याही का सहारा या स्थान दवात है। चौथे में राम को पुकारकर या सम्बोधन करके बैठने को कहा है।

याद रखो—

१—जिससे कोई वस्तु अलग होती है उसमें अपादानकारक होता है।

अपादान का चिन्ह 'से' है।

२—जिससे किसी का सम्बन्ध प्रगट होता है उसमें सम्बन्धकारक होता है।

सम्बन्ध का चिन्ह का, के, की, रा, रे, री, ना, ने, नी है।

३—जो किसी का स्थान या सहारा होता है उसमें अधिकरणकारक होता है।

अधिकरण के चिन्ह में, पै, पर हैं।

४—जिसको पुकार या सम्बोधन करके कुछ कहते हैं उसमें सम्बोधनकारक होता है।

सम्बोधन के चिन्ह हे, हो अरे हैं, कभी कभी ये नहीं भी लगाये जाते।

सम्बोधनकारक केवल संज्ञाओं में होता है।

(इ) नीचे एक संज्ञा और एक सर्वनाम के रूप सब कारकों में दिये हैं उनको ध्यान से देखो :—

पुंलिंग शब्द 'लड़का'

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्त्ता	लड़का, लड़के ने	लड़के, लड़कों ने
कर्म	लड़के को	लड़कों को
करण	लड़के से	लड़कों से
सम्प्रदान	लड़के को, के लिये	लड़कों को, के लिये
अपादान	लड़के से	लड़कों से
सम्बन्ध	लड़के का, के, की	लड़कों का, के, की
अधिकरण	लड़के में, पै, पर	लड़कों में, पै, पर
सम्बोधन	हे, हो, अरे लड़के!	हे, हो, अरे लड़को!

उत्तमपुरुष सर्वनाम 'मैं'

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्त्ता	मैं, मैंने	हम, हमने
कर्म	मुझे, मुझको	हमें, हमको
करण	मुझसे	हमसे
सम्प्रदान	मुझे, मुझको, मेरे लिये	हमें, हमको, हमारे लिये
अपादान	मुझसे	हमसे
सम्बन्ध	मेरा, मेरे, मेरी	हमारा, हमारे, हमारी
अधिकरण	मुझमें, मुझपै, मुझपर	हममें, हमपै, हमपर

अभ्यास १

अब तुमने संज्ञाओं के आठ और सर्वनामों के सात कारक पढ़ लिये, उनको अच्छी तरह से याद कर लो :—

१—कर्त्ता २—कर्म ३—करण ४—सम्प्रदान
५—अपादान ६—सम्बन्ध ७—अधिकरण
८—सम्बोधन (केवल संज्ञाओं के लिये)

अभ्यास २

कारक बताओ :—

१—हमने नौकरों को जान लिया।

(आ) पहले वाक्य में क्रिया 'लिखता हूँ' से काम का अभी या इस समय होना पाया जाता है। दूसरे वाक्य में क्रिया 'लिखा' से काम का बीते हुए समय में होना पाया जाता है। तीसरे वाक्य में क्रिया 'लिखूंगा' से काम का आगे आने वाले समय में होना पाया जाता है।

याद रखो—

१—जिस क्रिया से काम का अभी या इस समय होना प्रगट होता है वह वर्तमानकाल की क्रिया होती है।

(वर्तमान = अब, या इस समय का, काल = समय)

२—जिस क्रिया से काम का बीते हुए समय में होना प्रगट हो वह भूतकाल की क्रिया होती है।

(भूत = बीता हुआ)

३—जिस क्रिया से काम का आगे आने वाले समय में होना प्रगट हो वह भविष्यकाल की क्रिया होती है।

(भविष्य = आगे आने वाला)

(इ) नीचे 'दौड़ना' क्रिया के तीनों कालों के रूप लिखे हैं; उनको ध्यान से देखो:—

पुंलिंग			स्त्रीलिंग		
वर्तमान	भूत	भविष्य	वर्तमान	भूत	भविष्य
दौड़ता हूं		दौड़ूंगा	दौड़ती हूं		दौड़ूंगी
दौड़ता है	दौड़ा	दौड़ेगा	दौड़ती है	दौड़ी	दौड़ेगी
दौड़ते हैं	दौड़े	दौड़ेंगे	दौड़ती हैं	दौड़ीं	दौड़ेंगी
दौड़ते हो		दौड़ोगे	दौड़ती हो		दौड़ोगी

अभ्यास १

तुमने क्रियाओं के तीनों काल पढ़ लिये; उनको अच्छी तरह से याद करो:—

१—वर्तमानकाल। २—भूतकाल। ३—भविष्यकाल।

अभ्यास २

क्रियाएँ छाँटो और उनके काल बताओ:—

१—राजा ने मंत्री को बुलाया। ४—क्या बोलते हो?
२—प्रजा पूजन करेगी। ५—उसे क्यों नहीं बताते?
३—वह यहाँ रहेगा। ६—गाय दूध देगी।

अभ्यास ३

छूटी हुई जगह में वाक्य के सामने लिखी हुई क्रिया का ठीक काल बनाकर लिख दो:—

१—कल आपने कितने पाठ——(पढ़ना)?

२—वह मुझसे शीघ्र - —(मिलना)।
३—पिछले मास में वह यहाँ - - (आना)।
४—वे प्रतिदिन -(टहलना)।
५—रमेश भला आदमी ——(होना)।

अभ्यास ४

खोलना, रोना, बनाना, सीखना, बुलाना—इन क्रियाओं के तीनों कालों के दोनों वचनों में ठीक रूप बनाकर लड़की, हम, तू के साथ लिखो।

पाठ २३—वाक्य-विभाग

(अ) [वह लड़का क्या करता है ? वह लड़का पढ़ता है। मोहन कहां बैठा है ? मोहन कुर्सी पर बैठा है ? वे टोपियां कहां हैं ? वे टोपियां पुस्तक के ऊपर हैं। राम कहां है ? राम मेरे पास है। इत्यादि]

तुम्हारे बताये हुए वाक्य नीचे लिखे हैं; उनको पढ़ोः—

१—लड़का पढ़ता है।
२—मोहन कुर्सी पर बैठा है।
३—वे टोपियाँ पुस्तक के ऊपर हैं।
—राम मेरे पास है।

पहले वाक्य में पढ़ने की बात किसके विषय में कही गयी है ?

'लड़का' के विषय मे। दूसरे वाक्य मे होने की बात किसके विषय में कही गई है ? मोहन के विषय में। पहले वाक्य मे 'लड़का' के विषय मे क्या कहा गया है ? पढ़ता है। मोहन के विषय में दूसरे वाक्य में क्या कहा गया है ? कुर्सी पर बैठा। तो फिर बताओ पहले वाक्य के कितने भाग हुए ? दो— (१) लड़का (२) पढ़ता है। सब वाक्यों के दोनों नाम बताओ। इत्यादि]

(आ) ऊपर लिखे हुए वाक्यों में जो खंड मोटा छपा है उसके विषय में कुछ कहा गया है और जो खंड महीन छपा है वह पहले खंड के विषय में कहा गया है।

याद रखो—

१—जिसके विषय में कुछ कहा जाता है उसे उद्देश्य कहते हैं।
२—उद्देश्य के विषय में जो कुछ कहा जाता है उसे विधेय कहते हैं।

(इ) नीचे के वाक्यों में जो शब्द मोटे छपे हैं वे सब उद्देश्य और जो महीन छपे हैं वे विधेय हैं; उनको ध्यान से देखो :—

१—लड़की गीत गाती है।

२—उनका कुत्ता मेरी बिल्ली के पीछे दौड़ रहा था।

३—तुम वहां क्या देख रहे हो ?

४—मेरे भाई का मित्र गया।

५—राम और मेरे पिताजी दिल्ली से आ गये हैं।

अभ्यास १

नीचे के वाक्यों में उद्देश्य और विधेय बताओः—

१—मेरे पिताजी कल आये थे।

२—उसके दोनों खिलौने यहाँ हैं।

३—वैद्य ने रोगी को देख कर दवा दी।

४—मैं कभी कभी उनके पास जाया करता हूँ।

५—जङ्गली हाथी का बच्चा राजा की सेना में घुस गया।

अभ्यास २

छूटी हुई जगहों में उद्देश्य लगाओ :—

१—————ने विद्यार्थियों को यह पुस्तक पढ़ायी।

२—————बड़ी ही सुन्दर टोपी है।

३—————अच्छा लड़का है।

४—————हमको बड़ी सहायता देते हो।

५—————अब नहीं पढ़ना चाहते।

अभ्यास ३

विधेय लगा कर वाक्यों को ठीक कर दो :—

१—यह लड़का ———
२—सूरज
३—हमारा भाई———
४—झूठ बोलना ———
५—मोहन ने———
६—यह कुत्ता———

अभ्यास ४

नीचे एक ओर उद्देश्य और दूसरी ओर विधेय कहीं के कहीं लिखे हैं; एक उद्देश्य और एक विधेय ढूँढकर ऐसा मेल मिलाओ कि वाक्य बन जाए:—

उद्देश्य	विधेय
बन्दर	तुम्हारे साथ चलूँगा।
तुम्हारी टोपी	हिन्दी पढ़ते हैं।
उसका भाई	फल तोड़कर खाता है।
मैं	आज नहीं खेलेंगे।
वे लड़के	मेरी कक्षा में है।

पाठ २४—(आवृत्ति)

याद करो:—

(अ) वर्ण या अक्षर उस छोटी से छोटी ध्वनि को कहते हैं जिसके टुकड़े न हो सकें।

अक्षर दो प्रकार के होते हैं; (१) स्वर (२) व्यंजन। स्वर ११ और व्यंजन ३३ होते हैं।

स्वर दो प्रकार के होते हैं; (१ , ह्रस्व स्वर (२) दीर्घ स्वर।

एक या अधिक अक्षरों के मिलने से शब्द बनता है।

(आ) संज्ञा तीन प्रकार की होती है:—

(१) जातिवाचक संज्ञा (२) व्यक्तिवाचक संज्ञा

(३) भाववाचक संज्ञा

सर्वनाम पाँच प्रकार के होते हैं:—

(१) पुरुषवाचक (२) निश्चयवाचक

(३) अनिश्चयवाचक (४) प्रश्नवाचक.

(५) सम्बन्धवाचक.

विशेषण चार प्रकार के होते हैं:—

(१) गुणवाचक (२) संख्यावाचक

(३) परिमाणवाचक (४) संकेतवाचक

क्रिया दो प्रकार की होती है:—

(१) सकर्मक (२) अकर्मक

(इ) संज्ञा और सर्वनाम के दो वचन होते हैं:—

(१) एकवचन (२) बहुवचन

संज्ञा और सर्वनाम के दो लिङ्ग होते हैं:—

(१) पुंलिंग (२) स्त्रीलिङ्ग

संज्ञा के आठ कारक होते हैं:—कर्त्ता, कर्म,

करण, सम्प्रदान, अपादान, सम्बन्ध, अधिकरण, सम्बोधन।

सर्वनाम के सात कारक होते हैं:—कर्त्ता, कर्म, करण, सम्प्रदान, अपादान, सम्बन्ध, अधिकरण।

क्रिया के तीन काल होते हैं:—(१) वर्तमान (२) भूत (३) भविष्य।

(६) संज्ञा और सर्वनाम के विषय में चार बातें जानना आवश्यक है:-

(१) भेद (२) वचन (३) लिङ्ग (४) कारक।

विशेषण के विषय में दो बातें जानना आवश्यक हैं:—(१) भेद (२) विशेष्य (अर्थात् किसका गुण बताता है)।

क्रिया के विषय में छः बातें जानना आवश्यक है:—(१) भेद (२) काल (३) वचन (४) लिङ्ग (५) कर्त्ता (६) कर्म (यदि हो)।

ऊपर की बातें बताने की विधि नीचे लिखी है:—

राम जाता है।

राम—संज्ञा, व्यक्तिवाचक, एकवचन, पुँलिङ्ग, 'जाता है' क्रिया का कर्त्ता।

जाता है—क्रिया, अकर्मक, वर्तमानकाल, एकवचन, पुँलिंग, इसका कर्त्ता 'राम' है।

अभ्यास

नीचे के वाक्यों के हर एक शब्द की सब बातें बताओः—

१—मेरे भाई ने लाठी से उस साँप को जगल मे मारा।

२—तुम काला कुत्ता पालते हो।

३—हम दो पुस्तके दुकान से लाएँगे।

४—तू क्या लेता है

५—लड़कियो को किसने फूल दिये।

———

Size of paper	...	20"×30"
Quality of paper	...	28 lbs. White printing
Cover	...	Coloured 60 lbs.
Price of the book	...	3 Annas.

साहित्य-सुमन
दूसरा भाग
श्यामसुंदरदास, बी० ए०

साहित्य-सुमन

दूसरा भाग

संशोधित और परिवर्तित

(एँग्लो वर्नाक्यूलर स्कूलों की पाँचवीं कक्षा के लिए)

रायबहादुर श्यामसुन्दरदास, बी० ए०

प्रकाशक

इंडियन प्रेस, लिमिटेड, प्रयाग

१९३४ मूल्य ।)

निर्घण्ट

गद्य-भाग

पद्य-भाग

1 IMAGINATIVE—LYRIC AND BALLAD

कबीर के भजन

शिवाजी

2 DESCRIPTIVE—NATURAL SCENES AND PHENOMENA, BUILDING, ETC

गङ्गा की छवि

निदाघ-वर्णन

ऊषे

3 NARRATIVE

महाराज शिवि

सागर-मथन

सीता जी का आग्रह

4 PATRIOTIC

भारत-गीत

तुलसीदास

5 ALLEGORICAL

खिला हुआ फूल

रत्न और पाषाण

6 DIDACTIC

शील

वृन्द के दोहे

विषय-सूची

विषय | पृष्ठ

साहित्य-सुमन

दूसरा भाग

१—भारत-गीत

भारत हमारा कैसा सुन्दर सुहा रहा है,
शुचि भाल पै हिमाचल, चरणों पै सिंधु अचल।
उर पर विशाल सरिता-सित-हीर-हार चंचल,
मणिबद्ध नील नभ का विस्तीर्ण पट अचंचल।
सारा सुदृश्य-वैभव मन को लुभा रहा है,
        भारत हमारा कैसा सुन्दर सुहा रहा है॥
उपवन सघन वनाली, सुखमा सदन, सुखाली,
प्रावृट के सान्ध्य घन की शोभा निपट निराली।
कमनीय दर्शनीया कृषि-कर्म की प्रणाली—
        सुरलोक की छटा को पृथिवी पै ला रहा है।
        भारत हमारा कैसा सुन्दर सुहा रहा है॥
सुरलोक है यहीं पर, सुख-ओक है यहीं पर,
स्वाभाविकी सुजनता गत शोक है यहीं पर।
शुचिता स्व-धर्म-जीवन, बेरोक है यहीं पर,
भव मोक्ष का यहीं पर अनुभव भी आ रहा है।
        भारत हमारा कैसा सुन्दर सुहा रहा है॥

हे वन्दनीय भारत, अभिनन्दनीय भारत,
हे न्यायबन्धु, निर्भय निर्बन्धनीय भारत।
मम प्रेम-पाणि-पल्लव अवलम्बनीय भारत,
मेरा ममत्व सारा तुझमे समा रहा है।
भारत हमारा कैसा सुन्दर सुहा रहा है॥

प्रश्न

१—भारतवर्ष की प्राकृतिक शोभा का वर्णन करो।
२—ऊपर की कविता का अपनी सरल हिन्दी में अर्थ लिखो।

२—रानी दुर्गावती

जिस समय बादशाह अकबर की यश-पताका हिमालय से लेकर बगाल की खाड़ी तक फहरा रही थी उसी समय जबलपुर के पास गढ़मण्डल या गढमण्डला मे एक छोटी-सी माण्डलिक रानी के स्वातन्त्र्य का प्रदीप भी दूर दूर तक अपना प्रकाश फैला रहा था। मुगल-सम्राट् के बल-विक्रम का सामना बड़े बड़े प्रतापी राजा नही कर सके, किन्तु उससे गढ़मण्डल की अधीश्वरी ने निडर होकर लोहा लिया। इस विलक्षण नारी-रत्न के पराक्रम की कथा इतिहास के पृष्ठो मे स्वर्णाक्षरों मे अङ्कित रहेगी।

महोबे के चन्देलराज के एक कन्या थी। उसका नाम दुर्गावती था। जब वह सयानी हुई तब उसके पिता ने राजपूताना के किसी राजकुमार के साथ उसका विवाह करना चाहा। परन्तु दुर्गावती ने गढ़मण्डल के स्वामी दलपतिशाह की वीरता पर मुग्ध होकर उसी को आत्म-समर्पण करना चाहा। पिता ने, किसी विशेष कारण से, यह बात नहीं स्वीकार की। जब दलपतिशाह ने यह समाचार सुना तब उसने अपने बाहु-बल से उस कन्या-रत्न को प्राप्त करना चाहा। चन्देलराज और दलपतिशाह में संग्राम हुआ। अन्त में विजयलक्ष्मी के साथ साथ लक्ष्मीरूपा दुर्गावती भी दलपतिशाह को प्राप्त हुई।

गढमण्डल में पहुँच कर दुर्गावती और दलपतिशाह का विधिपूर्वक विवाह हुआ, और वे दोनों आनन्द-पूर्वक रहने लगे। कुछ काल के अनन्तर दुर्गावती गर्भवती हुई और यथा-समय उसके वीरनारायण नामक एक पुत्र उत्पन्न हुआ। जिस समय वीरनारायण केवल तीन वर्ष का था, विकराल काल ने गढमण्डल का राजसिंहासन सूना कर दिया, राजा दलपतिशाह परलोकवासी हुआ। पति की मृत्यु से दुर्गावती को परम शोक हुआ। परन्तु पुत्र के मुख की ओर देखकर और अपने कुटुम्बियों से सान्त्वना पाकर उसे कुछ धैर्य हुआ। क्रमशः रानी दुर्गावती ने बड़ी योग्यता से राज्य का सञ्चालन करना आरम्भ किया। वह प्रजा के सुख-दुःख का विचार रखती और

राज्य शत्रुओं से रक्षित रखने के अभिप्राय से अपनी सेना को भी सुधारे रहती थी। वह जानती थी कि किसी न किसी दिन उसके छोटे से राज्य पर मुसलमान अधिकारियों की क्रूर-दृष्टि अवश्य पड़ेगी। इसलिए वह समराङ्गण में सेनासहित उतरने की तैयारी बराबर करती रहती थी। साथ ही साथ प्रजा को प्रसन्न रखने के लिए उसके मंगल-विधान की ओर भी वह अपनी दृष्टि रखती थी। स्थान स्थान पर उसने कुएँ और तालाब खुदवाये और अनाथों को आश्रय देने के अनेक उपाय किये। शिल्प और वाणिज्य की उन्नति की ओर भी उसने ध्यान दिया। सारांश यह कि अपनी प्रजा को सुखी करने के लिए उसने कोई उपाय उठा न रक्खा।

दुर्गावती की योग्यता, देश-रक्षा के लिए उसकी तत्परता, तथा उसकी प्रजा-वत्सलता आदि के विषय में अकबर के अधिकारियों ने उसके खूब कान भरे, और गढ़मण्डल को अपने अधीन कर लेने के लिए अनेक बार प्रार्थना की। उदार-हृदय अकबर ने वैसा करना उचित न समझा। परन्तु कोमल रस्सी की रगड़ से कठोर पत्थर भी घिस जाता है, अनेक बार परामर्श दिये जाने पर अकबर की भी लिप्सा जाग उठी। उसने आसफखाँ नामक एक सरदार को गढ़मण्डल पर चढ़ाई करने के लिए आज्ञा दे दी। एक विधवा और अनाथ अबला का राज्य छीन लेने के लिए दिल्ली के दुर्दमनीय बादशाह का चढ़ाई करना शोभा नहीं देता था। परन्तु लोभ मनुष्य का

परम शत्रु है। एक सामान्य मनुष्य से लेकर सम्राट् तक को भी वह नहीं छोड़ता। इसी लोभ के वशीभूत होकर अकबर के समान विचारवान् और बलशाली बादशाह ने भी एक अबला के साथ संग्राम जैसा अनुचित कर्म करने का निश्चय कर लिया।

जब यह समाचार रानी दुर्गावती को मिला तब दुर्बल-चित्त अबला के समान वह भयभीत नहीं हुई, उसने सिंहिनी के समान क्षुब्ध और क्रुद्ध होकर अपने क्षत्रियत्व का परिचय देना चाहा। वह जानती थी कि मैं महाप्रतापी दिल्लीश्वर के सम्मुख कभी जय-लाभ न कर सकूँगी, किन्तु विधर्मियों के हाथ में आत्म-समर्पण करने की अपेक्षा अपने देश की रक्षा के निमित्त वीर नारी के समान रण-क्षेत्र में प्राण देना ही उसने उचित समझा। रानी दुर्गावती के इस संकल्प को सुनकर प्रजा भी, जन्मभूमि की स्वाधीनता बचाने के लिए, कटिबद्ध हो गई। सारे पुरुष, जिनके बाहुयुगल खड्ग धारण कर सकते थे, रानी की पताका के नीचे खड़े होकर जयलक्ष्मी की प्राप्ति की लालसा से अपने शस्त्र चमकाने लगे। देखते ही देखते आठ सहस्र अश्वारोही आकर वहाँ उपस्थित हो गये और रानी दुर्गावती, मुण्डमालिनी चामुण्डा के समान तुरगारूढ़ होकर अपनी सेना के सहित संग्राम-भूमि में आ उतरी।

उधर आसफखाँ ने यह सोच रक्खा था कि दिल्लीश्वर के प्रचण्ड प्रताप की ज्वाला से भयभीत होकर दुर्गावती अवश्य ही आत्म-समर्पण करेगी अथवा यदि युद्ध ही करेगी तो क्षणमात्र

में ही उसकी सेना नष्ट हो जायगी। यही समझ कर वह केवल पाँच ही सहस्र अश्वारोही सेना अपने साथ लाया था। रणक्षेत्र में आकर उसे अपने भ्रम का ज्ञान हुआ। परन्तु उस समय क्या हो सकता था? वीर रानी के उत्साह-वाक्यों से उत्साहित होकर गढमण्डल की सेना शत्रुओं को निर्दयतापूर्वक काटने लगी। रानी के सैन्य का दुःसह तेज न सह कर विपक्षी भाग निकले और आसफखाँ बड़ी कठिनाई से अपने प्राण बचाने मे समर्थ हुआ। विजय-लक्ष्मी को साथ लेकर रानी दुर्गावती गढमण्डल को लौट आई।

आसफखाँ के पलायन करने का समाचार यथासमय अकबर को मिला। इससे वह बहुत लज्जित हुआ और डेढ वर्ष के अनन्तर विपुल सेना के साथ आसफखाँ को फिर उसने गढमण्डल पर आक्रमण करने के लिए भेजा। इस वार भी रानी दुर्गावती की सेना ने पहले ही की भाँति प्रचण्ड वल-विक्रम से सग्राम किया। फिर भी दुर्गावती की तेजोवह्नि मे शत्रुसेना पतग के समान दग्ध हो गई। जो कुछ बची वह आसफखाँ के साथ भाग निकली। आसफखाँ को इस दूसरी हार से अत्यधिक लज्जा आई। उसने अकबर को मुँह दिखलाना उचित न समझा। उसी ने लोभ दिखाकर गढमण्डल पर आक्रमण करने के लिए अकबर को उकसाया था, अतएव उसे अब यह चिन्ता हुई कि किस प्रकार मैं अपनी इस कलङ्ककालिमा का प्रक्षालन करूँ। वह यह जानता था कि जब तक रानी

दुर्गावती का एक भी योद्धा जीवित है तब तक वह भी गढ़-मण्डल को समर्पण न करेगी। इसलिए सरल मार्ग को छोड़ कर आसफखाँ ने कूटनीति का अवलम्बन किया। गढ़मण्डल में उसने विश्वासघात का बीज बोया। वह बीज लोभरूपी जल के सिञ्चन से अङ्कुरित होकर शीघ्र ही एक प्रचण्ड पेड़ हो गया। खेद है, इस विश्वासघातक वृक्ष को उखाड़ने में रानी समर्थ न हुई।

अपने राज्य में गृह-विवाद की भयानक मूर्ति देखकर रानी डर गई। उसे मालूम हो गया कि युद्ध में अब विजय की कोई आशा नहीं है। तथापि वह अन्यायी आसफखाँ के साथ धर्म-संग्राम करने में न हिचकी। जो लोग उसके साथ सग्राम में प्रसन्नतापूर्वक उपस्थित होने को सम्मत हुए, उनको और अपने एकमात्र पुत्र वीरनारायण को लेकर वह इस बार भी रणक्षेत्र की ओर चली। अन्त में महालोमहर्षण युद्ध हुआ। परन्तु इस बार आसफखाँ की सैन्य की सख्या अपरिमित थी। प्रातःकाल से सायकालपर्यन्त युद्ध करने पर भी रानी को जयलाभ न हुआ। उसने जान लिया कि इस बार मुगलों को पराजित करना असम्भव है। इसी समय उसने देखा कि चौदह वर्ष का उसका प्राणप्यारा पुत्र वीरनारायण घायल होकर घोड़े से गिर पड़ा। उसकी सेना के कई पुरुषों ने उसे सुरक्षित स्थान पर पहुँचा कर रानी से प्रार्थना की कि इस अन्तिम समय में एक बार आप अपने पुत्र से मिल लीजिए। रानी ने उत्तर

दिया—"यह समय पुत्र से मिलने का नहीं है। यदि मैं रणभूमि छोड़ूँगी तो सेना यहाँ मुझे न देखकर अस्त-व्यस्त हो जायगी। यदि पुत्र का अन्तकाल उपस्थित ही है तो मुझे हर्ष है कि वीर-धर्म का पालन करके वह वीर-गति को प्राप्त हो सका है। मैं शीघ्र ही देवलोक में जाकर उससे मिलूँगी। यह समय मिलने का नहीं।" धन्य रानी की वीरता और धन्य उसकी धर्मनिष्ठा! अन्त में युद्ध करते करते रानी की आँख में एक तीक्ष्ण बाण प्रवेश कर गया। उस बाण को रानी ने बाहर निकालना चाहा। परन्तु वह सफल-मनोरथ न हुई। तब उसने जीवन से निराश होकर बड़ी क्रूरता से विपक्षियों का संहार करना आरम्भ किया। जब रानी ने देखा कि अब वैरियों-द्वारा पकड़े जाने का डर है तब उसने गढ़मण्डल की ओर एक बार देख कर अपने ही खड्ग से अपने सिर को धड़ से अलग कर दिया। रानी का मृत शरीर शत्रुओं के हाथ न लगे, इसलिए सेना ने उसे शीघ्र ही दूसरे स्थान पर पहुँचा दिया। वहाँ दुर्गावती और वीर-नारायण की साथ ही अन्तिम क्रिया हुई।

यह भारतवर्ष एक ऐसा देश है जहाँ पुरुषों की तो गिनती ही नहीं, कोमल-कलेवरा कामिनियाँ भी वीरता के ऐसे काम कर गई हैं जिनका स्मरण होते ही बड़े बड़े शूरवीरों को भी दाँतों तले उँगली दबानी पड़ती है।

प्रश्न

१—दुर्गावती अपनी प्रजा को किन कार्यों से प्रसन्न रखती थी?

२—जब आसफ़खाँ वीरता से गढ़मण्डल को नहीं जीत सका तब उसने कौन-सी कूट-नीति चली ? क्या तुम्हारी समझ में उसने यह अच्छा किया ?

३—क्या कारण है कि दुर्गावती को पहली दो लड़ाइयों में विजय-लाभ हुआ ?

४—निम्न-लिखित वाक्यों में कारक-विच्छेद करो—

"तब उसने जीवन से निराश होकर बड़ी क्रूरता से विपक्षियों का संहार करना आरम्भ किया।"

५—सर्वनाम की परिभाषा बता कर उदाहरण दो। आगे लिखे हुए वाक्य में संज्ञा तथा सर्वनाम पृथक् करो—

"पति की मृत्यु से दुर्गावती को परम शोक हुआ। परन्तु पुत्र के मुख की ओर देखकर और अपने कुटुम्बियों की सान्त्वना सुनकर उसे कुछ धैर्य हुआ।"

६—"मुण्डमालिनी चामुण्डा के समान तुरगारूढ़ होकर" का शुद्ध तथा सरल हिन्दी में अर्थ समझाओ।

७—निम्न-लिखित शब्दों का अपने वाक्यों में प्रयोग करो—

अङ्कशायिनी, सान्त्वना, समराङ्गण, पलायन।

३—गङ्गा की छवि

नव उज्ज्वल जलधार हार-हीरक-सी सोहति,
बिच-बिच छहरत बूँद मध्य मुक्ता, मनि मोहति ।
लोल लहर लहि पवन एक पै इक इमि आवत,
जिमि नरगन मन विविध मनोरथ करत, मिटावत ।
सुभग स्वर्ग-सोपान सरिस सबके मन भावत,
दरसन, मज्जन, पान त्रिविध भय दूर मिटावत ।
कहूँ बँधे नव घाट उच्च गिरिवर सम सोहत,
कहुँ छतुरी, कहुँ मढ़ी, वढ़ी मन मोहत जोहत ।
धवल धाम चहुँ ओर, फरहरत धुजा-पताका,
घहरत घटा धुनि, धमकत धौंसा, करि साका ।
धोवति सुंदरि बदन करन अति ही छवि पावत,
बारिज नाते ससि-कलंक मनु कमल मिटावत ।
सुन्दरि-ससि-मुख नीर मध्य इमि सुन्दर सोहत,
कमल बेलि लहलही नवल कुसुमन मन मोहत ।
दीठि जहाँ-जहँ जाति, रहति तित ही ठहराई,
गंगा-छवि हरिचन्द कछू बरनी नहिं जाई ।

प्रश्न

१—गङ्गा की छवि का वर्णन करो ।

२—निम्न-लिखित शब्दों का शुद्ध रूप लिखो।—

मनि, धुजा, दीठि, कछू और नहिं ।

४—भ्रातृ-स्नेह

सन १५८५ ई० की बात है। एक समय पुर्तगाल देश के लिस्बन नगर से कई जहाज गोआ को आ रहे थे। उनमे से एक मे सब मिलाकर लगभग बारह सौ मनुष्य थे। वह जहाज अफ्रीका तक निर्विघ्न चला आया। वहाँ से कुछ दूर आगे समुद्र के नीचे एक चट्टान थी। वहाँ मल्लाहो की असावधानी से जहाज टकरा गया। उसके निम्न भाग मे बड़ा भारी छिद्र हो गया और पानी बड़े वेग से उसके भीतर आने लगा। अब जहाज के बचने की कोई आशा न रही।

जहाज का बचना असम्भव देखकर कप्तान ने समुद्र मे एक डोंगी डाली और थोड़ी-सी भोजन की सामग्री लेकर उन्नीस मनुष्यो के साथ वह उस पर सवार हो गया। और भी कितने ही मनुष्यो ने उसमे आना चाहा, परन्तु उन उन्नीस मनुष्यो ने नङ्गी तलवारो के बल से किसी को पैर तक न रखने दिया, क्योंकि अधिक भारी हो जाने के कारण डोंगी के डूब जाने का भय था। कप्तान और उसके साथी डोंगी पर बैठकर वहाँ से चल दिये, और शेष उसके सब जहाज के साथ समुद्र मे डूब गये।

जहाज से उतरते समय कप्तान कम्पास लेना भूल गया था। इसलिए उसे दिशा का ज्ञान न हो सका और बिना सोचे-समझे नाव लेकर चलना पड़ा। यही नहीं, वह

जल्दी में मीठा जल भी उतारना भूल गया था, जिसमें प्यास के मारे सब लोग तड़पने लगे। तो भी वे डोंगी खेते ही चले गये।

कप्तान पहले ही से कुछ रोगी था। इस कारण वह तो चार ही पाँच दिन में इस लोक से चल बसा। उसकी मृत्यु से बड़ी हलचल मची। प्रत्येक व्यक्ति मुखिया बन कर दूसरों पर शासन करने की चेष्टा करने लगा। परन्तु दूसरे के आदेशानुसार चलना किसी को भला न लगता था। अन्त में सब लोगों ने सहमत होकर एक वृद्ध को अपना कप्तान नियत किया और उसी की आज्ञा में चलना स्वीकार किया।

कुछ दिन व्यतीत होने पर कप्तान ने देखा कि अब खाद्य द्रव्य केवल तीन ही दिन के लिए बचा है, और इतनी अल्प सामग्री से हम सबका अधिक दिन तक निर्वाह नहीं हो सकता। तब उसने सम्मति दी कि सबके नाम की चिट्ठियाँ डाली जायँ और प्रत्येक चौथी चिट्ठी में जिसका नाम निकले वह समुद्र में फेंक दिया जाय। ऐसा करने से सम्भव है कि कुछ दिन तक और निर्वाह हो सके। यह बात सबने स्वीकार की। डोंगी पर, जैसा हम ऊपर लिख आये हैं, कुल १९ मनुष्य थे। उनमें से एक कप्तान, एक पादरी और एक बढ़ई को, उनके काम के आवश्यकतानुसार, छोड़कर शेष १६ के नाम की चिट्ठियाँ डाली गईं।

जिन चार मनुष्यों के नाम की चिट्ठियाँ निकलीं उनमें से तीन ने तो यह समझ कर कि अब हमारा अन्तिम समय आ पहुँचा, ईश्वर का नाम लेकर समुद्र में कूद कर प्राण गंवा दिये। परन्तु जब चौथे मनुष्य को समुद्र में डालने की बारी आई तब उसका छोटा भाई, जो उसी डोंगी में था, मन में अत्यन्त अधीर होकर भ्रातृस्नेह से भाई के गले में लिपट गया और आँखों में आँसुओं की धारा बहाता हुआ बोला—"मैं अपने जीते जी आपको किसी प्रकार न मरने दूंगा। आपके स्थान पर मैं ही अपने प्राण विसर्जन करूँगा। भला आप ही सोचिए कि आपके स्त्री है, बाल-बच्चे हैं, और आप ही के आश्रय में तीन विधवा बहनों का पालन-पोषण होता है। आप जीते रहेंगे तो इन सबका पालन कर सकेंगे। आपके प्राण-त्याग से जो हानि होगी उसकी अपेक्षा मेरे मरने में बहुत कम हानि है, क्योंकि मैं अभी तक अविवाहित हूँ। न कोई मेरे आगे है, न पीछे। मेरे लिए मरना-जीना दोनों समान हैं। इसलिए आप अपने बदले में मुझे ही मरने दीजिए।"

अपने कनिष्ठ भ्राता की करुणा-मयी वाणी सुनकर ज्येष्ठ भ्राता भौचक्का-सा रह गया। उसका हृदय द्रवीभूत हो गया, उसकी आँखों से अश्रुधारा बह चली और उसकी हिचकी बँध गई। वह अपने हृदय को कड़ा करके बोला—"प्यारे भैया तुम कुछ भी कहो, मैं तुम्हारा कथन नहीं मान सकता। दैव-इच्छा से मरने की चिट्ठी मेरे नाम निकली है। अपने प्राण

बचाने के लिए दूसरे के प्राण लेने मे बड़ा भारी पातक होता है। और फिर तुम तो मेरे सगे भाई हो और मेरी प्राण-रक्षा के लिए इतने उतावले होकर भ्रातृ-स्नेह प्रकट कर रहे हो। यदि मैं अपने प्राणों की रक्षा के लिए तुमको काल के गाल मे डालदूं तो मुझसे बढ़कर पातकी इस ससार मे और कौन होगा; ऐसा करने पर मेरा हृदय शोक और मोह से दुःखित होता रहेगा। अन्त मे किसी दिन मुझे भी लाचारी मे आत्मघात करना पड़ेगा। इसलिए मै कहता हूँ कि तुम कुछ चिन्ता न करो, मुझे प्राण-त्याग करने दो।"

ज्येष्ठ भ्राता की बात सुनकर कनिष्ठ भ्राता ने कहा—'यह आप निश्चित जान रखिए कि मै अपने जीते जी आपको कभी न मरने दूँगा।" इतना कहकर ज्येष्ठ भ्राता के चरण पकड़ कर वह फूट फूट कर रोने लगा। यह देख ज्येष्ठ भ्राता ने कहा—"भैया, अब तुम मुझे छोड़ दो। तुम घर जाकर, मेरे बाल-बच्चों, बहनों और स्त्री का पालन-पोषण करो। भैया, हठ मत करो, मेरा कहना मानो। तुम मुझे प्राण-त्याग करने दो।"

इस प्रकार ज्येष्ठ भ्राता ने अपने कनिष्ठ भ्राता को बहुतेरा समझाया, परन्तु उसने अपना हठ न छोड़ा। निदान उसे छोटे भाई का हठ मानना ही पड़ा। ज्येष्ठ भ्राता के बदले उसका कनिष्ठ भ्राता समुद्र मे फेंक दिया गया। वह तैरना अच्छी तरह जानता था। इस कारण गिरते ही तुरन्त न डूब

सका। कुछ काल तक वह तैरता रहा। पीछे मृत्यु के भय से वह नाव के समीप आ, दाहने हाथ से पतवार पकड़ कर तैरने लगा। यह देख एक केवट ने तलवार से उसका हाथ काट डाला। तब वह फिर समुद्र में बहकर तैरने लगा और कुछ देर बाद आकर उसने बायें हाथ से नाव का पतवार पकड़ लिया। मल्लाहों ने उसका दूसरा हाथ भी काट डाला। वह फिर भी अपनी दोनों भुजाओं को ऊपर उठाये केवल पैरों के ही बल नाव के पास तैरता तैरता चला।

उसकी यह दशा देख सबका जी भर आया। सबके नेत्रों से अश्रु-धारा बहने लगी। सबने एकमत होकर यह कहा कि जो भाग्य में बदा है वह तो किसी के टाले नहीं टल सकता। उचित है कि ऐसे भ्रातृ-स्नेही के प्राण बचाये जायें, क्योंकि आज तक किसी ने ऐसा अपूर्व भ्रातृ-स्नेही कहीं नहीं देखा। यह कहकर उन्होंने झट उसे डोंगी पर चढ़ा लिया।

नाववालों को रात भर चलते बीता। दूसरे दिन प्रातःकाल होते ही मुजबीक के पहाड़ की तराई की भूमि दिखलाई दी। उसे देखते ही सबकी जान में जान आ गई। उसी के समीप पुर्तगालवालों की नई बस्ती थी। वहाँ वे शीघ्र ही पहुँच गये। उन दोनों भ्राताओं का वृत्तान्त सुनकर वहाँ के निवासीगण बहुत प्रसन्न हुए, और छोटे भाई और उसके प्राण बचानेवालों की बड़ी प्रशंसा करने लगे।

प्रश्न

१—कम्पास कौन-सी वस्तु है? उससे दिशा का ज्ञान किस प्रकार होता है?

२—छोटा भाई अपने बड़े भाई के लिए अपना जीवन देने को क्यों उद्यत हो गया था?

३—इस कहानी से तुम क्या शिक्षा ग्रहण करते हो?

४—निम्न-लिखित शब्द किस प्रकार की संज्ञा हैं, कारण-सहित बताओ—

गोआ, कप्तान, कम्पास, सामग्री, पानक, समुद्र।

५—भाव-वाचक तथा व्यक्ति-वाचक संज्ञाओं को उदाहरण देकर समझाओ।

६—कारक कितने प्रकार के होते हैं? सबके उदाहरण देकर समझाओ।

७—इस कहानी को संक्षिप्त करके ४० पंक्तियों में, अपनी भाषा में, लिखो।

८—निम्न-लिखित शब्दों का अपने वाक्यों में प्रयोग करो—

डोंगी, पतवार, कम्पास, तराई।

५—शील

(१)

संग्रह करो करोड़, लुटाओ धन अनगिनती।
ऊँचे आसन बैठ, सुनो दासो की विनती॥
निज प्रभुता के हेतु, करो तुम सब कुछ नीका।
किन्तु शील के बिना, सभी है जग मे फीका॥

(२)

कहते हैं कवि लोग शील भारी भूषण है।
शील-हीन नर भूमि-भार निज-कुल-दूषण है॥
दान, मान, यश, रूप, शूरता, साहस माने।
मोती सम हैं सगुण, शील-माला के दाने॥

(३)

शब्द-कोष मे 'शील' शब्द व्यापक है इतना।
गीता मे भी धर्म नहीं है व्यापक जितना।
आगे रखकर शील, धर्म निज गुण दरसावे॥
गुण-वाचक सब नाम, अकेला शील बनावे॥

(४)

शील नम्रता सबल, सत्यता है अति प्यारी।
न्याय-सहित है दया, प्रेम पूरण अविकारी॥

सदाचार है शील, शील विद्या पढ़ना है।
तन-मन-धन मे सदा, शील आगे बढ़ना है॥

(५)

शील सत्य, वैराग्य दण्ड यति का धारण है।
यहाँ यज्ञ, व्रत, कर्म, परम-पद का कारण है॥
यही ज्ञान, विज्ञान, यही है गुण चतुराई।
ऊँचे कुल का चिह्न देह मन की रुचिराई॥

(६)

सब धर्मों का एक, शील है छिपा खजाना।
अवगुण काले नाग, जानते नही ठिकाना॥
धर्म शील के विना, यथारथ धर्म नही है।
शीलवान को सकल, स्वर्ग आनन्द यही है॥

(७)

शील त्याग नर वृथा, धर्म का अभिलाषी है।
अपना अन्तःकरण, सत्य इसका साखी है॥
कपट, क्रोध, अभिमान, न हिय से जिनके छूटाः
पुण्य उन्होने कौन, जगत मे आकर लूटा?

(८)

जिसने आदर-सहित, गुणी को नहीं विठाया।
दीन-प्रणाम विलोक, हाथ कुछ भी न उठाया॥

मधुर वचन सुन मधुर, वचन जो कभी न बोला।
विधि ने किया अनर्थ, दिया उसको नर-चोला॥

(९)

विद्या, बढ़ती जिन्हे नही दीनो की भानी।
जिनकी इच्छा कुटिल, आप-सुख मे है माती॥
करे न जो स्वीकार, दया अपने छोटे की।
धर्म करेगे भला, कौन ये लोग कुटेकी॥

(१०)

अपने चारो ओर, देख दुख दारुण छाया।
एक विपल भी जिन्हे, दुखी का ध्यान न आया॥
जिन्हे परोदय देख, कष्ट होता है भारी।
क्या है जग को लाभ ? हुए जो वे अधिकारी॥

(११)

निज-भाषा का प्रेम, धर्म-रति देश-भलाई।
होकर सब सम्पन्न, जगत में जिन्हे न भाई॥
जीभ दया कर बात, जिन्होने सदा उचारी।
ऐसे ही नर बने, हुए हैं धर्माचारी॥

(१२)

सब धर्मो को छोड़, शील-व्रत ही अब धारो।
शील-धर्म है गिरा, हुआ तुम इसे उबारो॥

बोया छल का बीज, सत्य-फल कहाँ मिलेगा ?
अहो शिला पर, कहो कमल, किस भाँति खिलेगा ?

प्रश्न

१—मनुष्य को शीलवान् क्यों होना चाहिए ?

२—२, ४, ६, ८, और १२ वें छंद का अर्थ लिखो।

३—शिला पर कमल क्यों नहीं खिल सकता ?

६—मुग़ल बादशाह

तुमने शायद मुगल बादशाहों का कुछ हाल सुना हो। सन १५२६ से १८०३ तक मुगलो की बादशाहत दिल्ली मे बनी रही। मुगल बादशाहो मे छः बड़े-बड़े बादशाह ये हुए हैं—बाबर, हुमायूँ, अकबर, जहाँगीर, शाहजहाँ और औरंगज़ेब। ये बड़े प्रतापशाली थे। इनके समय मे भारतवर्ष की कीर्ति दूर-दूर देशों में फैल गई थी। योरप से कितने ही लोग मुगलो का दरबार देखने के लिए आये और सब उनका वैभव देखकर चकित हो गये। यहाँ हम तुम्हे इन्ही बादशाहों के विषय मे कुछ बाते बतलाते हैं।

दिल्ली के राजसिंहासन पर बैठनेवाला पहला मुग़ल बादशाह बाबर था। वह जितना शूर था उतना ही बुद्धिमान् और विद्वान् था। वह कवि भी था। उसे पत्थर के काम से बड़ा प्रेम था। उसने अपने आत्म-चरित में लिखा है कि मुझे अपने

महल बनवाने के लिए ६८० शिल्पकार रखने पड़े थे। इनके सिवा आगरा, सीकरी आदि स्थानों में १,४९१ कारीगर काम करते थे। परन्तु अब बाबर और हुमायूँ के समय का कोई काम नहीं मिलता।

बाबर के बाद हुमायूँ गद्दी पर बैठा। उसे ज्योतिष-शास्त्र में खूब प्रेम था। वह नक्षत्रों का हिसाब करके उन्हीं के अनुसार अपना दरबार किया करता था। कहते हैं कि एक बार किसी भिश्ती ने उसकी प्राण-रक्षा की। जब हुमायूँ दिल्ली पहुँच गया तब उसने तीन घण्टे के लिए उस भिश्ती को बादशाह बना दिया। उस भिश्ती ने अपनी मशक के गोल टुकड़े कटवाये, उन पर अपना नाम छपवाया और उनको सिक्का करके चलाया।

हुमायूँ के बाद उसका बेटा अकबर बादशाह हुआ। मुगलों में सबसे बड़ा बादशाह यही हुआ है। संसार भर में जो बड़े बड़े बादशाह हुए हैं उनमें अकबर का नाम लिया जाता है। अकबर था तो बड़ा बुद्धिमान, पर वह पढ़ा लिखा नहीं था। वह अपने हस्ताक्षर भी नहीं कर सकता था। आगरे का लाल पत्थर का किला अकबर का बनवाया हुआ है। सिकन्दरे का पत्थर का काम और सीकरी के महल उसी के समय में बने। इनकी कारीगरी देखकर अभी तक लोग दाँत तले उँगली दबाते हैं। पत्थर पर बेल-बूटे, फूल-पत्ते और जाली का काम इतनी सुन्दरता से किया गया है कि देखते ही बनता है।

अकबर के समय मे कई अच्छे अच्छे चित्रकार थे। सप्ताह भर मे जितने चित्र तैयार होते थे उन सबकी परीक्षा एक दिन बैठकर बादशाह स्वय करता था। फिर चित्रकारो को उनकी योग्यता के अनुसार पुरस्कार दिया जाता था। कभी कभी अकबर हिन्दुओ के कपड़े पहनता था, माथे मे तिलक लगाता और कानो मे बालियाँ पहनता था। उसकी सभा मे नौ बड़े बड़े विद्वान् थे। वह विद्वानो का खूब आदर करता था। उसके मत्री अबुलफज़ल ने लिखा है—"बादशाह दिन-रात मे केवल एक बार खाते हैं, थोड़ी भूख रहने पर ही खाने से हाथ खींच लेते हैं। शोरे से ठण्डा किया हुआ गगाजल पीते हैं।" अकबर रात को सिर्फ छः घण्टे सोता, दिन भर काम किया करता और रात को विद्वानो की एक सभा करता था। वह सबकी सलाह लेता और फिर सोच-विचार कर अपना कर्त्तव्य निश्चित करता था।

अकबर का बेटा जहाँगीर था। उसकी बेगम नूरजहाँ का नाम खूब प्रसिद्ध है। नूरजहाँ थी तो स्त्री, पर वह राज्य का काम अच्छी तरह सम्हाल लेती थी। यह प्रसिद्ध है कि उसी ने सबसे पहले गुलाब का इत्र निकाला। बादशाह होने के बाद जहाँगीर ने एक न्याय की जजीर लटकाई। वह एक मन सोने की थी। उसका एक सिरा शाहबुर्ज से और दूसरा किले के बाहर यमुना के किनारे पत्थर के एक खम्भे पर बँधा था। वह साठ गज लम्बी थी और उसमे गज गज भर के

अन्तर पर साठ घण्टे लगे थे। यह घोषणा कर दी गई थी कि यदि किसी का न्याय अदालत में न हो तो वह बादशाह से फरियाद करने के लिए इस जञ्जीर को हिला दिया करे। हाकिन्स नामक एक अँगरेज ने लिखा है कि जहाँगीर के समय में तीन हजार मनसबदार थे। उनके अधीन तीन लाख सेना थी। बादशाह के खजाने में अनन्त धन और रत्नों का ढेर था। उसके महल में २६ हजार दास-दासी काम करते थे। बादशाह के पास १२ हजार हाथी थे, उनमें ३०० सिर्फ बादशाह के लिए थे। प्रतिदिन राज-सभा में ५०,००० रुपये खर्च होते थे और राजमहल के भीतर रोज ३०,००० रुपये खर्च हो जाते थे।

जहाँगीर का बेटा शाहजहाँ महल बनवाने के लिए प्रसिद्ध है। दिल्ली नगर को उसी ने बसाया। यमुना के तीर पर उसने लाल पत्थर का किला बनवाया। यह पचास लाख रुपये की लागत से बीस वर्ष में तैयार हुआ। किले के पहले दरवाजे को पार कर आगे बढ़ने से तोरणद्वार मिलता है। पहले उसके ऊपर नौबत बजती थी। उसके बाद पूर्व की ओर दरबार-आम है। उसके पीछे दरबार खास बना हुआ है। यह सफेद पत्थर का है। पहले यह चाँदी से बिलकुल ढका हुआ था। पानीपत की लड़ाई के पहले मरहठे उसे लूट कर ले गये। यह नौ लाख रुपये की लागत से बना था। यहीं पर लिखा है कि यदि पृथ्वी में कहीं स्वर्ग है तो वह यही है, वह यही है, वह यही है। यही

तख्त-ताऊस रक्खा रहता था। तख्त-ताऊस के विषय मे यह बात प्रसिद्ध है कि उसके लिए ८६ लाख रुपये के उत्तमोत्तम रत्न छाँटे गये, फिर कोई १४ लाख रुपये लगा कर ३½ गज लम्बी ½ गज चौड़ी और पाँच गज ऊँची पटिया तैयार की गई। पन्ने जड़े बारह खम्भो पर तख्त की छत खडी की गई। दोनो तरफ एक-एक मोर बनाया गया। उनके अगो मे अद्भुत रत्न जड़े गये। चढ़ने के लिए तीन सीढ़ियाँ बनाई गईं। उन पर भी रत्न लगाये गये। सात वर्ष मे यह तख्त तैयार हुआ। इसमे एक करोड़ रुपये खर्च हुए।

शाहजहाँ के बाद औरङ्गजेब गद्दी पर बैठा। वह बड़ा प्रतापी था। उसका फकीराना ठाट रहता था। आमोद-प्रमोद मे उसका मन नही लगता था। अपने निज के कामो मे उसने राज्य का एक पैसा भी खर्च नही किया। टोपियाँ सीकर और कुरान की नकल करके उसने अपना जीवन-निर्वाह किया। बतलाओ तो दुनिया मे ऐसे कितने बादशाह हुए हैं ?

मुगलो के समय मे खाने-पीने की चीजे बहुत सस्ती थी। दूध की बहुतायत थी। गरीब आदमी भी खूब दूध पीते थे। बर्नियर नाम के एक विदेशी यात्री ने लिखा है कि इस देश मे नीबू का शरबत और दही से बढ़ कर कोई चीज नही मानी जाती। मुगल बादशाह ऐशबाग लगाते थे। उन्हे शिकार खेलने का भी शौक था। अकबर को 'पोलो' नामक खेल खूब पसद

था। जहाँगीर को कबूतरबाजी का शौक था। शाहजहाँ स्वाँग देखना खूब पसन्द करता था। गरीब मुसाफिरो के आराम के लिए सरायें बनवाई जाती थीं। वहाँ ठण्डे और गरम दोनो तरह के पानी का प्रबन्ध रहता था। बिछौना और खाना दिया जाता था। जहाँगीर ने पुरानी सड़कों की मरम्मत करवा कर उन्हे और भी अच्छा कर दिया था। अबुलफजल ने लिखा है कि सभी धनवान जातियो के बच्चों और नौजवानों के लिए पाठशालायें थीं। उस समय पाठशालाओ के लिए हिन्दुस्तान खूब प्रसिद्ध था।

कुछ लोगों का यह खयाल हो गया है कि मुगल बादशाह दिन-रात भोग-विलास में मग्न रहते थे। यह उनका भ्रम है। मुगल बादशाह बड़े बहादुर और परिश्रमी होते थे। वही सबसे बड़े सेनापति थे और वही सबसे बड़े न्यायाधीश। राज्य का ऐसा कोई भी महकमा नहीं था जिसकी जाँच वे न करते हो। उनकी दिनचर्या यह थी। वे प्रात.काल तड़के ही उठा करते थे, फिर झरोखे पर बैठकर अपनी प्रजा को दर्शन देते थे। इसके बाद घटे दो घटे आराम कर भोजन करते थे। दोपहर मे दर्बार लगता था और अर्जियाँ पेश की जाती थी। रात को भी एक खास सभा होती थी जहाँ गुप्त रीति से परामर्श किया जाता था। कहने का मतलब यह कि मुगलों के समय मे भारतवर्ष की दशा बुरी न थी।

प्रश्न

१—इस पाठ को पढ़ कर तुम्हें बाबर, हुमायूँ, अकबर, जहाँगीर, शाहजहाँ और औरङ्गजेब में क्या गुण मालूम होते हैं ?

२—मुग़लों के समय में भारतवर्ष की कैसी दशा थी ? क्या तुम उससे और वर्तमान दशा से तुलना कर सकते हो ?

३—आत्मचरित, आमोद-प्रमोद, परामर्श, दाँत तले उँगली दबाना—इनका अपने वाक्यों में प्रयोग करो ।

७—महाराज शिवि

जो शरण आवे उसे देना अभय औदार्य है ।
क्षत्रियोचित सज्जनोचित आर्य-कुल का कार्य्य है ॥
प्रण यही पालन किया आजन्म नृप शिवि ने भले ।
प्राण से प्रण को अधिक जाना, नहीं उससे टले ॥ १ ॥

एक दिन उनकी सभा में एक पारावत डरा—
आ गिरा कहता हुआ—"मुझको बचाओ मैं मरा" ॥
दीनता से देखकर फिर उस कबूतर ने कहा—
"देव, रक्षा कीजिए, है श्येन पीछे आ रहा" ॥ २ ॥

भूप ने उठकर शरण में उस कबूतर को लिया—
हाथ उस पर फेर कर आश्वस्त शरणागत किया ॥
बाज भी पहुँचा वहाँ पर काल-सा तत्काल ही ।
और उसने यों कहा—"क्या धर्म है राजन् यही ॥ ३ ॥

एक का तो छीन लो आहार वह भूखों मरे
दूसरा होकर सुरक्षित चैन से मौजें करे ॥
न्याय के दरबार में अन्याय है प्रत्यक्ष क्यों ?
आप राजा हैं सभी के फिर किसी का पक्ष क्यों ॥ ४ ॥
धर्म मृगया का न राजन यों दुलखना चाहिए।
वह पराया खाद्य है; इसको न रखना चाहिए ॥
जीव ही है जीव का जीवन जगत में जान लो।
दो मुझे आहार मेरा: प्रार्थना यह मान लो" ॥ ५ ॥
श्येन की यह उक्ति सुनकर भूप ने उत्तर दिया—
देख मैंने जन्म क्षत्रिय-वंश उज्ज्वल में लिया ॥
जो शरण आवे उसे आश्वास देना धर्म है।
निर्बलों का त्राण करना क्षत्रियों का कर्म है ॥ ६ ॥
पक्ष लेना दुर्बलों का कुछ नहीं अन्याय है।
सर्वथा नृप के लिए तो यह प्रशंसित न्याय है ॥
क्रूर तुझ-से,शक्ति पाकर हैं सताते दीन को।
किंतु सज्जन शक्ति पाकर हैं बचाते दीन को ॥ ७ ॥
मै न मृगया-रत न इसका धर्म ही मैं मानता।
सब जगह सबमे उसी जगदीश को हूँ जानता ॥
जीव जीवन जीव का जो शास्त्र-मत मे सिद्ध है।
तो अहिंसावाद भी श्रुति मे प्रशस्त प्रसिद्ध है ॥ ८ ॥
और जो है तू बुभुक्षित, तो बहुत आहार है।
तू मरे भूखो, मुझे यह भी नहीं स्वीकार है ॥

महाराज शिवि

मांस दूँगा मैं तुझे, तू श्येन जितना खा सके।
पर कबूतर का न पर भी हाथ तेरे आ सके ॥ ९ ॥
उक्ति-युक्ति नरेश की सुनकर कहा फिर बाज ने।
"है न यह स्वीकार मुझको जो कहा महराज ने ॥
हूँ शिकारी मांस मुर्दा का न मैं भोजन करूँ।
आप ही आखेट कर आहार-आयोजन करूँ ॥ १० ॥
हाँ, कबूतर के बराबर मांस अपने अङ्ग का।
काट कर दें आप जो आहार मेरे ढङ्ग का।
तो मुझे स्वीकार होगी सुव्यवस्था आपकी।
पर नहीं इस योग्य है नृप यह अवस्था आपकी ॥ ११ ॥
रम्य रूप अनूप वैभव-भाग सुख आशा सभी।
क्या कबूतर के लिए नृप छोड़ सकते हो अभी" ॥
भूप ने हँस कर कहा—"यह भी मुझे स्वीकार है।
प्राण दे प्रण पालना प्राचीन शिष्टाचार है ॥ १२ ॥
है नहीं तन का भरोसा किस घड़ी छुट जायगा।
एक दिन इस रूप का बाजार भी लुट जायगा ॥
इन्द्रियाँ होंगी शिथिल तब भोग विष बन जायँगे।
मौत माँगेंगे, न पावेंगे पड़े पछतायँगे ॥ १३ ॥
और यह ऐश्वर्य भी अस्थिर अनिश्चित पोच है।
छोड़ने में फिर इसे क्या सोच औ, सकोच है ?
दुःखमय देखे सभी सुख, व्यर्थ उनकी चाह है।
और को सुख दे यही बस सत्य सुख की राह है ॥ १४ ॥

जन्म लेने का प्रयोजन आज हल हो जायगा।
धन्य हूँ मैं, जन्म मेरा यह सफल हो जायगा॥
मांस अपने अङ्ग का मै काट देता हूँ अभी।
आर्य लोगो का किया प्रण टल नहीं सकता कभी॥ १५॥
इस तरह कह कर नृपति ने एक अनुचर को बुला।
मांस अपना तोलने को शीघ्र मँगवाई तुला।
एक पल्ले पर कबूतर को बिठाया गोद से।
दूसरे पर मांस भी अपना चढ़ाया मोद से॥ १६॥
मांस भूपति का कबूतर के वजन से कम हुआ।
और भी रक्खा, मगर वह भी न उसके सम हुआ॥
इस तरह नृप के बदन का मांस सारा कट गया।
किन्तु विस्मय है कि वह भी तौलने पर घट गया॥ १७॥
उस समय उत्साह से उठकर स्वय नृप चढ़ गये।
यज्ञ-पूर्णाहुति हुई तब देवगण भी खुश हुए॥
अग्नि-सुरपति जो कि अब तक भक्ष्य-भक्षक थे बने।
हो प्रकट तत्काल बोले यो नृपति के सामने— ॥ १८॥
"साधु राजन् हो चुकी बस अब परीक्षा आपकी।
धन्य आत्मत्याग में है दिव्य दीक्षा आपकी॥
आपका इस धैर्य से हमको बड़ा सन्तोष है।
आपका सुचरित्र अनुकरणीय है, निर्दोष है॥ १९॥
हो प्रतापी प्रिय प्रजा के शान्त शिक्षित शिष्ट हो।
छोड़कर सङ्कोच हमसे माँग लो जो इष्ट हो॥"

भूप यह सुनकर बहुत ही मुदित, पुलकित, नत हुए।
वेदना जाती रही. व्रण अङ्ग से अपगत हुए॥ २० ॥
दे यथेप्सित वर नृपति को देव अन्तर्हित हुए।
भूप भी उपराग-मुक्त मयङ्क-से शोभित हुए॥
पाठको, हम क्या बतावें इस कथा के मर्म को।
आप सब शिक्षित स्वय पहचानते हैं धर्म को॥ २१ ॥

प्रश्न

१—महाराज शिवि ने कबूतर की कैसे रक्षा की ?

२—इस कथा से हमें क्या शिक्षा मिलती है ?

८—कर्मवीर फ़ोर्ड

३० जूलाई सन १८६३ ई० को हेनरी फोर्ड का जन्म अमरीका के मिशिगन स्टेट के एक छोटे से गाँव मे हुआ। उनके पिता का नाम विलियम फोर्ड था। उनके पास कोई तीन सौ एकड़ जमीन थी और उसी को जोत-बोकर वे अपना जीवन-निर्वाह करते थे। हेनरी अपने पिता के दूसरे पुत्र थे। उनका बाल्यकाल सामान्य लड़कों की भाँति व्यतीत हुआ। कोई विशेष चमत्कार या अलौकिक बुद्धि का प्रकाश उस अवस्था मे नही प्रतीत होता था। परन्तु जब दूसरे लड़के अपना सारा समय खेल-कूद मे लगाते थे तब वे गाँव में

लोहार की भट्टी पर काम करते, और उसके प्रत्येक काम मे अत्यन्त उत्साह दिखाते थे।

स्कूल मे फोर्ड का मन बिलकुल न लगता था। इस कारण अपने विद्यार्थी-जीवन में ही उन्होंने एक लोहार की दूकान खोली और अपना कार्य्य प्रारम्भ कर दिया। उनको एक धुन समा गई कि किसी न किसी प्रकार स्टीम इञ्जिन बनाना चाहिए। दिन-रात अपने छोटे कारखाने मे बैठकर वे उसी को पूरा करने का यत्न करने लगे। इसके पश्चात् उन्होंने डिट्रायट जाकर किसी कारखाने मे नौकरी करने का निश्चय किया। निदान वे डिट्रायट चले गये। वहाँ उन्होंने एक इञ्जिन के कारखाने मे प्रति सप्ताह २॥ डालर पर नौकरी कर ली और यह विचार किया कि मैं लोकोमोटिव इञ्जीनियर हो जाऊँगा। परन्तु इतनी आय पर्याप्त न थी। अतएव एक घड़ी-साज़ की दूकान पर चार घटे प्रतिदिन काम करके दो डालर प्रतिसप्ताह और कमाने लगे। एक वर्ष तक वे इसी प्रकार अपना निर्वाह करते रहे। इसके पश्चात् उन्होंने एक दूसरे कारखाने मे नौकरी कर ली और घड़ीसाजी का काम छोड़ दिया।

अपने वृद्ध पिता के अनुरोध से फोर्ड को तीन वर्ष तक घर ही पर रहना पड़ा। वे खेती का काम करते रहे। इसी बीच में क्लाराब्रेड नामक युवती से उनका विवाह हो गया। विवाह करने के पश्चात वे शीघ्र ही डिट्रायट वापस गये, और वहाँ "एडिसन एलेक्ट्रिक लाइटिंग ऐंड पावर हाउस

कम्पनी" मे ४५ डालर मासिक वेतन पर नौकर हो गये। ६ मास के भीतर ही उनका वेतन १५० डालर हो गया और वे मेकैनिक विभाग के मैनेजर हो गये। कुछ धन-सचय करने के पश्चात् उन्होंने एक टुकड़ा जमीन मोल ले लिया, और उसमे अपना एक छोटा-सा कारखाना खोल दिया। फोर्ड दिन में एडीसन कम्पनी में काम करते और रात मे अपना कारखाना चलाते। उनकी इच्छा थी कि एक ऐसा गैसोलीन इजिन बनाया जाय जो आकार मे तो छोटा हो पर काम उतना ही दे जितना कि स्टीम इजिन देता है। एडिसन प्लान ने एक पाइप को बेकार समझ कर फेक दिया था। फोर्ड उसे उठा लाये और उससे सिलेडर का काम निकाला। इस इजिन के बनाने मे दो साल लग गये। जब यह छोटा-सा इजिन तैयार हो गया तब बहुतो ने इसकी प्रशसा की, साथ ही यह भी कहा कि यह वस्तु तो अच्छी है, परन्तु इसके बनाने मे लाखों रुपयो की आवश्यकता है। फोर्ड साहब इसका यही उत्तर दिया करते थे कि मेरा काम बनाना है, रुपया स्वय आ जायगा। वास्तव में हुआ भी ऐसा ही।

कुछ समय के बाद विवश होकर फोर्ड ने अपनी स्त्री को घर भेज दिया। इससे फोर्ड को बडी कठिनाई पड़ने लगी। स्वय अपना भोजन तैयार करना फिर दिन भर कारखाने मे काम करना, और रात को आकर अपने परीक्षण-कार्य मे व्यस्त रहना साधारण बात नही है। तो भी वे अपने

उद्योग मे निरन्तर लगे रहे। कुछ दिनों मे उनका परीक्षण सफल होगया और उनके वर्कशाप मे एक सिलेंडर का मोटर तैयार होगया। अब वे नित्य सायकाल उस पर बैठकर घूमने जाया करते थे। कुछ दिनो मे इस मोटरकार से भी फोर्ड का जी भर गया। उन्होने सोचा कि यदि दो सिलेंडर का मोटर होता तो अधिक अच्छा था। इस विचार ने उन्हे अब दूसरी समस्या मे उलझा दिया। अब उनके वर्कशाप मे दो सिलेंडर की कार का परीक्षण प्रारम्भ हुआ। वे आठ वर्ष तक इस परीक्षण मे लगे रहे। सन् १९०१ ई० के वसन्तकाल मे उनकी दो सिलेंडर की कार तैयार होगई। फोर्ड साहब अपनी इस दो सिलेंडर की कार पर चढकर डिट्रायट की गलियो मे घूमने लगे। कोई इसकी प्रशसा करता और कोई इस छोटी-सी कार पर उन्हे बैठा देखकर हँसी उड़ाता, ऐसा कोई भी न मिला जो उन्हे उत्साहित करता। वे कई धनपतियों से मिले, परन्तु रुपये के प्रश्न पर सब मौन धारण कर लेते। तब फोर्ड साहब ने सोचा कि जब तक जनता के सम्मुख कोई विशेष चमत्कार नही रक्खा जायगा तब तक किसी से धन प्राप्त होने की आशा नहीं है। अन्त मे उन्होने सोचा कि अगले वर्ष मोटरो की दौड़ होनेवाली है। यदि उसमे सम्मिलित होकर बाजी मार सकूँ तो धनी लोगो का ध्यान मेरी ओर अवश्य आकर्षित हो सकता है। उन्होने इस विचार को अपने मित्र- कार्फीजिम के सम्मुख

रक्खा। उसने उनको खूब प्रोत्साहन दिया और आर्थिक महायता करने का भी वचन दिया। इस पर फोर्ड ने नौकरी से इस्तीफा दे दिया और दिन-रात मोटर-दौड़ की तैयारी मे लग गये। सन् १९०२ ई० में उनका यह मोटर तैयार हो गया। कार्कोजिम ने उस कार को बहुत पसन्द किया। प्रतिभाशाली फोर्ड के मन मे अब और आकांक्षाये समाईं। वे कहने लगे कि यदि चार सिलेंडर की कार बने तो और भी अच्छा हो।

परन्तु समय थोड़ा रह गया था। दौड़ मे फोर्ड प्रथम आये। अब तो सब समाचारपत्रों मे उनका और उनके मोटर का विस्तृत समाचार छपने लगा, जिसमे कई धनपतियो की दृष्टि उनकी ओर फिरने लगी। बहुतो ने धन से सहायता देने का वचन भी दिया। परन्तु सबका यह कहना था कि फैक्टरी हमारी हो, फोर्ड साहब उसमे काम करे, क्योंकि रुपया हमारा है। मिस्टर फोर्ड का तो विचार भर है, मुख्य वस्तु धन तो हमारा ही लगता है। परन्तु फोर्ड साहब इस पर सहमत न हुए। वे कहने लगे कि वास्तव मे मुख्य बात विचार है, धन तो गौण वस्तु है। यदि फैक्टरी मेरे हाथ मे न होगी तो मैं सम्मिलित नही होऊँगा। इस पर धन न मिल सका और फैक्टरी भी न स्थापित हो सकी। तो भी दो तीन आदमी जैसे टाम कूपर और कजन, जिनका लोहे के सामान का स्टोर था, और विल्स, जो ड्राफ्टमैन था, उनके साथ रहे। सबने मिलकर सलाह की

कि प्रत्येक व्यक्ति का यह कर्त्तव्य है कि हम लोगों मे से प्रत्येक अपने अपने मित्रों को इस कार्य्य मे सम्मिलित होने के लिए उत्साहित करे। फोर्ड साहब ने कहा कि अगली दौड़ के लिए मैं चार सिलेंडर की गाड़ी तैयार करूँगा और उस समय सब लोग अपने अपने मित्रो को लावे और उन्हें मोटर की उपयोगिता का अनुभव करावें।

अगली दौड़ से पहले गाड़ी तैयार हो गई। कूपर और फोर्ड गाड़ी पर सवार हुए और उसका निरीक्षण करने के लिए उन्होने उसको चलाया। गाड़ी ने एक-दम इतना वेग धारण किया कि उस पर चढ़ने से दोनों घबराने लगे। दौड़ मे फोर्ड साहब का मोटर प्रथम आया। दूसरे मोटर मे और इसमे आधे मील का अन्तर था। इस बड़ी विजय ने बहुत-से लोगों को फोर्ड के कार्य की ओर झुकाया।

शीघ्र ही मोटर-कम्पनी की स्थापना हुई। इसमें मिस्टर 'फोर्ड उपसभापति और मास्टर मेकैनिक बनाये गये। फैक्टरी बहुत सफलता से चली। परन्तु थोड़े ही दिनों मे आपस मे मतभेद हो गया। निदान फोर्ड साहब ने अपनी स्वतत्र फैक्टरी की नीव डाली, तब उन्हे साथी ढूँढ़ने पड़े। निस्सन्देह उन्होंने साथियो के चुनने मे बहुत बुद्धिमानी से काम लिया। इनके साथी अपने अपने विषय मे पूर्ण निष्णात थे। जब यह मोटर बाजार मे आया, अपने हलकेपन और सस्ते होने की वजह से सर्वप्रिय होने लगा।

फोर्ड साहब की .फैक्टरी का क्षेत्रफल ३५० एकड़ है। इसमें काम करनेवाले मजदूरों की संख्या ५० हजार है। इस फैक्टरी से प्रतिदिन चार हजार कारे तैयार होकर बाहर निकलती हैं।

इस फैक्टरी का प्रत्येक विभाग स्वय पूर्ण है, किसी दूसरे पर आश्रित नहीं है। प्रत्येक मुख्य विभाग में कई दूसरे विभाग हैं। इस प्रकार के प्रबन्ध करने में फोर्ड ने बड़ी उदारता से धन का व्यय किया है, जिससे कार्य्य बहुत ही सुगम हो गया है, और शीघ्रता से सम्पादित होता है। यहाँ की सबसे मुख्य विशेषता कन्वेयर सिस्टम है। इस प्रबन्ध-द्वारा बड़े भारी भारी सामान आसानी से एक स्थान से दूसरे स्थान तक पहुँचाये जाते हैं।

फोर्ड साहब का विचार है कि मजदूर तब तक काम नहीं कर सकते जब तक उनकी आर्थिक दशा न सुधरे, इसलिए यहाँ सबसे अधिक मजदूरी दी जाती है। साल के अन्त मे यहाँ के मजदूरों को लाभांश भी मिलता है। यहाँ और एक ऐसी सस्था है जो मजदूरो की दशा की पड़ताल करती है। मजदूरों के भाण्डार खोले गये हैं, जहाँ सस्ता सामान मिलता है। मजदूरों के मनोविनोद के लिए भी उपयुक्त स्थान हैं, और प्रत्येक मनुष्य को अपनी सम्मति प्रकाशित करने का अधिकार है। इसमे प्रायः ससार के सभी देशो के निवासी काम करते हैं।

इस कम्पनी ने अपने को सब प्रकार से सुरक्षित और स्वतंत्र रखने के लिए बड़ी बुद्धिमत्ता से अपना धन उद्योगों मे ही लगाया है। इसके पास निजी रेल है, लकड़ी की आवश्यकता होने पर इसके सञ्चालकगण बड़े-बड़े जगल खरीद लेते हैं। कागज बनाने के लिए पेपर-मिल है। कोयले और लोहे की खाने भी इस कम्पनी ने ले रक्खी हैं। सीसा बनाने के भी कारखाने यह कम्पनी चला रही है। प्रकाश के लिए बिजली और जलाने के लिए गैस भी इसे दूसरो से नहीं खरीदनी पड़ती। ये सब काम बड़ी दूरदर्शिता के हैं।

इस कम्पनी की बहुत बड़ी विशेषता यह है कि प्रत्येक विभाग का मुखिया स्वय इस कम्पनी का शिक्षा-प्राप्त युवक होता है। इस कार्य के लिए शिल्प-सम्बन्धी स्कूल खुले हुए हैं। वहाँ मजदूरो को उस विभाग के सम्बन्ध मे शिक्षा दी जाती है जिसमे वे काम कर रहे हों या करना चाहते हों। विदेशी मजदूरो को अँगरेजी पढाने का भी प्रबन्ध है, औजार बनाने की शिक्षा के लिए पृथक् श्रेणी है। एक बड़ी रसायन-शाला भी है, जिसमे लाखो डालर हर साल व्यय होते हैं।

प्रश्न

१—फोर्ड-कम्पनी ने श्रमजीवियों की सहायता के लिए कौन-सी सुगमतायें कर रक्खी हैं?

२—निम्नलिखित वाक्य की आलोचना करो :—

"इस फैक्टरी का प्रत्येक विभाग स्वयम् पूर्ण है, किसी दूसरे पर आश्रित नहीं है।"

३—क्या तुम्हारी समझ में तुममें इतनी योग्यता है कि फोर्ड की तरह एक निर्धन मनुष्य होकर भी इतनी उन्नति कर सको ?

४—निम्नलिखित वाक्य में क्रिया की शब्द-निरुक्ति करते हुए विस्तार-पूर्वक काल बताओ :—

"दिन में एडिसन कम्पनी का काम करते।"

५—निम्नलिखित वाक्यों में शून्य स्थानों की पूर्ति करो :—

(अ) स्कूल में उसका ....बिलकुल. . . लगता था।

(ब) यह विचार ... .कि मैं इञ्जीनियर . .आऊँगा।

६—निस्सहाय बालक फोर्ड ने आज चमत्कारपूर्ण कार्य का विस्तार कैसे किया—लिखो।

७—फोर्ड-कम्पनी की विशेषता पर एक लेख लिखो।

६—निदाघ-वर्णन

(१)

अहह ! उष्ण हवा चलने लगी,
अवनि आतप से जलने लगी।
गगन में रज का दल छा गया,
गत वसन्त हुआ, तप आ गया॥

(२)

न उड़ता अब पुष्प-पराग है;
न पिक के मन में अनुराग है।
न मलयानिल ही चलती कभी,
प्रकृति-दृश्य मलीन हुए सभी ॥

(३)

कर रहीं अति ताप प्रदान हैं;
हर रहीं सलिलाशय-मान हैं।
अति प्रचण्ड प्रकाश-निधान हैं;
रवि-मयूख मयूख समान हैं ॥

(४)

तरु जहाँ करते मद-दान थे,
हृदय को हरते द्विज-गान थे।
अचल थी मधु की सुषमा जहाँ,
बिखर भस्म रही अब है वहाँ !!! ॥

(५)

सर समान हुईं नदियाँ अब;
सर हुए कृश पल्वल से सब।
सकल पल्वल सूख गये तथा,
अहह! दुस्सह है तप सर्वथा ॥

(६)

न घटती तनु की अब दाह है,

सलिल की रहती नित चाह है।

कल नहीं पड़ती, गर्मी बड़ी,

युग समान अहो कटती घड़ी॥

(७)

व्यथित होकर आतप से अति,

तृण नहीं चरते पशु सम्प्रति।

हरिण सिंह मतङ्गज शूकर,

तृषित हैं फिरते वन भीतर॥

(८)

प्रखर आतप से अकुला कर,

दल-दृगम्बु गिरा कर भू पर।

पवन-पीड़ित वृक्ष लता सब,

रुदन-सा करते रहते अब॥

(९)

तृषित भी खग दो-पहरी भर,

तज नहीं सकते निज कोटर।

छिप किसी विधि वे रहते यहीं,

निकलते तप के भय से नहीं॥

(१०)

यह न मारुत है वर व्याल है;
यह न आतप है करवाल है।
यह न भूमि चिता सुविशाल है
तप नहीं यह काल कराल है॥

(११)

मुदित मीन जहाँ नित डोलते,
मधुप थे कमलों पर बोलते।
शशि-छटा प्रतिबिम्बित थी जहाँ;
अहह आज मरुस्थल है वहाँ॥

(१२)

प्रचण्ड मार्तण्ड हुआ अतीव;
है ताप में व्याकुल सर्व जीव।
वृक्षादि हैं कान्ति-विहीन दीन,
हुई रजः पूर्ण दिशा मलीन॥

(१३)

है जो जगतप्राण मरुत प्रसिद्ध;
होते उसी से अब प्राण विद्ध।
हैं ख्यात जो मित्र तथा दिनेश:
देते वही हैं अब तीक्ष्ण क्लेश॥

(१४)

है तीर-तुल्य लगती तन मे समीर ?
सन्ताप-पीड़ित सदा रहता शरीर।
स्वेद-प्रवाह बहता रहता नितान्त।
होती तृषा सलिल पीकर भी न शान्त॥

(१५)

कर्पूर, चन्दन, सुशीतल स्वच्छ नीर ?
भूगर्भगेह, जलयन्त्र तथा उशीर।
चन्द्र-प्रकाश, मृदु भोजन, पुष्पहार ?
देते समस्त सुख हैं अब ये अपार॥

प्रश्न

१—ग्रीष्म-ऋतु किन महीनों मे आती है ?

२—ग्रीष्म-ऋतु पर एक निबन्ध लिखो जिसमे ऊपर की कविता के सब भाव आ जायें ?

३—जेठ की दोपहरी पशु पक्षी कैसे बिताते है।

१०—अलादीन और चमत्कारी चिराग

चीन के एक शहर मे मुस्तफा नाम का एक दर्जी रहता था। उसके एक लडका था। नाम था अलादीन। वह बडा आवारा था। जब उसका बाप मर गया तब वह और भी मन-माना हो गया। उसकी विधवा माँ चरखा कातती, उसी से उन दोनो का निर्वाह होता था।

अफ्रीका का एक जादूगर था। उसको अपने मन्त्र की सिद्धि के लिए एक साहसी लड़के की ज़रूरत थी। एक दिन अलादीन पर उसकी निगाह पड़ गई। उसका रंगढंग देखकर उसने समझ लिया कि उससे उसका कार्य सिद्ध हो जायगा। दूसरे लड़कों से उसका नामधाम और हालचाल जान कर वह उसके पास गया और उसे गले से लगा कर रोने लगा। उसने कहा—बेटा, मैं तुम्हारा चचा हूँ। चालीस वर्ष के बाद बाहर से आया हूँ। यहाँ आने पर मालूम हुआ कि भाई साहब की मृत्यु हो गई। यह कहकर उसने उसे कुछ मोहरें दीं और कहा कि अपनी मा को दे देना। फिर अगले दिन घर आने का वादा कर वह चला गया।

अलादीन ने घर आकर अपनी मा को मोहरें दीं और अपने चाचा का हाल कह सुनाया। उसकी मा को बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने कहा—बेटा, तुम्हारे चाचा की बात मुझे नहीं मालूम है। एक चाचा थे जिनको मरे बहुत दिन हो गये। यह कहकर वह चुप हो रही।

दूसरे दिन अलादीन से जब जादूगर की भेंट हुई तब उसने उसे दो मोहरें देकर कहा—बेटा, इन्हें अपनी मा को दे देना। और कहना कि रात में आकर दर्शन करूँगा और भोजन भी करूँगा। इसके बाद वह चला गया।

अलादीन ने घर आकर मा को मोहरें दीं और उसके आने की बात कही। उसकी मा ने आगन्तुक के सत्कार के

लिए बढ़िया से बढ़िया भोजन तैयार किया। सन्ध्या होने पर जब वह आया तब उसने उसकी मा को प्रणाम किया और अपने भाई की मृत्यु पर शोक प्रकट किया। अन्त में जब अलादीन की मा ने बार बार कहा तब उसने भोजन किया। भोजन के बाद उसने कहा—भाभी, तुमने मुझे नहीं देखा है। मैं चालीस वर्ष के बाद लौटा हूँ। इस तरह बात-चीत के सिलसिले मे अलादीन की बात आई। और जब उसे मालूम हुआ कि अलादीन बेकार मारा मारा फिरता है तब उसने उसे ऊँच-नीच समझाया और कहा—मैं तुमको रेशमी कपड़े की दूकान करवा दूँगा। यह सुनकर मा-बेटे दोनों खुश हो गये। दूसरे दिन फिर आने को कहकर वह चला गया।

अगले दिन अलादीन की उससे बाजार में भेंट हुई तब उसने उसके लिए नये कपड़े तैयार करवा दिये। वह उसे नये कपड़े पहना कर उसको घर पहुँचा गया। उसकी मा अपने बेटे के सुन्दर कपड़े देखकर बहुत .खुश हुई।

इसके बाद उसका चाचा जब फिर आया तब वह अलादीन को शहर के बाग-बगीचे दिखलाने के लिए ले गया। शहर के बाहर बागों मे घुमाते-फिराते उसे बहुत दूर निकाल ले गया। चलते चलते अलादीन बहुत थक गया था। एक जगह पहुँच कर उसके चाचा ने लकड़ियाँ बटोरने के लिए कहा। अलादीन ने तुरन्त कुछ सूखी लकड़ियाँ

इकट्ठा कर दीं। तब जादूगर ने आग बनाकर उनको जलाया और मन्त्र पढ़कर उसमे धूप डाली। उसके ऐसा करने पर एकाएक उस स्थान पर एक पत्थर का टुकड़ा उमड़ आया। यह देखकर अलादीन बहुत डर गया। तब उसके चाचा ने कहा, डरो नही, तुम शीघ्र ही मेरे मन्त्र-बल से धनवान बन जाओगे। यह कहकर उसने अलादीन से पत्थर उठाने को कहा।

धन मिलने की आशा से अलादीन ने पत्थर उठा लिया। उसके उठाते ही वहाँ एक सुरग निकल आई। उसके चाचा ने कहा—बेटा, तुम इस सुरग मे उतर जाओ। आगे जाने पर तुमको एक दालान मिलेगा, जहाँ से तुम्हे तीन घर दिखाई देगे। उन घरो मे अपार धन भरा हुआ है। पर तुम उसकी ओर निगाह न करना। उन घरों से होते हुए बाग मे चले जाना। वहाँ तुमको एक जगह पाँच सीढियाँ मिलेंगी। उन पर चढ जाना। ऊपर तुमको एक चिराग दिखाई देगा। उसका तेल गिरा देना और बत्तियाँ फेक देना, फिर उस चिराग को लेकर लौट पड़ना। लौटती बार तुम बाग से इच्छानुसार फल ले आ सकते हो। खबरदार! सावधानी से काम करना।

अलादीन सुरग मे उतर गया और जादूगर के कहने के अनुसार जाकर चिराग को उठा लिया। लौटती बार उसने बाग के वृक्षों के बहुत-से फल तोड़कर अपनी जेबों मे भर

लिये। वे फल नहीं, किन्तु रत्न और मणियाँ थीं। ये सब लेकर अलादीन सुरंग के मुँह के पास आया। उसने अपने चाचा को पुकार कर ऊपर उठा लेने को कहा। उसके चाचा ने कहा कि पहले वह चिराग मुझे दे दो तब फिर तुझे ऊपर खींच लूं। पर अलादीन दोनों हाथों में हीरा-मोती लिये था। उसने कहा—मेरे हाथ खाली नहीं हैं। ऊपर आने पर चिराग दूँगा। पहले मुझे बाहर खींच लो। पर उसका चाचा चिराग पहले लेना चाहता था। और जब उन दोनों में बड़ी देर तक हुज्जत होती रही तब जादूगर ने नाराज़ होकर मन्त्र-बल से सुरंग का द्वार बन्द कर दिया और वह वहाँ से चला गया।

अब अलादीन को अपनी दशा का ज्ञान हुआ। उसकी आँखों के आगे अँधेरा छा गया। तीसरे दिन भूख-प्यास के मारे वह ईश्वर का नाम ले ले हाथ-पैर पटकने लगा। संयोगवश उसके हाथ की अँगूठी जो जादूगर ने उसे पहना दी थी पत्थर में रगड़ खा गई। तुरन्त एक भयंकर देव उसके सामने आ खड़ा हुआ। उसने अलादीन से कहा—जो व्यक्ति यह अँगूठी पहनता है उसका मैं आज्ञाकारी हूँ। आपकी क्या आज्ञा है?

देव की बात सुनकर अलादीन बहुत खुश हुआ। उसने कहा—यदि ऐसा है तो तुम मुझको इस सुरंग से बाहर निकाल दो। उसके ऐसा कहते ही ऊपर की धरती फट गई

और देव ने उसे उठाकर बाहर रख दिया और अन्तर्धान हो गया।

बाहर आकर अलादीन ने ईश्वर को धन्यवाद दिया और वहाँ से अपने घर की राह ली। जब वह घर पहुँचा तब उसकी मा उसे आया देखकर बड़ी प्रसन्न हुई। अलादीन ने कहा—मैं तीन दिन का भूखा हूँ मा। जल्दी कुछ खाने को दे। मा ने उसी समय कुछ खाने को ला दिया। कुछ खाने और पानी पीने से अलादीन स्वस्थ हुआ। उसने कहा—मा, वह आदमी मेरा चचा नहीं था। वह जादूगर था। और मुझे मार डालना चाहता था। फिर उसने उससे सारा हाल बता दिया। उसकी मा को बड़ा सोच हुआ। उसने ईश्वर को बार बार धन्यवाद दिया और उस जादूगर को बहुत भला-बुरा कहकर उसने अलादीन से कहा—भगवान् की दया से तेरे प्राण बच गये। अब भूलकर ऐसे आदमी के फेर में न पड़ना। थोड़ी देर तक अलादीन ने मा से बातचीत की। इसके बाद वह कई दिन का जगा होने से जल्द सो गया।

दूसरे दिन सोकर उठते ही अलादीन ने अपनी मा से खाने को माँगा। उसकी मा ने दुःखी होकर कहा—बेटा, घर में खाने को कुछ भी नहीं है। बाजार जाकर सूत बेचकर कुछ लिये आती हूँ। अलादीन ने कहा—कल मैं जो चिराग लाया हूँ। उसे ला दो। उसकी कीमत से आज दोनों समय का काम चल जायगा।

अलादीन की मा चिराग ले आई। उसे मैला देखकर वह उसको बालू और पानी मे साफ करने लगी। चिराग मे रगड़ लगते ही एक भयङ्कर देव अलादीन की मा के सामने आकर खड़ा हो गया। उसने कहा—मैं इस चिराग के मालिक का सेवक हूँ। क्या करने की आज्ञा है। अलादीन की मा उसको देखते ही बेहोश हो गई थी। परन्तु अलादीन नही डरा। वह सुरंग मे एक ऐसा ही देव देख चुका था। अपनी मा के हाथ से चिराग लेकर उसने देव से कहा—मैं बहुत भूखा हूँ। कहीं से खाने को ला दो। क्षण भर मे ही वह देव चाँदी के थालो मे तरह तरह का भोजन ले आया और उसको एक मेज पर रखकर अन्तर्धान हो गया।

इतने मे अलादीन की मा होश मे आ गई। अपने सामने चाँदी के थालो में बढ़िया भोजन रक्खा देखकर वह बहुत चकित हुई। अलादीन ने कहा—आओ भोजन करो। मैं सारा हाल बताता हूँ। उन्होंने .खूब अच्छी तरह भोजन किया। जब अलादीन की मा को चिराग के देव की बात मालूम हुई तब उसने कहा—बेटा, तो मैं यह सब नही छुऊंगी। और तू भी इन देवो के फेर में न पड। अलादीन ने कहा—मा, अब मैं इनकी महिमा जान चुका हूँ। इनसे मैं अपना बड़ा काम निकालूँगा। अपने बेटे के मुँह से यह बुद्धिमानी की बात सुनकर अलादीन की मा चुप हो रही।

बचा हुआ भोजन अलादीन और उसकी मा ने दूसरे दिन तक खाया। इसके बाद बर्तन बेचकर काम चलाया गया। कुछ समय तक उन दोनों का समय इसी तरह व्यतीत हुआ। चिराग रगड़ कर अलादीन जब देव को बुलाता तभी उसको बढ़िया से बढिया भोजन मिल जाता।

कुछ दिनो के बाद अलादीन को चेत हुआ और उस चमत्कारी चिराग से लाभ उठाने को उसने निश्चय किया। उसने चिराग के देव की सहायता से अपने नगर के राजा को अपने वश मे कर लिया, जिससे राजा ने खुशी खुशी अपनी राजकुमारी का उसके साथ विवाह कर दिया।

अब अलादीन के दिन बड़े सुख के साथ बीतने लगे। उस चिराग की बदौलत उसके पास अपार सम्पत्ति हो गई थी। उसने अपने रहने के लिए एक सुन्दर महल बनवा लिया था। उसमे वह बड़े ठाट-बाट से रहता था।

उधर अफ्रीका का वह जादूगर अपने घर चला गया। कुछ दिनो के बाद उसे अलादीन का हाल जानने की इच्छा हुई। उसने अपने मन्त्र-बल से विचार कर देखा तब उसे मालूम हुआ कि अलादीन जीता-जागता है और उस चिराग की बदौलत राजसुख का भोग कर रहा है।

जादूगर के आग ही तो लग गई। उसने कहा कि जिस चिराग के लिए मुझे इतनी साधना करनी पड़ी उसका फ़ायदा एक गँवार छोकड़ा उठा रहा है। मैं उसको इस चालाकी के

लिए अवश्य दण्ड दूँगा। वह उसी समय चीन देश को चल पड़ा। वहाँ पहुँच कर उसने उस शहर मे अलादीन के घर की खोज की। अलादीन के घर को देखकर उसको निश्चय हो गया कि यह करतूत उसी चिराग की है। अपने मुकाम को लौटकर उसने गणना करके मन्त्रबल से जान लिया कि वह चिराग उसी मकान मे रक्खा है। यह जान कर जादूगर को बड़ी ख़ुशी हुई।

एक दिन जादूगर को लोगों से मालूम हुआ कि अलादीन आठ दिन के लिए शिकार खेलने गया है। यह सुनकर वह एक चिराग बनानेवाले की दूकान मे गया और उससे ताँबे के बारह चिराग बना देने को कहा। अगले दिन उसने जाकर वे चिराग लिये और एक टोकरी मे सजाकर वह उन्हे बेचने चला। जब वह अलादीन के मकान की सड़क पर पहुँचा तब उसने आवाज लगाई कि 'जो कोई अपना पुराना चिराग नये से बदलना चाहे, बदल ले।' उसकी यह बेवकूफी की आवाज़ सुनकर और उसका वेशभूषा देखकर लड़कों ने उसे पागल समझा। उन्होंने उसको घेर लिया और वे उसके पीछे पीछे हा हू करते और ताली पीटते चलने लगे। उनका यह शोरगुल अलादीन के मकान के भीतर जा पहुँचा। उसे सुनकर अलादीन की स्त्री ने दासी को बाहर भेजकर उसका पता लगाया। जब दासी ने आकर कहा कि एक आदमी पुराने चिराग के बदले मे नया चिराग दे रहा है। लड़के उसे पागल समझ कर चिढ़ा रहे हैं। दासी की

बात सुनकर दूसरी दासी ने अलादीन की स्त्री से कहा—कारनिस के ऊपर एक पुराना चिराग रक्खा है। अगर आप कहें तो उसे नये चिराग से बदल लाऊँ। यह वही चमत्कारी चिराग था। परन्तु इसका महत्त्व उसे नहीं ज्ञात था। दासी उसकी आज्ञा से चिराग बदल लाई।

उस चमत्कारी दीपक को पाकर वह जादूगर वहाँ से नौ दो ग्यारह हुआ। शहर के बाहर जाकर उसने एक सुनसान स्थान मे उस चिराग को जमीन पर रगड़ दिया। तुरन्त देव प्रकट हो गया। उसने पूछा—क्या आज्ञा है? मैं इस चिराग के स्वामी का सेवक हूँ। जादूगर ने कहा—राजधानी में जो तुमने महल बनाकर तैयार किया है उसको और मुझको मेरे देश के मेरे शहर मे पहुँचा दो। देव ने अलादीन के महल और उस जादूगर को अफ्रीका के उसके शहर मे तुरन्त पहुँचा दिया।

इसके दूसरे दिन जब चीन का राजा सोकर उठा और उस अलादीन का महल नहीं दिखाई दिया तब उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। जब वह कुछ भी निश्चय न कर सका तब उसे बड़ी चिन्ता हुई। उसने मन्त्री को बुलाकर पूछा। मन्त्री भी आश्चर्य करने लगा। अब राजा को अलादीन पर बड़ा क्रोध हुआ और उसने उसी क्षण उसे पकड़ लाने को सवार भेजे। सवारो की अलादीन से मार्ग मे ही भेंट हो गई। वह शिकार से लौटा आ रहा था। सिपाहियो के सरदार ने असल बात छिपाकर उससे कहा कि महाराज ने आपको याद किया है और

हम लोग आपको बुलाने आये हैं।' जब वह राजधानी के समीप पहुँचा तब सिपाहियों ने उसको बाँध लिया। उन्होंने कहा कि महाराज ने तुमको बाँध कर ले आने का आदेश किया है।

जब सैनिक अलादीन को बाँधकर राजमार्ग से होकर ले चले तब नगरवासियों को बड़ा आश्चर्य हुआ। अलादीन अपने उदार व्यवहार से बहुत लोकप्रिय हो गया था। अतएव उसके पीछे धीरे-धीरे एक बड़ी भारी भीड़ इकट्ठा हो गई थी और लोग उत्तेजित हो उठे थे। प्रजाजनों को क्रुद्ध देखकर राजा को उसे प्राणदण्ड देने का साहस न हुआ। अलादीन ने कहा—महाराज, ऐसा कौन-सा अपराध मैंने किया है? मुझे आप प्राणदण्ड क्यों देना चाहते हैं? महाराज ने क्रोध से कहा—विश्वासघाती, मेरी पुत्री को तूने क्या किया? उसको जल्दी मेरे पास ले आ, नहीं तो तेरी खैर नहीं। अलादीन ने कहा—मैं ख़ुद नहीं जानता। लेकिन अगर मुझे चालीस दिन की छुट्टी मिले तो मैं जाकर खोज करूँ। राजा करता क्या? उसने अलादीन की प्रार्थना मंजूर कर ली।

अलादीन लगातार तीन दिन तक शहर का चक्कर लगाता रहा। परन्तु उसे न तो अपने महल का, न अपनी स्त्री का कोई पता मिला। अन्त मे निराश होकर वह उस शहर से चला गया। उसे अपनी इस अवस्था से बड़ा दुःख हुआ। यहाँ तक कि वह नदी में डूब मरने को तैयार हो गया। वह जब नदी मे डूबने जा रहा था तब उसके किनारे पर पैर

फिसल जाने से गिर पड़ा।" गिरने से उसकी उसी अँगूठी मे रगड़ लग गई। तुरन्त एक देव आ खड़ा हुआ। उसने आते ही कहा। क्या आज्ञा है?

देव को देखकर अलादीन बहुत प्रसन्न हुआ। उसने कहा—मैं चाहता हूँ कि मेरा महल जहाँ का तहाँ फिर आकर खड़ा हो जाय। देव ने कहा—यह काम चिराग़ का ही देव कर सकता है। अलादीन ने कहा—तो फिर तुम मुझे मेरे उस महल में ही पहुँचा दो। देव ने उसे अफ्रीका मे उस महल के पास पहुँचा दिया। उस समय रात थी। परन्तु उसे चारों ओर से देखकर वह तुरन्त पहचान गया।

प्रश्न

१—जादूगर ने अलादीन को मोहरें क्यों दीं?

२—अलादीन को अँगूठी के देव से सहायता कैसे मिली?

३—अलादीन को चिराग़ की करामात कैसे मालूम हुई?

४—राजा ने अलादीन को क्यों क़ैद करवा लिया?

११—अलादीन और चमत्कारी चिराग़ (२)

दूसरे दिन सबेरे उठने पर अलादीन महल के आस-पास टहलने लगा। इतने मे राजकुमारी की एक दासी की उस पर निगाह पड़ गई। अलादीन को पहचान कर उसने इसकी खबर राजकुमारी को दी। राजकुमारी ने दासी को भेजकर गुप्त द्वार से उसे महल के भीतर बुला लिया। अलादीन को

देखकर राजकुमारी बड़े प्रेम से मिली। दोनो मिलकर प्रेम के आँसू बहाने लगे। अन्त में जब अलादीन ने कारनिस पर रक्खे हुए चिराग की बात पूछी तब राजकुमारी ने उसके बदले जाने का सारा हाल कह सुनाया। उसने कहा—तब मुझे उस चिराग़ का चमत्कार नहीं मालूम था। अलादीन ने पूछा—वह दुष्ट, चिराग को कहाँ रखता है। राजपुत्री ने कहा—वह तो उसे सदा छाती में बाँधे रहता है।

अलादीन ने सोच कर कहा—चिराग के हाथ में आने का अब एक ही उपाय है। आज तुम उसे शराब पिलाकर बदहवास कर दो। इस प्रकार जब वह काबू में आ जाय तो शराब में मिलाकर मेरी पुड़िया उसे पिला दो। सब काम बन जायगा। वह पुड़िया मैं तैयार करके तुमको दूँगा। राजकुमारी राजी हो गई। अलादीन महल से बाहर हो गया। वह बाजार गया और वहाँ से पिसी हुई दवा की एक पुड़िया ले आया। वह पुड़िया आकर उसने राजकुमारी को दे दी।

अपने स्वामी की आज्ञा से राजकुमारी ने खूब शृङ्गार किया और वह जादूगर के आने की प्रतीक्षा करने लगी। जब जादूगर अपने समय पर उसके पास आया तब उसका रंग ढंग देखकर वह बहुत खुश हुआ। राजकुमारी ने उस दिन उससे खूब प्रेम के साथ बातचीत की और उसके साथ विवाह करने की अपनी इच्छा प्रकट की। इस पर जादूगर बहुत खुश हुआ और उन दोनो ने एक साथ भोजन किया।

राजकुमारी ने जादूगर को अनाप-शनाप शराब पिला दी। और जब वह खूब मदमत्त हुआ तब उसने उसको पुड़िया मिली हुई शराब पिला दी। इसके पीते ही जादूगर पलग पर गिर कर बेहोश हो गया और कुछ ही देर मे उसके प्राण निकल गये।

उसके मरते ही राजकुमारी की आज्ञा से दासियॉ अलादीन को बुला लाई। अलादीन ने आकर उस कमरे से राजकुमारी और दासियों को बाहर कर दिया। फिर एकान्त मे उसने जादूगर की छाती मे बँधे हुए चिराग को निकाल कर उसे उसी क्षण रगड दिया। उसी क्षण उसका देव आ उपस्थित हुआ। उसने कहा—स्वामी का क्या आदेश है? अलादीन ने कहा—जहॉ यह महल पहले था, वही इसको पहुॅचा दो। महल को चीन की राजधानी मे पहुॅचा कर देव चला गया।

दूसरे दिन चीन के राजा जब सबेरे सोकर उठे तब एकाएक उनकी निगाह अलादीन के महल पर जा पडी। उसे बडा आश्चर्य हुआ। वह तुरन्त घोड़े पर सवार होकर अलादीन के महल को गया। वहॉ अलादीन और अपनी कन्या से मिल कर उसे बड़ी खुशी हुई। अलादीन से सारा हाल जानकर राजा को बडी प्रसन्नता हुई। फिर वे जादूगर की लाश को गाड देने का हुक्म देकर अपने महल को चले गये।

अलादीन राजकुमारी के साथ फिर राजसुख भोग करने लगा। परन्तु अभी वह सङ्कटों से एकदम मुक्त नहीं हो गया था।

जादूगर का एक छोटा भाई था। वह भी जादूगर था। पर रहता था अपने भाई से एक अलग दूसरे देश मे। साल मे वह एक बार अपने भाई का कुशल-समाचार मन्त्रबल से जान लिया करता था। उसने सदा की भाँति अपने भाई का हाल जानने की गणना की। उसे अपने भाई की मृत्यु का सारा समाचार मालूम हो गया। उसने उसी क्षण अपने भाई की मृत्यु का बदला लेने का निश्चय किया। वह शीघ्र ही चीन देश को रवाना हुआ।

राजधानी मे पहुँच कर जादूगर के भाई ने अलादीन का हालचाल मालूम किया। अब वह बदला लेने के विचार से नित्य नगर मे चक्कर लगाने लगा। एक दिन घूमते घूमते उसे एक बुढिया का हाल मालूम हुआ। वह बुढिया बड़ा चमत्कार दिखाया करती थी। सिर पर हाथ रख कर सिर का दर्द दूर कर देना तो उसके बायें हाथ का खेल था। सिरदर्द के रोगियो की भीड़ लगी रहती थी। जादूगर ऐसे ही आदमी की खोज में था। वह बदला लेने का उपाय करने लगा।

उसी दिन आधीरात को जादूगर उस बुढ़िया के घर गया। बुढिया पड़ी सो रही थी। उसने म्यान से तलवार निकाल कर बुढिया को जगाया। उसे देखकर बुढिया डर गई। जादूगर ने कहा—अगर तुम अपने कपड़े मुझे पहना दो और अपना-सा मेरा रूप बना दो तो मैं तुझे जान से नहीं

मारूँगा। बुढिया ने झट उसे अपने कपड़े पहना दिये और रँग कर चेहरा भी अपना-सा ही बना दिया। परन्तु जब वह यह ठीक कर चुकी तब उसे जादूगर ने गला घोंट कर मार डाला। उसके बाद वह उसकी लाश तालाब मे फेक आया।

बुढिया का नाम फातिमा था। वह नित्य सबेरे बाहर निकलती और लोग उसका सम्मान करते और आदर दिखाते। अतएव जादूगर भी नित्य की भाँति फातिमा के रूप में बाहर चला। लोगो ने उसे सचमुच फातिमा समझा। नई फातिमा धीरे धीरे अलादीन के पास जा निकली। वहाँ के लोगों ने उनको घेर लिया और वे उसका जयकार करने लगे। शोर सुन कर अलादीन् की स्त्री ने पता लगाया। फातिमा का नाम सुन कर वह बहुत खुश हुई। वह बहुत दिनो से फातिमा का नाम सुन रही थी। उसने फ़ातिमा को भीतर बुलवाया।

नई फातिमा ने भीतर जाकर अलादीन की स्त्री को आशीर्वाद दिया। उसने फातिमा का बड़ा आदर किया। वह बहुत दिनो से फ़ातिमा के दर्शन करना चाहती थी। और उससे बातचीत करके धर्म का ज्ञान प्राप्त करना चाहती थी। अतएव उसने आग्रह के साथ उन्हें अपने घर मे रोक लिया।

फ़ातिमा महल में एक अलग कमरे में ठहराई गई। राजकुमारी ने उनको भले प्रकार भोजन कराया। इसके बाद उनमें बातचीत होने लगी। बीच में मकान का जिक्र आया

और राजकुमारी ने अपने मकान की बड़ी प्रशंसा की। फातिमा ने कहा—बेशक, महल बहुत अच्छा सजाया गया है। परन्तु एक बात की कमी हो गई है। यदि गोल कमरे की छत से बीचो-बीच में रुक नाम के पक्षी का अंडा लटका दिया जाय तो फिर इसकी शोभा का क्या पूछना है। राजकुमारी ने पूछा यह अंडा कहाँ मिलेगा। फातिमा ने कहा, जिसने यह कमरा सजाया है वही वह अंडा भी ला देगा। राजकुमारी चुप हो गई।

जब अलादीन शिकार खेल कर लौटा तब अपनी स्त्री का उदास मुँह देखकर उसने उसकी तबीयत का हाल पूछा। राजकुमारी ने कहा कि इस कमरे की सजावट में एक कमी है। यदि बीचोबीच इसकी छत से रुक नाम के पक्षी का अंडा लटका दिया जाय तो इसकी शोभा बढ़ जाय। अलादीन ने कहा—इसके लिए क्यों उदास होती हो अभी अंडा आया।

अलादीन ने एकान्त में जाकर चिराग को रगड़ दिया। उसी क्षण देव आकर खड़ा हो गया। उसने कहा—क्या आज्ञा है। अलादीन ने कहा—रुक पक्षी का अंडा चाहिए। देव ने गरज कर कहा—अगर यह बात तूने अपने मन से कही होती तो मैं तुमको और इस महल को अभी क्षण भर में जलाकर राख कर देता परन्तु तेरे साथ छल किया गया है, इससे छोड़े देता हूँ। जिस जादूगर को तूने मार डाला है

उसका छोटा भाई बदला लेने आया है। वह तेरे इसी महल मे फातिमा के रूप मे ठहरा हुआ है। सावधान रहना। यह कह कर देव अन्तर्धान हो गया।

अलादीन जानता था कि फातिमा सिर का दर्द सिर पर हाथ रखकर अच्छा कर देती है। देव की बात का विश्वास कर उसने जादूगर के भाई को भी मार डालने का निश्चय किया। वह अपनी स्त्री के कमरे मे गया और उससे कहा कि मेरा सिर बहुत दर्द कर रहा है। यह सुनते ही वह दौड़ी जाकर फातिमा को बुला लाई।

फातिमा को देखकर अलादीन ने कहा—आपने ख़ुद पधारकर आज मेरा घर पवित्र किया है। इस समय मेरा सिर बहुत दर्द कर रहा है। फातिमा ने कहा—आप चिन्ता न करे। मैं अभी अच्छा किये देती हूँ। यह कहकर वह उसकी ओर लपकी, मौक़ा पाते ही अलादीन ने उसके हृदय में ऐसा ताक कर छुरी मारी कि वह वहीं ढेर हो गई।

यह दृश्य देखकर राजकुमारी अवाक् रह गई। उसने कहा—तुमने एक तपस्विनी को इस तरह क्यो मार डाला। अलादीन ने उठकर उसके कपड़े के भीतर से तलवार निकाल कर दिखलाई और कहा कि यह फातिमा नहीं है, किन्तु उसी जादूगर का छोटा भाई है। यह मुझे मारने आया था। उसने उससे सारा हाल बतला दिया जो देव ने कहा था।

राजकुमारी यह हाल सुनकर बड़ी चकित और दुखी हुई। उसने जादूगर की लाश बाहर जंगल मे फेंकवा दी और इस तरह अपने उन दोनो शत्रुओं को मारकर अलादीन निश्चिन्त हो गया। उसका जीवन अपनी स्त्री के साथ सुखपूर्वक बीतने लगा।

कुछ दिनो के बाद चीन का राजा मर गया। राजा के पुत्र नही था, अतएव राजकुमारी उत्तराधिकारिणी हुई। वह अपने पति की सहायता से राज्य का शासन करने लगी, और उन दोनों ने बड़ी न्याय-निष्ठा के साथ प्रजापालन करते हुए राज्य-सुख का उपभोग किया।

प्रश्न

१—अलादीन ने वह चमत्कारी चिराग फिर कैसे पाया ?

२—जादूगर के भाई ने चमत्कारी चिराग प्राप्त करने के लिए क्या उपाय किया ?

३—अलादीन ने जादूगर के भाई को कैसे मारा ?

१२—तुलसीदास

(१)

हो सकता है सूर्य तुम्हारे सम कैसे हे तुलसीदास ?
होने पर भी अस्त, तुम्हारा छाया जग में अतुल प्रकाश।
दिन-दिन अधिकाधिक आलोकित होता है साहित्याकाश,
कविता-कला-कमलिनी का तुम करते हो दिन-रात विकाश॥

(२)

भक्ति-भाव-भाण्डार तुम्हारा विमल उदार हृदय का सार;
था मानो आगार प्रेम का, परम ज्ञान का पारावार।
उसमे ऐसे कज खिले थे सरस अलौकिक सभी प्रकार,
जिनके सौरभ से आमोदित है सारा हिन्दी-ससार॥

(३)

हमको तुमने दिया न केवल काव्य-रत्न का ही उपहार,
रामचरितमानस मे तुमने भरा दर्शनो का भी सार।
भव-सागर तरने को तुमने की थी एक नाव तैयार,
यह सारा ससार उसी पर सुख मे उतर रहा है पार।

(४)

जिसकी कीर्त्ति-कौमुदी का है जग मे फैला हुआ प्रकाश,
उसके ऊपर कुटिल काल भी हो जाता है विफल प्रयास।
कही नही तुम गये, हुआ है भौतिक तनु का केवल नाश,
ग्राम-ग्राम मे धाम-धाम मे अब भी यहाँ तुम्हारा वास॥

प्रश्न

१—तुलसीदास का इतना नाम क्यों है ?

२—तुलसीदास का सर्वश्रेष्ठ ग्रन्थ कौन-सा है ?

३—सिद्ध करो कि तुलसीदास जी मर कर भी अमर हैं।

४—तीसरे छंद का अर्थ लिखो।

था। नासिरुद्दीन के अक्षर भी बहुत सुन्दर होते थे, इससे उसकी लिखी हुई पुस्तकें बहुत महँगी बिकती थीं।

चाचा की मृत्यु के बाद उसके मन्त्रियों ने नासिरुद्दीन को कारागार से मुक्त करके सिंहासन पर बैठाया। सुलतान होने पर भी उसके स्वभाव मे तनिक भी परिवर्तन न हुआ। उसकी जीविका का साधन भी पहले ही का-सा रहा, वह सरकारी रुपयो मे से अपने खाने-पीने के लिए कभी एक पैसा भी नही लेता था। वह कहा करता था कि ये रुपये जो प्रजा के हैं, उसी की भलाई के लिए इनका उपयोग होना चाहिए, मेरा काम तो केवल इनकी रक्षा करना है।

दूसरे मुसल्मान सम्राटो की भाँति नासिरुद्दीन ने बहुत-सी स्त्रियो के साथ विवाह नहीं किया था। उसके केवल एक ही स्त्री थी। वह भी पति की भाँति दयालु, परिश्रमी तथा सहनशील थी। नासिरुद्दीन अपनी पत्नी को बहुत चाहता था, परन्तु विलासिता की ओर उसे कभी नही झुकने देता था। एक बार भोजन बनाते समय उसका हाथ जल गया। पति के पास जाकर उसने एक दासी नियुक्त करने के लिए प्रार्थना की और कहा कि घर के सभी कार्य अपने हाथ से करने मे मुझे बड़ा कष्ट होता है। सुलतान ने बड़े कोमल शब्दों में कहा कि मै एक निर्धन व्यक्ति हूँ, नौकर रखने की शक्ति मुझमें नही है। अपना कार्य अपने हाथो से ही करना उचित है। ईश्वर तुम्हारे परिश्रम का फल देंगे।

नासिरुद्दीन ने इक्कीस वर्ष तक राज्य किया। इतने बड़े साम्राज्य का अधिकारी होकर ऐसा सरल जीवन किसी-किसी ने ही बिताया होगा। ऐसे कर्त्तव्य-निष्ठ और न्याय-परायण राजा विरले ही हुआ करते हैं।

दूसरों की आत्मा को कष्ट देना नासिरुद्दीन को तनिक भी नहीं पसन्द था। एक बार उसने अपनी एक हस्त-लिखित पुस्तक एक विद्वान् को दिखाई। उसने कुछ अशुद्धियाँ निकालीं, जो वास्तव में अशुद्धियाँ नहीं थीं। नासिरुद्दीन ने पहले तो उसे प्रसन्न करने के लिए उसके इच्छानुसार संशोधन कर दिया, परन्तु उसके चले जाने पर फिर से उसे ज्यों का त्यों बना दिया।

नासिरुद्दीन की न्याय-परायणता का एक उदाहरण देखिए। प्रयाग के समीप आर्गल नाम का एक छोटा-सा राज्य था। वहाँ के राजपूत राजा गौतम बड़े ही साहसी तथा वीर थे। उन्होंने सुलतान को कर देना अस्वीकार कर दिया था। दिल्ली की सेना ने आर्गल-राज्य पर आक्रमण किया। किन्तु गौतम के अद्भुत पराक्रम के सामने उसे मुँह की खानी पड़ी।

इस घटना के थोड़े ही दिन बाद गौतम की रानी गंगा जी स्नान करने गई थी। उस समय अयोध्या का शासन-कर्त्ता वहीं रहा करता था। जब उसने अपनी लड़कियों से रानी का हाल सुना तो बहुत-से योद्धाओं को लेकर उसने तुरन्त

ही उन्हे घेर लिया। उस वीर महिला ने निर्भीक होकर उसे बहुत धिक्कारा, और कहा—"रे नीच! मै जिस वीर-शिरोमणि की पत्नी हूँ, उससे हार कर तू मुझ असहाय स्त्री पर अपना पराक्रम दिखाने आया है! क्या यहाँ कोई भी राजपूत नहीं है जो आकर इस कुलाङ्गार से अपने जातीय सम्मान की रक्षा करने मे मेरी सहायता करे!"

रानी की इन बातो को सुनते ही अभयचन्द्र और निर्भयचन्द्र नामक दो युवक सेना-सहित पहुँच गये। दोनो ओर से भयङ्कर संग्राम छिड़ गया। बहुत-से लोग मारे गये। इतने मे राजा गौतम भी जा पहुँचा। उसे देखते ही मुसलमानो की सेना छिन्न-भिन्न हो गई। शासक के इस दुर्व्यवहार का हाल सुनकर नासिरुद्दीन बहुत लज्जित हुआ और उसने तुरन्त ही उसे पदच्युत कर दिया।

नासिरुद्दीन अपनी दयालुता, सज्जनता तथा न्याय-परायणता के लिए भारत के इतिहास मे सदा अमर रहेगा। ऐसे परिश्रमी तथा नम्र राजा बहुत कम हुआ करते है।

प्रश्न

१—नासिरुद्दीन में कौन-सा मुख्य गुण था? विस्तार के साथ बताओ।

२—वह कोई दास क्यों नहीं रखता था? इससे उसे क्या क्या कठिनाइयाँ हुई? क्या तुम्हारी समझ में उसका ऐसा करना ठीक था?

३—अयोध्या के शासक के व्यवहार से नासिरुद्दीन क्यों लज्जित हुआ था ?

४—निम्नलिखित वाक्य में संज्ञा तथा क्रिया की शब्द-निरुक्ति करो :—

"कुछ दिनों के बाद उसे सन्देह हुआ कि कहीं प्रजा की सहायता से नासिरुद्दीन मुझे सिंहासन से हटा न दे, इस भय से उसने उसे तथा उसकी पत्नी को कारागार में डाल दिया।"

५—हेतुहेतुमद्भूत तथा आसन्नभूत क्या है ? उदाहरण देकर समझाओ।

६—नासिरुद्दीन के सम्बन्ध में तुम क्या जानते हो ? संक्षेप में तथा सरल भाषा में लिखो।

७—एक ऐसा वाक्य बनाओ जिससे आधार और आधेय क्या है, यह स्पष्ट हो जाय।

१४—खिला हुआ फूल

अहो कुसुम ! कमनीय कहो क्यों फूले नहीं समाते हो ?
कुछ विचित्र ही रङ्ग दिखाते मन्द मन्द मुसकाते हो ॥ १ ॥
हम भी तो कुछ सुने किसलिए इतना है उल्लास तुम्हें ?
बात बात में खिल खिल कर तुम किसकी हँसी उड़ाते हो ॥ २ ॥
कैसी हवा लगी यह तुमको, क्षणिक विभव में भूलो मत।
अभी सवेरा है कुछ सोचो, अवसर व्यर्थ गवाते हो ॥ ३ ॥

रूप, रङ्ग; रस जिसके बल पर पैर न भू पर तुम रखते।
है दम भर का दृश्य जगत में—क्यों इतना इतराते हो ॥ ४ ॥
भौंरा रसिक पास भी आकर करता है प्रार्थना अगर;
तो क्यों नहीं प्रेम से मिलकर अपना उसे बनाते हो ॥ ५ ॥
भौरा काला है, कुरूप है, हम हैं सुन्दर—मत समझो।
उस वसन्त का है यह साथी जिसके तुम कहलाते हो ॥ ६ ॥
कर उपभोग और सब तुमको इधर-उधर रख देते हैं।
पर यह सिर धुनता है जब तुम दले-मले कुम्हालते हो ॥ ७ ॥
"कोमल हूँ, कमनीय-कलेवर, देवों के मन भाया हूँ।
रसिकों का सिङ्गार सहज हूँ" यह जो मन में लाते हो ॥ ८ ॥
"रसिक और रसिकायें मुझको आदर से अपनावेंगी।
बना गले का हार रहूँगा"—यही सोच इतराते हो ॥ ९ ॥
तो इस पर भी तुम्हें फूलना या इतराना उचित नहीं।
धन्यवाद दो झुक कर उसको जिसका रूप दिखाते हो ॥ १० ॥

प्रश्न

१—१ से ५ तक के छंदों का अर्थ लिखो।

२—भौंरे को तुम फूल का वास्तविक प्रेमी कैसे कह सकते हो?

३—इस कविता से तुम्हें क्या उपदेश मिलता है?

१५—कलकत्ता

दिल्ली, आगरा, लाहौर, लखनऊ के गौरव-काल में कलकत्ता केवल तीन छोटे छोटे ग्रामों का समूह-मात्र था। परन्तु देखते देखते कुछ ही वर्षों में उसने इतनी उन्नति की कि आज ब्रिटिश-साम्राज्य में लन्दन नगर के बाद कलकत्ते का ही नम्बर है। पहले पहल सन् १७७२ मे यह नगर अँगरेज़ी भारत की राजधानी बनाया गया। साथ ही यह बङ्गाल-प्रान्त की भी राजधानी बना रहा। छोटी बड़ी दोनों सरकारो के सभी दफ्तर—हाईकोर्ट, विश्वविद्यालय तथा अन्यान्य बहुतेरी सस्थायें—यही स्थापित किये गये। अतएव इसकी जन-सख्या बड़े वेग से बढ़ने लगी। जब तक यह नगर भारतवर्ष की राजधानी रहा, यहाँ गवर्नर-जनरल निवास करते रहे। परन्तु अब यहाँ केवल प्रान्तीय गवर्नर ही निवास करते हैं।

कलकत्ते की उन्नति का एक प्रधान कारण इसकी भौगोलिक स्थिति है। यद्यपि ऊपर कही हुई बातें ही इसकी उन्नति के लिए पर्याप्त थी, चाहे यह मरुभूमि मे ही क्यो न स्थित होता, तो भी इसकी विलक्षण उन्नति का एक मुख्य कारण उसका वाणिज्य है। इसकी भौगोलिक स्थिति से लाभ उठाकर इस नगर के वाणिज्य ने अपनी उन्नति की और साथ ही साथ इसे भी एक विशाल नगर बना दिया। वाणिज्य की दृष्टि से बम्बई, मद्रास और करॉंची की भौगोलिक स्थिति अच्छी नहीं। बम्बई को

'पश्चिमीघाट' नाम की पर्वत-श्रेणी शेष भारत से पृथक् करती है और मदरास उस कर्नाटक प्रदेश से घिरा हुआ है जो अकाल का आगार माना गया है। करॉंची के समीपवर्त्ती देश के भीतर दूर दूर तक मरुभूमि है। इन कारणों से इन नगरों की उन्नति मे बाधा पहुँचती है। पर कलकत्ते की बात न्यारी है। एक तो इसके पश्चिम मे भारत के सीमा-प्रान्त तक मैदान ही मैदान है, यहॉं की पृथ्वी, सुजला-सुफला है। द्वितीय यह कि यह भारत के, विशेषकर उत्तरी भारत के, मुख्य मुख्य स्थानों से रेलों और सड़कों से जुडा हुआ है। जलमार्ग भी सुविधा-जनक है। कई एक नदियाँ प्राकृतिक जलमार्ग बनाये हुए हैं। इस कारण माल-असबाब लाने मे बहुत सरलता होती है। समुद्र के समीप होने के कारण यह एक प्रसिद्ध बन्दरगाह है। देश की उपज का बहुत बडा भाग यहीं से अन्य देशो को भेजा जाता है।

इस नगर मे लोहा, कागज, रस्सी, शक्कर और विशेष-कर सन कातने के कारखाने हैं। इसके समीप रानीगञ्ज की प्रसिद्ध कोयले की खान होने के कारण यहॉं का व्यवसाय बहुत बढ गया है। इस विषय में बम्बई के बाद इसी का स्थान है। सन के कातने और बोरे बनाने का व्यवसाय तो यहॉं सबसे बढा-चढा है। साल भर मे लाखो मन सन यहॉं काता जाता है और बोरे बनाकर लगभग ससार के सभी

देशों को भेजा जाता है। सन बङ्गाल-प्रान्त में ही बहुतायत-से उत्पन्न होता है।

कुछ झोंपड़ों से इस नगर का इतना वैभवपूर्ण हो जाना सचमुच आश्चर्यजनक है। इसका इतिहास सन् १६९० की २४ अगस्त से प्रारम्भ होता है। इसी तारीख को ईस्ट इण्डिया कम्पनी
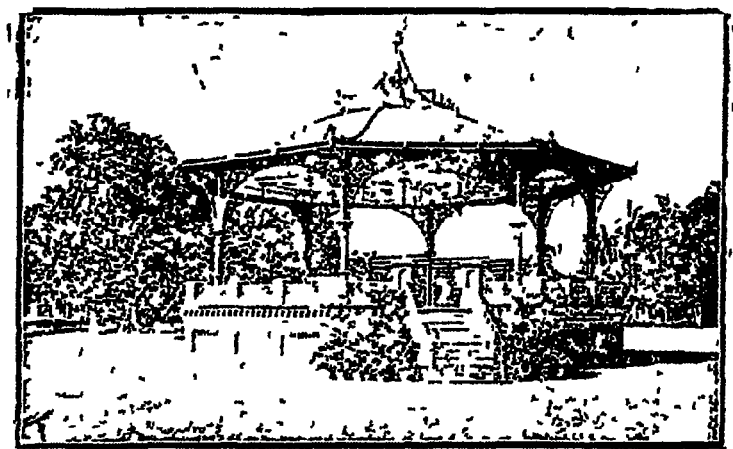
कम्पनी बाग

के प्रसिद्ध कर्मचारी जाब चार्नक स्थायी रूप से यहाँ आकर ठहरे थे। इससे पहले भी कुछ अँगरेज यहाँ आकर दो तीन बार बसे थे, पर किसी न किसी कारणवश उनको यहाँ से हटना पड़ता था। परन्तु इस बार जाब चार्नक ने उद्यम तथा धैर्य्य के साथ इस नगर का निर्माण किया, अँगरेजों ने अपनी

बस्ती हुगली नदी के बाये किनारे पर कायम की। वह कलिकता नाम के ग्राम तक फैली हुई थी। इसी छोटे गाँव के चारों ओर बाहर से लोग आ आकर बसने लगे और क्रमशः बस्ती का विस्तार बढने लगा। सन् १६९८ मे अँगरेजो ने सुतानती और गोविन्दपुर नाम के दो गाँव औरङ्गजेब के
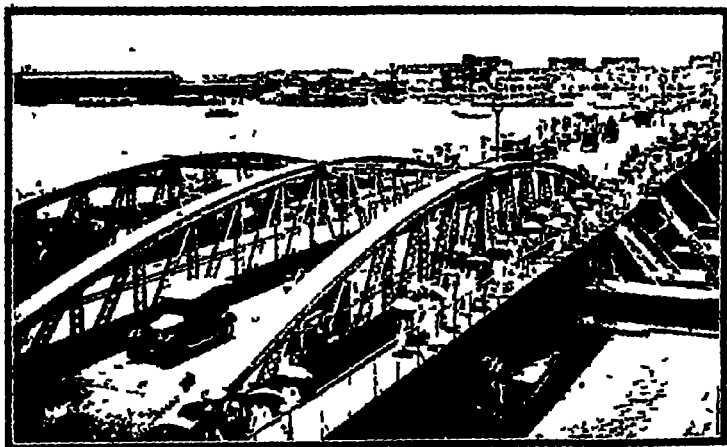
हवड़ा का पुल

पुत्र आजम से मोल ले लिये। कलिकता को मिलाकर ये तीनो ग्राम अब इस बड़ी नगरी के प्रासादो और उद्यानो मे परिणत हो गये हैं। इस नगर के इतिहास मे सन् १७५६ मे एक प्रसिद्ध घटना सङ्घटित हुई थी। इस नगर और यहाँ के फोर्ट विलियम नामक किले को तत्कालीन नवाब सिराजुद्दौला की फौज ने

लूट कर उस पर कब्जा कर लिया था। परन्तु सन १७५७ की जनवरी में वाट्सन और क्लाइव ने इस नगर को फिर अपने अधिकार में कर लिया।

कलकत्ते का मुख्य रेलवे स्टेशन हवडा है। यथार्थ मे यह कलकत्ता से पृथक् हुगली नदी के दाहिने किनारे पर एक अलग नगर है। इसकी जन-सख्या और इसका कारबार खूब बढा चढ़ा है। बम्बई के विक्टोरिया टर्मिनस स्टेशन को छोड कर भारत मे हवड़ा स्टेशन जैसा दूसरा स्टेशन नही है। इस स्टेशन में दस प्लेटफार्म हैं। दिन रात मे न जाने कितनी सवारी तथा मालगाड़ियाँ यहाँ आया-जाया करती हैं। बीसो रेल-कर्मचारियो, सैकडो कुलियों और सहस्रो यात्रियों के कारण यहाँ चौबीसों घण्टे कोलाहल मचा रहता है। प्लेटफार्म से ही मिली हुई सडके हैं। यात्री रेल से उतरते ही सवारी भाड़े पर कर सकते हैं। उन्हे पुल को पार करके पहले नम्बर के प्लेटफार्म तक पहुँच कर सवारी करने की आवश्यकता नहीं। टिकट और माल की जाँच एक स्टेशन पहले लिलुआ मे ही कर ली जाती है। हवडा और कलकत्ते के मध्य मे हुगली का प्रसिद्ध पुल है। बड़े जहाजों के आने के समय इसका एक भाग नदी के एक किनारे को हट जाता है और वे सुगमता से निकल जाते हैं। बहुधा सवेरे ५ या ६ बजे ये जहाज आते जाते हैं। उस समय पुल से आना-जाना बन्द हो जाता है। तब नावो के द्वारा नदी को पार करना पड़ता है।

स्टेशन पर उतरते ही वहाँ की भीड और चहल-पहल से ज्ञात हो जाता है कि इस नगर मे कितना भारी कारबार होता है। प्रात.काल से प्राय: रात्रि के ११ बजे तक सडकों और दूकानो पर मनुष्यो की भीड लगी रहती है। वैसे तो नाटक और सिनेमा के कारण २, ३ बजे तक भी सड़को पर आवागमन होता रहता है। प्रत्येक व्यक्ति अपनी धुन मे लगा रहता है।
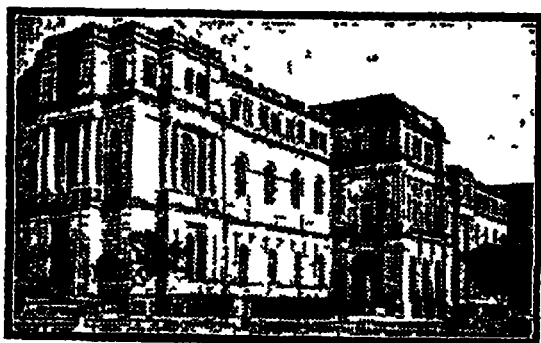
अजायबघर

सवेरा हुआ नही कि सडको पर गाडी, मोटर, ट्रामकार तथा 'रिक्शा' के तांते बँध जाते हैं। यहाँ आलस्य और आलसी को स्थान नहीं। गाडी इत्यादि की घरघराहट और मनुष्यो के कलरव से नगर गूँजा करता है। कभी कभी इस कोलाहल से मन बहुत ही घबरा उठता है। पर यहाँ के निवासी इन सब बातो के अभ्यस्त हो गये हैं, उनको इनसे व्याकुलता नहीं होती।

विक्टोरिया मेमोरियल, अजायबघर, हाईकोर्ट, इम्पीरियल लायब्रेरी, चिड़ियाखाना, कम्पनी बाग़ तथा राजा राजेन्द्र मल्लिक का महल कलकत्ते के दर्शनीय स्थान हैं।

कलकत्ते की शिक्षा-संस्थाये विशेषरूप से उल्लेख योग्य हैं। कलकत्ता-विश्वविद्यालय की स्थापना सन १८५७ मे हुई थी। भारतवर्ष का यह एक उत्तम विश्वविद्यालय है। इसके अतिरिक्त

हाईकोर्ट

यहाँ एक प्रेसीडेन्सी कालेज है। ईसाइयो के तीन कालेज तथा चार अन्य कालेज हैं। इनके अतिरिक्त कई एक हाई-स्कूल और कन्याओ के लिए स्कूल और बेथून कालेज है। यहाँ का मेडिकल कालेज भारतवर्ष में सर्वोत्तम गिना जाता है, इसमे रोगियो की चिकित्सा की जाती है। इन सबकी इमारतें विशेष अच्छी

नहीं हैं। स्थानाभाव के कारण थोड़ी-सी जगह मे दबी-सी खड़ी हैं।

कलकत्ते का वृत्तान्त बड़ा आश्चर्यजनक है। देखने से ही उसका यथार्थ अनुभव हो सकता है। इतने बड़े नगर की स्वच्छता इत्यादि की देखभाल स्थानीय म्युनिसिपल्टी, जिसे कारपोरेशन कहते हैं, भले प्रकार करती है। इसका जन्म सन् १८९९ मे हुआ था। यहाँ की सड़के बहुत चौड़ी और अच्छी दशा मे हैं। धूल नाममात्र को भी नहीं उड़ती। और शहरों मे प्रायः सड़क से एक भी मोटर निकलने से आँख-नाक धूल से भर जाती है। यहाँ की सड़को पर तारकोल का छिड़काव रहता है, अर्थात् सड़क बनाते समय उस पर तारकोल की एक मोटी-सी तह फैला दी जाती है। सूखने पर वह कड़ी और चिकनी हो जाती है। कुछ शौकीन गोरी स्त्रियाँ इस पर पहियेदार जूते पहन कर फिसलती चली जाती हैं। दिन-रात घड़ी की मशीन की भाँति यहाँ काम जारी रहता है। लोगो को मरने का भी अवकाश नही रहता, यद्यपि मरते सभी हैं।

प्रश्न

१—अपने देखे हुए किसी शहर से कलकत्ते की तुलना करो।

२—विश्वविद्यालय का क्या अर्थ है?

३—गौरव-काल, जन-संख्या, वाणिज्य, सुजला-सुफला, कारखाना, प्रासाद, तत्कालीन, अभ्यस्त, ताँते बँध जाना, अवकाश शब्दों का प्रयोग करके उपयुक्त वाक्य बनाओ।

१६—सागर-मंथन

(१)

अत्याचार अनेक दानवों के मनमाने,
जब न अधिक सह सके देवता शांत सयाने।
चेत हुआ तब उन्हें, क्योंकि थे वे बहु ज्ञानी,
और अवस्था हीन उन्होंने अपनी जानी॥

(२)

तज आपस का भेद, एक मत सबने धारा,
गये विष्णु के पास सुनाने संकट सारा।
दिव्य लोक में उन्हें मिले हरि जग के स्वामी,
धरे सच्चिदानन्द रूप, प्रिय अंतर्यामी॥

(३)

लख देवों को विकल शत्रुओं की पीडा से,
हुआ विष्णु को क्षोभ दैत्य-कुल की क्रीडा से।
तब देवों को धैर्य धरा कर प्रभु यों बोले—
(मानों संकट-मुँदे हृदय-पट उनके खोले)॥

(४)

हे देवो, यह नियम सृष्टि मे सदा अटल है,
रह सकता है वही सुरक्षित, जिसमे बल है।
निर्बल का है नही जगत मे कहीं ठिकाना,
रक्षा-साधन उसे प्राप्त हो चाहे नाना ॥

(५)

यद्यपि तुममे बुद्धि, चतुरता, विद्या, नय है,
तो भी तन-बल बिना दे रहा तुमको भय है।
सख्या मे भी नही शत्रुओं से तुम कम हो,
किन्तु सघ-बल-हीन बने असमर्थ परम हो ॥

(६)

अब उपाय है यहीं, एक तुम सब हो जाओ,
भय तज, कर चातुरी, वैरियों को विचलाओ।
कर लो उनसे सधि सुधा का लोभ दिखाकर;
प्राप्त चतुर्दश रत्न करो सागर मँथवाकर ॥

(७)

अपना प्यारा रत्न अमृत तुम सब पी लेना,
असुरो की प्रिय वस्तु वारुणी उनको देना।
सभव है, वे मूर्ख हलाहल ही पी जावे;
जिससे मिटकर आप, न तुमको कभी सतावे ॥

(८)

यद्यपि कर्माधीन सृष्टि-घटना घटती है,
तो भी बन्धन-रज्जु उचित कृति से कटती है।
"मैं होता हूँ साधु-त्राण में सदा सहायक,
तुम सबका भी मैं परोक्ष में हूँगा नायक॥"

(९)

मान ईश-आदेश सुरों ने साहस धारा
एका कर संगठन-कार्य्य का क्रम विस्तारा।
असुरों से मिल कई वनस्पतियाँ मँगवाई,
फिर सागर में सभी उन्होंने शीघ्र गिराईं॥

(१०)

तब मंदर को दण्ड, शेष को रज्जु बनाया;
मथने उनको उठा सिन्धु के मध्य जमाया।
हरि ने बन कर कूर्म दण्ड का भार संभाला,
पूँछ सुरों ने, शीश दानवों ने विषवाला॥

(११)

मथन होने लगा, शेष-विष-ज्वाला फैली,
मुख-आकृति होगई शत्रुओं की अति मैली।
मेघों को फुसकार-पवन ने इधर चलाया,
मेह उन्होंने अमित सुरों पर ला बरसाया॥

(१२)

परम परिश्रम हुआ, बढ़ा देवों मे साहस;
पर दानव निज शक्ति गँवा वैठे हो पर-वस ।
सागर-मथन हुआ अन्त मे पूरा ऐसे;
होते हैं गुरु कार्य्य सिद्ध सङ्कट मे जैसे ॥.

(१३)

निकले चौदह रत्न प्रथम सुरभी कल्याणी;
फिर वारुणी विशुद्ध, कल्पतरु इच्छादानी ।
तब रमा छविमती, चद्र शीतल, सुखकारी;
घातक विष, प्रिय शंख, वाजि, गज, धनु, मणि प्यारी ॥

(१४)

इनके पीछे प्रकट हुई श्री शोभा-सीमा,
रूप-भार से दबा गमन था जिनका धीमा ।
तब प्रकटे सित-वसन वैद्य धन्वन्तरि ज्ञानी;
लिये सुधा का पात्र जिलाने को मृत प्रानी ॥

(१५)

मंथन का उपकरण जहाँ का तहाँ पठाया,
फिर दोनों ने भाग-प्राप्ति का प्रश्न उठाया । -
पर दोनों दल हुए विकल लख विष की ज्वाला;
उनके हित के लिए उसे शिव ने पी डाला ॥

(१६)

श्री ने हरि को वरा, योग्य वर उनको लेखा,
पर असुरों की ओर न धोखे से भी देखा।
कौस्तुभ-मणि भी मिली साथ मे उनको श्री के;
देख दृश्य यह हुए दानवों के मुख फीके॥

(१७)

विष करने को शान्त चन्द्र को शिव ने धारा,
हुआ कल्पतरु धेनु आदि का भी बटवारा।
पर वे लड़ने लगे परस्पर हो मतवाले,
घट अमृत के सहज सुरों ने सब पी डाले॥

(१८)

असुरों से बच, गई अप्सरा इन्द्र-भवन मे,
अमृत पान से हुए अमर सुर गये गगन मे।
पर दैत्यों को चेत हुआ, पछताये मन में;
की न भलाई कभी हाय! हमने जीवन मे॥

(१९)

इस घटना से मिला सुरों को अब वह साहस,
जिससे रक्षित किया उन्होंने अपना सरबस।
निजपन के सब भाव सत्य उनमें यों जागे,
दानव सके न जीत सुरों के रण मे आगे॥

(२०)

यद्यपि शठता-युक्त सबलता है उत्पाती,
पर निर्बलता सदा, सैकड़ों दुख है लाती।
शत्रु किसी के लिए नहीं है उतना घातक,
जितना उसका आप घोर निर्बलता-पातक॥

प्रश्न

१—सागर-मंथन की देवताओं को क्यों आवश्यकता पड़ी ?

२—सागर-मंथन के बाद समुद्र से कितने रत्न निकले ?

३—सुरों असुरों में उनका बटवारा किस प्रकार हुआ ?

१७—तेल की कहानी

तेल के प्रयोग इतने विविध हैं और यह इतने रूपों में दिखलाई पड़ता है कि इसको पहचानना कठिन हो जाता है। वास्तव में इससे दो सौ से अधिक भिन्न पदार्थ बनाये जाते हैं।

हम उस प्रकाश से भली भाँति परिचित हैं जो सबसे उत्तम प्रकार का मोम जलाने से उत्पन्न होता है। प्रकाश के लिए जिस बिजली या गैस का प्रयोग किया जाता है उसमें भी तेल किसी न किसी प्रकार काम आता ही है। प्रत्येक दियासलाई

के सिरे पर मोम लगा रहता है, और उस मोम में भी गुप्त रूप से तेल मौजूद रहता है।

जब हम बाईसिकिल, सीने की मशीन, अथवा मोटरकार के पुर्जों पर तेल लगाते हैं तो वास्तव मे हम लोग एक प्रकार का मोम ही काम मे लाते हैं। पेट्रोल भी मिट्टी के तेल ही से निकाला जाता है। इस प्रकार मिट्टी के तेल के प्रयोग का कोई अन्त नही है। वेसलीन या इसी प्रकार की अन्य वस्तुएँ जो मुँह अथवा शरीर पर लगाई जाती हैं इसी से निकलती हैं और इसी से अनेक प्रकार की रग-बिरगी रोशनाइयाँ बनाई जाती हैं।

पेट्रोलियम के बिना मोटरटायर और रबर की अन्य वस्तुएँ तैयार नही की जा सकती। मिट्टी के तेल की सहायता से चलने-वाले सहस्रों इजन भी इसके बिना रुक जायँगे। इसी की बदौलत मनुष्य वायु का भी स्वामी बन गया है। क्योकि, पेट्रोल-इजन की ही सहायता से लोग उड़ सकते हैं।

अब हम यह पता लगावे कि यह कहाँ से आता है और मनुष्य की सेवा करने के लिए यह किस प्रकार बनाया गया है। प्राचीन समय मे ससार मे बड़े-बड़े जङ्गल थे और उनमे अद्भुत प्रकार के पेड़ थे जो अब नही दिखाई पड़ते। वृक्षों का पतन होने पर उनकी पत्तियाँ और डालियाँ झीलो और नदियो के कीचड़ और मिट्टी में मिल गई। यही कीचड़ या मिट्टी, जो इस समय अत्यन्त परिवर्तित अवस्था मे है और अब तेल कहलाती है।
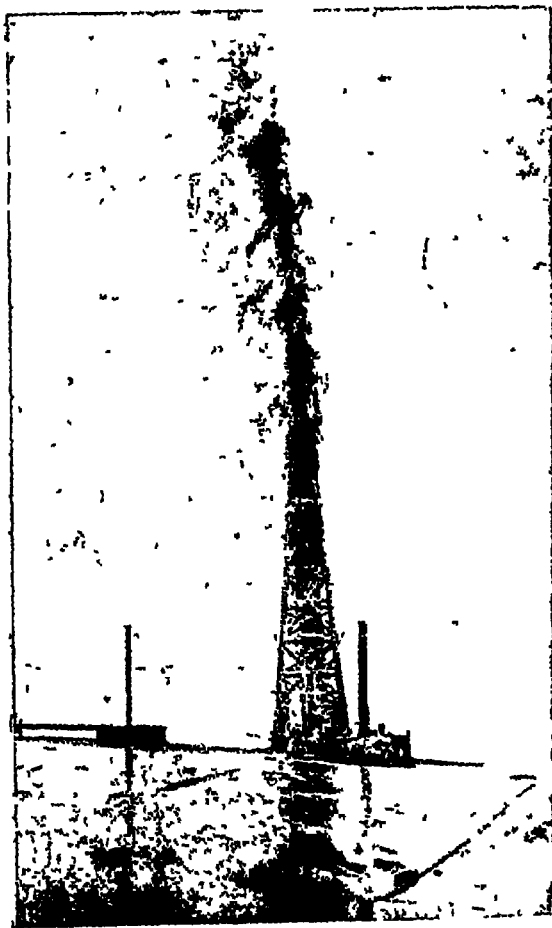
मिट्टी के तेल का कुआँ

जब यह चिकनी मिट्टी उबालनेवाले बर्तनों मे रखकर गरम की जाती है तो इसमें से एक गैस निकलती है। जब हम इस गैस को फिर ठंडा करते हैं तो वह गंदे तेल की अवस्था में परिवर्तित हो जाती है। यह तेल फिर उबाला जाता है, और उससे निकली हुई गैस ठंडी की जाती है। इस प्रकार जो तेल प्राप्त होता है वह काम मे लाने-योग्य होता है।

कुल गैस ठंडी होकर तेल मे परिवर्तित नही हो जाती, परन्तु, वह बेकार भी नहीं होने पाती। 'पेट्रोलियम' शब्द का अर्थ है चट्टान का तेल। यद्यपि वह साधारणतः पृथ्वी की तह मे चट्टानों के बहुत नीचे पाया जाता है, तथापि अतीत काल से लोग उससे परिचित हैं।

यूनानी इतिहास-वेत्ता हमको बैबिलोनियों के निकट के एक गढ़े तथा सिसिली द्वीप मे तेल के एक सोते का पता बतलाते हैं। जापान और चीन के सुरक्षित लेखों से ज्ञात होता है कि वहाँ भी लोगों को चट्टानी तेल का ज्ञान था और प्राचीन काल से उपयोग में लाया जाता था। अमेरिका के आदिम-निवासी रेड इंडियन इसके व्रणपूरक गुण से परिचित थे।

कास्पियन समुद्र के निकटवर्ती स्थानों मे पेट्रोलियम बहुतायत से निकलता है। बहुत समय हुआ, वहाँ मिट्टी के तेल के एक सोते में एकाएक आग लग गई और उसमे प्रकाश दिखाई पड़ने लगा। इस प्रकाश को एक पारसी यात्री ने अचानक एक

सुनसान स्थान मे देखा। पारसी लोग अग्नि की पूजा करते हैं। अतः इस जलते हुए सोते को पवित्र समझ कर उसने उसके निकट एक देवालय स्थापित कर दिया। अब तक वह मन्दिर विद्यमान है, और सहस्रो पारसी वहाँ प्रतिवर्ष तीर्थाटन के हेतु जाते हैं।

ससार मे मिट्टी के तेल के बहुत कम ऐसे कुएँ होगे जो पारसी देव-स्थान के निकटवाले कुएं के समान धीरे-धीरे बहते हो। जिन स्थानों में मिट्टी का तेल पाया जाता है उन्हीं स्थानो मे कुएँ खुदते हैं। पेनसलवेनिया के निवासियो ने पहले-पहल सन् १८६० ईसवी मे मिट्टी के तेल के कुएँ खोदने शुरू किये। पहले ही प्रयास में वे आशा से अधिक सफलीभूत हुए। फिर क्या था? उद्यम-शील और तेल के व्यवसाय की उन्नति चाहनेवाले लोग धीरे-धीरे उस स्थान पर एकत्रित होने लगे और शीघ्र ही कुएँ बहुत सख्या मे तैयार हो गये।

कुआँ खोदते समय मिट्टी का तेल बहुत वेग के साथ हवा में निकलने लगता है। तेल की ऐसी दशा उस गैस के कारण होती है जो बहुत समय से मिट्टी के तेल के साथ दबी हुई थी। इस प्रकार पहले ही छेद मे हवा उसमे से ऊपर उठने लगती है।

साधारणतः सोते मे बहुत-सा मिट्टी का तेल नष्ट हो जाता है। परन्तु, इससे और किसी प्रकार की हानि नहीं होती। यह सभव नही है कि मिट्टी के तेल के कारण चराई के

काम की भूमि का सत्यानाश हो जाय, चौपाये मर जायँ, और अन्य इसी भाँति की हानि पहुँचे। परन्तु, वास्तव में जहाँ मिट्टी का तेल अभी कुछ ही दिनों से निकाला जाने लगा है, वहाँ हरी हरी घास तथा उर्वरा भूमि का अभाव हो जाता है। कभी-कभी जब कुआँ खोदते समय पास ही एक दो सोते भी निकल आते हैं तो इनसे लाभ के बदले हानि ही होती है।

बहुत-से कुओं मे मिट्टी का तेल निकालने का काम दिन-रात जारी रहता है। कुछ कुओं मे तेल तो निकलता है, पर वह बाहर पम्प करके नही निकाला जा सकता, क्योंकि, उसमे कीचड मिला रहता है। ऐसी अवस्था मे मिट्टी का तेल पृथ्वी के धरातल पर ऊपर नली की सहायता से लाया जाता है। यह नली बीस गज लम्बी होती है, और इसके नीचेवाले सिरे मे एक ऐसा छेद लगा रहता है जो मिट्टी के तेल को भीतर लाने के समय खुल जाता है। नली के भर जाने पर जब तेल बाहर निकालने-योग्य हो जाता है तब वह छेद बन्द हो जाता है।

जहाँ मिट्टी का तेल निकलता है वहाँ यदि कोई सोता निकल आवे तो ऐसा उपाय करना चाहिए जिससे तेल का बहुत-सा भाग नष्ट होने से बच जाय। यदि तेल का सोता अधिक वेग से न बहता हो तो उसके ऊपर लोहे का एक प्याला अथवा ढक्कन लगा देने से वह रुक सकता है। फलतः इससे एक तो बहने का वेग कम हो जायगा और दूसरे इससे

तेल एक सुरक्षित स्थान मे रोक लिया जायगा। वैसे तो प्राय: उमड़नेवाला सोता तेज बहता है और अपने स्थान से पत्थरों और चट्टानो के टुकड़ो के ढेर के ढेर बहा ले जाता है। इस कारण, कोई भी ढक्कन इसके प्रवाह को रोक नही सकता। ऐसी दशा मे मिट्टी के तेल को सुरक्षित रखने के सिवा और कुछ उपाय नही किया जा सकता। यदि ऐसा न किया गया तो हवा का झोका इसे इधर-उधर बहा ले जायगा और मिट्टी का तेल बेकार जायगा।

सबसे अधिक सकट की बात तो यह है कि इन सोतो मे बहुत जल्द आग लग जाती है जिससे लौ और काले धुएँ की घनी घटा छाकर हवा मे मिल जाती है। मिट्टी के तेल के जलते हुए छोटे-छोटे सोते प्रत्येक दिशा में उड़ने लगते हैं और रास्ते मे यदि कोई भी जलनेवाली वस्तु मिलती है तो आग लग जाती है।

सोतो से निकला हुआ मिट्टी का तेल, जिसमे मिट्टी तथा पत्थर मिले हुए होते हैं, एक टङ्की मे डाल दिया जाता है। वहाँ मिश्रित मिट्टी और पत्थर उसके नीचे की तह मे जम जाते हैं। तब मिट्टी का तेल नलियो की सहायता से उस स्थान को भेजा जाता है जहाँ उसके साफ करने का प्रबन्ध होता है। उस गन्दे तेल को देखकर कोई भी विश्वास नही कर सकता कि इसी से वह तेल तैयार होगा जिसे हम प्रति-दिन बाज़ार मे खरीदते है। कुएँ से निकलते समय उसका

रंग मटमैला, हरा, या पीला होता है, और उसमे से बदबू निकलती है।

पहले सारा गन्दा तेल साफ किया जाता था। किन्तु कोयले की जगह अब करोड़ो मन गन्दे मिट्टी के तेल का भाप से चलनेवाले एंजिन के चूल्हे और जहाजों में प्रयोग किया जाता है। आज-कल नये जङ्गी जहाज इस मिट्टी के तेल के सिवा और कुछ नही जलाते हैं।

जब सोतों से निकाला हुआ यह मिट्टी का तेल साफ करने-वाले स्थान पर पहुँचाया जाता है तो केवल एक ही बार नही, बल्कि कई बार उबाला जाता है। कुछ समय तक गरम करने से उसमे से एक गैस निकलती है, जिसको बाद में ठडा कर लेते हैं। इसी को पेट्रोल या मोटर चलानेवाला तेल कहते हैं। उसको थोड़ा और गरम करे तो कुछ काल के अनन्तर वह तेल और साफ हो जाता है। उसको अमेरिकावाले 'किरोसीन' कहते है। यही तेल पम्पो मे जलाने के लिए सबसे अच्छा समझा जाता है। इसके बाद वे तेल निकलते है जो सिर पर या बदन मे लगाये जाते हैं। सबसे अन्त मे मोम मिलता है, जिससे मोमबत्ती बनाई जाती है॥ इन तेलों के अतिरिक्त गढे तेल को साफ़ करते समय कोलतार और अन्य उपयोगी रासायनिक वस्तुएँ प्राप्त होती है, जिनका उपयोग कृषक लोग अपने खेती के कार्य्य में करते हैं।

मिट्टी के तेल के व्यवसाय की प्रारम्भिक अवस्था मे तेल को एक स्थान से दूसरे स्थान में ले जाने में जो कठिनाइयाँ उपस्थित होती थी उनको दूर करने के लिए अमेरिका के चतुर व्यवसायियों ने अन्त मे एक उपाय ढूँढ़ निकाला। नल लगा कर उन्होने सारी कठिनाई को दूर कर दिया। जहाँ मिट्टी का तेल साफ किया जाता है और जहाँ यह बिकता अथवा प्रयोग में लाया जाता है—इन दोनो स्थानो के बीच मे उन्होने नल लगा दिये और उन्ही नलो के द्वारा तेल पहुँचा दिया जाता है। अब जहाँ मिट्टी के तेल का व्यवसाय अधिक है वहाँ नल ही के द्वारा काम लिया जाता है।

मिट्टी के तेल को एक स्थान से दूसरे स्थान तक ले जाने मे अन्य विषयो का भी विशेष प्रबन्ध करना होता है। रेलो मे मिट्टी का तेल ले जाने के लिए एक विशेष प्रकार का जहाज़ बनाया जाता है। वास्तव मे यह एक बहुत बड़े तालाब के समान होता है जिसमें नलो-द्वारा बहुत थोड़ी ही देर मे तेल भर दिया जाता है।

इन सब साधनों की सहायता से न केवल उन्ही लोगो का, जो कि मिट्टी का तेल निकालते है, बल्कि तेल के सौदागरों तथा साधारण जनता का भी बहुत उपकार हुआ है। रूस मे गेहूँ की खेती करनेवालो और तिब्बतवालो को मिट्टी का तेल और उसमे से निकाले गये अन्य पदार्थ बहुत सस्ते मिलते है।

प्रश्न

१—आधुनिक संसार में "तेल" की विशेषता दर्शाओ।

२—यह तेल किस रूप में पाया जाता है, तथा इसका शोधन किस प्रकार होता है ?

३—मोम कैसे बनाया जाता है ? तेल के उबालने के समय और कौन-कौन-से पदार्थ, जो आधुनिक विज्ञान के कारण संसार के लिए बड़े उपयोगी हैं, बच रहते हैं ?

४—निम्नलिखित वाक्य में सर्वनाम तथा विशेषण शब्दों को चुन कर उनकी शब्द-निरुक्ति करो :—

"पहले ही प्रयोग में वे आशा से अधिक सफलीभूत हुए।"

५—निम्नलिखित वाक्य में रेखाङ्कित शब्दों की शब्द-निरुक्ति करो —

"जिन स्थानों में मिट्टी का तेल पाया जाता है, उन्हीं स्थानों में कुएँ खुदते हैं।"

६—एक छोटा-सा निबन्ध लिख कर दर्शाओ कि यदि संसार में यह तेल न हो तो कैसी कठिनाई का सामना करना पड़े।

७—निम्नलिखित शब्दों का लिङ्ग, वचन बताते हुए उनका बहु-वचन लिखो —

आदमी, घर, बाजार, वृक्ष, छाता।

१८—शिवाजी

जीती, जाती हुई जिन्होंने भारत बाजी।
है जग-जाहिर वही छत्रपति भूप शिवाजी॥
वीर-वंश में स्वयं जन्म था जिस माता का।
वीर-कोख से वीर उसी ने जाया बाँका॥
वीरोचित कर्त्तव्य उसी ने सुत का ताका।
अग्र-शोच से गिरी उसी के मुगल-पताका॥
राजपूत का रक्त मिला उसकी नस नस में।
क्यों फिर आकर शक्ति न होती उसके वस में॥
थे जिसके सब चरित अलौकिक बाल-वयस में।
करता सम्भव क्यो न असम्भव वह साहस में॥
दादी जी से वीर विप्र ने जिसे पढ़ाया।
रामदास ने जिसे धर्म-उपदेश सुनाया॥
वही शिवाजी वीर वीर माता का जाया।
रहने देता भला कहीं निज देश पराया॥
देश, नाम, कुल, धर्म हिन्दुओं का मिट जाता।
'अपना' शब्द पुनीत न कोई कहने पाता॥
आर्य्य गुणों का गान कहाँ से कोई गाता।
यह अवतारी वीर न जो भारत में आता॥
करके उसका ध्यान चित्त होता है चंचल।
जिसके कारण बँधा हिन्दुओं का बिखरा बल॥

उसे अश्व पर देख फूल उठता था रण-थल ।
विकट मरहठे वीर जूझते थे दल के दल ॥
दूर दूर जय ध्वजा शिवाजी ने फहराई ।
निज स्वतन्त्रता गई हिन्दुओं ने फिर पाई ॥
एक बार फिर जन्म-भूमि यह 'निज' कहलाई ।
राम-राज्य की छटा दृष्टि में फिर भी आई ॥
सहे देश के लिए उन्होंने नाना संकट ।
गिने न पग के कष्ट बाट भी लगी न ऊबट ॥
पग पग छिन छिन यदपि खड़े थे सिर पर घातक ।
तो भी उनका झुका न रिपु के आगे मस्तक ॥
कठिन विपत में भी न उन्होंने त्यागा धीरज ।
गूढ अनूठी युक्ति सोच साधा निज कारज ॥
आपस का विश्वास दूसरे देशों को तज ।
आ धरता था सीस मरहठे के पद की रज ॥
निज भुजबल से शीघ्र राष्ट्र को "महा" बनाया ।
हरद्वार, गुजरात, सेतु, जगदीश जगाया ॥
वैश्यों को भी समर-भूमि का खेल दिखाया ।
पल में कर दी दूर परालम्बन की माया ॥
राज-नीति में रही शिवाजी की चतुराई ।
वैरी ने भी छिपे बड़ाई उनकी गाई ॥
शूर, साधु, कवि, गुणी इन्हें थे जी-से प्यारे ।
दया भक्ति नय शील रहे वे हिय में धारे ॥

शिवाजी

गुरु गो द्विज के चरण प्रेम से सदा पखारे।
किया न कोई काम बिना नृप-धर्म विचारे॥
उचित यही है करे वीर-पूजा मिल हम सब।
यही धर्म है सत्य यही है सच्चा करतब॥

प्रश्न

१—शिवाजी की वीरता के बारे में तुम क्या जानते हो?

२—निम्न-लिखित शब्दों का शुद्ध रूप लिखो।

यद्यपि, विपत, कारज, हिय, करतब।

३—मनुष्य का सच्चा कर्तव्य क्या है?

१६—राखीबन्ध[1] भाई

(१)

राजपूताना की दक्षिण-पश्चिम सीमा पर नागौर एक छोटा-सा राज्य है। अकबर के शासन-काल में नागौर के राजा वहीं के एक निकटवर्ती सुरक्षित किले में रहते थे। उस समय उत्तर के कुछ भीलों ने राज्य में बड़ी अशान्ति और विद्रोह मचा रक्खा था। राजा ने भीलों को दबाने के लिए अपनी सब सेना इकट्ठी की। पास ही एक और रजवाड़ा था। उसका नाम राजपुर था। राजपुर में किला भी था। नागौर-राज ने वहाँ के नवयुवक और शूरवीर राजा रुद्रसिंह को

१—राखी बाँधकर जिस पुरुष को हिन्दू-स्त्री अपना भाई बना लेती है उसे उसका राखीबन्ध भाई कहते हैं।

भी युद्ध में सम्मिलित होने के लिए निमन्त्रण भेजा। रुद्रसिंह झिलमिलाते हुए कवच, अस्त्र, शस्त्र, और झिलम धारण करके ससैन्य आ पहुँचे। भीलो को मार भगाना इस वीर के लिए कुछ कठिन काम न था। अकेले इसी के दल ने भीलो को तहस-नहस कर दिया। नागौरराज को अपनी तलवार खीचने की आवश्यकता नही पड़ी।

भीलों को भगाने पर रुद्रसिंह को उन लोगो के शिविर मे बहुत-सा सोना और चाँदी मिली। उन लोगो की कुछ जमीन भी वहाँ थी। रुद्रसिंह का पराक्रम सुनकर नागौरराज बड़े प्रसन्न हुए। परन्तु जब सोना, चाँदी और जमीन बाँटने का समय आया तब इन दोनो मे मनोमालिन्य हो गया। रुद्रसिंह ने इस लड़ाई मे बड़ा काम किया था, और अच्छी वीरता दिखाई थी। इसलिए वे अपना भाग अधिक माँगते थे। उधर नागौरराज लोभ के कारण अपने भाग मे कमी करने को तैयार नही थे। वे रुद्रसिंह को केवल आधा ही भाग देना चाहते थे। इसी खींचातानी में दोनो ओर से कड़े-कड़े शब्दो का प्रयोग होने लगा। अन्त मे नागौरराज से न रहा गया। वे बोले, "तू मेरे सामने निरा बच्चा है। यदि बहुत बडबड़ करेगा तो तेरी कुशल नही। डरपोक भीलो को हरा देने से तू बड़ा गर्व करता होगा। मैं अब तक सैकड़ों लड़ाइयों में अपनी तलवार की परीक्षा कर चुका हूँ। पर, तेरी तरह मैंने कभी घमड नही किया। तू कल का छोकड़ा है। अभी तक युद्ध में कभी नही

गया था। इसलिए, कल एक ज़रा-सी मुठभेड़ में विजय पाने से इतनी ऐंठ करने लगा। शायद इस लड़ाई में तुम्हें अपनी तलवार खींचने का भी काम न पड़ा होगा। निकल यहाँ से !"

एक वीर को क्रोध से पागल बनाने के लिए ये शब्द काफी थे। परन्तु रुद्रसिंह ने क्रोध नहीं प्रकट किया। बड़े धैर्य्य से कलेजा थामकर उन्होंने कहा—"आप मुझसे बड़े हैं, शायद आपने कई बार तलवार भी साधी है ! पर, आपके शरीर में उतना रक्त नहीं है जितना आपको गर्व्व है। इसका बदला किसी न किसी दिन अवश्य लूँगा !" इतना कहकर बिना जुहार-मुजरा किये वे वहाँ से चल दिये।

जिस समय घोड़े पर सवार रुद्रसिंह राजा के महलों के नीचे जा रहे थे उस समय खिड़की से उन्हें एक बहुत ही सुन्दर रमणी-मूर्ति दिखाई पड़ी। वह उनकी ओर नहीं देख रही थी। उसका ध्यान किसी दूसरी ओर था। रुद्रसिंह ने साहस कर घोड़े की बाग खींच ली और थोड़ी देर तक वे उसकी ओर टकटकी लगाये देखते रहे। पर, ज्यो ही उसकी दृष्टि उनकी ओर गई त्यों ही वह लज्जित होकर भीतर चली गई। रुद्रसिंह ठंडी साँस भर के आगे बढ़े और सेना के साथ अपने घर चले गये।

(२)

आज नागौर-राज्य की राजधानी के किले मे सन्नाटा छाया हुआ है। नागौर-राज दिलीपसिंह के खास महल मे बहुत-से

सफेद दाढ़ी और लाल-लाल आँखोंवाले पुराने सरदार बैठे हैं। सबके सिर झुके हुए हैं। श्मशान का-सा सन्नाटा छाया हुआ है। सबके चिहरे से उदासी और निराशा टपक रही है। बड़ी देर के बाद निस्तब्धता भङ्ग हुई। राजा दिलीपसिंह गला भर कर बोले—"निस्सन्देह अब रक्षा का कोई उपाय नहीं। लड़के सेना के साथ मुग़लों की दक्षिणी लड़ाइयों में फँसे हुए हैं। क्या गुजरात के धूर्त और पापात्मा गयासुद्दीन की इच्छा पूरी होगी? कभी नहीं। जब तक नागौर मे क्षत्रिय-रक्त का एक बूँद भी शेष है तब तक मेरी प्यारी पन्ना को कोई देख भी नहीं सकता। बताओ तो सरदारो! क्या अब केसरिया बाना पहनने का समय नहीं आ गया है? मैं समझता हूँ कि अपनी वीरता दिखलाने का इससे अच्छा समय अब कभी न मिलेगा। आप लोगो की क्या राय है?"

उन बुड्ढों मे भी कैसा बेढब जोश था! सब एकाएक खड़े हो गये और तलवार पर हाथ रख कर कहने लगे—"स्वर्ग की तैयारी हो। महाराज, साका मे विलम्ब न किया जाय।" ऐसा मालूम होता था कि मानो किसी एक ही आन्तरिक शक्ति ने उन सबके विचार एक साथ सञ्चालित किये हैं। राजा दिलीपसिंह ने इस बात को स्वीकार किया। सामन्त और सरदार लोग एक एक करके केसरिया बाना पहनने के लिए जाने लगे। राजा दिलीपसिंह भी उठ कर रनिवास मे

पहुँचे। भीतर जाते ही उन्हें पन्द्रह-सोलह वर्ष की एक युवती मिली। वह सुन्दरता, लावण्य, सतीत्व और पवित्रता की मूर्ति थी। राजा ने आँखों में आँसू भरकर उससे कहा—"प्यारी पन्ना, अब हम लोग इस संसार से विदा होना चाहते हैं। बेटी, हम लोगों का मिलाप अब स्वर्ग में होगा। साके के सिवा अब और कोई उपाय नहीं है। जा, माँ से कह दे कि सब वीराङ्गनाओं को इस महोत्सव के लिए शीघ्र तैयार कर ले।" पन्ना बोली—"बाबा साका होगा, साका।" इतना कह कर वह हँसती हुई दौड़ी और जाकर पिता-मही से उसने सब हाल कह दिया। पन्ना की माता उसकी बाल्यावस्था में ही मर चुकी थी। वह अपनी पितामही को ही माँ कहती थी। यह समाचार सुनकर रनिवास की सब ललनाओं के चेहरों पर धैर्य्य और दृढ़ता की रेखा खिंच गई। उनको ऐसी दशा में छोड़कर पन्ना एक खिड़की में जा बैठी। वहाँ से कोसों तक का दृश्य साफ साफ दिखाई देता था। इस समय अस्त होते हुए सूर्य्य की किरणों से मैदान की हरी-हरी घास स्वर्णाभ हो रही थी। पक्षी चहचहाते हुए अपने-अपने घोंसलों की ओर जा रहे थे। पन्ना के तेजस्वी नेत्र इस मनोहर दृश्य को छोड़ कर बहुत आगे बढ़ गये, और प्रायः दस कोस की दूरी के एक पहाड़ पर जाकर ठहर गये। वह इस पहाड़ पर के किले को जानती थी, क्योंकि, उसने इसी जगह से उसे कई एक देखा था। एकाएक उसका चेहरा

खिल उठा। वह वहाँ से दौड़ती हुई सीधी अपने पिता के पास पहुँची। दिलीपसिंह ने कुछ कड़ेपन से कहा—"यह क्यों ? क्या इस समय भी बच्चों का-सा खेल शोभा देता है ?" पन्ना ने बड़े भोलेपन से मधुर शब्दों मे कहा—"बाबा ! यहाँ से दस-बारह कोस उत्तर-पूर्व की ओर किसका किला है ?" दिलीपसिंह ने लापरवाही के साथ उत्तर दिया—"राजा रुद्रसिंह का। पर इससे क्या ?" "मैं उनके पास राखी[1] भेजूंगी"—पन्ना ने चट उत्तर दिया। पहले तो राजा दिलीप ने इस बात को स्वीकार करने में साफ नाही कर दी। उन्होंने कहा कि वह हमारा शत्रु है। हम विपद् के समय शत्रु की शरण न लेंगे ! पर जब पन्ना ने विनीत और नम्र-भाव से कहा—"आपत्ति-काल मे शत्रुता भुला देनी चाहिए। फिर वे भी तो क्षत्रिय हैं। इसमें कोई हानि नही।" तब बड़ी कठिनाई से राजा ने उसका प्रस्ताव स्वीकार किया। उसने तुरन्त एक जरी के कामवाले रेशमी रूमाल मे एक रेशम की राखी और पीले चावल रख दिये, और अपने विश्वस्त नौकर रामलाल के हाथ मे वह छोटी-सी अमूल्य पोटली दे दी। रात होते ही कमन्द के सहारे वह पीछे की दीवार से कूद कर वहाँ से चल दिया।

(३)

किले के चारों ओर गुजरात के बादशाह ने चौकी थाने लगवा दिये थे। थोड़े-थोड़े से अन्तर पर चौकीवाले आग जला

---

१ रक्षाबन्धन का डोरा।

रहे थे। रामलाल बड़ी सावधानी से उनसे बच-बच कर जा रहा था। इस तरह वह एक घंटे में आध मील से अधिक न गया होगा कि एक सिपाही की दृष्टि उस पर पड़ ही गई।

उसने डाटकर पूछा—"कौन जाता है?" ये शब्द जङ्गल भर में गूँज उठे। इससे सब चौकीवालों के कान खड़े हो गये। इन भयङ्कर शब्दों को रामलाल ने भी सुना। वह बड़ी तेजी से भागा। सैकड़ों घुड़सवार—"पकड़ो पकड़ो, मारो मारो"—चिल्लाते हुए इधर-उधर दौड़ने लगे। रामलाल भाग कर निकल जाता, पर उसका साफा छूट कर गिर गया। साफे की तो कोई चिन्ता न थी, लेकिन पन्ना का भेजा हुआ अनमोल सदेश उसी में रक्खा था। उसके छोड़ने से सब काम बिगड़ जाता। यही सोचकर आत्म-त्यागी और निर्भय रामलाल पीछे लौटा। थोड़ी दूर पर से उसे साफा मिल गया। परन्तु सामने ही एक साईस एक चञ्चल और गठीले घोड़े को थामे खड़ा था। उसके सामने से बचकर निकल जाना कठिन काम था। किन्तु साहसी और धीर रामलाल ने सब काम बना लिया।

वह निर्भीकता के साथ उस साईस के पास गया और कहने लगा, "भाई साहब! तुम्हे बड़ी तकलीफ हो रही है। घोड़ा बड़ा पाजी है। लाओ, हम इसे टहलाते हैं; तब तक तुम आराम करो, आलसी साईस ने बड़ी .खुशी के साथ उस कसे-कसाये घोड़े की बाग रामलाल को सौंप दी।

रामलाल घोड़े को धीरे-धीरे टहलाने लगा। टहलाते-टहलाते वह उसे थोड़ी दूर ले गया। फिर तो एक उछाल मारने का काम था। रामलाल बड़ी फ़ुर्ती के साथ उस पर सवार हो गया और एँड लगा कर साईस की आँखो के ओट हो गया। साईस शोर मचाने लगा। तब शत्रुपक्ष मे घुड़सवारों ने उसका पीछा किया। पर, सब व्यर्थ हुआ। रामलाल कुछ कच्चा अश्वारोही न था। वह बारह मील तक बराबर तेज़ी के साथ चला गया। परन्तु अब उसने घोड़े को बेकाम समझा. क्योंकि, मुसलमान सवार टापों की आहट पाकर अब भी दौड़े चले आ रहे थे। इसलिए, घोड़े को उसने वहीं छोड दिया, और बड़ी सावधानी से पेचीदा रास्तों के द्वारा सवेरा होते-होते तक वह राजपुर के दृढ क़िले मे पहुँच गया। बड़ी कठिनाई से फाटक पार कर वह रुद्रसिंह के महल तक पहुँचा। उसका संदेश पाकर रुद्रसिंह स्वयं बाहर आये और पन्ना की चिट्ठी पाकर प्रसन्न हुए। अभी तक उन्हे राखी नहीं मिली थी। इससे कुछ गर्म होकर वे बोले—"कुछ भी हो, मैं उस घमंडी राजा की सहायता करने नहीं जाऊँगा।" इतने ही मे रामलाल ने राखी भी दी। उसे पाते ही राजा का क्रोध शान्त हो गया। वे कुछ सोच-विचार कर बोले—"अच्छा सहायता करूँगा और बहुत शीघ्र करूँगा।" फिर उन्होंने अपने मन मे कहा—"अब मेरा बदला पूरा होगा।"

उपयोगी नहीं समझी जाती थी। इससे राजपूत लोग सवारो को ही अधिक पसन्द करते थे।

रुद्रसिंह ने अपनी सेना के पॉच भाग किये। सब भाग बराबर थे। एक भाग मेवाड़ से गुजरात जानेवाली राह पर भेजा गया, और शेप चार गुजराती सेना के चारों ओर डट गये। इनमे से तीन भाग बिलकुल छिप गये। एक ने रात को कोई दो हजार पटाखे छुड़ाये और खूब शोर मचाया। गुजराती सेना धोखे मे आगई। सबके सब तैयार होकर जिधर शोर होता था उधर ही चले। परन्तु, ज्यो-ज्यो वे आगे बढ़े त्यो-त्यों शोर भी आगे बढता गया।

इस तरह ये लोग किले से बहुत दूर निकल गये। किले-वालो को रुद्रसिंह के आने और यह चाल चलने की बात मालूम थी। उन लोगो ने फाटक खोल दिया। कोई ५०० कट्टर राजपूत किले के पासवाली मुसलमानी सेना पर टूट पड़े। उधर उस भूली हुई सेना पर तीनों ओर से छिपी हुई सेना टूट पड़ी और जो सेना इन्हे धोखे मे डाल चुकी थी, वह भी लौट पडी। गुजराती सेना बहुत थी, परन्तु अचानक आक्रमण, राजपूतो की कट्टर वीरता, और बादशाह की कायरता के कारण उन लोगों के पैर उखड गये। उधर पॉचवीं टुकडी ने भी अपना कर्त्तव्य पूरा किया। थोड़े-से सिपाहियो की रक्षा मे बडी-बड़ी तोपे गुजरात से आ रही थी। बारूद और गोले साथ थे। गोलन्दाज पुर्तगाली थे।

नहीं पहचानते थे। वे पन्ना के केवल पूर्व-परिचित मुख को पहचानते थे।

थोड़ी देर मे वे राजमहल में बुलाये गये। पन्ना के राखी-बन्ध भाई से रनिवास में भी किसी को पर्दा न था। राजा ने अपने पूर्व अपराध के लिए क्षमा मॉगी। जिसमे क्षमता होती है वह अवश्य क्षमा करता है। रुद्रसिंह ने राजा को क्षमा कर दिया और उनका आदर-सत्कार ग्रहण करके वे रनिवास मे गये।

परन्तु हाय! यहाँ पहुँचकर उनके हृदय पर वज्रपात हुआ। जिस मूर्त्ति को हृदय मे रखकर वे कल्पना के महल बना रहे थे वह स्वय पन्ना थी। जिसने राखी भेजी थी वह तो बहन हुई। हृदय का वह बबूला वही बैठ गया। किन्तु हा! उसका आघात इतना कठोर हुआ कि राजपुर-नरेश ने इस ससार को असार समझ कर स्वर्ग का रास्ता लिया। पन्ना के लिए भी यह ससार दुखमय हो गया।

मालूम नहीं जगदीश्वर ने इन दोनो का क्या न्याय किया?

प्रश्न

१—पन्ना और रामलाल के चरित्रों की समालोचना करो।

२—इस कहानी से हमको क्या शिक्षा ग्रहण करनी चाहिए?

३—नागौर-राज्य की रक्षा का वास्तविक श्रेय किसको मिलना चाहिए और क्यों?

४—क्या तुम बता सकते हो कि सकर्मक तथा अकर्मक क्रिया में क्या भेद है ?

५—निम्नलिखित शब्दों का लिङ्ग बताते हुए, उनका दूसरा रूप लिखो :—

बबूला, वीरता, गद्दी, सेना, रनवास, भील, टाप।

६—इस कहानी का सारांश अपनी बोल-चाल की भाषा में संक्षेप में लिखो।

७—क्या इस कहानी का अन्त तुम्हारे मन के अनुकूल है ?

२०—वृन्द के दोहे

आप अकारज आपनो, करत कुसङ्गति साथ।
पाँय कुल्हाड़ा देत हैं, मूरख अपने हाथ॥
भले बुरे सब एक से, जौलौं बोलत नाहिं।
जान परत है काक पिक, ऋतु बसन्त के माहिं॥
दोषहि को उमहै गहै, गुन न गहै खल लोक।
पिये रुधिर पय ना पियै, लगी पयोधर जोंक॥
पण्डित जन को श्रम मरम, जानत जे मति धीर।
कबहूँ बाँझ न जानही, तन प्रसूत की पीर॥
जाही से कछु पाइये, करिये ताकी आस।
रीते सरवर पर गये, कैसे बुझत पियास॥

छोटे नर ते रहत है, शोभायुत सिरताज।
निर्मल राखै चाँदनी, जैसे पायदाज॥
अरि छोटो गनिये नहीं, जासो होत बिगार।
तृण-समूह को छिनक मे, जारत तनक अँगार॥
जाहि बड़ाई चाहिए, तजै न उत्तम साथ।
ज्यो पलास सँग पान के, पहुँचे राजा हाथ॥
वचन पारखी होहु तुम, पहिले आप न भाख।
अनपूछे कहिये नही, यही सीख जिय राख॥
कछु कहि नीच न छेड़िये, भलो न वाको सङ्ग।
पाथर डारै कीच मे, उछरि बिगारै अङ्ग॥
उत्तम विद्या लीजिये, यदपि नीच पै होय।
परो अपावन ठौर मे, कञ्चन तजत न कोय॥
जो तू चाहे अधिक रस, सीख ईख से लेय।
जो तोसौं अनरस करै, ताहि अधिक रस देय॥
सबसे लघु है माँगिबो, या मे फेर न सार।
बलि पै याचत ही भये, बावन तन करतार॥
पर-घर कबहुँ न जाइये, गये घटत है जोत।
रविमण्डल मे जात शशि, छीन कला छवि होत॥
फल विचारि कारज करो, करो न व्यर्थ अमेल।
तिल ज्यो बारू पेरिये, नाही निकसै तेल॥
कारज ताही को सरै, करै जो समय विचार।
कबहुँ न हारे खेल जो, खेलै दाँव विचार॥

जो पहिले कीजे यतन, सो पाछे फलदाय।
आग लगै खोदै कुआँ, कैसे आग बुझाय॥
ताको अरि कहु करि सकै, जाके यतन उपाय।
जरै न ताती रेत में, जाके पनही पाय॥
जो कहिये सो कीजिये, पहिले कर निरधार।
पानी पी घर पूछनो, नाहिं न भलो विचार॥
काम परे ही जानिये, जो नर जैसो होय।
बिन ताये खोटो खरो, गहनो लखै न कोय॥
करत करत अभ्यास के, जड़मति होत सुजान।
रसरी आवत जात ते, सिल पर होत निसान॥
मूढ़ तहाँ ही मानिये, जहाँ न पण्डित होय।
दीपक को रवि के उदय, बात न पूछे कोय॥

प्रश्न

१—नीचे लिखे शब्दों का शुद्ध रूप लिखो—

सूरख, नाहि, पियास, जिय, उछरि, यदपि, जोत, यतन और रसरी।

२—उदाहरण देकर समझाओ कि छोटों से बड़ों की शोभा है?

शत्रु को छोटा न गिनना चाहिए, नीच का साथ अच्छा नहीं होता, माँगना सबसे छोटा काम है, और अभ्यास से सब काम हो जाता है।

२१—वैज्ञानिकों की निःस्पृहता

भारत-माता के सपूत विज्ञानाचार्य सर प्रफुल्लचन्द्र राय के दर्शन करने का जिन्हे सौभाग्य प्राप्त हुआ है उन्हें एक ही क्षण में यह मालूम हो गया होगा कि वे मूर्तिमान् त्याग हैं। यद्यपि

क्या प्रभाव पड़ा होगा, यह अनुमान किया जा सकता है। हाल में ही कलकत्ता-विश्वविद्यालय को राय बाबू ने तीन वर्ष का वेतन दानरूप में भेंट कर दिया है।

भारत के दूसरे विख्यात वैज्ञानिक सर जगदीशचन्द्र वसु महोदय ने भी कभी अपने आविष्कारों से रुपया पैदा करने की चेष्टा नहीं की। १९५३ वि० में जब आप इँग्लेंड में अपने बेतार के आविष्कारों पर व्याख्यान दे रहे थे तब कई यन्त्र-निर्माताओं ने आपसे अनुरोध किया कि आप अपने यन्त्रों का पेटेंट[1] करा लें। वसु महोदय ने स्पष्ट रीति से उन्हें जवाब दे दिया कि ऐसा करना मेरे पूर्वजों की नीति और धर्म के विरुद्ध है।

ये दोनों उदाहरण तो भारतवर्ष के हैं। और देशों में भी वैज्ञानिकों में ऐसी ही निःस्पृहता पाई जाती है। फ्रांस के राजा नेपोलियन तृतीय ने एक बार पाश्चर महोदय से पूछा, "महाशय, आप अपने आविष्कारों का प्रयोग कर कोई व्यवसाय क्यों नहीं चलाते और रुपया क्यों नहीं पैदा करते?" पाश्चर ने उत्तर दिया, "ऐसा करना एक वैज्ञानिक की शान के खिलाफ है।" इन्हीं के एक उत्तराधिकारी के विषय में एक और घटना बड़ी रोचक और शिक्षाप्रद है।

फ्रांस के एक करोड़पति मोशियो औसिरिस ने ६०,०००) रुपये का इनाम पाश्चर इंस्टिट्यूट के डाइरेक्टर डाक्टर रूक्स

१—सर्वाधिकार अपने पास सुरक्षित रखना, जिससे कोई उसको न बना सके।

को 'एंटी डिफथीरिया सीरम' के आविष्कार के उपलक्ष्य में दिया था। डिफथीरिया बड़ा भयानक छूत का रोग है। कुछ दिन पहले यह रोग घातक समझा जाता था। प्रायः ३३ फी सदी रोगियों की मृत्यु हो जाया करती थी। यह रोग विशेषतः बच्चों को हुआ करता है। गले के भीतर चर्म होने के कारण श्वासोच्छ्वास-क्रिया बन्द हो जाती है। यदि किसी की नाक और मुँह दो-चार मिनट के लिए बन्द कर दो तो वह किस प्रकार वायु के लिए छटपटाता है। इससे तुम डिफथीरिया के रोगी की बेचैनी और छटपटाने का अनुमान कर सकते हो। उन माता-पिताओं के हृदय से भी पूछो जिनके किसी बच्चे को डिफथीरिया हो गया हो और जिन्होंने अपने प्यारे नन्हे से बच्चे को छटपटाते हुए मरते देखा हो। ऐसा भयानक और करुण दृश्य किसी अन्य रोग में देखने में नहीं आता। अतएव जिस व्यक्ति ने ऐसे रोग का इलाज निकाला उसने मनुष्य-जाति का कितना उपकार किया है। उसे ६०,०००) रुपये का पारितोषिक मिलना स्वाभाविक था। उसके आविष्कृत औषध से रोग उसी प्रकार शान्त किया जा सकता है जिस प्रकार पानी डालने से आग। शर्त यह है कि इलाज ठीक समय पर—रोग के आरम्भ में ही—शुरू हो जाना चाहिए।

पारितोषिक मिलते ही कुल रुपया डाक्टर रूक्स ने पाश्चर इंस्टिट्यूट को भेंट कर दिया। औसिरिस महोदय ने जब यह बात सुनी तब उन्होंने एक दिन इनसे पूछा, "आपने कुल

रुपया इंस्टिट्यूट को क्यों दे डाला ?" डाक्टर रूक्स ने जवाब दिया, "जो कुछ मैंने किया है वह सब इसी इंस्टिट्यूट की बदौलत कर सका हूँ, क्योंकि मैं प्रयोग यहीं किया करता हूँ। दूसरे यह सस्था बड़ी गरीब है। सीरम बेच बेच कर जो कुछ रुपया मिलता है उसी से यहाँ का काम चलता है। यद्यपि यह आय पर्याप्त है तथापि यदि नये इलाज निकल आयेंगे तो सीरम की बिक्री बन्द हो जायगी और तब तो हमें धनाभाव से कपाट बन्द कर देने पड़ेंगे।"

धनकुबेर औसिरिस उस समय तो सुनकर चुप हो गये परन्तु जब वे मरे और उनका दान-पत्र खोला गया तब उसमें लिखा था, "डाक्टर रूक्स की योग्यता और स्वार्थ-त्याग के स्मारकरूप में अपनी सम्पत्ति का अधिकांश इस संस्था को देता हूँ।" इस प्रकार एक वैज्ञानिक के आत्म-त्याग और निःस्वार्थता से पाश्चर इंस्टिट्यूट को लगभग दो करोड़ की सम्पत्ति मिल गई।

सर हम्फ्री डेवी ने बिजली और रसायन का नाता जोड़कर अनेक नये नये आविष्कार किये थे, किन्तु लोक-हित की दृष्टि से उनका कोई भी आविष्कार उनके जीवन-काल में इतने महत्त्व का न था जितना कि "रक्षा-दीपक।" पत्थर का कोयला खानों में से निकाला जाता है। कोयले की खान वास्तव में प्राचीन, अत्यन्त प्राचीन, काल के हरे-भरे जङ्गलों का अवशेष-मात्र है। भूगर्भ-सम्बन्धी धरातल में जो अनेक परिवर्तन होते रहते हैं,

उनके कारण जहाँ आज जङ्गल है वहाँ कुछ दिन बाद समुद्र किलोलें मारता होगा और जहाँ आज समुद्र है वहाँ शायद बडा महाद्वीप निकल आयेगा। ऐसे परिवर्तन पृथ्वी-मण्डल के इतिहास मे अनेक बार हो चुके हैं और यही कारण है कि भूगर्भ के अनेक प्रस्तरो मे अश्मीभूत जङ्गल कोयले के रूप मे मिलते हैं।

सर हम्फ्रे डेवी
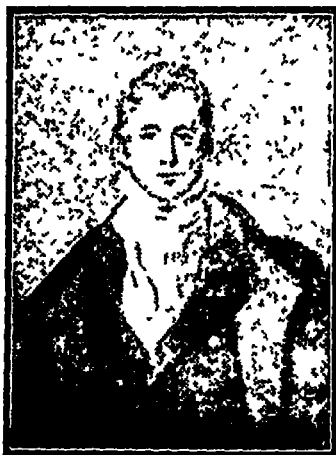
लकडी को एक देग मे रख कर तपाया जाय तो उसमे से कई द्रव, जल-वाष्प तथा कुछ गैसे निकलती हैं और कोयला बच रहता है। वही परिवर्तन जङ्गलो के पेड़ों मे लाखो वर्ष मे धीरे धीरे हुए हैं। अतएव भूमण्डल के अनेक भागो मे पृथ्वी मे से गैसे निकलती रहती हैं। कोयलो की खानो मे भी कोयलो के प्रस्तरो मे दबी हुई गैसें मिला करती है। इन गैसो मे अधिकांश भाग मार्श गैस का रहता है, जो जलनेवाली गैस है। यदि इस गैस के साथ वायु मिला कर बत्ती लगा दी जाय तो बड़े जोर का धड़ाका होता है। लगभग सौ वर्ष पहले

ऐसे धड़ाके खानों मे बहुत हुआ करते थे और बहुत-से आदमी जान खो बैठते थे। सर डेवी के लैम्प में यह गुण है कि यदि उसके चारो तरफ़ जलनेवाली गैस भरी हो तो उसकी लौ बढ़ जाती है परन्तु जाली से, जो उसके चारो तरफ से ढके रहती है, बाहर निकल कर गैस को जला नही देती। इस आविष्कार की बदौलत यदि डेवी महोदय चाहते तो लाखो रुपये बना लेते। उनके एक मित्र मिस्टर जान बडिल इस विषय मे लिखते हैं—मुझे प्रतीत होता था कि वे कोई अर्थ-लाभ करना नही चाहते। एक बार मैंने उनको इस सम्बन्ध मे बहुत समझाया और कहा, 'यदि आप चाहें तो इस आविष्कार का पेटेंट करा ले और घर बैठे दस पॉच हजार पौंड ले लिया करे।' डेवी ने जवाब दिया—"प्रिय मित्र, मेरा यह उद्देश कभी न था। मैंने तो केवल जनता की भलाई के लिए ही यह आविष्कार किया था। सफल होने से मुझे जो अपनी शुभेच्छा की पूर्ति होती दिखाई देती है, यही मेरा सबसे बड़ा पुरस्कार है।"

फैरेडे महोदय ने एक बार टिंडाल महाशय से कहा था—"मेरे वैज्ञानिक जीवन मे एक समय आया था जब मैं इस बात का निश्चित-रूप से निर्णय करने पर मजबूर किया गया था कि मैं शुद्ध वैज्ञानिक खोज मे अपना समय लगाऊँ या रुपया कमाने मे। दो मालिकों की सेवा करना असम्भव था। मैंने विज्ञान को ही श्रेष्ठ समझा।" चुम्बक-विद्युत् के आविष्कार

कर लेने पर फैरेडे ससार में इतने विख्यात हो गये थे कि उन्हें १,५०,०००) वार्षिक वेतन कोई भी कारखाना दे देता। टिंडाल महोदय ने लिखा है—इस लोहार के बेटे और जिल्दसाज के शार्गिद को धनहीन विज्ञान और २२,५०,०००) रु० की रकम में से, जो वह नौकरी करके अपने जीवन मे सुगमता से कमा सकता था, एक को अङ्गीकार करना था। उसने विज्ञान को ही अपनाया और वह धनहीन ही मरा। परन्तु चालीस वर्ष तक वैज्ञानिक-ससार मे इगलेड को यशस्वी बनाये रखना उसी का काम था।

चुम्बक के पास किसी वेठन को घुमाने से बिजली की धारा वेठन मे पैदा हो जाती है—यही चुम्बक-विद्युत् का मूल सिद्धान्त है जो फैरेडे महोदय ने बड़े परिश्रम से निकाला था। जब इस सम्बन्ध मे वे पहली बार रायल इस्टिट्यूशन में व्याख्यान दे रहे थे तब लेडी ने आपसे पूछा, "महाशय, यदि आपकी कही बात सच भी निकले, तो उससे क्या लाभ ?" फैरेडे ने जवाब दिया, "महाशया, नव-जात शिशु से क्या लाभ होता है ?" लेडी साहिबा सुनकर चुप हो गईं, परन्तु इस घटना से यह मालूम हो जाता है कि वैज्ञानिकों और साधारण आदमियो के आदर्शों में कितना बड़ा अन्तर है। साधारण आदमी बात बात में लाभ को ढूँढ़ा करता है। वैज्ञानिकों को तो नई नई बातों को खोज निकालने में ही आनन्द आता है। आविष्कार करने में कितना आनन्द आता है, इस बात का

अनुभव वैज्ञानिक को ही हो सकता है। सुनते हैं कि अर्कमीदिस ने जिस दिन हम्माम में नहाते हुए अपने विख्यात सिद्धान्त की कल्पना की थी और विशिष्ट घनत्व निकालने की एक नई विधि का आविष्कार किया था तब वह बिना वस्त्र पहने ही हम्माम से बाहर निकला और गलियों मे "पा लिया, पा लिया" पुकारता, अपने घर जा पहुँचा।

रसायनशास्त्र के जन्मदाता स्वनामधन्य राबर्ट बोयल कहा करते थे, "मैं अपनी प्रयोगशाला में लोक-परलोक सब भूल जाता हूँ; केवल प्रयोग करने के अपूर्व आनन्द के निरन्तर अनुभव मे मैं तल्लीन रहता हूँ।"

ड्यूमा ने लिखा है—दीर्घ जीवन-काल में मैं अनेक छोटे और बड़े सभी प्रकार के मनुष्यों से मिला हूँ। जब कभी इस बात का स्मरण होता है कि सच्चा आनन्द और सुख मैंने कहाँ देखा तब मेरे सामने किसी भी धनवान् व्यवसायी अथवा श्रीसम्पन्न पदाधिकारी का चित्र नहीं आता; उस समय मुझे उन वैज्ञानिको की याद आती है जिन्होंने प्रकृति के रहस्योद्घाटन तथा नवीन तथ्यो की खोज में अपना जीवन अर्पण कर दिया है।

किन्तु इस प्रकार की नि.स्पृहता केवल वैज्ञानिकों तक ही सीमाबद्ध नही, उदार-हृदय साहित्यसेवियो में भी यही बात पाई जाती है। उदाहरण के लिए कवि-सम्राट् रवीन्द्रनाथ ठाकुर ने भी अपनी "नोबेल प्राइज़" का सब रुपया, कुछ ही दिन हुए, 'शान्ति-निकेतन' को दे डाला था।

प्रश्न

१—इस पाठ से तुम्हें क्या शिक्षा मिलती है ?

२—क्या तुम और किसी निःस्पृह वैज्ञानिक अथवा साहित्यिक का जीवन-चरित जानते हो ?

३—वैज्ञानिक का तुम विज्ञान के कारण अधिक आदर करोगे अथवा निःस्पृहता के कारण ?

२२—रत्न और पाषाण

(१)

ज्ञात हमको है नहीं क्यों धूल पर,
गिर पड़ा था 'रत्न' इक सुन्दर महा।
यों उसे रज में पड़ा अवलोक कर,
एक दिन पाषाण ने उससे कहा—

(२)

रत्न क्यों तू लोटकर इस धूल में,
स्वीय गौरवमय गँवाता कांति है ?
कंकड़ों के बीच बेसुध-सा पड़ा,
क्यों, बता फैला रहा तू भ्रांति है ?

(३)

निज अलौकिक सद्गुणों के पुंज का,
क्या नहीं तुझको जरा अभिमान है ?

छोड़कर क्यो संग मणि मुक्तादि का,
जो कराता आज निज अपमान है?

(४)

जा किसी धनवान ही के गेह मे,
क्यो नही देता उसे यश-दान तू?
हो जटित या रानियो के हार में,
क्यो नही पाता अमित सम्मान तू?

(५)

हो नृपति के शिर-मुकुट पर, सोहकर,
क्यो न दिखलाता वहाँ तू नृत्य है?
देव-प्रतिमा या शिवालय मे पहुँच,
क्यो न तू होता अरे कृतकृत्य है?

(६)

उक्त प्रश्नों को सुहृद 'पाषाण' के,
'रत्न' था एकाग्र मन से सुन रहा।
जब उसे देखा हुआ चुप, उस घड़ी,
सिर झुका आदर-सहित उसने कहा—

(७)

"ठीक है, पाषाण, कहना आपका,
किन्तु इसमे भी छिपा कुछ भेद है।

इसलिए इस क्षुद्र-से अपमान का,
अब नहीं होता मुझे कुछ खेद है ॥

(८)

रत्न हूँ मैं नाम को तो क्या हुआ ?
पर असल में हूँ न क्या पत्थर, कहो ?
इष्ट है मुझको भला फिर त्यागना,
संग पत्थर और कङ्कड़ का अहो !

(९)

दीन से बन कर धनी, मानी भला,
दीन जन को भूल जाना चाहिए ?
और क्या पाकर ज़रा-सी उच्चता,
दर्प से फिर फूल जाना चाहिए ?

(१०)

कंकड़ों या पत्थरों को देख ले,
दृष्टि से अवहेलना की अज्ञ जन,
पर नहीं कोई कहीं इनसे अधिक,
परहितैषी—यह बताते विज्ञ जन ॥

(११)

क्षुद्र-सी कुटिया बड़े मन्दिर-महल,
हैं न क्या इन पत्थरों के ही बने ?

हो गुहा छोटी कि हों भारी अचल,
हैं सभी तो पत्थरों के ही बने ॥

(१२)

आत्मश्लाघा हैं गुणी करते नही,
यह सिखाते शुभ्र रजकण आपके।
क्या कहूँ ? कितना कहूँ ? कैसे कहूँ ?
है सुगम गिनना न गुण-गण आपके ॥

(१३)

क्या हुआ, बहुमूल्य या उपमान हूँ,
रग का या रूप का हूँ धाम जो ?
पर, नही कुछ काम का तब तक सभी,
विश्व-सेवा मे न आया काम जो ॥

(१४)

हो न सकती सत्य शोभा हो जटित,
ताज में गृह-द्वार मे या हार में।
वस्तुतः होता बड़ा अपमान है,
मोह से हो पद-दलित ससार मे ॥

(१५)

प्राप्य है आदर तभी इस लोक में,
दूसरो का हित अगर करता रहे।

दिन दिन भर खानो मे या बन्द जगहो मे काम करते रहते हैं, बड़े बड़े विद्वानो के सामने यह प्रश्न सदैव आया करता था कि सूरज की कृत्रिम रोशनी कैसे उत्पन्न की जाय? आवश्यकता आविष्कार की जननी है। इस सिद्धान्त के अनु-

बच्चा कृत्रिम धूप का आनन्द ले रहा है

सार अमरीकावालो ने अपना सूर्य्यप्रकाश बनाने का तरीका निकाल लिया। इधर कई वर्षों से वहाँ इस प्रकार की कृत्रिम धूप से काम लिया जा रहा है। कुछ खास तरह के बिजली के

लैम्प बनते हैं, जिनमे यह रोशनी निकलती है। इस रोशनी मे सूर्य्य की रोशनी के सब गुण होते हैं। इससे फल पक सकते हैं, पौधे बढ सकते हैं और प्राणी जिन्दा रह सकता है। यदि ऐसा लैम्प लेकर कोई मनुष्य किसी बन्द अँधेरी गुफा मे चला जाय तो उसे सूर्य्य की रोशनी का अभाव नही अखर सकता।

अब तो ऐसे लैम्पों का करीब करीब सारे योरप मे प्रचार हो गया है। मनुष्य की बहुत-सी बीमारियॉ इन लैम्पों का प्रकाश देखते ही भग जाती हैं। कितने ही सरकारी और गैर सरकारी दवाखाना मे ये लैम्प काम मे आने लगे हैं। बहुत-से अस्पतालों में तपेदिक आदि रोगो का केवल इसी के द्वारा इलाज किया जाता है। आधुनिक सभ्यता के कारण लोग सदैव बहुत-से कपड़े पहने रहते हैं। वे अपने कमरों से बाहर नङ्गे बदन नही निकलते। अब इन लैम्पो की सहायता से ऐसे लोग अपने कमरो मे ही धूप-स्नान कर सकते हैं। सामने के चित्र मे देखिए। एक लड़का अपने कमरे मे बैठा धूप-स्नान कर रहा है। आँखो को चमक से बचाने के लिए इस दशा में ठढे चश्मों का पहनना आवश्यक होता है।

इन लैम्पों मे एक और विशेषता यह होती है कि इनकी धूप आवश्यकता के अनुसार तेज या मन्द की जा सकती है। इससे सबसे बड़ा फायदा यह होता है कि यदि सूर्य्य की धूप में एक घटा बैठने की आवश्यकता

हो तो इसकी रोशनी मे दस ही पन्द्रह मिनट मे काम चल सकता है। जब पिछली बार किंग जार्ज बीमार हुए तब उनकी चिकित्सा भी एक इसी प्रकार के लैम्प से की गई थी और उसी से उन्हे लाभ पहुँचा था। अब इन लैम्पो मे और भी बहुत-से सुधार हो रहे हैं। हाल मे एक कारीगर ने एक घडीदार लैम्प बनाया है, जिससे एक खास समय से खास समय तक खुला रह कर लैम्प अपने आप बुझ जाता है। इससे चिकित्सक की असावधानी से रोगी जल नही सकता। एक दूसरे कारीगर ने और भी संशोधन किया है, जिससे धूप की प्रत्येक किरण रोकी या घटाई-बढाई जा सकती है।

इस दिशा मे और भी अनेक आविष्कार हो रहे हैं और उनके अनुसार नये नये यन्त्र तैयार हो रहे है। जान पड़ता है, कुछ दिनो मे मनुष्य को सूरज की आवश्यकता ही न रह जायगी। वह केवल दिन की याद दिलाने के लिए आसमान मे आया करेगा। योरप मे सूर्य्य देवता तीन कामों के लिए प्रसिद्ध हैं—रोशनी देना, जीवनदायिनी गर्मी देना और बर्फ गलाना। उनके पहले दूसरे कामो को विज्ञान-वेत्ताओ ने किस प्रकार अपने अधीन कर लिया है, इसका कुछ पता पाठको को ऊपर की बातो से चल सकता है। अब जरा बर्फ गलाने की बात सुनिए। विज्ञान-वेत्ताओ ने इस कार्य्य को सम्पन्न

करने का इतना आश्चर्य्यजनक ढङ्ग निकाल लिया है कि स्वयं सूर्य्य देवता को चकित होना पड़ा है।

ध्रुव-प्रदेशों को आप बर्फ के प्रदेश कह सकते हैं। वहाँ बारहों मास बर्फ जमी रहती है और गर्मी मे जब सूर्य्यदेव किसी सीमा तक बर्फ पिघलाते हैं तब भी वहाँ जहाजो के जाने मे बड़ा खतरा रहता है, क्योंकि वहाँ के समुद्र मे बर्फ के बड़े
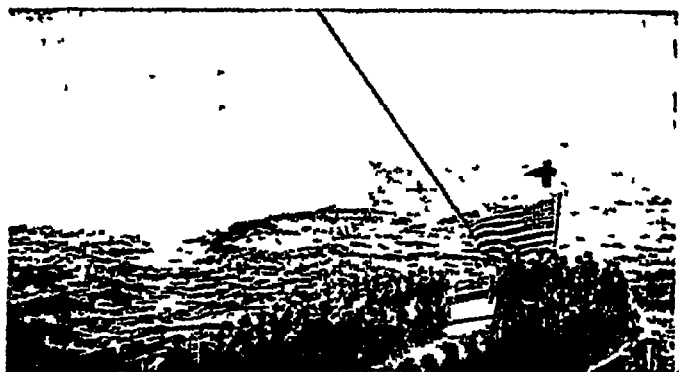
वह स्थान जहाँ सन् १९१२ में आइस्बर्ग से एक जहाज़ के टकरा जाने से १५०३ मनुष्य मर गये थे।

बड़े पहाड़, जिन्हे आइसबर्ग कहते हैं, उतराते रहते हैं और जहाजों को अपनी टक्कर से टुकड़े टुकड़े कर सकते हैं। सन् १९१२ मे ऐसे ही एक बर्फ के पहाड़ से टकरा कर अमरीका का टिटैनिक नामक जहाज़ अपने १५०३ यात्रियो के साथ नष्ट हो गया था। तब से अमरीकावाले इन बर्फ के पहाड़ो

से बराबर लड़ते चले आ रहे हैं। उत्तरी अटलांटिक सागर में ऐसे ख़तरे चारो तरफ़ से मुँह बाये रहते हैं। उनको बारूद आदि से उड़ाने के लिए जितने प्रयत्न किये गये सब निष्फल हुए। अब कनाडा के डाक्टर बार्न्स नामक एक इञ्जीनियर ने इन विशालकाय श्वेत राक्षसों को नष्ट करने की एक बड़ी सरल तरकीब खोज निकाली है। उनका कहना है कि इन बर्गों मे छेद करके एक खास किस्म का द्रव्य जो उन्होने 'अल्मूनियम' और 'आयरन आक्साइड' से तैयार किया है, भर दिया जाय तो इतनी गर्मी पैदा होगी कि पिघलने की कौन कहे वे बात की बात मे भाफ बन कर उड़ जायँगे। लारेन्स नदी मे उनके ऐसे प्रयोग ख़ूब सफल हुए है। यह द्रव्य बात की बात मे १५,००० डिग्री तक की गर्मी पैदा करने की शक्ति रखता है। इससे पहले बर्फ फटती है, फिर धड़ाके के साथ उड़ जाती है। इस प्रकार करोड़ो टन के बर्फीले पहाड़ बात की बात मे पानी पानी हो जाते है। वह समय बहुत करीब है जब बर्फ के इन पहाड़ो मे जहाज़ो के फँसने की बात कहानी-मात्र रह जायगी। और डाक्टर महोदय को तो यहाँ तक आशा है कि इस क्रिया के द्वारा बर्फ की चट्टाने काट काट कर ध्रुव तक जहाजो के जाने का रास्ता बन जायगा।

प्रश्न

१—सूर्य के समान प्रकाश देनेवाले विद्युत्-लैम्पों का आविष्कार क्यों हुआ?

२—बर्फ के-पहाड़ कैसे तोड़े जाते हैं?

२४—ऊषे !

(१)

ऊषे ! बता किस व्यक्ति ने निर्माण है, तेरा किया ?
बालार्क सिन्दूर-बिन्दु तेरे भाल में किसने दिया ?
सर्वप्रथम तेरा हुआ था जन्म कब ससार मे ?
किसने लिया निज गोद में सर्वाग्र तुझको प्यार मे ?

(२)

सुख-शान्ति-युत कमनीय वह कैसा मनोहर काल था ?
आलोकमय करता गगन तब कौन-सा ग्रह जाल था ?
उस काल हँसते थे कुसुम, क्या थी सुकोकिल बोलती ?
तेरे सुस्वागत हेतु तटिनी क्या विकल थी डोलती ?

(३)

प्रातः निकल निज गेह से करती अहो, जब तू गमन;
नव रश्मियों का मुकुट तेरे शीश रखता कौन जन ?
क्या तरल चपल समीर कर लाती यहाँ तुझको वहन ?
या ले तुझे निज अङ्क मे लाता त्वरित है श्याम घन ?

(४)

ऊषे ! यहाँ आती सदा तू बात किसकी मान कर ?
किसने दिया यह रूप तुझको दिव्यतम, क्या जान कर ?
तुझको कभी देखा नहीं सन्ताप में या शोक मे,
किस वस्तु को सबसे अधिक तू चाहती है लोक मे ?

(५)

वन-बाग बीच बखेरता बहु नित्य मुक्ता-माल तू,
क्या तोड़ लाती मार्ग से निज मोतियो की डाल तू ?
किसने सरलतामय दिया यह भाव तुझको त्याग का ?
किसने भरा तेरे हृदय मे रङ्ग यह अनुराग का ?

(६)

ऊषे ! भला, किस हेतु करती तू निरन्तर हास है ?
किसको रिझाने के लिए यह सरल भृकुटि-विलास है ?
कहती न कुछ, बस, एक ही सी तू खड़ी है हँस रही;
है जान पड़ता गेह से निज सीख कर आई यही ॥

(७)

क्षण काल ही के हेतु हे ऊषे ! सकल तव साज हैं,
चाञ्चल्य-पूरित-बालिका के से सभी तव काज हैं।
इन्द्र-प्रभा-सी रञ्जिता हो शीघ्र तू आती यहाँ,
चपला-सदृश बस चमककर है लौट फिर जाती कहाँ ?

प्रश्न

१—उषा काल का वर्णन करो।

२—निम्नलिखित शब्दों का अर्थ बताओ और उनको वाक्यों में प्रयोग करो :—

निर्माण, आलोकमय, रश्मियों, दिव्यतम, अनुराग, भृकुटि-विलास और रञ्जित है।

२५—महाराणा प्रताप

(नाटक)

[यह दृश्य उस समय का है जब राणा प्रताप पहाड़ियों में छिप कर शत्रुओं से बचने की चेष्टा कर रहे थे। इन्हें छोड़कर राजपूताने के अन्य सब राजाओं ने मुगल-सम्राट् अकबर का लोहा मान लिया था]

(स्थान—जंगली मार्ग—कई भील सिर पर बड़े-बड़े पिटारे लिये घबराये हुए आते हैं)

एक भील—चलो, चलो भाइयो! पैर बढ़ाये चलो।

(एक पिटारे के भीतर से रानी)

अरे दरबार कहाँ हैं? उनकी क्या दशा है?

दूसरा भील—चुप, चुप, माँ जी चुप, अभी शत्रु-गण दूर नहीं हैं, अभी साँस न लेना।

तीसरा भील—माँ दरबार के लिए कुछ चिन्ता न करना, जब तक एक भी भील-बच्चा जीता रहेगा, आप लोगों में से किसी का एक बाल भी न बाँका होने पावेगा।

(नेपथ्य में—"धन्य स्वामि-भक्ति")

सब भील—'अरे कौन आया? चलो; चलो जल्दी भागे।'

(सब भागते हैं—वीरवेग से अत्यन्त आहत गुलाबसिंह का प्रवेश)

गुलाबसिंह—धन्य स्वामिभक्ति, धन्य! अहा! ये गँवार इस समय प्रभु की कैसी सेवा कर रहे हैं! धिक्कार है हम

लोगो को कि प्रभु के एक काम न आये। न जाने कहाँ दरबार पड़ गये हैं बहुत खोजा, कहीं पता न लगा। हाय ! हे दीनानाथ ! प्रतापसिंह की रक्षा करना। इस समय हम लोगों के मान-गौरव का एक वही आश्रय है, उसे न छीन लेना।

(नेपथ्य से)

छिः प्रभु को अकेले छोड़कर कायरो की तरह बड़बड़ा रहे हो ? अरे जाओ जल्दी जाओ, या तो राणा की रक्षा करो, या वहीं तुम भी उनका साथ दो।

गुलाबसिंह—(चौंक कर) हैं, इस समय यह अमृत-वर्षा किसने की ? (नेपथ्य की ओर देखकर) अहा ! प्यारी मालती के बिना और किसका हृदय इतना उदार होगा ? धिक्कार है हमको कि दरबार विपत्ति मे फँसे हैं, और हम प्राण लेकर यहाँ खड़े हैं।

(जाने के लिए उद्यत होता है, और आगे की ओर देखकर प्रसन्नता-पूर्वक)

आहा ! वह देखो राणा जी तो भील-वेश मे चले आ रहे हैं। जान पड़ता है, प्रभु-भक्त भीलो ने अपने को राणा बना, दरबार को अपने वेश मे बचाया। धन्य भीलो धन्य ! आज तुम्हारा जन्म सुफल हुआ अब जो तुम्हे नीच कहे वह आप नीच है। चलो हम भी प्रभु की सेवा करे।

(गुलाबसिंह जाता है)

तृतीय गर्भांक

रानी—(मन ही मन) हाय ! क्या यह देव-तुल्य शरीर इस घोर कानन में पत्थर की सेज पर सोने-योग्य है ? जिसे सैकड़ो ही दास-दासियाँ अपनी सेवा से प्रसन्न नही कर सकती थी, उसे मै—जिसे कभी सेवा-कार्य सीखने का काम न पड़ा—कैसे प्रसन्न कर सकती हूँ। तिस पर इन बालको के लालन पालन से और भी समय नही मिलता कि इनकी कुछ सेवा कर सकूँ। (राणा की ओर सजल नेत्र से देखकर) नाथ ! इस अभागिन के कारण आपको बहुत दुःख सहने पड़ते हैं—क्षमा करना। हाय ! मै तुम्हारी कुछ सेवा नहीं कर सकती, मैं जब से तुम्हारी सेवा मे आई, दु.ख ही देती रही। हाय ! परमेश्वर को मैं इसका क्या उत्तर दूँगी ? यदि मैं अभागिन आज मर गई होती तो तुम्हारी चिन्ता बहुत कम हो जाती, मेरी ही रक्षा के लिए तुम्हे हैरान रहना पड़ता है। (आँसू पोंछती है) राजकुमारी आकर रानी के गले से लिपट कर—"माँ, बड़ी भूख लगी है।"

रानी—बेटी, अभी तुम्हें खाये थोड़ी ही देर तो हुई है।

रा० कु०—हूँ हूँ आधी ही रोटी तो दी थी, उससे पेट तो भरा नही, फिर बड़ी भूख लगी है।

रानी—अच्छा, शोर न कर, नही तो दरबार की नींद खुल जायगी।

रा० कु०—(धीरे से) मा, दरबार उदयपुर कब चलेंगे ?

रानी—(आँखों में आँसू भरकर) जब भाग्य ले जाय।

रा० कु०—अच्छा खाने को तो दे, अब भूख नहीं सही जाती।

रानी—प्राण मत खा, जा उस पत्थर के नोचे आधी रोटी ढँकी है उसे खा ले।

रा० कु०—मा, घास की रोटी और कब तक खानी होगी, यह रोटी तो रूखी खाई नहीं जाती। और कुछ नहीं है ?

रानी—(आँख डबडबा कर) बेटी, जब जो मिले तब उसे प्रसन्न होकर खाना चाहिए, अन्न को ऐसा न कहना चाहिए।

(राजकुमारी जाकर ज्यों ही पत्थर उठाती है, त्यों ही बिल्ली झपट कर उस आधी रोटी को भी खींच ले जाती है, राजकुमरी चीख कर रोने लगती है, रानी भी अपने वेग को नहीं रोक सकतीं। फूट-फूट कर रो उठती हैं, राणा चौंक कर खड़े हो जाते हैं।)

राणा—क्या हुआ ? क्या हुआ ? क्या दुश्मन आये क्या ?

(राजकुमारी की ओर देखकर) बेटी तू क्यों इस तरह रो रही है ?

रा० कु०—(कुछ बोल नहीं सकती, रोती हुई उँगली से बिल्ली की ओर दिखाती है)

राणा—क्या तेरी रोटी बिल्ली उठा ले गई ?

रा० कु०—(राणा से लिपट कर रोते-रोते)

ब—डी—भू—ख—ल—गी है।

राणा—(वेग-पूर्वक आँसू रोककर स्वगत) हाय, प्रताप का यह हृदय जो कभी बड़े बड़े शत्रु-दल से नही हिला आज क्यो काँपा जाता है; जो आँखे बड़ी बड़ी विपत्तियो मे फँसने से और बड़े बड़े दु:ख पड़ने पर भी आर्द्र न हुईं, उनमें आज स्वत: आँसू क्यों उमड़े आते हैं? (रानी की ओर देखकर) भद्रे! हमारे हिस्से की रोटी हो तो इसे देकर चुप कराओ, इसके रोने से तो मेरा कलेजा उमड़ा आता है।

(रानी निरुत्तर होती है।)

राणा—तो क्या तुम्हारे पास ऐसा कुछ भी नहीं है जिससे इसकी भूख बुझा सको?

(रानी बड़े वेग से रो उठती है।)

राणा—हाय, आज मेवाड़ के राणा की यह दशा हुई कि घास की जड़ की रोटियाँ भी उसकी सन्तान को प्राप्त नहीं? दीनानाथ! मैंने ऐसे कौन दुष्कर्म किये हैं जो मुझे ऐसे दारुण दु:ख सहने पड़ते हैं? हे प्रभो! मैं इस आर्य्य-भूमि की रक्षा करने और इसका गौरव बढ़ाने के लिए जो इतने प्रयत्न कर रहा हूँ, क्या वे तुम्हें नहीं रुचते? जाना, जाना, तुम्हारा कोप इस देश पर है, इसलिए अपनी इच्छा के प्रतिकूल कार्य्य करने के कारण तुम प्रताप पर रुष्ट हो, पर नाथ! इन अबोध बालकों ने क्या बिगाड़ा है जो तुम्हें इन पर भी दया नहीं आती? (उन्मत्त की भाँति घूमता हुआ)

अच्छा जाने दो, जाने दो, इस अभागे देश को रसातल में जाने दो, मुझे क्या, मैं भी न बोलूँगा, तुम्हारी यही इच्छा है तो यही सही—(कुछ ठहर कर) सारा देश अकबर के करतल-गत है, सब अपनी स्वतन्त्रता को इच्छापूर्वक बेच रहे हैं। जब किसी को इसकी कुछ परवा नहीं है तो प्रताप, तू क्यों व्यर्थ प्राण दिये देता है—अरे अकेले तेरे किये क्या होगा? क्यों व्यर्थ ही इन कुसुम-सुकुमार बालकों को कष्ट दे देकर सताता है? हाय, यह प्रताप का वज्र-हृदय हिमालय की उच्चतम शिखर से गिराये जाने की चोट सह सकता है, यह बड़े बड़े गोले-गोली, तीर-कमान को छाती पर रोक सकता है, इस शरीर को टुकड़े टुकड़े कर डालो। यदि मुँह से उफ भी निकले तो जबान खींच लेना। पर हाय, इन सुकुमार अबोध बच्चों के करुण वचन तो सहे नहीं जाते; हृदय को छेदे डालते हैं—

सहे सबै दुख नेकु न अपने प्रण ते हटके।
राज गयो, धन गयो, फिरे वन वन में भटके॥
प्यारे बान्धव कटे आपने सुतहिं कटायो।
राखि आपुनी टेक सबै तृण-सरिस सहायो॥
पै हाय सही अब जात नहिं जीवत इन नैननि निरखि।
इन दूध पीवते बालकनि रोटी-हित रोवत बिलखि॥

प्रभु, अपनी सृष्टि को सँभालो, आज अनहोनी हो रही है, वज्र-हृदय प्रताप का हृदय भी आज द्रवित हुआ जाता है,

आज क्या होनहार है ? (राजकुमारी रोते-रोते सो जाती है) अहा सचमुच नींद-सी सखी सहचरी ससार मे कोई नही। देवी ? इस समय तुमने हमारा बड़ा उपकार किया, हम तुम्हे प्रणाम करते हैं। (रानी से) तुम यही रहो, मै देखूँ, यदि कुछ मिल सके तो लाऊँ नही तो नींद खुलते ही फिर—

(नेपथ्य में)

अरे राणा जी कहाँ हैं, जल्दी से उन्हे खबर दो, शत्रुओं को यहाँ का भी पता लग गया।

राणा—हाय अब नही सही जाती, और तो और इस भूख की मारी छोकरी को कैसे जगावे ?

(घबराया हुआ बाहर जाता है)

(पटाक्षेप)

प्रश्न

१—राणा प्रताप की ऐसी दशा क्यों हो गई थी ?

२—क्या तुम बता सकते हो कि राणा प्रताप "मेवाड़सिंह" क्यों कहे जाते हैं ?

३—राणा प्रताप के जीवन से क्या शिक्षा मिलती है ?

४—निम्न-लिखित शब्दों की शब्द-निरुक्ति विस्तार-पूर्वक करो।—
"माँ, दरबार के लिए कुछ चिन्ता न करो।"

५—वाक्य के साधारणत कितने टुकडे किये जा सकते है ?

निम्न-लिखित वाक्य के टुकड़े करो :—

"जिसे सैकड़ों ही दास-दासी अपनी सेवा से प्रसन्न नहीं कर सकती थीं उसे मैं—जिसे कभी सेवा-कार्य सीखने का काम न पड़ा—कैसे प्रसन्न कर सकती हूँ ?"

६—संक्षेप में राणा प्रताप की जीवनी लिखो।

७—निम्न-लिखित शब्दों को अपने एक वाक्य में प्रयुक्त करो :—

आद्र, रसातल, हिमालय।

८—इस पाठ में जो पद्य है—उसका अर्थ सरल भाषा में लिखो।

२६—सीता जी का आग्रह

[१]

समाचार तेहि समय सुनि, सीय उठी अकुलाय।
जाय सासु-पद कमल-युग, वन्दि बैठि सिर नाय॥

दीन्ह असीस सासु मृदु बानी;
अति सुकुमारि देखि अकुलानी।
बैठि नमित-मुख सोचति सीता,
रूप-राशि पति प्रेम पुनीता॥
चलन चहत वन जीवननाथा;
कौन सुकृत सन होइहि साथा।
मञ्जु विलोचन मोचति वारी,
बोली देखि राम महतारी॥

तात ! सुनहु सिय अति सुकुमारी;
सासु, ससुर, परिजनहिं पियारी।
पलँग-पीठि तजि गोद हिंडोरा,
सिय न दीन्ह पग अवनि कठोरा॥
अमिय-मूरि सम जुगवत रहहूँ;
दीप-बाति नहिं टारन कहहूँ।
सो सिय चलन चहत तव साथा,
आयसु काह होइ रघुनाथा॥
बनहित कोल-किरात-किशोरी;
रची विरञ्चि विषय सुख भोरी।
सिय बन बसहि तात ! केहि भाँती,
चित्र-लिखित कपि देखि डराती॥
कहि प्रिय वचन विवेक-मय, कीन्ह मातु परितोष।
लगे प्रबोधन जानकिहि, प्रकट विपिन-गुण-दोष॥
मातु समीप कहत सकुचाही,
बोले समय समुझि मन माही।
राजकुमारि ! सिखावन सुनहू,
आन भाँति जनि जिय कछु गुनहू॥
आपन मोर नीक जो चहहू,
बचन हमार मानि घर रहहू।
आयसु मोर सासु-सेवकाई,
सब विधि भामिनि ! भवन भलाई॥

यहि ते अधिक धर्म नहिं दूजा,
सादर सासु-ससुर-पद-पूजा।
जब जब मातु करहि सुधि मोरी,
होइहि प्रेम-विकल मति भोरी॥
तब तब तुम कहि कथा पुरानी;
सुन्दरि! समझायहु मृदु-बानी।
कहौं स्वभाव शपथ-शत मोहीं
सुमुखि! मातु-हित राखहुँ तोहीं॥
गुरु-श्रुति-सम्मत धर्म-फल, पाइय बिनहिं कलेश।
हठ-वश सब संकट सहे, गालव नहुष नरेश॥
मैं पुनि करि प्रमाण पितु-बानी,
वेगि फिरब सुनु सुमुखि सयानी।
दिवस जात नहिं लागहि वारा,
सुन्दरि! सिखवन सुनहु हमारा॥
जो हठ करहु प्रेम-वश वामा;
तौ तुम दुख पाउब परिनामा।
कानन कठिन भयङ्कर भारी,
घोर घाम, हिम, वारि, बयारी॥
कुश कंटक मग कंकर नाना;
चलब पयादेहि बिनु पद-त्राना।
चरण-कमल मृदु मंजु तुम्हारे,
मारग अगम, भूमिधर भारे॥

कन्दर, खोह, नदी, नद, नारे,
अगम अगाध न जाहिं निहारे।
भालु, बाघ, वृक, केहरि, नागा;
करहिं नाद सुनि धीरज भागा॥
भूमि-शयन वलकल-वसन, अशन कन्द, फल, मूल।
ते कि सदा सब दिन मिलहिं, समय समय अनुकूल॥
नर-अहार रजनीचर करहीं,
कपट-वेष वन कोटिन फिरहीं।
लागै अति पहार कर पानी,
विपिन विपति नहिं जात बखानी॥
व्याल कराल, विहँग वन घोरा,
निशिचर-निकर नारि-नर चोरा।
डरपहिं धीर गहन-सुधि आये,
मृगलोचनि! तुम भीरु सुहाये॥
हंसगमनि! तुम नहिं वन योगू,
सुनि अपयश देहहिं मोहिं लोगू।
मानस-सलिल सुधा प्रतिपाली,
जियइ कि लवन-पयोधि मराली!
नव-रसाल-वन-विहरण-शीला,
सोह कि कोकिल विपिन करीला?
रहहु भवन अस हृदय विचारी,
चन्द्रवदनि! दुख कानन भारी॥

सहज सुहृद्‌गुरु स्वामि सिख, जो न करै मन मानि।
सो पछिताय अघाय उर, अवसि होय हित-हानि॥

[२]

सुनि मृदु बचन मनोहर पिय के,
लोचन नलिन भरे जल सिय के।
शीतल सिख दाहक भइ कैसे;
चकइहि शरद चाँदनी जैसे॥
उतर न आव विकल वैदेही,
तजन चहत मोहिं परम सनेही।
बरबस रोकि विलोचन-वारी;
धरि धीरज उर अवनिकुमारी॥
लागि सासु-पद कह कर जोरी,
छमब मातु! बड़ि अविनय मोरी।
दीन्ह प्राणपति मोहिं सिख सोई,
जेहि विधि मोर परम हित होई॥
मैं पुनि समुझि दीख मन माही,
पिय-वियोग सम दुख जग नाही।
यहि विधि सिय सासुहि समुझाई;
कहति पतिहि वर विनय सुनाई॥

प्राणनाथ! करुणायतन! सुन्दर! सुखद! सुजान!
तुम बिन रघुकुल-कुमुद-विधु! सुरपुर नरक समान॥

मातु, पिता, भगिनी, प्रिय भाई;
प्रिय परिवार, सुहृद समुदाई।
सासु, ससुर, गुरु, सुजन सहाई,
सुठि सुन्दर, सुशील, सुखदाई॥
जहँ लगि नाथ! नेह अरु नाते;
पिय बिनु तियहि तरनि ते ताते।
तनु, धन, धाम, धरणि, पुर-राजू;
पति-विहीन सब शोक-समाजू॥
भोग रोग-सम, भूषण भारू,
यम-यातना सरिस संसारू।
प्राणनाथ! तुम बिनु जग माही,
मो कहँ सुखद कतहुँ कोउ नाहीं॥
जिय बिनु देह, नदी बिनु वारी,
तैसहि नाथ! पुरुष बिनु नारी।
नाथ! सकल सुख साथ तुम्हारे,
शरद-विमल-विधु-वदन निहारे॥
राखिय अवध जो अवधि लगि, रहत जानिए प्रान।
दीनबन्धु! सुन्दर! सुखद! शील-सनेह-निधान!
बन दुख नाथ! कहेउ बहुतेरे,
भय, विषाद, परिताप घनेरे,
प्रभुवियोग लवलेश समाना,
सब मिलि होहिं न कृपा-निधाना!

अस जिय जानि सुजान-शिरोमनि !
लेइय सङ्ग, मोहिं छाँड़िय जनि।
विनती बहुत करौं का स्वामी !
करुणामय ! उर-अन्तर्यामी !
मोहिं मग चलत न होइहि हारी,
छिन-छिन चरण-सरोज निहारी।
सबहि भाँति पिय ! सेवा करिहौं,
मारग-जनित सकल श्रम हरिहौं॥
पाँव पखारि बैठि तरु छाहीं,
करिहौं वायु मुदित मन माहीं !
बार बार मृदु मूरति जोही,
लागहि ताति बयारि न मोही॥
को प्रभु-सँग मोहिं चितवन-हारा,
सिंह-वधुहिं जिमि शशक-सियारा।
मैं सुकुमारि नाथ ! बन-योगू,
तुमहिं उचित तप, मो कहँ भोगू॥
ऐसेहु बचन कठोर सुनि, जो न हृदय बिलगान।
तौ प्रभु ! विषम वियोग-दुख, सहिहैं पामर प्रान॥
अस कहि सीय विकल भइ भारी,
वचन वियोग न सकी सँभारी।
देखि दशा रघुपति जिय जाना;
हठि राखे नहिं राखहि प्राना॥

कहेहु कृपाल भानुकुल-नाथा;
परिहरि सोच चलहु बन साथा।
नहिं विषाद कर अवसर आजू;
वेगि करहु बन-गमन-समाजू॥
तब जानकी सासु-पग लागी;
सुनिय मातु! मैं परम अभागी।
सेवा-समय दैव बन दीन्हा,
मोर मनोरथ सफल न कीन्हा॥
तजहु छोभ, जनि छाँड़हु छोहू;
कर्म्म कठिन कछु दोष न मोहू।
सुनि सिय-बचन सासु अकुलानी,
दसा कवन विधि कहहुँ बखानी॥
सीतहि सासु असीस सिख, दीन्ह अनेक प्रकार।
चली नाइ पदपद्म सिर, अति हित बारहिं बार॥

—तुलसीदास

प्रश्न

१—श्री रामचन्द्र जी को बन क्यों जाना पड़ा?

२—किन शब्दों में सीता जी ने बन जाने की प्रबल इच्छा प्रकट की?

३—सीता जी के चरित से भारतवर्ष की स्त्रियाँ क्या शिक्षा प्राप्त कर सकती हैं?

४—निम्न दोहे का अर्थ करो और गालव तथा नहुप की कथा लिखो—

गुरु-श्रुति-सम्मत धर्म-फल, पाइय विनहि कलेश।
हठ-वश सब सङ्कट सहे, गालव, नहुप नरेश॥

५—क्या कारण था कि रामचन्द्र जी सीता जी को वन नहीं ले जाना चाहते थे ?

६—शरद्-विमल-विधु-वदन का विग्रह करो और समास बतलाओ।

२७—दानवीर गंगाराम

सन् १८६८ ईसवी के लगभग की बात है। एक एंट्रेस-परीक्षा-पास विद्यार्थी लाहौर में नौकरी की तलाश में घूमता था। एक दिन वह अपने पुरोहित से, जो एक आफिस में काम करते थे, मिलने के लिए गया। लडका तो था ही. उसे इस बात का ज्ञान न था कि कहाँ बैठा जाता है और कहाँ नहीं। एक अच्छा कमरा देखकर वह उसमें चला गया और वहीं एक कुर्सी पर बैठ गया। थोड़ी देर बाद एक अफसर ने आकर उस लड़के को कुर्सी पर से उठा दिया। जब उस विद्यार्थी को पता लगा कि वह इञ्जीनियर साहब की कुर्सी थी तब वह बहुत लज्जित हुआ। इतने में पुरोहित जी भी आ गये। उन्होंने पूछा—"एंट्रेस तो तुमने पास कर ही लिया, अब क्या करना चाहते हो ?" विद्यार्थी ने उत्तर दिया—"मैं तो इञ्जीनियर बनूँगा और जिस कुर्सी पर से उठाया गया

हूँ उसी पर आकर बैठूँगा।" उस विद्यार्थी ने आगे चलकर अपनी प्रतिज्ञा पूर्ण की। इंजीनियर बनकर वह उसी कुर्सी पर आकर बैठा और उन्हीं इंजीनियर साहब का काम उसने

दानवीर गंगाराम

लिया जिन्होंने उसे कुर्सी पर से उठा दिया था। यही विद्यार्थी आगे सर गंगाराम के नाम से प्रसिद्ध हुआ।

सर गंगाराम का जन्म सन् १८५१ ई० मे पञ्जाब के जिला शेखूपुरा मे हुआ था। आपके पिता लाला दौलतराम जी उस समय अमृतसर मे कोर्ट इस्पेक्टर थे। लाला दौलतराम जी वास्तव में सयुक्त प्रान्त के सहारनपुर जिले के रहनेवाले थे। वे पीछे से पञ्जाब मे जा बसे थे। एट्रेस पास करने के बाद गगाराम रुड़की के टामसन कालेज मे प्रविष्ट हुए और वहाँ से इञ्जीनियरी मे उत्तीर्ण होकर लाहौर मे इञ्जीनियर नियत हुए। आपने बड़े परिश्रम के साथ अपना काम प्रारम्भ किया, जिससे सरकार आपकी योग्यता पर मुग्ध हो गई। जब सन् १८७५ ई० में प्रिंस आफ वेल्स भारत मे पधारे तब पञ्जाब-सरकार ने लाहौर मे उनके स्वागत का प्रबन्ध श्री गगाराम को सौंपा। सन् १९०३ ई० के शाही दरबार के प्रबन्धक आप ही बनाये गये थे। इसी अवसर पर आपको सी० आई० ई० की उपाधि मिली थी। सन् १९१२ ई० के शाही दरबार का प्रबन्ध भी आपको ही सौपा गया था। उसके उपलक्ष्य मे आपको एम० वी० ओ० की उपाधि मिली थी। इसके सिवा, लाहौर की सुप्रसिद्ध ऐतिहासिक इमारतो की मरम्मत का काम भी ११ वर्ष तक, आपकी ही देख-रेख मे हुआ था। लाहौर का राजकुमार-कालेज तथा अजायबघर आपके ही निरीक्षण मे बने थे। अमृतसर-पठानकोट रेलवे की आयोजना के व्यय का अनुमान-पत्र आपने ही तैयार किया था। इञ्जीनियरी से सम्बन्ध रखनेवाले कई छोटे-मोटे, किन्तु, बड़े उपयोगी

आविष्कार भी आपने किये थे, जिससे आपकी योग्यता की धाक खूब जम गई थी। ५२ वर्ष की अवस्था में आपने सरकारी नौकरी छोड़ दी। इसके बाद आपने ७ वर्ष तक पटियाला रियासत में काम किया।

सन् १९१५ तक तो गगाराम जी के दिन इसी तरह कटते रहे और सार्वजनिक कार्यों की ओर उनकी रुचि विशेष नहीं रही। पर इसके बाद उनके जीवन का अत्यन्त महत्त्व-पूर्ण भाग प्रारम्भ हुआ। जिस समय आपने नौकरी छोड़ी थी उस समय चिनाब की नहर पर आपको बीस वर्ग एकड़ जमीन दी गई थी। बस यहीं से आपकी उन्नति का श्रीगणेश हुआ। गगाराम जी ने इस निकम्मी भूमि को अत्यन्त उपजाऊ बना दिया। चिनाब नहर के हल्के मे बहुत सी ऐसी जमीन थी जो पानी के धरातल से बहुत ऊँची थी, नहर से उसे कोई लाभ नहीं पहुँचता था, और वह बिलकुल बजर पड़ी हुई थी। गगाराम जी ने सरकार से निवेदन किया कि यह जमीन मुझे दे दी जाय। सरकार ने आपकी प्रार्थना स्वीकार करके आपको ५० मुरब्बे एकड़ भूमि का एक भाग और दे दिया। आपने नहर में मशीन लगाकर पानी को ऊपर उठाया और इजिनो के द्वारा सारी जमीन को पानी से तर कर दिया। बजर जमीन लहलहा उठी। यह देखकर सरकार ने इसी तरह की जमीन के ४७ मुरब्बे एकड़ और दे दिये। इसको भी सर गगाराम ने इजिन और मशीनो की मदद से जलमय तथा

उर्वरा बना दिया। बस, फिर क्या था। खेती के कारण लक्ष्मी आपकी चेरी बन गई। उस भूमि के आस-पास गाँव पर गाँव बसने लगे। बिजली के कारखाने जारी होने लगे। अब जाकर वहाँ कोई देखे तो छोटे से छोटे किसान के झोपड़े मे भी बिजली की रोशनी देख पड़ेगी।

जब सर गगाराम इस तरह से मालामाल होने लगे तब उन्होंने दान-पुण्य-द्वारा अपने धन का सदुपयोग करना प्रारम्भ कर दिया।

सबसे पहले आपका ध्यान विधवाओं की दुर्दशा की ओर आकर्षित हुआ, और आपने विधवा-विवाह-सहायक सभा की स्थापना की। उपदेशक रक्खे गये, और भिन्न भिन्न स्थानों मे उसकी शाखाये स्थापित की गईं। इसके परिणाम-स्वरूप पजाब मे ही नही, बगाल, उड़ीसा, सयुक्त-प्रान्त आदि मे भी विधवा-विवाह-सहायक सभा की शाखाये खुल गईं। आज सर गगाराम की दानशीलता के कारण २५,२६ हजार रुपया प्रतिवर्ष इसी कार्य में व्यय हो रहा है।

इसी तरह लाहौर में गरीबो की चिकित्सा के लिए एक अच्छे अस्पताल की जरूरत थी। सर गगाराम ने अपने पास से कई लाख रुपये व्यय करके इस कमी को भी पूरा किया। अब यह तीस सहस्र रुपये वार्षिक के व्यय से चल रहा है, और इससे सहस्रो निर्धन लोग लाभ उठा रहे हैं।

इनके अतिरिक्त आपने हिन्दू-अपाहिज-आश्रम, हिन्दू-विद्यार्थी-सहयोग-समिति, सर गगाराम-पुस्तकालय, सर गगाराम-उद्योग-शाला इत्यादि कई सस्थाये स्थापित की, जो बराबर उन्ही के दान के सहारे चल रही हैं। इन सब सस्थाओं के लिए सर गगाराम ने ३० लाख की जायदाद दे दी है, जिसकी आमदनी मे इनका सञ्चालन होता है।

उक्त दान के अतिरिक्त आपने लेडी मैकलगन गर्ल्स हाई स्कूल, सर मालकम हेली कमर्शल कालेज, इंडस्ट्रियल नार्मल स्कूल इत्यादि सस्थाओं तथा साधारण तौर पर विधवाओ एव दीन-अनाथों को बीस लाख रुपये का दान और भी दिया। इस प्रकार ५० लाख रुपये के दान का तो यह मोटा हिसाब है। इसके अतिरिक्त छोटे-छोटे दानो का तो कोई अनुमान ही नही लगाया जा सकता। सर गगाराम की यह हार्दिक अभिलाषा थी कि वे कम से कम एक करोड़ रुपये दान के लिए छोड़ जायँ।

सर गगाराम के तीन पुत्र है। राय बहादुर लाला सेवकराम जी, लाला बालकराम जी और लाला हरीराम जी। पर सर गगाराम कहा करते थे कि मेरे तीन नही चार बच्चे हैं, 'सर गगाराम ट्रस्ट' को वे अपना चौथा पुत्र समझते थे। हर साल वे अपनी आमदनी के पाँच भाग करते थे, तीन पुत्रो के लिए, एक अपने लिए और एक ट्रस्ट के लिए।

राजकीय कृषि-कमीशन के सदस्य बनकर सर गंगाराम अस्वस्थ अवस्था मे हिन्दुस्तान से विलायत के लिए रवाना हुए थे। लाला सेवकराम जी उनके साथ थे। सर गगाराम सदा बिस्तर पर लेटे लेटे काम करते थे। अधिक उठना-बैठना उन्हे पसन्द न था। विलायत मे जाकर उन्हे बैठ कर काम करना पड़ा। इसका उनके स्वास्थ्य पर बुरा प्रभाव पड़ा, उन्हें हृदय-रोग हो गया और इसी के कारण उनके प्राण गये। इस प्रकार परोपकार-पूर्ण जीवन व्यतीत करके दीनो, अनाथो, अपाहिजों और विधवाओ का यह सहायक ७६ वर्ष की अवस्था मे स्वर्गवासी हुआ।

प्रश्न

१—सर गंगाराम ने जनता के लिए कौन-कौन से काम किये ?

२—सर गंगाराम के जीवन से तुम क्या सीख सकते हो ?

३—उन्होंने खेती के काम में क्या विशेष बात प्रचलित की ?

४—निम्न-लिखित वाक्य में कारक, संज्ञा, और सर्वनाम भेद-सहित बताओः—

"इंजीनियरी से सम्बन्ध रखनेवाले कई छोटे-छोटे किन्तु, बड़े उपयोगी आविष्कार भी आपने किये थे, जिससे आपकी योग्यता की धाक ख़ूब जम गई थी।"

५—क्रिया के भेद लिखो तथा उदाहरण देकर समझाओ।

६—निम्न-लिखित शब्दों से तुम क्या समझते हो ?

प्रिंस ग्राफ़ वेल्स, कोर्ट इन्सपेक्टर, इंजीनियर, नार्मल स्कूल, अजायबघर।

७—निम्न-लिखित शब्दों को अपने वाक्यों में प्रयोग करो :—

उपाधि, उपलब्ध, अतिरिक्त, आविष्कार।

२८—कबीर के भजन

(१)

गगन घटा घहरानी साधो, गगन घटा घहरानी।
पूरब दिशि में उठी बदरिया रिमझिम बरसत पानी।
आपन आपन मेड़ सम्हारो बह्यो जात यह पानी॥
मन के बैल सुरत हरवाहा जोत खेत निरबानी।
दुविधा दूब छोल करु बाहर बोव नाम की बानी॥
जोग जुगुत करि करु रखवारी चर न जाय मृग धानी।
बाली झार कूट घर लावे सोई कुसल किसानी॥
पाँच सखी मिल कीन रसोइया एक से एक सयानी।
दूनों थार बराबर परसें जेवें मुनि और ज्ञानी॥
कहत कबीर सुनो भाई साधो यह पद है निरबानी।
जो या पद को परचे पावे ताको नाम विज्ञानी॥

(२)

रहना नहिं देश बिराना है।

यह ससार कागद की पुड़िया बूँद पड़े घुल जाना है।
यह ससार काँट की झाड़ी उलझ-पुलझ मर जाना है॥
यह ससार झाड़ औ झाँकर आग लगे बरि जाना है।
कहत कबीर सुनो भाई साधो सतगुर नाम ठिकाना है।

(३)

सुगवा पिंजरवा छोरि भागा।

इस पिंजरे में दस दरवाजा दस दरवाजे किवरवा लागा॥
अँखियन सेती नीर बहन लाग्यो अब कस नाहीं तू बोलत अभागा।
कहत कबीर सुनो भाई साधो, उड़गो हस टूटि गया तागा॥

(४)

साधो, शब्द साधना कीजै।

जासु शब्द ते प्रगट भये सब शब्द सोई गहि लीजै॥
शब्दहिं गुरू शब्द सुनि सिख भे शब्द सो बिरला बूझै।
सोई शिष्य औ गुरु महातम जेहि अन्तर्गत सूझै॥
शब्दै वेद पुरान कहत है शब्दै सब ठहरावै।
शब्दै सुर मुनि सन्त कहत हैं शब्द भेद नहिं पावै॥
शब्दै सुनि सुनि भेद धरत है शब्द कहै अनुरागी।
षट दरसन सब शब्द कहत हैं शब्द कहै बैरागी॥

शब्दै माया जग उत्पानी शब्दै केर पसारा।
कहै कबीर जहँ शब्द होत है तवन भेद है न्यारा॥

(५)

झीनी झीनी बीनी चदरिया।
काहे कै ताना काहे कै भरनी कौन तार से बीनी चदरिया॥
इंगला पिंगला ताना भरनी सुषमन तार से बीनी चदरिया।
आठ कवल दल चरखा डोलै पाँच तत्त गुन तीनी चदरिया॥
साइँ को सियत मास दस लागै ठोक ठोक के बीनी चदरिया।
सो चादर सुर नर मुनि ओढ़ी ओढ़ि के मैली कीनी चदरिया।
दास कबीर जतन सों ओढ़ी ज्यो की त्यों धर दीनी चदरिया॥

(६)

ओढ़न मेरो राम नाम मैं रामहिं को बनिजारा हो।
राम नाम को करो बनिज मैं हरि मोरा हटवारा हो॥
सहस नाम को करौं पसारा दिन दिन होत सवाई हो।
कान तराजू सेर तिन पौवी डहकिनि ढोल बजाई हो॥
सेर पसेरी पूरा कर ले पासँग कतहुँ न जाई हो।
कहैं कबीर सुनो हो सन्तो जोरि चले जहँडाई हो॥

(७)

करम गति टारे नाहिं टरी।
मुनि वसिष्ठ से पंडित ज्ञानी सोध के लगन धरी॥
सीताहरन मरन दसरथ को बन मे विपति परी।
कँह वह फंद कहाँ वह पारिधि कहँ वह मिरग चरी॥

सीता को हर लै गो रावन सुबरन लंक जरी।
नीच हाथ हरिचन्द बिकाने बलि पाताल धरी॥
कोटि गाय नित पुन्न करत नृप गिरगिट जोनि परी।
पांडव जिनके आपु सारथी तिन पर विपति परी॥
दुरजोधन को गरब घटायो जदुकुल नास करी।
राहु केतु औ भानु चन्द्रमा विधि सजोग परी॥

प्रश्न

१—ऊपर के भजनों का भावार्थ लिखो ?

२—इन भजनो का दिल पर क्या प्रभाव पड़ता है ?

२६—आकाश-गङ्गा

स्वच्छ आकाश की ओर रात के समय देखने से एक सिरे से दूसरे सिरे तक सफेद बादल के समान अनुमान से चार-पॉच हाथ चौड़ा एक प्रकाश-मय पथ दिखाई देता है। उस पथ को आकाश-गङ्गा कहते हैं। कोई-कोई उसे दूध-गङ्गा के नाम से भी पुकारते हैं। यह प्रकाश-मय पथ अथवा आकाश-गङ्गा असख्य तारो से बनी हुई एक तेजस्क मालिका है।

बड़े से बड़े दूर-दर्शक यन्त्र से इस आकाश-गङ्गा का जितना भाग एक बार मे दिखाई देता है उसका एक चित्र एक विद्वान् ने तैयार किया है। उस मूल चित्र की हजारो नकले की

गई हैं। पर उनमे असली चित्र की खूबियाँ नही आ सकी। असली चित्र को सूक्ष्म-दर्शक यन्त्र द्वारा देखकर अनेक बड़े बड़े खगोलज्ञ भी आश्चर्य से चकित हो गये हैं। आकाश-गङ्गा का यह चित्र उन्नीसवी शताब्दी का एक आश्चर्यकारक आविष्कार है। इस चित्र मे कोई चालीस हज़ार छोटे छोटे बिन्दु दिखाई देते हैं। यह प्रत्येक बिन्दु एक एक सूर्य का चित्र है। चन्द्रमा और पृथ्वी के पास के पाँच ग्रहो के सिवा आकाश मे रात को जितने तारे देख पडते हैं वे सब शुक्ल-उष्ण अथवा रक्त-उष्ण प्रकाशवाले सूर्य हैं। हम इन सभी को "तारा" शब्द से ही पुकारते हैं। पर इनका यह नाम ठीक नही। क्योंकि यह इनका शास्त्रीय अर्थ नही हो सकता। हमारा सूर्य इस पृथ्वी मे १३,१०,००० गुना बड़ा है। यदि उसकी तुलना आकाश-मण्डल के तारो से की जाय तो मालूम हो कि सूर्य भी एक तारा है। आकाश-गङ्गा नभोमण्डल में हमे एक सिरे से दूसरे सिरे तक फैली हुई दिखाई देती है। उसमे छोटी बड़ी असख्य तारकाये हैं। उनमें से प्रत्येक हमारे सूर्य से बहुत बड़ी है। पृथ्वी से बहुत दूर होने के कारण हमको ये तारकाये ऐसी दिखाई देती हैं मानो एक-दूसरे के बहुत निकट हैं। पर वास्तव में इनका परस्पर अन्तर करोड़ो मील का है। दूर से देखने से जङ्गल के वृक्ष बहुत पास-पास उगे हुए मालूम होते हैं। पर निकट जाने से यह ज्ञात होता है कि वे एक दूसरे से बहुत अन्तर पर हैं। इसी तरह आकाश-गङ्गा का

प्रकाशमान पथ भी हमे ऐसा दिखाई देता है मानो मोती टँके हुए वस्त्र का एक लम्बा टुकड़ा एक सिरे से दूसरे सिरे तक फैला हुआ है। अत्यन्त दूरदर्शी दूरबीन से आकाश-गङ्गा का जो अप्रतिम सौन्दर्य दृष्टिगोचर होता है उसका वर्णन शब्दों की शक्ति के बाहर है।

एक बड़े कमरे मे काली मखमल का फर्श बिछा दिया जाय और फिर कमरे की छत से बिजली के सैकड़ो दीपक लटका दिये जायँ। तदनन्तर कमरे के काले फर्श पर दो मन हीरे, मानिक और मोती आदि रत्न बखेर दिये जायँ। तब बिजली का बटन दबा कर सारे दीपक जला दिये जायँ। दीपकों को जलाने के बाद जो दृश्य उस कमरे का हो जायगा उसके सौन्दर्य से तेज दूरबीन के द्वारा देखे गये आकाश-गङ्गा का सौन्दर्य का कुछ अनुमान देखनेवाले के ध्यान मे आ सकेगा। तेज दूरबीन से नीला आकाश कही-कही ऐसा दिखाई देता है मानो उसमे बड़े-बड़े सूर्यो का ढेर लगा है और कही-कही ऐसा भी देख पड़ता है मानो इन सूर्यों की दीवारे खड़ी कर दी गई है। कहीं कहीं बड़े-बड़े मीनार और कहीं-कहीं दरवाजे से भी दिखाई देते हैं। कही तो ये सूर्य एक दूसरे के निकट ऐसे अव्यवस्थित रूप मे पड़े हुए से दिखाई देते है कि तेज से तेज दूरबीन भी उन्हे स्पष्टता से नही दिखा सकते। इस दृश्य को देखकर विद्वानो को जो आनन्द होता है उसकी कल्पना करना कठिन है। परमात्मा की इस अनोखी सौन्दर्य-मयी रचना को देख

कर विद्वान् लोग भूख, प्यास और संसार के जटिल जञ्जालों को एक-दम भूल जाते हैं। इसके सिवा इस सूर्यमय प्रदेश की बड़ी-बड़ी गुफायें और बड़े-बड़े दरवाजे यह सूचित करते हैं मानो वहाँ आकाशरूपी अनन्त अरण्यो की शोभा देखने के लिए खिड़कियाँ बना दी गई है। सूर्य के आस पास के प्रकाशमान स्थानों के साथ इन खिड़कियो की तुलना करने से ये काजल की तरह काली-काली दिखाई देती हैं। सूर्य के प्रकाशमान भाग से आगे की ओर दृष्टि ले जानेवाली इन खिड़कियों में से किसी एक की ओर अचानक जब दूरबीन का काँच हो जाना है तब दर्शक को एकदम चकित हो जाना पड़ता है। आकाश के थोड़े-बहुत चमत्कार दूसरों को दिखाने में फोटोग्राफी की सहायता मे मनुष्य को किसी अंश मे अच्छी सफलता प्राप्त हुई है। इस अद्भुत दृश्य को दृष्टि एकटक देखती रह जाती है। पर वाणी इसे प्रकट नही कर सकती। आकाश-प्रदेश अगम्य है। इससे मनोदेश पर अङ्कित हुए उसके दृश्यों के चित्र शीघ्र मिट जाते हैं। नभोमण्डल के अनन्त सूर्यों के साफ-साफ चित्र प्लेटों पर लिये जा सकते हैं। सम्पूर्ण नभोमण्डल के चित्र २५ हजार भिन्न-भिन्न प्लेटों पर उतारे गये है। उनके द्वारा अकाश के जो अद्भुत चमत्कार दिखाई देते है उनका यथार्थ वर्णन मनुष्य की वाणी और लेखनी से परे है। खगोल-शास्त्र के जाननेवालों का मन तथा बुद्धि इन दृश्यो को देखकर आश्चर्य के महासागर मे गोते खाने लगती है।

आकाश-गङ्गा हमसे कितनी दूर है, इसका अनुमान भी हममे से बहुतो ने न किया होगा। उसकी दूरी की कुछ कल्पना हमें हो जाय, इसलिए हम उसका कुछ हाल सुनाते हैं। मान लो कि एक मिनट मे साठ मील चलनेवाली रेलगाड़ी पर हम सवार हुए और सञ्चालक ने उसके इञ्जिन को आकाश-गगा की ओर बढ़ाया। एक घटे मे साठ मील दौड़नेवाली हमारी गाड़ी दिन-रात चलती ही रही। हम पृथ्वी, चन्द्रमा और सूर्य को भी पार करके आगे निकल गये। इस प्रकार एक अरब वर्ष तक रात-दिन हमारी गाड़ी भागती रही। तब कही हमारे प्रवास का आधा भाग पूरा हो सका। घबराओ नही! एक घण्टे मे ६० मील चलनेवाली गाड़ी ने एक अरब वर्षों मे कितनी यात्रा की! हिसाब लगा कर वर्षों की सख्या जानने पर कदाचित् तुम्हारी कल्पना को भी चकित होना पड़े। अपने प्रवास के आधे भाग पर हम थोड़ी देर के लिए ठहर जायँ और फिर आकाश-गगा की ओर देखे तो वहाँ से भी वह वैसी ही दिखाई देगी जैसी पृथ्वी से देख पड़ती थी। इस स्थान से यदि हम उसका चित्र ले तो इन चित्रो में और पृथ्वी के ऊपर मे लिये हुए चित्रों मे हमे बहुत थोड़ा अन्तर देख पड़ेगा। पर यदि वहाँ से अधिक तेज दूरदर्शक-यन्त्र से हम देखें तो कदाचित् कुछ अधिक अन्तर मालूम हो। आकाश-गगा के सूर्य एक-दूसरे से दूर हैं, यह बात तो यहाँ से भी दूरबीन द्वारा मालूम हो सकती है। इस

स्थान से यदि हम पीछे की ओर फिर कर देखे तो हमे मालूम होगा कि यहाँ से हमारा सूर्य्य भी हमे दृष्टिगोचर नही होता। तेज् दूरदर्शक यन्त्र से देखने पर शायद वह हमे एक सामान्य तारे के सदृश देख पड़े। पर आकाश मे ऐसी असख्य तारकाये होने से यह जानना कठिन होगा कि इनमे से हमारा सूर्य कौन सा है।

किन्तु हम मार्ग मे बहुत ठहर गये। यात्रा अभी हमें बहुत दूर की करनी है। इसलिए हमारी गाड़ी फिर चलाई गई। एक अरब वर्ष तक इसी प्रकार और चलते रहने पर आकाश-गङ्गा की बाहरी सीमा के किसी भाग में हम पहुँच गये।

इस पिछले प्रवास मे यदि हजार-हजार वर्ष के अन्तर से हम आकाश-गङ्गा के चित्र लेते रहे तो पिछले चित्रो से नये चित्रों मे थोड़ा-थोड़ा भेद मालूम होता रहेगा। पहले के चित्रों मे तारकायें बहुत पास-पास दिखाई देती थी। अब इन नये चित्रों मे उनकी दूरी बढ़ती जाती है। आँखो से भी अब हमे हजारो सूर्य्य आकाश मे दिखाई देने लगे हैं। जैसे-जैसे हम आगे बढ़ते हैं, ये सूर्य हमे अधिक प्रकाशमान और स्पष्ट दिखाई देते हैं और इनका परस्पर अन्तर भी अधिक जान पडता है। इस प्रकार दो अरब वर्ष तक प्रवास करने पर आकाश-गङ्गा के प्रदेश के किनारे हम अवश्य पहुँच गये। पर आकाश-गङ्गा के भीतर आ पहुँचे या नही—यह बात हम अब भी नही कह सकते। क्योंकि ऊपर की ओर दृष्टि डालने से आकाश-पथ

जैसा हमको पृथ्वी से दिखाई देता था वैसा ही असख्य तारो से युक्त अब भी दिखाई देता है। डर है, प्रवास में हमारी गाड़ी कही किसी सूर्य्य के पास न चली जाय, जिससे हम और हमारी गाड़ी भस्मीभूत हो जाये। ऐसा होने पर हमारी राख अनन्त प्रदेशो मे से कहाँ चली जायगी, इसका पता भी हमे न लगेगा।

पृथ्वी से आकाश-गङ्गा की दूरी का अनुमान पाठकों को हम ऊपर के उदाहरण से भी ठीक-ठीक नहीं करा सके। वास्तव मे वह हमारे लगाये हुए मीलों के हिसाब मे भी अधिक दूर है। कई खगोल-शास्त्रियो ने तो गणना की है कि आकाश-गङ्गा के अनेक नक्षत्र हमसे इतनी दूर हैं कि वहाँ से हमारी पृथ्वी तक उनका प्रकाश आने ही मे ३,००० से १५,००० वर्ष तक का समय लगता है। प्रकाश का वेग एक सेकंड मे १,८६,००० मील है। इससे तुम स्वय ही अनुमान कर सकते हो कि आकाश-गङ्गा के सूर्य हमारी पृथ्वी से कितनी दूर हैं।

आकाश-गङ्गा के अगम्य प्रदेशो मे चमकनेवाले ये बड़े-बड़े सूर्य किसी तेज दूरबीन से ही देखे जा सकते है। पर जिन असख्य पृथ्वियो को ये सूर्य प्रकाशित करते है उन्हे देखने के लिए कोई यन्त्र कैसे समर्थ हो सकता है। ये पृथ्वियाँ कैसी होंगी, इनमें कैसे प्राणी बसते होंगे, यहाँ राजकीय, धार्मिक, नैतिक आदि नियम कैसे प्रचलित होंगे—इस बात की क्या हम कल्पना कर सकते है? मान लो कि आकाश-गङ्गा मे एक

अरब सूर्य हैं—वास्तव मे तो उनकी सख्या इससे भी अधिक होगी—तो जिस प्रकार हमारे सूर्य के आसपास आठ ग्रह प्रदक्षिणा करते हैं उसी प्रकार आकाश-गङ्गा के प्रत्येक सूर्य के आसपास भी आठ-आठ ग्रह प्रदक्षिणा कर रहे होंगे। इस प्रकार इस असीम आकाश मे आठ अरब ग्रह तो ऐसे छिपे पड़े हैं कि वे हमें किसी तरह दिखाई ही नही देते।

यदि ये आँठो अरब ग्रह एक साथ एक एक क्षण मे नाश होने लगे तो भी आकाश के अनन्त प्रदेश मे कुछ भी हेर-फेर होता न जान पड़ेगा। जहाँ ऐसे अरब ग्रहों का हिसाब नही वहाँ महासागर मे एक बूँद के समान हमारी यह पृथ्वी किस गिनती में है। परमेश्वर की अनन्त और अपार सृष्टि में हमारी इतनी बड़ी पृथ्वी का कोई हिसाब ही नही। हमारे पड़ोसी शुक्र और मङ्गल के निवासियों के सिवा शायद कोई उसे पहचानता ही नही। महासागर की बालू की असख्य कणिकाओं मे से एक कणिका रही तो क्या और न रही तो क्या। जहाँ करोड़ों ग्रहों की तो क्या, करोड़ो सूर्यों का भी हिसाब नहीं वहाँ एक क्षुद्र मनुष्य की कौन गिनती है! परमेश्वर की इस अलौकिक और अपूर्व रचना का विचार करके भी मनुष्य का अभिमान यदि न चूर्ण हो तो बड़े ही दुःख की बात है।

प्रश्न

१—खगोल-विद्या किसे कहते हैं? उसके अध्ययन में क्या बाधायें हैं? उसके दो एक चमत्कारों का वर्णन करो

HINDI-VYAKARANA

हिन्दी-व्याकरण

PART I

PRESCRIBED FOR

Classes V & VI of Vernacular and Anglo-Vernacular Schools

BY

GANGA PRASAD, M. A., C. T.

Head Master, D. A.-V. High School, Allahabad

ALLAHABAD

RAI SAHIB RAM DAYAL AGARWALA

Publisher

1933

Price 7 annas

विषय-सूची

हिन्दी-व्याकरण

प्रथम भाग

पाठ १

शब्दों के भेद (पुनरावृत्ति)*

अर्थ के विचार से शब्दों के आठ भेद हैं। अर्थात् शब्द आठ प्रकार के अर्थों को बताया करते हैं:—

(१) किसी वस्तु के नाम को संज्ञा (Noun) कहते हैं , जैसे—राम, कृष्ण, मथुरा, ज्वर आदि।

(२) संज्ञा के स्थान में प्रयुक्त होनेवाले शब्द को सर्वनाम (Pronoun) कहते हैं ; जैसे—मैं, तू, वह इत्यादि।

(३) जो शब्द किसी संज्ञा या सर्वनाम के साथ मिलकर उनके अर्थों की विशेषता प्रकट करते हैं, उनको विशेषण (Adjective) कहते हैं ; जैसे—लाल, पीला आदि।

(४) जिन शब्दों से किसी काम का करना या होना पाया जाय, उनको क्रिया (Verb) कहते हैं ; जैसे—खाता हूँ, पीऊँगा आदि।

---

* यह पाठ तीसरे और चौथे दर्जे के हिन्दी व्याकरण का पुनरावृत्ति रूप है। संज्ञा आदि की विस्तृत रूप से उस पुस्तक में व्याख्या हो चुकी है। पाँचवीं कक्षा में आनेवाले विद्यार्थी इससे परिचित होंगे।

(५) जो शब्द क्रिया के अर्थ में विशेषता उत्पन्न करते हैं, उनको क्रियाविशेषण (Adverb) कहते हैं; जैसे—धीरे धीरे, झटपट।

(६) एक शब्द का वाक्य के दूसरे शब्दों से सम्बन्ध बतानेवाले शब्दों को सम्बन्धवाचक शब्द (Preposition) कहते हैं; जैसे—"घर तक जाऊँगा" यहाँ 'तक' शब्द से 'घर' को जाऊँगा के साथ सम्बन्ध मालूम होता है. अतः 'तक' सम्बन्धवाचक है।

(७) दो शब्दों या वाक्यों के अर्थों को मिलानेवाले शब्द समुच्चयबोधक (Conjunction) कहलाते हैं; जैसे—और, या, किन्तु आदि।

(८) विस्मय आदि मन के भावों को बतानेवाले शब्द विस्मयादिबोधक (Interjection) कहलाते हैं ; जैसे—हा हा !

विकार के विचार से शब्दों के दो भेद हैं:—एक विकारी, जिनके भिन्न भिन्न अवस्थाओं में भिन्न भिन्न रूप हो जाते हैं ; जैसे—मनुष्य, मनुष्यों आदि। दूसरे अव्यय, जो कभी नहीं बदलते; जैसे—तक, कहाँ, जहाँ। संज्ञा, विशेषण, सर्वनाम और क्रिया विकारी हैं।

विस्मयादिबोधक शब्द अव्यय कहलाते हैं।

अभ्यास

१—शब्द कै प्रकार के होते हैं ?

२—संज्ञा, क्रिया और सर्वनाम के क्या लक्षण हैं ?

३—विशेषण किस प्रकार के शब्दों का नाम है ?

४—अव्यय किसे कहते हैं ?

५—किस प्रकार के शब्द अव्यय माने जाते हैं ?

६—नीचे लिखे वाक्यों में प्रत्येक शब्द के प्रकार बताओ :—

आप क्या खा रहे हैं ?

राम के पिता बड़े प्रभावशाली राजा थे।

छी छी ! कैसा गन्दा लड़का है।

छत के ऊपर क्यों टहलते हो ?

हम आज कलकत्ते जायँगे और परसों रंगून।

गंगा नदी हिमालय पर्वत से निकलती है।

इस बुरी लड़की के सिर में जूँ पड़ गई है।

आपके रुपये मेरे पास रक्खे हैं।

पाठ २

वाक्य और उसके भाग

चौकी पर।	वह चौकी पर बैठा है।
मेरे लिये।	तुम मेरे लिये खाना लाओ।
कलकत्ते से।	हम कलकत्ते से आते हैं।

ऊपर दो प्रकार के शब्द-समूह दिये हैं। एक वह जिनसे कुछ मतलब पूरा नहीं होता। दूसरा वह जिनसे मतलब पूरा हो जाता है। 'चौकी पर' कहने से कहनेवाले का मतलब समझ में नहीं आता। न जाने कहनेवाला क्या चाहता है; परन्तु "वह चौकी पर बैठा है" कहने से पूरा मतलब समझ में आ जाता है।

इसी प्रकार 'मेरे लिये' या 'कलकत्ते से' कहने से कुछ बात समझ में नहीं आती ; परन्तु 'तुम मेरे लिये खाना लाओ' या 'हम कलकत्ते से आते हैं' कहने से पूरा आशय समझ में आ जाता है, इसलिये इनको वाक्य कहते हैं।

शब्दों का वह समूह जिससे पूरा अर्थ समझ में आ सके, वाक्य कहलाता है:—

मोहन किताब पढ़ता है।
लोग सोते हैं।
लड़के कहाँ जाते हैं ?

ऊपर तीन वाक्य दिये हैं।

पहिले वाक्य में किसकी बावत कहा गया है ?· ·······

मोहन की बावत।

क्या कहा गया है ? ·· · ···किताब पढ़ता है।

दूसरे वाक्य में किसकी बावत बयान है ?······

लोगों की बावत।

क्या बयान है ?······सोते हैं।

तीसरे वाक्य में किसकी बावत पूछा गया है ? ·····

लड़कों की बावत।

क्या पूछा गया है ? ·· ··कहाँ जाते हैं ?

'मोहन', 'लोग', 'लड़के' जिनकी बावत कुछ कहा गया है, सब उद्देश्य है।

'किताब पढ़ता है', 'सोते हैं', 'कहाँ जाते हैं' जो उद्देश्य के बावत बयान किये गये हैं, विधेय हैं। अतः हर एक वाक्य के दो भाग होते हैं:—

(१) उद्देश्य—जिसके विषय में कुछ कहा जाय।
(२) विधेय—उद्देश्य की बाबत जो कुछ कहा जाय।

अभ्यास

१—वाक्य किसे कहते हैं ?
२—वाक्य के कै भाग हैं ?
३—उद्देश्य और विधेय की तारीफ़ करो।
४—क्या नीचे के शब्द-समूह वाक्य हैं ?

(१) जो कुछ।
(२) तुम पर।
(३) जाओ।
(४) हम नहीं खा सकते।
(५) चमेली अच्छी लड़की है।
(६) सुदक्षिणा रघु की माँ का नाम था।

५—नीचे के वाक्य में उद्देश्य और विधेय बताओ :—

(१) चलो !
(२) आपका नाम क्या है ?
(३) उस्ताद ने लड़कों को यह किताब पढ़ाई।
(४) आपका भाई घर में पड़ा क्या करता है ?
(५) इस बाग़ के वृक्ष गर्मियों में सूख जाते हैं
(६) चन्द्रमोहन लाहौर से दिल्ली को चला गया।
(७) हमारे लिये आप बहुत कुछ करते हैं।
(८) तारे आकाश में चमकते हैं।
(९) श्रीकृष्ण द्वारिका मे रहते थे।
(१०) हम और आप एक ही पुरखे की सन्तान हैं।

६—नीचे लिखे वाक्यों में विधेय की पूर्ति करो :—

(१) राजा जनक की बेटी————

(२) इस कक्षा के लड़के————

(३) रानी लक्ष्मीबाई————

(४) प्रयाग————

(५) हमारे स्कूल के हेडमास्टर साहब ——

(६) हिमालय पर्वत————

(७) हम————

(८) राम और रावण————

७—नीचे लिखे वाक्यों में उद्देश्य की पूर्ति करो :—

(१)————यह शीशे का गिलास लखनऊ में ख़रीदा था।

(२)————एक देश का नाम है।

(३)————अच्छी किताब है।

(४) दवात में————नहीं है।

(५)————मुझसे शत्रुता रखते हैं।

(६)————गुड़ियों से खेलती है।

(७)————हिन्दुस्तानी खेल है।

८—नीचे उद्देश्य और विधेय (संकेत मात्र) दिये जाते हैं, इनको मिला-कर वाक्य बनाओ :—

उद्देश्य	विधेय
बच्चा	खेलना
फूल	बाग़
सेनापति	सेना
किताब	सन्दूक
घर	बरसात में

आपकी चिट्ठी	आना
अँधेरी रात	चाँद
घर	लीपना

९—अपने कमरों की दस चीज़ों के नाम लो और उनको उद्देश्य मानकर दस वाक्य बनाओ।

१०—बाज़ार की दस चीज़ों के नाम लो और उनको विधेय मानकर दस वाक्य बनाओ।

पाठ ३

संज्ञा के भेद

संज्ञा (Noun) किसी वस्तु के नाम को कहते हैं ; जैसे—पानी, मनुष्य, क़लम।

[ध्यान रहे कि वस्तु को संज्ञा नहीं कहते। केवल उसके नाम को संज्ञा कहते हैं। शब्द पानी संज्ञा है। वस्तु पानी संज्ञा नहीं है।]

संज्ञा के तीन भेद हैं :—(१) व्यक्तिवाचक, (२) जातिवाचक और (३) भाववाचक।

(१) व्यक्तिवाचक संज्ञायें वह शब्द हैं, जो किसी एक ही वस्तु के नाम होते हैं; जैसे—'सोहन' एक ही पुरुष का नाम है, सब पुरुषों को सोहन नहीं कह सकते।

(२) जातिवाचक वह संज्ञा है, जो एक प्रकार की प्रत्येक वस्तु का नाम हो सके; जैसे—'घर' एक प्रकार की सभी वस्तुओं का नाम है।

यहाँ पहचान के लिये कुछ व्यक्तिवाचक और कुछ जाति-वाचक संज्ञायें लिखी जाती हैं :—

व्यक्तिवाचक	जातिवाचक
मोहन	लड़का
सीता	स्त्री
प्रयाग	नगर
भारतवर्ष	देश
गंगा	नदी
चिलका	झील

(३) भाववाचक संज्ञा वह है, जो किसी गुण, स्वभाव या कर्म का नाम हो; जैसे—शीतलता, पीड़ा, लड़ाई।

गुण और स्वभाव पदार्थों में पाये जाते हैं। उन पदार्थों के नाम जातिवाचक संज्ञा कहलाते हैं और उनके गुणों तथा स्वभाव के नाम भाववाचक संज्ञा ; जैसे—

जातिवाचक संज्ञा	भाववाचक संज्ञा
पानी	ठंडापन
मनुष्य	मनुष्यत्व
विद्वान्	विद्या
आकाश	नीलापन
बर्फ़	सफ़ेदी
मेज़	लम्बाई
फूल	सुगन्ध
लड़का	खेल
लेखक	लेख

अभ्यास

१—नीचे लिखी संज्ञायें किस प्रकार की हैं :—

बादल, रंग, गुलाब, चम्पा, मोतीलाल, नगर, झाँसी, बिजनौर, जानकी, चिड़िया, ज्वर, गर्मी, सेनापति, वीरता, स्कूल, चौपाई, रुपया, दरिद्रता, सिंह, सिकन्दर।

२—नीचे लिखी जातिवाचक संज्ञाओं के जोड़ की व्यक्तिवाचक संज्ञायें बताओ :—

कुत्ता, लड़का, पुस्तक, नगर, बन्दरगाह, पर्वत, जहाज़, समाचार-पत्र।

३—नीचे लिखी व्यक्तिवाचक संज्ञाओं के जोड़ की जातिवाचक-संज्ञायें बनाओ :—

रामचन्द्र, विक्टोरिया, नीलगिरि, बम्बई, रामायण, अशोक, पाइनियर, ताजमहल।

४—अपने कमरे का छः चीज़ों के जातिवाचक नाम बताओ और उनके गुणों का विचार करके १२ भाववाचक संज्ञायें बताओ।

पाठ ४

संज्ञाओं का लिंग-भेद

संज्ञा के जिस रूप से यह बोध होता है कि यह संज्ञा स्त्री जाति की बोधक है या पुरुष जाति की, उसको लिङ्ग (Gender) कहते हैं। पुरुष जाति के बोधक को पुंलिङ्ग (Masculine) और स्त्री जाति के बोधक को स्त्रीलिङ्ग (Feminine) कहते हैं; जैसे—'घोड़ा' पुरुष जाति का बोधक है, इसलिये पुंलिङ्ग है और घोड़ी स्त्री जाति का बोधक होने से स्त्रीलिङ्ग है।

जिन शब्दों का लिङ्ग-भेद उनके वाच्य पदार्थों के लिङ्ग-भेद से नहीं जाना जाता, उनके लिङ्ग-निर्णय के लिये कुछ नियम नीचे दिये जाते हैं :—

पुंलिङ्ग जानने के नियम यह हैं :—

(१) जिन शब्दों के अन्त में 'आ' हो (संस्कृत आकारान्त शब्दों को छोड़कर) जैसे—पेड़ा, लोटा, सोटा।

(२) वह भाववाचक संज्ञायें, जिनके अन्त में आव, पन, पा, त्व हो; जैसे—चढ़ाव, लगाव, बचपन, बुढ़ापा, पशुत्व।

(३) ऐसी भाववाचक संज्ञायें; जो क्रियाओं के सामान्य रूप के अन्त के 'ना' का आकार उड़ा देने से बनती हैं; जैसे—चलन, नहान, खान-पान, लेन-देन, रहन-सहन।

(४) पहाड़ों के नाम; जैसे—हिमालय, आबू, नीलगिरि।

(५) महीनों और दिनों के नाम; जैसे—चैत्र, वैशाख, मंगल, बुध।

(६) ग्रहों के नाम (पृथ्वी को छोड़कर) जैसे—सूर्य्य, चन्द्र, शुक्र।

(७) वर्णमाला के अक्षर (इ, ई और ऋ को छोड़कर)।

(८) प्रायः वृक्षों के नाम (जामुन, खिन्नी को छोड़कर); जैसे—नीम, पीपल।

स्त्रीलिङ्ग की पहचान यह है :—

(१) प्रायः ईकारान्त शब्द; जैसे—रोटी, टोपी, चारपाई, शीशी (पानी, घी, दही को छोड़कर)।

(२) संस्कृत के आकारान्त शब्द; जैसे—सभा, लता, विद्या।

(३) नदियों के नाम; जैसे—गंगा, यमुना, सतलज।

(४) तिथियों के नाम; जैसे—पड़वा, दौज, तीज, एकादशी।

(५) भाषाओं के नाम; जैसे—अंगरेजी, हिन्दी।

(६) वर्णमाला के अक्षर; जैसे—इ, ई, ऋ।

(७) भाववाचक शब्द, जिनके अन्त में आई, ता, ति, श, न, वट, हट, ईर हो; जैसे—तक़दीर, तदबीर, चिकनाई, मित्रता, मालिश, सूजन, मिलावट, घबराहट।

पुंलिङ्ग से स्त्रीलिङ्ग बनाने की रीतियाँ :—

(१) कुछ शब्दों के जोड़े हैं, जिनमें एक पुंलिङ्ग और दूसरा स्त्रीलिङ्ग है; जैसे—

पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
पुरुष	स्त्री
वर	वधू
राजा	रानी
नर	मादा
भाई	बहिन
बैल	गाय
पिता	माता
पुत्र	कन्या

(२) अकारान्त पुंलिङ्ग के अन्त में ई लगाने से स्त्रीलिंग हो जाते हैं; जैसे—

दास	दासी
देव	देवी

पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
पुत्र	पुत्री
मगर	मगरी
बन्दर	बन्दरी या बँदरी

(३) आकारान्त पुंलिङ्ग के अन्त में 'आ' के स्थान में 'ई' लगाकर स्त्रीलिङ्ग बनाते हैं; जैसे—

लड़का	लड़की
घोड़ा	घोड़ी
बेटा	बेटी
काका	काकी
बकरा	बकरी

(४) कुछ आकारान्त पुंलिग के 'आ' के स्थान में 'इया' लगाकर स्त्रीलिंग बनाते हैं; जैसे—

कुत्ता	कुतिया
चूहा	चुहिया
बेटा	बिटिया
बुड्ढा	बुढ़िया
बछवा	बछिया

(५) व्यापारियों के अकारान्त, आकारान्त और ईकारान्त पुंलिङ्ग नामों के अ, आ, ई के स्थान में इन आता है; जैसे—

पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
कसेरा	कसेरिन	चमार	चमारिन

(६) पदवीवाचक शब्दों के अन्त में 'आइन' लगाने से स्त्रीलिङ्ग बन जाता है :—

पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
पण्डित	पण्डिताइन	ठाकुर	ठकुराइन
पाण्डे	पण्डाइन	बाबू	बबुआइन
दुबे	दुबाइन	ओझा	ओझाइन
लाला	ललाइन	सुकुल	सुकुलाइन

(७) कुछ शब्दों के अन्त में बिना किसी विशेष नियम के 'नी' लगा देते हैं:—

ऊँट	ऊँटनी	हाथी	हथनी
बाघ	बाघनी	सिंह	सिंहनी
मोर	मोरनी	जाट	जाटनी

(८) कुछ स्त्रीलिङ्ग शब्दों में कुछ प्रत्यय लगाकर पुंलिङ्ग बनाते हैं; जैसे—

स्त्रीलिङ्ग	पुंलिंग
भैंस	भैंसा
राँड	रँडुआ
बहिन	बहिनोई
ननद्	ननदोई

(९) कुछ संस्कृत अकारान्त शब्दों मे आ लगाने से स्त्री-लिङ्ग हो जाते हैं; जैसे—

पुंलिंग	स्त्रीलिंग
सुत	सुता
बालक	बालिका
प्रिय	प्रिया

अभ्यास

१—संज्ञाओं में रूपान्तर किन किन अपेक्षा से होते हैं ?

२—लिङ्गों के कै भेद हैं ?

३—पुंलिङ्ग से स्त्रीलिङ्ग बनाने के कौन कौन नियम हैं ?

४—उन शब्दों को बताओ, जो स्त्रीलिङ्ग हैं; परन्तु स्त्री पुरुष दोनों के अर्थ देते हैं या पुंलिङ्ग हैं; परन्तु स्त्री पुरुष दोनों के लिये आते हैं ।

५—निम्न शब्दों के स्त्रीलिङ्ग बनाओ :—
पिता, बैल, राजा, नाई, भाई, बन्दर, चौधरी ।

६—निम्न शब्दों के पुंलिङ्ग बनाओ :—
भैंस, कन्या, मौसी, माई, लोमड़ी ।

पाठ ५

संज्ञाओं के वचन

(NUMBER)

संज्ञा के जिस रूप से यह जाना जाता है कि जिस चीज़ के लिये वह संज्ञा प्रयुक्त हुई है, वह संख्या में एक है अथवा अनेक, उसको संज्ञा का वचन कहते हैं ।

वचन के अनुसार हिन्दी भाषा में संज्ञाओं के दो रूप होते हैं :—(१) एकवचन और (२) बहुवचन ।

संज्ञा के जिस रूप से एक का बोध होता है, उसे एकवचन (singular) कहते हैं ; जैसे—लड़का, कुर्सी ।

संज्ञा के जिस रूप से अधिक का बोध होता है, उसे बहुवचन (Plural) कहते हैं ; जैसे—लड़के, कुर्सियाँ ।

कभी कभी एकवचन भी बहुवचन का अर्थ देता है, विशेष कर उस समय जब संख्या बहुत अधिक हो ; जैसे—
"मेले में कितना आदमी आया होगा ?"

'अजी बड़ा आदमी आया है। गिना भी नहीं जा सकता।'
कभी कभी एक वचन के साथ लोग, वर्ग, वृन्द, जन लगाने से बहुवचन का बोध होता है ; जैसे—राजा लोग, भ्रातृवर्ग, सज्जनवृन्द, गुरुजन इत्यादि।

बहुवचन बनाने के नियम

(१) स्त्रीलिङ्ग अकारान्त शब्दों के 'अ' का 'एँ' हो जाता है ; जैसे—

एक व०	बहु व०	एक व०	बहु व०
बात	बातें	रात	रातें
गाय	गायें	भैंस	भैंसें
आँख	आँखें	झील	झीलें
पुस्तक	पुस्तकें	खाट	खाटें

(२) पुंलिङ्ग अकारान्त शब्दों के रूप दोनों वचनों में एक से रहते हैं ; जैसे—

एक बालक	चार बालक
एक घर	पाँच घर
एक मनुष्य	दो मनुष्य
एक ग्रन्थ	तीन ग्रन्थ

(३) स्त्रीलिङ्ग आकारान्त शब्दों के अन्त में 'यें' लगाने से बहुवचन हो जाता है; जैसे—

माला	मालायें	माता	मातायें
शाला	शालायें	लता	लतायें

(४) जिन स्त्रीलिङ्ग शब्दों के एक वचन के अन्त में 'या' हो, उन पर केवल अनुस्वार लगा देने से बहुवचन हो जाते हैं ; जैसे—

एक व०	बहु व०	एक व०	बहु व०
लठिया	लठियाँ	खटिया	खटियाँ
चिड़िया	चिड़ियाँ	बुढ़िया	बुढ़ियाँ
लुटिया	लुटियाँ	गुड़िया	गुड़ियाँ

(५) पुंलिङ्ग आकारान्त संज्ञाओं के 'आ' को 'ए' कर देने से बहुवचन हो जाते हैं ; जैसे—

लड़का	लड़के	भतीजा	भतीजे
बीघा	बीघे	घोड़ा	घोड़े
बच्चा	बच्चे	पोता	पोते
बेटा	बेटे	कपड़ा	कपड़े

(६) स्त्रीलिङ्ग इकारान्त शब्दों में 'याँ' जोड़ने से बहुवचन हो जाते हैं ; जैसे—

रीति	रीतियाँ	तिथि	तिथियाँ
सन्धि	सन्धियाँ	पाँति	पाँतियाँ

(७) स्त्रीलिङ्ग ईकारान्त शब्दों के दीर्घ ई को ह्रस्व इ करके उसमें 'याँ' लगाने से बहुवचन बनाते हैं ; जैसे—

लाठी	लाठियाँ	थाली	थालियाँ
रस्सी	रस्सियाँ	रानी	रानियाँ
टोपी	टोपियाँ		

(८) स्त्रीलिङ्ग उकारान्त शब्दों में 'एँ' या 'यें' लगाने से बहुवचन बनते हैं ; जैसे—वस्तु, वस्तुयें ।

(९) स्त्रीलिङ्ग ऊकारान्त शब्दों के दीर्घ ऊ को ह्रस्व उ करके 'एँ' या 'यें' लगाने से बहुवचन बनते हैं ; जैसे—

एक व०	बहु व०	एक व०	बहु व०
बहू	बहुयें	झाड़ू	झाड़ुयें ।

(१०) पुंलिङ्ग इकारान्त, ईकारान्त, उकारान्त, ऊकारान्त शब्दों के रूप दोनों वचनों में एक से ही रहते हैं ; जैसे—

एक मुनि	दो मुनि	एक आदमी	दो आदमी
एक गुरु	दो गुरु	एक डाकू	दो डाकू

अभ्यास

१—वचन किसे कहते हैं ?

२—हिन्दी भाषा में कै वचन आते हैं ?

३—पुंलिङ्ग आकारान्त शब्दों के बहुवचन कैसे बनते हैं ?

४—जिन स्त्रीलिङ्ग शब्दों के अन्त में 'या' हो, उनके बहुवचन बनाने का क्या नियम है ?

५—निम्न शब्दों के बहुवचन बनाओ :—

बात, रीति, साधु, वधू, शीशी ।

६—नीचे लिखे वाक्यों में रिक्त स्थानों की पूर्ति करो :—

एक रस्सी ।	चार————
एक घर ।	दस————
एक माला ।	कुछ————
क बिन्दु ।	दो————
एक आँख ।	चार ——

पाठ ७

संज्ञाओं का कारक-भेद

(CASE)

संज्ञा के जिस रूप से उसका सम्बन्ध वाक्य के अन्य शब्दों के साथ जाना जाता है, उसको कारक कहते हैं; जैसे—"मोहन ने पुस्तक के चार पृष्ठ पढ़े।" इस वाक्य में तीन संज्ञायें आई हैं अर्थात् मोहन, पुस्तक और पृष्ठ। यहाँ 'मोहन ने' क्रिया 'पढ़े' का कर्त्ता है। 'पृष्ठ' पर क्रिया 'पढ़े' का फल पड़ता है। 'पुस्तक के' से 'पुस्तक' का 'पृष्ठ' के साथ सम्बन्ध प्रकट है। यहाँ 'ने' 'के' आदि इन सम्बन्धों को बताते हैं, इसलिये संज्ञाओं के इन रूपों को कारक कहते हैं।

['कारक' संज्ञाओं का बहुत आवश्यक भेद है; क्योंकि इसके बिना वाक्य का अर्थ ही समझ में नहीं आता।]

प्रत्येक कारक का एक चिह्न होता है, उसको विभक्ति (Inflexions) कहते हैं। ऊपर के वाक्य में 'ने' और 'से' विभक्तियाँ हैं।

कारक आठ हैं :—

कारक	विभक्ति	उदाहरण
(१) कर्त्ता	ने	राम ने
(२) कर्म	को	राम को
(३) करण	से	राम से
(४) सम्प्रदान	को या के लिये	राम को या राम के लिये
(५) अपादान	से	राम से
(६) सम्बन्ध	का, की, के	राम का, राम की, राम के
(७) अधिकरण	में, पर	राम में, राम पर
(८) सम्बोधन	हे	हे राम

कारकों के अर्थ और प्रयोग

कर्त्ताकारक (Nominative case) संज्ञा का वह रूप है, जिससे यह ज्ञात हो कि जिस चीज़ के लिये वह संज्ञा प्रयुक्त हुई है, वह कुछ काम करती है, जैसे—'राम ने रोटी खाई' यहाँ ज्ञात होता है कि वह मनुष्य, जिसका नाम 'राम' है क्रिया 'खाई' के व्यापार का करनेवाला है।

कर्त्ता कारक की विभक्ति 'ने' है, इसके लगाने के यह नियम हैं :—

(१) अकर्मक क्रिया के कर्त्ता के साथ 'ने' नही लगता; जैसे—'राम आता है', 'सीता जाती है'।

(२) सकर्मक क्रिया के कर्त्ता के अन्त में केवल भूतकाल में 'ने' लगता है; परन्तु अपूर्णभूत और हेतुहेतुमद्भूत में नहीं लगता; जैसे—राम ने सीता से कहा; परन्तु राम सीता से कहता था, राम सीता से कहता, राम सीता से कहेगा आदि में 'ने' नहीं लगता।

(३) जो भूतकालिक क्रियायें 'लाना', 'भूलना' और 'बोलना' से बनती हैं या जिनके साथ 'जाना', 'चुकना', 'लगना', 'सकना' लगते हैं, उनके कर्त्ता की 'ने' विभक्ति लुप्त रहती है; जैसे—

मोहन लाया।

बच्चा भूला।

मेंढक बोला।

कुत्ता खा गया।

कुत्ता खा चुका।

स्त्री जाने लगी।

लड़की न जा सकी।

(४) 'जानना', 'समझना' और 'बकना' क्रियाओं के भूतकाल में कर्त्ता की विभक्ति 'ने' आती भी है और नहीं भी आती : जैसे—

स्त्री बच्चा जनी या स्त्री ने बच्चा जना
सुनार समझा या सुनार ने समझा
लड़का बका या लड़के ने बका

(५) कर्म-प्रधान क्रिया के कर्त्ता के आगे कोई चिह्न नहीं लगता ; जैसे—

शेर मारा गया वृक्ष देखे गये

[इस प्रकार 'ने' विभक्ति केवल सकर्मक क्रियाओं के सामान्यभूत, आसन्नभूत पूर्णभूत और सन्दिग्धभूत क्रियाओं के कर्त्ताओं के साथ ही आती है और कई स्थानों में इन क्रियाओं के साथ भी लुप्त रहती है।]

['ने' विभक्ति लगाने के पहले संज्ञाओं के रूपों में कुछ परिवर्तन हो जाता है। इसके नियम रूपों की सारिणी से ही सुगमता से समझ में आ सकते हैं।]

कर्म कारक (Objective case) संज्ञा का वह रूप है, जिससे ज्ञात हो कि संज्ञा जिस पदार्थ का नाम है, उस पर क्रिया के व्यापार का फल गिरता है ; जैसे—'राम ने सीता को देखा' यहाँ जिस स्त्री का नाम सीता है, उस स्त्री पर 'देखना' क्रिया के व्यापार का फल पड़ता है।

(१) कर्म का चिह्न 'को' है। यह कभी आता है, कभी नहीं आता; जैसे—"वह रोटी को खाता है" या "वह रोटी खाता है"। (२) प्राणिवाचक शब्दों में 'को' को बहुधा लाते ही हैं ; जैसे—"सोहन को देखो" (३) सामान्यभूत, आसन्नभूत, पूर्णभूत और सन्दिग्धभूत में प्राणिवाचक शब्दों के साथ भी कभी 'को' आता है, कभी नहीं ; जैसे—"मैंने सीता को देखा" या "मैंने सीता देखी","मैंने सीता को देखा होगा" या "मैंने सीता देखी होगी।"

करण कारक (Instrumental) संज्ञा का वह रूप है, जिससे क्रिया के साधन का बोध हो ; जैसे—राम ने तीर से रावण को मारा। यहाँ 'तीर से' करण कारक है; क्योंकि तीर के द्वारा मारने का काम हुआ।

करण कारक का चिह्न 'से' है।

सम्प्रदान कारक (Dative case) संज्ञा का वह रूप है, जिससे ज्ञात होता है कि क्रिया का व्यापार संज्ञा के वाच्य पदार्थ के लिये किया गया है; जैसे—मैंने मुन्नू के लिये एक पुस्तक मोल ली। यहाँ 'मुन्नू के लिये' सम्प्रदान कारक है।

सम्प्रदान का चिह्न 'को' या 'के लिये' है।

अपादान कारक (Ablative case) संज्ञा का वह रूप है, जिससे पृथकत्व पाया जाय; जैसे—आम वृक्ष से गिर पड़ा। यहाँ 'वृक्ष से' अपादान कारक है।

अपादान का चिह्न करण कारक के समान 'से' है, परन्तु अपादान और करण कारक की पहचान प्रसंग से होती है।

"वह आँख से देखता है" यहाँ 'आँख से' करण कारक है; क्योंकि 'देखने' का साधन है। "आँख से आँसू गिरा" यहाँ 'आँख से' आँसू गिरने का साधन नहीं है; किन्तु आँसू का आँख से पृथक्त्व पाया जाता है; अतः 'आँख से' यहाँ अपादान कारक है।

सम्बन्ध कारक (Possessive case) संज्ञा का वह रूप है, जिससे उसकी वाच्य वस्तु पर स्वत्व का सम्बन्ध दूसरी वस्तु के साथ सूचित हो; जैसे—"सीता की कुर्त्ती।"

यदि एक वस्तु का दूसरी वस्तु पर स्वत्व हो तो पहली के वाचक को भेदक और दूसरी के वाचक को भेद्य कहते हैं। भेदक सम्बन्ध कारक में होता है; जैसे—ऊपर दिये हुए उदाहरण में 'सीता' भेदक और 'कुर्त्ती' भेद्य है।

सम्बन्ध कारक के चिह्न 'का', 'के', 'की' हैं; यह चिह्न भेद्य की अपेक्षा से आते हैं। भेद्य स्त्रीलिङ्ग हो तो 'की'; जैसे—राम की घोड़ी; यदि भेद्य एकवचन पुंलिङ्ग हो तो 'का'; जैसे—राम का भाई; यदि भेद्य बहुवचन पुंलिंग हो तो 'के' आता है; जैसे—गुलाब के घोड़े।

अधिकरण कारक (Locative) संज्ञा का वह रूप है, जिससे ज्ञात होता है कि संज्ञा का वाच्य क्रिया का आधार है; जैसे—मैंने कमरे में रोटी खाई।

अधिकरण कारक के चिह्न 'में', 'पै' और 'पर' हैं।

सम्बोधन (Vocative) संज्ञा का वह रूप है, जिससे 'पुकारना' सूचित हो; जैसे—हे बालक!

संज्ञाओं के रूपान्तर के उदाहरण

अकारान्त पुंलिङ्ग शब्द 'बैल'

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्त्ता	बैल, बैल ने	बैल, बैलो ने
कर्म	बैल को	बैलों को
करण	बैल से	बैलों से
सम्प्रदान	बैल के लिये	बैलों के लिये
अपादान	बैल से	बैलों से
सम्बन्ध	बैल का	बैलों का
अधिकरण	बैल पर, में	बैलों पर, मे
सम्बोधन	हे बैल !	हे बैलो !

स्त्रीलिङ्ग 'गाय' शब्द के रूप भी 'बैल' के रूपों के समान चलते हैं, केवल कर्त्ता के बहुवचन में 'गायें' रूप हो जाता है।

आकारान्त पुंलिङ्ग शब्द 'घोड़ा'

कर्त्ता	घोड़ा, घोड़े ने	घोड़े, घोड़ों ने
कर्म	घोड़े को	घोड़ों को
करण	घोड़े से	घोड़ों से
सम्प्रदान	घोड़े के लिये	घोड़ों के लिये
अपादान	घोड़े से	घोड़ों से
सम्बन्ध	घोड़े का	घोड़ों का
अधिकरण	घोड़े पर, में	घोड़ों पर, मे
सम्बोधन	हे घोड़े !	हे घोड़ो !

आकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्द 'माता'

कर्त्ता	माता, माता ने	मातायें, माताओं ने

कारक	एक वचन	बहुवचन
कर्म	माता को	माताओं को
करण	माता से	माताओं से
सम्प्रदान	माता के लिये	माताओं के लिये
अपादान	माता से	माताओं से
सम्बन्ध	माता का	माताओं का
अधिकरण	माता पर, में	माताओं पर, में
सम्बोधन	हे माता !	हे माताओ !

इकारान्त पुंलिङ्ग शब्द 'ऋषि'

कर्त्ता	ऋषि, ऋषि ने	ऋषि, ऋषियों ने
कर्म	ऋषि को	ऋषियों को
करण	ऋषि से	ऋषियों से
सम्प्रदान	ऋषि के लिये	ऋषियों के लिये
अपादान	ऋषि से	ऋषियों से
सम्बन्ध	ऋषि का	ऋषियों का
अधिकरण	ऋषि पर, में	ऋषियों पर, में
सम्बोधन	हे ऋषि !	हे ऋषियो !

इकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप भी 'ऋषि' के समान होते हैं।

ईकारान्त पुंलिङ्ग शब्द 'माली'

कर्त्ता	माली, माली ने	माली, मालियों ने
कर्म	माली को	मालियों को
करण	माली से	मालियों से
सम्प्रदान	माली के लिये	मालियों के लिये
अपादान	माली से	मालियों से
सम्बन्ध	मालीका	मालियों का

कारक	एकवचन	बहुवचन
अधिकरण	माली पर, में	मालियों पर, मे
सम्बोधन	हे माली !	हे मालियो !

ईकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप भी 'माली' के समान चलते हैं।

उकारान्त पुंलिङ्ग शब्द 'साधु'

कर्त्ता	साधु, साधु ने	साधु, साधुओं ने
कर्म	साधु को	साधुओं को
करण	साधु से	साधुओं से
सम्प्रदान	साधु के लिये	साधुओं के लिये
अपादान	साधु से	साधुओं से
सम्बन्ध	साधु का	साधुओं का
अधिकरण	साधु पर, में	साधुओं पर, मे
सम्बोधन	हे साधु !	हे साधुओ !

उकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप भी 'साधु' के रूपों के समान चलते हैं।

ऊकारान्त पुंलिङ्ग शब्द 'डाकू'

कर्त्ता	डाकू, डाकू ने	डाकू, डाकुओं ने
कर्म	डाकू को	डाकुओं को
करण	डाकू से	डाकुओं से
सम्प्रदान	डाकू के लिये	डाकुओं के लिये
अपादान	डाकू से	डाकुओं से
सम्बन्ध	डाकू का	डाकुओं का
अधिकरण	डाकू में, पर	डाकुओं में, पर
सम्बोधन	हे डाकू !	हे डाकुओ !

ऊकारान्त स्त्रीलिङ्ग शब्दों के रूप भी 'डाकू' शब्द के रूपों के समान चलते हैं।

एकारान्त शब्द 'चौबे'

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्त्ता	चौबे, चावे ने	चौबे, चौबों ने
कर्म	चौबे को	चौबों को
करण	चौबे से	चौबों से
सम्प्रदान	चौबे के लिये	चौबों के लिये
अपादान	चौबे से	चौबों से
सम्बन्ध	चौबे का	चौबों का
अधिकरण	चौबे में, पर	चौबों में, पर
सम्बोधन	हे चौबे!	हे चौबो!

ओकारान्त शब्द 'ऊधो'

कर्त्ता	ऊधो, ऊधों ने	ऊधो, ऊधों ने
कर्म	ऊधो को	ऊधों को
करण	ऊधो से	ऊधों से
सम्प्रदान	ऊधो के लिये	ऊधों के लिये
अपादान	ऊधो से	ऊधों से
सम्बन्ध	ऊधो का	ऊधों का
अधिकरण	ऊधो में, पर	ऊधों में, पर
सम्बोधन	हे ऊधो!	हे ऊधो!

(एकारान्त और ओकारान्त शब्द कम है।)

औकारान्त पुंलिङ्ग शब्द 'जौ'

कर्त्ता	जौ, जौ ने	जौ, जौओं ने
कर्म	जौ को	जौओं को

कारक	एकवचन	बहुवचन
करण	जौ से	जौओं से
सम्प्रदान	जौ के लिये	जौओं के लिये
अपादान	जौ से	जौओं से
सम्बन्ध	जौ का, के, की	जौओं का, के, की
अधिकरण	जौ में, पर	जौओं में, पर
सम्बोधन	हे जौ !	हे जौओ !

स्त्रीलिङ्ग 'गौ' शब्द के रूप भी 'जौ' शब्द के समान बनते हैं।

अभ्यास

१—कारक किसे कहते हैं ?

२—कितने कारक हैं ? उनके चिह्न कौन कौन से हैं ?

३—कर्त्ता कारक का चिह्न कब आता है और कब नहीं आता ?

४—कर्म कारक का चिह्न कब नहीं आता ?

५—नीचे लिखे वाक्यों में जो संज्ञायें आई हैं, उनके कारक बताओ :—

(१) सीता जी का विवाह रामचन्द्र जी के साथ हुआ था।

(२) रावण ने अपने भाइयों को राम के विरुद्ध भेजा।

(३) विक्टोरिया ने ६४ वर्ष राज किया।

(४) घर से निकलते ही मैंने देखा कि चोर को पकड़ने के लिये पुलिस दौड़ रही है।

(५) मेरी दवात में स्याही डाल दो।

(६) भाई ! तुम तो मेरी बात नहीं सुनते।

६—नीचे लिखे शब्दों के रूप सब कारकों में बनाओ :—

तुलसी, पिता, शिशु, गुरु, चींटी।

७—अपनी कक्षा के पदार्थों के नाम लो और उनके कारक और सम्प्रदान कारक बनाकर वाक्य बनाओ।

८—अपनी कक्षा से दो लड़कों के नामों को अधिकरण और अपादान कारकों में प्रयोग करके वाक्य बनाओ।

पाठ ८

सर्वनाम के भेद्

सर्वनाम (Pronoun) वह शब्द हैं, जो संज्ञा के स्थान पर प्रयुक्त होते हैं ; जैसे—मैं, तू इत्यादि ।

मैंने कल्लू से कहा, "तुम कल आना और अपनी किताब अपने साथ लाना।" इस वाक्य में 'तुम','अपनी','अपने' सर्वनाम हैं ; क्योंकि यह उसी व्यक्ति के लिये प्रयुक्त हुए हैं, जिसके लिये 'कल्लू' प्रयुक्त हुआ है। सर्वनाम के प्रयोग से सबसे बड़ा लाभ यह है कि संज्ञा को बार बार लाना नहीं पड़ता। वस्तुतः यदि सर्वनाम न हो तो वाक्य बड़ा भद्दा हो जाय ; जैसे—मैंने कल्लू से कहा कि "कल्लू कल आना और कल्लू की किताब कल्लू के साथ लाना" कैसा भद्दा लगता है। एक बार 'कल्लू' लाकर फिर उसके स्थान में सर्वनाम लाने से वाक्य में सौन्दर्य्य आ जाता है।

सर्वनाम के पाँच भेद् हैं :—

(१) पुरुषवाचक सर्वनाम (Personal Pronoun)

(२) निश्चयवाचक सर्वनाम (Demonstrative Pronoun)

(३) अनिश्चयवाचक सर्वनाम (Indefinite Pronoun)

(४) सम्बन्धवाचक सर्वनाम (Relative Pronoun)

(५) प्रश्नवाचक सर्वनाम (Interrogative Pronoun)

[किसी किसी ने निज-अर्थक 'आप' को एक अलग वर्ग में माना है ; परन्तु इस अकेले शब्द को वर्ग मानना ठीक नहीं। वस्तुत: 'आप' शब्द भी पुरुषवाचक ही है और सब पुरुषों के लिये आता है।]

पुरुषवाचक सर्वनाम

(Personal Pronoun)

पुरुषवाचक सर्वनाम (Personal Pronoun) तीन प्रकार के हैं :—

(१) उत्तम पुरुष (1st Person) जो बोलनेवाले के सूचक हैं ; जैसे—मैं, हम।

(२) मध्यम पुरुष (2nd Person) उस पुरुष के सूचक हैं, जिनसे बात की जाय ; जैसे— तू, तुम, आप।

(३) अन्य पुरुष (3rd Person) उस पुरुष का वाचक है, जिसके सम्बन्ध में बात की जाय ; जैसे—वह, वे।

निज-अर्थक 'आप' इन सब पुरुषों के लिये आता है।

निज-अर्थक 'आप' और मध्यम पुरुष 'आप' मे भेद है।

निश्चयवाचक सर्वनाम

(Demonstrative Pronoun)

निश्चयवाचक सर्वनाम वह हैं, जिनसे सुननेवाले को उन चीज़ों के विषय में निश्चयात्मक ज्ञान हो, जिनके लिये वह सर्वनाम प्रयुक्त हुए हैं।

यह, ये, वह, वे, सो, एक, दूसरा, दोनों निश्चयवाचक सर्वनाम हैं।

यह (एकवचन) और ये (बहुवचन) निकटवर्ती वस्तु के लिये आते हैं।

वह (एकवचन) और वे (बहुवचन) दूरस्थ वस्तु के लिये आते हैं।

'सो' बहुधा सम्बन्धवाचक सर्वनाम 'जो' के साथ आता है और इसका अर्थ 'वह' या 'वे' के समान होता है; जैसे—जो जागेगा सो पावेगा ।

'सो' एकवचन और बहुवचन दोनों में आता है।

जब दो वस्तुओं में से एक के विषय मे बात करना हो तो 'एक', दूसरे के विषय में बात करना हो तो 'दूसरा' और दोनों के विषय में बात करना हो तो 'दोनों' शब्द का प्रयोग करते हैं।

अनिश्चयवाचक सर्वनाम

(Indefinite Pronoun)

अनिश्चयवाचक सर्वनाम वह हैं, जिनसे निश्चित वस्तुओं का ज्ञान नहीं होता।

कुछ, कोई और सब अनिश्चयवाचक सर्वनाम हैं। जब बोलनेवाला किसी वस्तु के विषय में बात करता है, जिसके विषय में उसे केवल इतना ही ज्ञान है कि वह वस्तु है, "वह वस्तु क्या है?", "कैसी है?", "कितनी है?" इत्यादि का उसको कुछ ज्ञान नहीं तो उसके लिये 'कुछ' या 'कोई' शब्दों का प्रयोग करते हैं। सजीव पदार्थों के लिये 'कोई' और निर्जीव पदार्थों के लिये "कुछ" लाते हैं। "कुछ" का रूपान्तर नहीं होता। जैसे—"दूध में कुछ पड़ा है", "उसने कुछ कहा।" इसके अधिकतर 'कर्त्ता' और 'कर्म' कारक ही होते हैं। कोई के रूप भिन्न

भिन्न कारकों में भिन्न भिन्न होते हैं और इसका प्रयोग सातों कारकों में आता है।

'सब' उस समय प्रयोग करते हैं, जब नियत परिमाण या संख्या का ज्ञान ही न हो, परन्तु यह ज्ञान हो कि चाहे जो कुछ संख्या या परिमाण हो, उस सबके विषय में बात करनी है।

सम्बन्धवाचक सर्वनाम

(RELATIVE PRONOUN)

सम्बन्धवाचक सर्वनाम वह है, जो कहे हुए संज्ञा शब्दों से सम्बन्ध रखता है। सम्बन्धवाचक सर्वनाम 'जो' है, अनिश्चयवाचक 'सो' या पुरुषवाचक 'वह' और सम्बन्ध-वाचक 'जो' साथ आते हैं, जैसे—"जो परिश्रम करेगा सो सफल होगा।"

'जो' के भिन्न भिन्न रूप सारिणी में दिये जायँगे, कभी कभी 'जो' के पश्चात् संज्ञा भी आती है; जैसे—"जो मनुष्य परिश्रम करेगा, वह सफल होगा", "जिस बात से मैं विरोध करता हूँ, तुम उसी को करते हो।"

प्रश्नवाचक सर्वनाम

(INTERROGATIVE PRONOUN)

प्रश्नवाचक सर्वनाम वह हैं, जिनसे प्रश्न का बोध हो। यह हैं 'क्या' और 'कौन'।

'क्या' निर्जीव के लिये और 'कौन' सजीव के लिये आता है; जैसे :—

तुम्हारे हाथ में क्या है ?
तुम्हारे घर में कौन है ?

सर्वनामों का रूपान्तर

सर्वनाम यद्यपि स्त्री जाति और पुरुष जाति दोनों के लिये आते हैं तथापि लिङ्ग के अनुसार उनके रूप नहीं बदलते। सर्वनामों का लिङ्ग क्रिया आदि के रूपों से जाना जाता है; जैसे—"मैं आती हूँ" में मैं' स्त्रीलिङ्ग और "मैं आता हूँ" में 'मैं' पुंलिङ्ग है।

सर्वनाम में संज्ञाओं के समान दो वचन होते हैं, एकवचन और बहुवचन।

सर्वनाम के केवल सात कारक होते हैं। सम्बोधन नहीं होता।

वचन और कारकों के रूप नीचे दी हुई सारिणी से ज्ञात होंगे :—

उत्तम पुरुष सर्वनाम 'मैं'

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्त्ता	मैं, मैंने	हम, हमने
कर्म	मुझे, मुझको	हमें, हमको
करण	मुझसे	हमसे
सम्प्रदान	मेरे लिये, मुझे	हमारे लिये, हमें
अपादान	मुझसे	हमसे
सम्बन्ध	मेरा	हमारा
अधिकरण	मुझमें, पर	हममें, पर

मध्यम पुरुष सर्वनाम 'तू'

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्त्ता	तू, तूने	तुम, तुमने
कर्म	तुझे, तुझको	तुम्हें, तुमको
करण	तुझसे	तुमसे
सम्प्रदान	तेरे लिये, तुझे	तुम्हारे लिये, तुम्हें
अपादान	तुझसे	तुमसे
सम्बन्ध	तेरा	तुम्हारा
अधिकरण	तुझमें, पर	तुममें, पर

अन्य पुरुष सर्वनाम 'वह'

कर्त्ता	वह, उसने	वे, उन्होंने
कर्म	उसे, उसको	उन्हें, उनको
करण	उससे	उनसे
सम्प्रदान	उसके लिये, उसे	उनके लिये, उन्हें
अपादान	उससे	उनसे
सम्बन्ध	उसका	उनका
अधिकरण	उसमें, पर	उनमें, पर

सर्वनाम 'यह'

कर्त्ता	यह, इसने	ये, इन्होंने
कर्म	इसको, इसे	इनको, इन्हें
करण	इससे	इनसे
सम्प्रदान	इसके लिये, इसे	इनके लिये, इन्हें
अपादान	इससे	इनसे
सम्बन्ध	इसका	इनका
अधिकरण	इसमें, पर	इनमें, पर

सर्वनाम 'कौन'

कारक	एकवचन	बहुवचन
कर्त्ता	कौन, किसने	कौन, किन्होंने
कर्म	किसको, किसे	किनको, किन्हें
करण	किससे	किनसे
सम्प्रदान	किसके लिये, किसे	किनके लिये, किन्हें
अपादान	किससे	किनसे
सम्बन्ध	किसका	किनका
अधिकरण	किसमें, पै, पर	किनमें, पै, पर

सर्वनाम 'जो'

कर्त्ता	जो, जिसने	जो, जिन्होंने
कर्म	जिसको, जिसे	जिनको, जिन्हें
करण	जिससे	जिनसे
सम्प्रदान	जिसके लिये, जिसे	जिनके लिये, जिन्हें
अपादान	जिससे	जिनसे
सम्बन्ध	जिसका	जिनका
अधिकरण	जिसमें, पर	जिनमें, पर

मध्यम पुरुष 'आप'

[इसके रूप एकवचन और बहुवचन में एक ही से होते हैं ।]

कर्त्ता	आप, आपने
कर्म	आपको
करण	आपसे
सम्प्रदान	आपको, आपके लिये
अपादान	आपसे

सम्प्रदान	सभी के लिये, सभा को
अपादान	सभी से
सम्बन्ध	सभी का, की, के
अधिकरण	सभी में, पर

'कोई' के रूप

कर्त्ता	कोई, किसी ने
कर्म	कोई, किसी को
करण	किसी से
सम्प्रदान	किसी के लिये, किसी को
अपादान	किसी से
सम्बन्ध	किसी का, की, के
अधिकरण	किसी में, पर

अभ्यास

१—सर्वनाम कितने प्रकार के होते हैं ?

२—'तू' और 'तुम' के प्रयोग लिखो।

३—अनिश्चयवाचक सर्वनाम कौन हैं ?

४—सम्बन्धवाचक सर्वनाम की परिभाषा लिखो। 'जो' के रूप सब कारकों में लिखो।

५—निम्न वाक्यों में रिक्त स्थानों पर सर्वनामों का प्रयोग करो :—

हमने——पाठ पढ़ लिया।

सीतल,——क्यों आये हो ?

——का नाम क्या है और——यहाँ क्यों पधारे हैं ?

——स्थान रिक्त हो, उसी पर मुझे नियुक्त कर दो।

जो यहाँ जावेगा————वहाँ से रोता ही आयेगा।

तुम————पास ठहरे हो ?

——आयेगा ——पायेगा ।

६—नीचे लिखे सर्वनाम किस किस प्रकार के हैं :—

सब, कोई, यह, तू ।

७—नीचे लिखे सर्वनामों के रूप लिखो :—

मैं, कौन, जो ।

पाठ ८

विशेषण

(ADJECTIVES)

विशेषण वे शब्द हैं, जिनसे किसी संज्ञा या सर्वनाम के वाच्य पदार्थों को किसी न किसी विशेषता का परिचय होता हो, जैसे—"काला घोड़ा" में 'काला' शब्द से घोड़े की एक विशेषता का परिचय होता है।

जिस संज्ञा या सर्वनाम के साथ विशेषण आते हैं, उसे विशेष्य कहते हैं। यहाँ 'घोड़ा' विशेष्य है।

(१) गुणबोधक विशेषण (Adjective of Quality) से यह ज्ञात होता है कि अमुक वस्तु किस प्रकार की है? जैसे—काला घोड़ा।

(२) संख्याबोधक विशेषण (Adjective of Number) गिनती बताता है; जैसे—चार मनुष्य।

(३) परिमाणबोधक विशेषण (Adjective of Quantity) से परिमाण जाना जाता है ; जैसे—थोड़ा दूध।

(४) संकेतबोधक विशेषण (Demonstrative Adjective)। किसी वस्तु की ओर संकेत करता है ; जैसे—यह किताब, वह घोड़ा।

गुणबोधक विशेषण

(Adjective of Quality)

ऊपर कहा जा चुका है कि गुणबोधक विशेषणों से यह ज्ञात होता है कि अमुक वस्तु किस प्रकार की है। गुणों के अन्तर्गत कई बातें आ जाती हैं ; जैसे :—

(अ) रंग—काला, पीला, श्वेत, बैंगनी इत्यादि।

(आ) अवस्था—प्रबल, बलहीन, प्रौढ़ इत्यादि।

(इ) आकार—गोल, नुकीला इत्यादि।

(ई) गुण—बुरा, भला इत्यादि।

गुणबोधक विशेषणों में 'सा' लगाने से उनके अर्थ में कुछ न्यूनता प्रकट होने लगती है ; जैसे—पीली सी पुस्तक, ऊँची सी दीवार।

संख्याबोधक विशेषण

(Adjective of Number)

संख्याबोधक विशेषणों के मुख्य दो भेद हैं—निश्चित संख्याबोधक और अनिश्चित संख्याबोधक।

निश्चित संख्याबोधक विशेषणों से निश्चित संख्या का बोध होता है ; जैसे—पाँच पुरुष।

अनिश्चित-संख्याबोधक विशेषणों से संख्या तो ज्ञात होती है; परन्तु निश्चित संख्या नहीं ; जैसे—कुछ आदमी, यहाँ 'कुछ'

का अर्थ दस भी है, पाँच भी है और दो सौ भी है। इसी प्रकार 'सब लोग' में 'सब' से कोई निश्चित संख्या ज्ञात नहीं होती।

निश्चित संख्यावोधक विशेषणों मे 'लगभग' लगाने से अनिश्चित संख्यावोधक विशेषण हो जाते हैं; जैसे—"लगभग दो सौ लड़के"।

कुछ अनिश्चित संख्यावोधक विशेषण यहाँ दिये जाते हैं :— कुछ, सब, थोड़े, अधिक, कई, कम, अनेक।

परिमाणबोधक विशेषण

(Adjective of Quantity)

इनसे किसी वस्तु का परिमाण जाना जाता है। इनके भी दो भेद है, निश्चित परिमाणवोधक ; जैसे—'सेर भर दूध' और अनिश्चित परिमाणवोधक ; जैसे—कुछ, सब, थोड़ा इत्यादि। 'कई' को छोड़कर प्रायः सभी अनिश्चित संख्यावोधक विशेषण परिमाणवोधक भी हैं। इनकी पहिचान प्रसङ्ग से होती है अर्थात् जो वस्तुयें गिनकर जानी जाती हैं, उनके साथ आये हुए शब्द संख्यावोधक और जो तोल के जानो जाती हैं, उनके साथ प्रयुक्त हुए शब्द परिमाणवोधक कहलाते हैं ; जैसे—

कुछ आम	संख्यावोधक
कुछ पानी	परिमाणवोधक
बहुत लड़के	संख्यावोधक
बहुत दूध	परिमाणवोधक
थोड़ी किताबें	संख्यावोधक
थोड़ी स्याही	परिमाणवोधक

संकेतबोधक विशेषण

(DEMONSTRATIVE ADJECTIVE)

संकेतबोधक विशेषण किसी वस्तु की ओर संकेत करते हैं ; जैसे—यह, वह, अमुक, ऐसा। वह और ऐसा सर्वनाम भी हैं और विशेषण भी। जब संज्ञा के पहले आते हैं तो विशेषण और जब संज्ञा के स्थान में आते हैं तो सर्वनाम कहलाते हैं ; जैसे—

यह घोड़ा अच्छा है। ... ... विशेषण

यह अच्छा है। ... ... सर्वनाम

वह मनुष्य कहाँ गया ? ... ... विशेषण

वह कहाँ गई ? ... ... सर्वनाम

विशेषणों के रूपान्तर

विशेषणों मे लिङ्ग और वचनों की अपेक्षा से रूपान्तर होते हैं। इनके रूपों के वदलने के प्रायः वही नियम हैं, जो संज्ञा के रूपों के हैं। दो विशेष नियम यहाँ दिये जाते हैं :—

(१) अकारान्त और उकारान्त शब्दों मे कुछ भेद नहीं होता ; जैसे—दुष्ट बालक, दुष्ट लड़की, दुष्ट लड़के, दुष्ट लड़कियाँ, चारु ग्रन्थ, चारु पंक्ति, चारु पंक्तियाँ।

(२) आकारान्त शब्दों के 'आ' को स्त्रीलिङ्ग के दोनों वचनों में 'ई' और पुंलिङ्ग कर्त्ता के एक वचन को छोड़कर शेष कारकों और वचनों में 'ए' कर देते हैं; जैसे—बुरा लड़का, बुरे लड़के, बुरी लडकी, बुरी लड़कियाँ, बुरी लड़कियों का, बुरी लड़कियों में।

अभ्यास

१—विशेषण और विशेष्य की उदाहरण सहित परिभाषा लिखो।

२—विशेषण कितने प्रकार के होते हैं ?

३—गुणबोधक विशेषणों से क्या क्या भाव प्रकट होते हैं ?

४—'सी' शब्द कहाँ कहाँ आता है ?

५—निम्न शब्दों के विशेषण बनाओ :—

देह, परमार्थ, लोक, कागज, ग्राम, गाँव, नित्यानन्द।

६—निम्न वाक्यों में रिक्त स्थानों पर विशेषणों की पूर्ति करो :—

(१) नीम की पत्ती———होती है।

(२)———घोड़ा घुड़साल में बँधा है।

(३) यूनान का राजा सिकन्दर बड़ा—था।

(४) चाँदी ———होती है और ताँबा————होता है।

(५) बलवान लोगों को———मनुष्यों पर दया करनी चाहिये।

(६) इस———तेल को सिर में डालो।

(७) उसके———वस्त्रों से प्रकट होता है कि वह दरिद्र है।

(८) आपके———व्यवहार ने मुझे प्रसन्न कर दिया।

(९) बर्फ़ ———होती है।

(१०) उनका—हृदय मेरे कष्ट को देखकर द्रवीभूत हो गया।

पाठ ९

क्रिया का भेद

क्रिया (VERB) वह शब्द है, जिससे किसी काम का करना, किसी घटना का होना या किसी वस्तु का अस्तित्व पाया जाय; जैसे—मैं सोता हूँ, लड़ाई हो रही है, घर में चोर है।

['क्रिया' वाक्य का सबसे आवश्यक अंग है। वाक्य के अन्य अंग कर्म, क्रियाविशेषण आदि सब क्रिया के ही आश्रित हैं।]

जिस शब्द के अन्त में 'ना' हो और उससे व्यापार पाया जाय, परन्तु काल का बोध न हो, उसे क्रिया का सामान्यरूप (Infinitive) कहते हैं। वह केवल व्यापार का नाम बताता है। इससे यह ज्ञात नहीं होता कि किसने व्यापार किया, कहाँ किया और कब किया ; जैसे—'खाना', 'लाना', 'जाना'। 'ना' को क्रिया के सामान्यरूप का चिह्न कहते हैं, परन्तु याद रखना चाहिये कि प्रत्येक शब्द, जिसके अन्त में 'ना' हो, क्रिया का सामान्यरूप नहीं है। क्रिया के लिये व्यापार पाया जाना आवश्यक है। यदि अन्त में 'ना' हो और व्यापार न पाया जाय तो इसको क्रिया का सामान्यरूप नहीं कहते, जैसे—गन्ना, पन्ना, कोना आदि संज्ञायें हैं, क्रियायें नहीं।

सामान्यरूप का चिह्न 'ना' उड़ा देने से, जो शेष रहता है, उसको धातु कहते हैं ; जैसे—खा, ला, जा।

[क्रियाओं के भिन्न भिन्न रूप धातु से बनते हैं, इसलिये धातु को स्मरण रखना चाहिये।]

क्रियाओं के दो मुख्य भेद हैं, सकर्मक (Transitive) और अकर्मक (Intransitive)।

सकर्मक वे क्रियायें हैं, जिनसे प्रकट होता है कि क्रिया के व्यापार का फल अपने कर्त्ता से चलकर कर्म पर पड़ता है; जैसे—'मारना'। 'मारना' क्रिया के व्यापार के लिये न केवल मारनेवाले की ही आवश्यकता है, किन्तु उस व्यक्ति की भी, जिसको मारा जाय। इसी प्रकार 'खाना', 'पीना' आदि।

अकर्मक क्रियायें वे हैं, जिनका व्यापार कर्त्ता के साथ ही समाप्त हो जाता है, अन्य व्यक्ति तक नहीं जाता; जैसे—'सोना', 'जागना', 'उठना', 'बैठना' आदि।

जिस पर सकर्मक क्रिया के व्यापार का फल गिरे, उसे कर्म (Object) कहते हैं। (देखो संज्ञा का कर्म कारक)

बहुत सी क्रियायें सकर्मक अकर्मक दोनों होती हैं, परन्तु उनका अर्थ भी तदनुसार भिन्न भिन्न होता है; जैसे—

खुजलाना—वह सिर को खुजलाता है। (सकर्मक)
उसका सिर खुजलाता है। (अकर्मक)

ललचाना—मेरा मन लड्डू देखकर ललचाया। (अकर्मक)
मैंने मोहन को इस काम के लिये ललचाया (सकर्मक)

कभी कभी साधारण क्रिया अकर्मक होती है; परन्तु उसमें 'देना' या 'जाना' लगने से सकर्मक हो जाती है; जैसे—"उसने मुझे घबरा दिया।"

कुछ अकर्मक क्रियाओं के व्यापार का फल किसी अन्य व्यक्ति पर तो नहीं पड़ता; परन्तु उनका अर्थ समझने के लिये कुछ लगाना पड़ता है; जैसे—"वह अच्छा है"। यहाँ 'अच्छा' विशेषण न हो तो 'है' से कुछ अर्थ ही समझ में नहीं आता।

इसलिये ऐसी क्रियाओं को अपूर्ण अकर्मक (Incomplete Verbs) कहते हैं और जो शब्द अर्थों की पूर्ति करता है, उसको पूरक (Complement) कहते हैं; जैसे—ऊपर के उदाहरण में 'है' अपूर्ण अकर्मक क्रिया और 'अच्छा' पूरक है।

कभी कभी सकर्मक क्रियाओं को भी कर्म के अतिरिक्त पूरक की आवश्यकता होती है; जैसे—"उसने मुझे नीच समझा"।

यहाँ 'समझा' अपूर्ण सकर्मक क्रिया और 'नीच' पूरक है।

पूरक या तो विशेषण होते हैं या संज्ञा आदि शब्द, जो विशेषण के समान प्रयुक्त होते हैं ; जैसे—

उसने मुझे नीच समझा। (विशेषण)

उसने मुझे राजा समझा। (संज्ञा)

वह दरिद्र है। (विशेषण)

वह राजा है। (संज्ञा)

संयुक्त क्रियायें (Compound Verbs) वे हैं, जो कई भिन्न अर्थवाली क्रियाओं से मिलकर मुख्य क्रिया के अर्थों में कुछ विशेषता कर देती हैं; जैसे—"मर जाना"। यह क्रिया 'मरना' और 'जाना' से मिलकर बनी है। पहली को मुख्य क्रिया (Principal Verb) और दूसरी को सहायक क्रिया (Auxiliary Verb) कहते हैं; 'मरना' मुख्य क्रिया है और 'जाना' सहायक, इसलिये दोनों के मिलने से 'मर जाना' संयुक्त क्रिया हुई।

मुख्य मुख्य सहायक क्रियायें यह हैं :—

सहायक क्रिया	अर्थ	उदाहरण
देना	बल देने के अर्थ में	पानी भर दो।
लेना	"	उसने खाना खा लिया।
चुकना	समाप्ति-सूचक	वह पढ़ चुका।
सकना	शक्ति-सूचक	मैं नहीं जा सकता।

जाना	निश्चय-सूचक	वह चला गया।
बैठना	बल-सूचक	वह मेरा माल दबा बैठा।
उठना	आकस्मिक घटना-सूचक	वह चिल्ला उठा।
पड़ना	आकस्मिक घटना-सूचक	बच्चा रो पड़ा।

प्रेरणार्थक क्रियायें (Causative) वे हैं, जिनसे ज्ञात होता है कि कर्त्ता स्वयं किसी कार्य्य को न करके किसी अन्य को उसको करने की प्रेरणा करता है। इस अन्य को कभी कर्म कारक द्वारा और कभी करण कारक द्वारा प्रकट करते हैं, जैसे—"मैंने खाना खाया" यहाँ 'खाया' सकर्मक क्रिया है।

"मैंने उसे खाना खिलाया" यहाँ 'खिलाया' प्रेरणार्थक है। 'खाना' एक कर्म है और 'उसे' दूसरा कर्म है। जब किसी क्रिया के दो कर्म होते हैं तो उसको द्विकर्मक क्रिया कहते हैं। "मैंने अपने लड़के से उसे खाना खिलवाया"। यहाँ 'खिलवाया' प्रेरणार्थक है। इसमें 'अपने लड़के से' करण कारक है।

[कोई कोई इसको भी कर्म कहकर खिलवाने को त्रिकर्मक क्रिया कहते हैं।]

अकर्मक क्रिया से सकर्मक और द्विकर्मक या प्रेरणार्थक तथा सकर्मक से द्विकर्मक और त्रिकर्मक क्रियायें बनाने के नियम यह हैं :—

(१) यदि अकर्मक धातु के अन्त में 'अ' हो तो 'अ' को 'आ' करके सामान्य रूप का चिह्न 'ना' जोड़ देने से सकर्मक और 'वाना' जोड़ देने से द्विकर्मक क्रिया हो जाती है; जैसे—

अकर्मक	सकर्मक	द्विकर्मक
उगना	उगाना	उगवाना
उठना	उठाना	उठवाना
उड़ना	उड़ाना	उड़वाना
गिरना	गिराना	गिरवाना
कसना	कसाना	कसवाना

(२) यदि अकर्मक क्रिया के धातु में दो व्यंजन हों और पहले के अन्त मे आ, ई या ऊ हो तो उसको ह्रस्व कर देते हैं; जैसे—

जागना	जगाना	जगवाना
कूदना	कुदाना	कुदवाना
घूमना	घुमाना	घुमवाना
डूबना	डुबाना	डुबवाना
चीखना	चिखाना	चिखवाना

(३) यदि अकर्मक क्रिया के धातु में दो व्यंजन हों और पहले के अन्त में 'ए' या 'ओ' हो तो 'ए' का 'इ' और 'ओ' का 'उ' हो जाता है; जैसे—

लेटना	लिटाना	लिटवाना
बोलना	बुलाना	बुलवाना
खेलना	खिलाना	खिलवाना

(४) यदि अकर्मक क्रिया के धातु में केवल एक व्यंजन हो और उसके अन्त में दीर्घ स्वर या 'ओ' या 'ए' हो तो दीर्घ को

ह्रस्व, 'ओ' को 'उ', 'ए' को 'इ' करके 'ल' जोड़कर नियम (१) के अनुसार परिवर्त्तन कर देते हैं; जैसे—

अकर्मक	सकर्मक	द्विकर्मक
जीना	जिलाना	जिलवाना
रोना	रुलाना	रुलवाना
सोना	सुलाना	सुलवाना

(५) कुछ अनियम भी बनते हैं; जैसे—

पलना	पालना	पलवाना
फटना	फाड़ना	फड़वाना
टूटना	तोड़ना	तुड़वाना
छुटना	छोड़ना	छुड़वाना

(६) सकर्मक से द्विकर्मक और त्रिकर्मक बनाने के वही नियम हैं, जो ऊपर दिये जा चुके हैं; जैसे—

करना	कराना	करवाना
पीना	पिलाना	पिलवाना
खाना	खिलाना	खिलवाना

अभ्यास

१—क्रिया किसे कहते हैं ?

२—क्रिया के सामान्यरूप और धातु में क्या भेद है ? उदाहरण दो।

३—क्रिया के भेद और लक्षण उदाहरण सहित बताओ।

४—निम्न लिखित वाक्यों के रिक्त स्थान पर कर्म या पूरक जोड़ो :—

उसने जङ्गल में——देखा।

उसका भाई——है।

मुझको क्या तुम————समझते हो ?

सिकन्दर ने पंजाब पर————किया।

राम———मानकर वन को चले गये ।

वह मेरी—————नहीं सुनता ।

५—नीचे लिखी सहायक क्रियाओं के अर्थ उदाहरण सहित लिखो :—

उठना, जाना, रहना, सहना, चुकना ।

६—नीचे लिखी क्रियाओं के प्रेरणार्थक रूप बनाओ :—

कूदना, बोलना, रोना, उड़ना, उगना, घूमना, खेलना ।

पाठ १०

क्रियाओं के रूपान्तर

(INFLEXIONS OF VERBS)

जिस प्रकार संज्ञा में लिङ्ग, वचन और कारक होते हैं, उसी प्रकार क्रियाओं के रूप भी पाँच बातों की अपेक्षा बदल जाते हैं :— (१) वाच्य, (२) काल, (३) लिङ्ग, (४) वचन, (५) पुरुष की अपेक्षा से ।

वाच्य

(Voice)

क्रिया के जिस रूप से यह ज्ञात होता है कि कर्त्ता कारक में रक्खा हुआ शब्द क्रिया का करनेवाला है या उस पर क्रिया के व्यापार का फल गिरता है, उस रूप को वाच्य कहते हैं, "राम ने पुस्तक पढ़ी" यहाँ कर्त्ता कारक 'राम ने' है। यहाँ राम 'पढ़ना' क्रिया का करनेवाला है, इसलिये 'पढ़ी' कर्तृवाच्य (Active voice) है ।

"राम से पुस्तक पढ़ी गई" यहाँ कर्त्ता कारक में 'पुस्तक' शब्द है, क्रिया है "पढ़ी गई।" इससे प्रकट होता है कि 'पढ़ना' क्रिया के व्यापार का फल 'पुस्तक' पर गिरता है, इसलिये "पढ़ी गई" कर्मवाच्य है। हिन्दी भाषा में तीन वाच्य होते हैं :—कर्तृवाच्य, कर्मवाच्य और भाववाच्य।

कर्तृवाच्य (Active Voice) से ज्ञात होता है कि कर्त्ता कारक में आया हुआ शब्द क्रिया के करनेवाले का वाचक है।

कर्मवाच्य (Passive Voice) से ज्ञात होता है कि कर्त्ता कारक में आया हुआ शब्द क्रिया के कर्म का वाचक है।

भाववाच्य (Impersonal Voice) वह है, जिसमें अकर्मक क्रिया के कर्मवाच्य क्रिया के समान रूप बनाकर कर्त्ता को करण कारक में रख देते हैं; जैसे—मुझसे जाया नहीं जाता।

कर्तृवाच्य क्रिया उस समय आती है, जब क्रिया के कर्त्ता की प्रधानता दिखानी हो, इसलिये इसको कर्तृ-प्रधान वाच्य भी कहते हैं।

कर्मवाच्य उस समय आता है, जब बोलनेवाले का अभिप्राय कर्म को मुख्यतया दिखाने का हो, जैसे—"उससे किताब पढ़ी गई" में 'किताब' का दिखाना 'उससे' की अपेक्षा अधिक आवश्यक था।

भाववाच्य प्रायः निषेध में ही आते हैं; 'जानना', 'खोना', 'भूलना' आदि कुछ ऐसी क्रियायें हैं, जिनको कर्मवाच्य में रखने की प्रथा नहीं है या बहुत कम है।

भाववाच्य और कर्मवाच्य बनाने के नियम :—

(१) मुख्य क्रिया का सामान्य भूतकाल बना लो।

(२) उसमें जाना क्रिया का अभीष्ट काल, पुरुष, वचन और लिङ्ग के अनुसार रूप जोड़ दो।

(३) ऐसा करने से सकर्मक क्रिया का कर्मवाच्य और अकर्मक का भाववाच्य बन जायगा।

(४) कर्मवाच्य वाक्य में कर्म को कर्त्ता कारक में और कर्त्ता को करण कारक मे रखते हैं।

(५) भाववाच्य वाक्य में कर्म नहीं होता, इसलिये कर्त्ता कारक में कोई शब्द नही होता। कर्त्ता को करण कारक मे रखते हैं।

[कर्त्ता और कर्त्ता कारक में भेद है। इसी प्रकार कर्म और कर्म कारक में भी भेद है। कर्मवाच्य में कर्म को कर्त्ता कारक में और कर्त्ता को करण कारक में रखते हैं; परिवर्तन कारक में होता है, वास्तविक कर्त्ता और कर्म में नहीं। 'सोहन पुत्र को पढाता है' और 'सोहन से पुत्र पढाया जाता है' इन दोनों वाक्यों में 'पढाना' क्रिया के व्यापार का कर्त्ता 'सोहन' और 'पुत्र' कर्म है; परन्तु पहले वाक्य में शब्द 'सोहन' कर्त्ताकारक और 'पुत्र को' कर्मकारक है; दूसरे वाक्य में 'सोहन से' करण कारक और 'पुत्र' कर्त्ता कारक है।]

काल (TENSES)

क्रिया के जिस रूप से उसके व्यापार का समय ज्ञात हो, उसको काल कहते हैं।

काल-से प्रायः तीन अर्थों का बोध होता है :—(१) समय का अर्थात् व्यापार का समय बीत गया या चल रहा है या आनेवाला है। (२) व्यापार का होना निश्चित है या नहीं (३) व्यापार पूरा हो

गया था नहीं। इस प्रकार क्रियाओं के काल की अपेक्षा ग्यारह रूप हो जाते हैं।

काल तीन हैं:—(१) भूत अर्थात् बीता हुआ समय, (२) वर्तमान अर्थात् उपस्थित समय (३) भविष्य या भविष्यत् अर्थात् आनेवाला समय।

(१) भूतकाल क्रिया का वह रूप है, जिससे क्रिया के व्यापार का भूतकाल में होना ज्ञात हो।

इसके छः भेद हैं, सामान्यभूत, आसन्नभूत, पूर्णभूत, अपूर्ण-भूत, संदिग्धभूत, हेतुहेतुमद्भूत।

सामान्य भूतकाल भूतकाल का सामान्यता से बोध कराता है। उसमें यह ज्ञात नहीं होता कि काम को हुए थोड़ी देर हुई अथवा अधिक देर; जैसे—"मैंने पत्र लिखा।" यहाँ दो घण्टे, दो मास, दो वर्ष अथवा कई वर्ष बीते होने पर भी 'लिखा' ही कहेंगे।

कभी कभी सामान्य भूतकाल प्रसंगवश आनेवाले समय का भी बोधक होता है; जैसे—"यदि मैं वहाँ गया तो आपका काम कर दूँगा।' यहाँ 'गया' का अर्थ है 'जाऊँगा', "तुमने शोर मचाया और मैंने तुमको मारा।" अर्थात् "यदि तुम शोर मचा-ओगे तो मैं तुमको मारूँगा।"

सामान्यभूत बनाने की रीति:—

(१) धातु के अन्त में ह्रस्व 'अ' हो तो उसको दीर्घ कर दो, जैसे—'पढ़ना' से 'पढ़ा', 'लिखना' से 'लिखा', 'चलना' से 'चला।' बहुवचन में 'अ' के स्थान में 'ए' होता है; जैसे—'पढ़े', 'लिखे' और 'चले'।

(२) यदि धातु के अन्त में 'आ' या 'ओ' हो तो उसमें 'या'

जोड़ते हैं ; जैसे—'रोना' से 'रोया', 'समाना' से 'समाया'। बहुवचन में 'या' के स्थान में 'ये' होगा; जैसे—रोये, समाये।

(३) यदि धातु के अन्त में 'ई' या 'ए' हो तो उनके स्थान में 'इया' लगाते हैं ; जैसे—'जीना' से 'जिया' 'देना' से 'दिया'।

बहुवचन में 'इये' होगा ; जैसे—'जिये'।

(४) यदि धातु के अन्त में 'ऊ' हो तो उसको ह्रस्व 'उ' करके 'आ' जोड़ दो ; जैसे—'छूना' से 'छुआ'।

(५) कुछ अनियम भी बनते हैं ; जैसे—

जाना	से	गया
होना	से	हुआ
करना	से	किया

(६) स्त्रीलिङ्ग एकवचन में 'आ' के स्थान में 'ई' और स्त्रीलिङ्ग बहुवचन में 'ए' के स्थान में 'ईं' कर देते हैं ; जैसे—'मैं गयी', 'हम गयी।'

आसन्नभूत क्रिया का वह रूप है, जिससे ज्ञात होता है कि क्रिया का व्यापार भूतकाल में आरम्भ होकर अभी अर्थात् वर्तमान काल में समाप्त हुआ है। क्रिया का आरम्भ चाहे निकटवर्त्ती भूत समय में हुआ हो, चाहे दूरवर्त्ती, दोनों दशाओं में आसन्नभूत का ही प्रयोग करेंगे; जैसे—"मैंने पत्र लिखा है" (निकटवर्त्ती); "अंगरेज़ों ने भारतवर्ष जीता है" (दूरवर्त्ती)।

यदि व्यापार का फल इस समय भी उपस्थित हो तो भी आसन्नभूत ही प्रयुक्त करते हैं ; जैसे—"कालिदास ने कई नाटक लिखे हैं।"

यदि व्यापार को समाप्ति पर अधिक बल देना हो तो अकेली क्रिया के स्थान में 'लेना' या 'चुकना' सहायक क्रिया का लगाकर संयुक्त क्रिया बना लेते हैं; जैसे—"मैंने पत्र लिख लिया है", "वह खाना खा चुका है।"

आसन्नभूत बनाने की रीति—सामान्यभूत में निम्न विभक्तियाँ लगाते हैं :—

	एकवचन	बहुवचन
उत्तमपुरुष	हूँ	हैं
मध्यमपुरुष	है	हो
अन्यपुरुष	है	हैं

जैसे—

वह गया है, हम गये हैं, तू गया है, तुम गये हो, मैं गया हूँ, हम गये हैं।

पूर्णभूत क्रिया का वह रूप है, जिससे ज्ञात होता है कि कार्य को समाप्त हुए कुछ समय व्यतीत हो गया; जैसे—वह आया था।

पूर्णभूत के बनाने की रीति यह है कि सामान्यभूत में एकवचन पुंलिङ्ग में 'था', स्त्रीलिङ्ग में 'थी', बहुवचन पुंलिङ्ग मे 'थे' और स्त्रीलिङ्ग में 'थीं' लगाते हैं; जैसे—

मैं सोया था या सोई थी	हम सोये थे या सोईं थीं
तू " "	तुम " "
वह " "	वे " "

[पूर्णभूत का अर्थ अधिक बल से दिखलाने के लिये 'चुकना' लगाकर संयुक्त क्रिया भी बना देते हैं; जैसे—"मैं सो चुका था।"]

सन्दिग्धभूत क्रिया का वह रूप है, जिससे भूत का तो बोध

होता है, परन्तु व्यापार के होने में सन्देह होता है; जैसे—"वह आया होगा।"

इसके बनाने की रीति यह है कि सामान्यभूत में नीचे लिखी विभक्तियाँ लगाते हैं :—

	एकवचन		बहुवचन	
	पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग	पुंलिङ्ग	स्त्रीलिङ्ग
प्रथम पुरुष	होगा	होगी	होंगे	होंगी
मध्यम पुरुष	होगा	होगी	होंगे	होंगी
उत्तम पुरुष	हूँगा	हूँगी	होंगे	होंगी

[भूतकाल के यह तीन रूप सामान्य भूत से बनते हैं।]

हेतुहेतुमद्भूत क्रिया का वह रूप है, जिससे ज्ञात होता है कि व्यापार भूतकाल में होनेवाला था, परन्तु हुआ नहीं ; जैसे—"वह जाता"। इसको बनाने के लिये धातु में एकवचन पुंलिङ्ग में 'ता', स्त्रीलिङ्ग में 'ती' और बहुवचन पुंलिङ्ग में 'ते' और स्त्रीलिङ्ग में 'तीं' लगाते हैं ; जैसे—

वह	आता या आती		हम	आते या आतीं	
तू	"	"	तुम	"	"
वह	"	"	वे	"	"

अपूर्णभूत क्रिया का वह रूप है, जिससे ज्ञात हो कि क्रिया का व्यापार भूतकाल में तो हुआ, परन्तु बोलनेवाले का जिस समय को ओर संकेत है, उस समय वह समाप्त नहीं हुआ, जैसे—"वह आता था।"

अपूर्णभूत बनाने के लिये 'धातु' में निम्न विभक्तियाँ लगाई जाती हैं :—

सब पुरुषों में

	एकवचन	बहुवचन
पुंलिङ्ग	ता था, रहा था	ते थे, रहे थे।
स्त्रीलिङ्ग	ती थी, रही थी	ती थीं, रही थीं।

[सामान्यभूत और पूर्णभूत के अर्थों में भेद है। जब क्रिया का सामान्य उल्लेख करना हो तो सामान्यभूत लाते हैं, परन्तु जब किसी अन्य कार्य्य की ओर प्रकट या गुप्त रूप से सकेत करना हो तो पूर्णभूत लाते हैं, जैसे—"नादिर ने भारतवर्ष पर १७३६ में आक्रमण किया", 'सामान्यभूत'। "जब नादिर भारतवर्ष में आया तब यह देश कई राज्यों में बँट गया था", 'पूर्णभूत'। इसी प्रकार 'अपूर्णभूत' भी तभी आता है, जब किसी अन्य व्यापार का भी उसी समय में होना पाया जाय, जैसे—"जब मैंने पुकारा, वह खाना खा रहा था"।]

(२) वर्तमानकाल क्रिया का वह रूप है, जिससे क्रिया के व्यापार का वर्त्तमान काल में होना ज्ञात हो।

वर्तमान काल के तीन भेद हैं, सामान्य वर्तमान, सन्दिग्ध वर्तमान और अपूर्ण वर्तमान।

सामान्य वर्तमान क्रिया का वह रूप है, जिससे क्रिया के व्यापार का वर्तमान समय में होना पाया जाय ; जैसे—मैं आता हूँ।

सामान्य वर्तमान निम्न अर्थों में प्रयुक्त होता है :—

(१) क्रिया का सामान्य वर्णन करने के लिये ; जैसे—"वह पढ़ता है।"

(२) किसी क्रिया के करने का स्वभाव प्रकट करने के लिये, जैसे—"वह प्रति दिन पाठशाला जाता है (अर्थात् जाया करता है)।"

(३) किसी भूतकाल में हुई ऐतिहासिक घटना को इस प्रकार वर्णन करने के लिये मानो वह अभी हो रही है ; जैसे—"राम लङ्का पर चढ़ते हैं और सीता को ले आते हैं।"

सामान्य वर्तमान बनाने के लिये हेतुहेतुमद्भूत में नीचे की विभक्तियाँ लगाते हैं :—

	एकवचन	बहुवचन
अन्य पुरुष	है	हैं
मध्यम पुरुष	है	हो
उत्तम पुरुष	हूँ	हैं

सन्दिग्ध वर्तमान क्रिया का वह रूप है, जिससे क्रिया के व्यापार के वर्तमान काल मे होने में संदेह प्रकट होता है ; जैसे—वह आता होगा।

जिन विभक्तियों को सामान्यभूत में लगाने से संदिग्धभूत बनता है, उन्हीं विभक्तियों को हेतुहेतुमद्भूत में लगाने से सन्दिग्ध वर्तमान बनता है।

अपूर्ण वर्तमान क्रिया का वह रूप है, जिससे ज्ञात होता है कि क्रिया का व्यापार अभी हो रहा है, समाप्त नहीं हुआ ; जैसे—"मैं पत्र लिख रहा हूँ।"

निम्नलिखित विभक्तियाँ 'धातु' में लगाने से अपूर्ण वर्तमान बनता है :—

	एकवचन	बहुवचन
	पुंलिङ्ग	
अ० पु०	रहा है	रहे हैं
म० पु०	रहा है	रहे हो
उ० पु०	रहा हूँ	रहे हैं

	एकवचन	बहुवचन
	स्त्रीलिङ्ग	
अ० पु०	रही है	रही हैं
म० पु०	रही है	रही हो
उ० पु०	रही हूँ	रही हैं

(३) भविष्यकाल क्रिया का वह रूप है, जिससे क्रिया के व्यापार का भविष्यकाल में होना ज्ञात हो।

भविष्यकाल दो प्रकार का होता है:—(१) सम्भाव्य भविष्य, (२) सामान्य भविष्य।

सम्भाव्य भविष्य से व्यापार के होने की सम्भावना मात्र पाई जाती है। सम्भव है कार्य्य हो, सम्भव है न हो; जैसे—"वह खाय।"

धातु के अन्त में बहुवचन में मध्यम पुरुष में 'ओ' और अन्य पुरुषों में 'एँ' या 'यें' और एकवचन में उत्तम पुरुष में 'ऊँ' और अन्य पुरुषों में 'ए' या 'ये' लगाते हैं; जैसे—

वह जाये	वे जायें।
तू जाये	तुम जाओ।
मैं जाऊँ	हम जायें।

सामान्य भविष्य से किसी व्यापार के आनेवाले समय में होने का सामान्य उल्लेख होता है।

सम्भाव्य भविष्य में 'गा', 'गी', 'गे' लगाने से सामान्य भविष्य बनता है; जैसे—

वह जायेगा या जायेगी	वे जायेंगे या जायेंगी।
तू जायेगा या जायेगी	तुम जाओगे या जाओगी।
मैं जाऊँगा या जाऊँगी	हम जायेंगे या जायेंगी।

भविष्य काल से सम्बन्ध रखनेवाला क्रिया का एक और रूप है, जिसको विधि या आज्ञा कहते हैं। इससे ज्ञात होता है कि

बोलनेवाला कुछ प्रार्थना करता है, आज्ञा देता है अथवा साधारणतया किसी काम के करने के लिये कहता है; जैसे—'आप वहाँ जाइये', 'यहाँ से चले जाओ', 'कृपा करके मुझे इस पद पर नियुक्त कर दीजिये।'

विधि केवल मध्यम पुरुष में ही आना चाहिये। 'तू' के साथ 'धातु-रूप' ही विधि का काम देता है; जैसे—'तू बैठ', 'तू जा', 'तू चल'। 'तुम' के साथ 'धातु' में 'ओ' लगा देते हैं; जैसे—'तुम बैठो', 'तुम आओ', 'तुम छुओ'।

यदि धातु के अन्त में 'ई' हो तो उसको ह्रस्व करके 'ओ' के स्थान में 'यो' लगाते हैं; जैसे—'तुम पियो', 'तुम जियो'। आदर-सूचक 'आप' के साथ धातु में 'इये' लगाते हैं; जैसे—'बैठिये', 'खाइये' परन्तु यदि धातु के अन्त में 'ई' हो तो 'जिये' लगाते हैं; जैसे—'पीजिये'। 'जीना' से 'जिये' बनता है। 'पीना' से 'पिये' भी होता है। 'होना' से 'हूजिये' होता है।

पूर्वकालिक क्रिया वह है, जिसका सिद्ध होना वाक्य की मुख्य क्रिया के सिद्ध होने के पहले पाया जाय; जैसे—'मैं खाकर जाता हूँ', 'मैं खाकर गया' या 'मैं खाकर जाऊँगा'। यहाँ 'खाकर' पूर्वकालिक क्रिया है।

पूर्वकालिक क्रियायें वाक्य की मुख्य क्रिया के आधीन होती हैं, इसलिये उनके लिङ्ग, वचन और पुरुष के अनुसार रूप नहीं बदलते। उनका लिङ्ग, वचन और पुरुष वही है, जो मुख्य क्रिया का है।

धातु में 'कर' या 'करके' लगाने से पूर्वकालिक क्रिया बनती है।

क्रिया के लिङ्ग, वचन और पुरुष

संज्ञा और सर्वनाम के समान क्रिया में भी लिंग, वचन और पुरुष होते हैं। लिंग दो हैं, स्त्रीलिङ्ग और पुंलिङ्ग। वचन दो हैं, एकवचन और बहुवचन। पुरुष तीन हैं, प्रथम पुरुष, मध्यम पुरुष और उत्तम पुरुष। इनके रूप सारिणी में मिलेंगे।

क्रियाओं के रूप

(यहाँ क्रिया के रूपों की सारिणी दी जाती है।)

सकर्मक क्रिया 'देखना'

कर्तृवाच्य

सामान्यभूत

	एकवचन	बहुवचन
उत्तमपुरुष	मैंने देखा	हमने देखा
मध्यमपुरुष	तूने देखा	तुमने देखा
अन्यपुरुष	उसने देखा	उन्होंने देखा

आसन्नभूत

उ०	मैंने देखा है	हमने देखा है
म०	तूने देखा है	तुमने देखा है
अ०	उसने देखा है	उन्होंने देखा है

पूर्णभूत

उ०	मैंने देखा था	हमने देखा था
म०	तूने देखा था	तुमने देखा था
अ०	उसने देखा था	उन्होंने देखा था

अपूर्णभूत

	एकवचन		बहुवचन	
	स्त्री०	पुं०	स्त्री०	पुं०
उ०				
	मैं देखती थी	मैं देखता था	हम देखती थीं	हम देखते थे
	मैं देख रही थी	मैं देख रहा था	हम देख रही थीं	हम देख रहे थे
म०				
	तू देखती थी	तू देखता था	तुम देखती थीं	तुम देखते थे
	तू देख रही थी	तू देख रहा था	तुम देख रही थीं	तुम देख रहे थे
अ०				
	वह देखती थी	वह देखता था	वे देखती थीं	वे देखते थे
	वह देख रही थी	वह देख रहा था	वे देख रही थीं	वे देख रहे थे

सन्दिग्धभूत

उ०	मैंने देखा होगा	हमने देखा होगा
म०	तूने देखा होगा	तुमने देखा होगा
अ०	उसने देखा होगा	उन्होंने देखा होगा

हेतुहेतुमद्भूत

	एकवचन		बहुवचन	
	स्त्री०	पुं०	स्त्री०	पुं०
उ०	मैं देखती	देखता	हम देखतीं	देखते
म०	तू देखती	देखता	तुम देखतीं	देखते
अ०	वह देखती	देखता	वे देखतीं	देखते

सामान्य वर्तमान

	स्त्री०	पुं०	स्त्री०	पुं०
उ०	मैं देखती हूँ	देखता हूँ	हम देखती हैं	देखते हैं
म०	तू देखती है	देखता है	तुम देखती हो	देखते हो
अ०	वह देखती है	देखता है	वे देखती हैं	देखते हैं

सन्दिग्ध वर्तमान

	एकवचन		बहुवचन	
उ०	मैं देखती हूँगी	देखता हूँगा	हम देखती होंगी	देखते होंगे
म०	तू देखती होगी	देखता होगा	तुम देखती होगी	देखते होगे
अ०	वह देखती होगी	देखता होगा	वे देखती होंगी	देखते होंगे

सम्भाव्य भविष्यत्

	एकवचन	बहुवचन
उ०	मैं देखूँ	हम देखें
म०	तू देखे	तुम देखो
अ०	वह देखे	वे देखें

सामान्य भविष्यत्

	स्त्री०	पुं०	स्त्री०	पुं०
उ०	मैं देखूँगी,	गा	हम देखेंगी,	गे
म०	तू देखेगी,	गा	तुम देखोगी,	गे
अ०	वह देखेगी,	गा	वे देखेंगा,	गे

आज्ञा

म०	तू देखे	तुम देखो

पूर्वकालिक

देखकर देख के

कर्मवाच्य

सामान्यभूत

	एकवचन		बहुवचन	
	स्त्री०	पुं०	स्त्री०	पुं०
उ०	मैं देखी गई	देखा गया	हम देखी गईं	देखे गये
म०	तू देखी गई	देखा गया	तुम देखी गईं	देखे गये
अ०	वह देखी गई	देखा गया	वे देखी गईं	देखे गये

आसन्नभूत

	एकवचन		बहुवचन	
	स्त्री०	पुं०	स्त्री०	पुं०
उ०	मैं देखी गई हूँ	देखा गया हूँ	हम देखी गई हैं	देखे गये हैं
म०	तू देखी गई है	देखा गया है	तुम देखी गई हो	देखे गये हो
अ०	वह देखी गई है	देखा गया है	वे देखी गई हैं	देखे गये हैं

पूर्णभूत

उ०	मैं देखी गई थी	देखा गया था	हम देखी गई थीं	देखे गये थे
म०	तू देखी गई थी	देखा गया था	तुम देखी गई थीं	देखे गये थे
अ०	वह देखी गई थी	देखा गया था	वे देखी गई थीं	देखे गये थे

अपूर्णभूत

उ०	मैं देखी जाती थी	देखा जाता था	हम देखी जाती थीं	देखे जाते थे
म०	तू देखी जाती थी	देखा जाता था	तुम देखी जाती थी	देखे जाते थे
अ०	वह देखी जाती थी	देखा जाता था	वे देखी जाती थीं	देखे जाते थे

सन्दिग्धभूत

उ०	मैं देखी गई हूँगी	देखा गया हूँगा	हम देखी गई होंगी	देखे गये होंगे
म०	तू देखी गई होगी	देखा गया होगा	तुम देखी गई होगी	देखे गये होगे
अ०	वह देखी गई होगी	देखा गया होगा	वे देखी गई होंगी	देखे गये होंगे

हेतुहेतुमद्भूत

उ०	मैं देखी जाती या देखी गई होती	देखा जाता या देखा गया होता	हम देखी जातीं	देखे जाते
म०	तू देखी जाती	देखा जाता	तुम देखी जातीं	देखे जाते
अ०	वह देखी जाती	देखा जाता	वे देखी जातीं	देखे जाते

सामान्य वर्तमान

	एकवचन		बहुवचन	
	स्त्री०	पुं०	स्त्री०	पुं०
उ०	मैं देखी जाती हूँ	देखा जाता हूँ	हम देखी जाती हैं	देखे जाते हैं
म०	तू देखी जाती है	देखा जाता है	तुम देखी जाती हो	देखे जाते हो
अ०	वह देखी जाती है	देखा जाता है	वे देखी जाती हैं	देखे जाते हैं

सन्दिग्ध वर्तमान

	एकवचन	बहुवचन
उ०	मैं देखी जाती हूँगी, देखा जाता हूँगा	हम देखी जाती होंगी, देखे जाते होंगे
म०	तू देखी जाती होगी, देखा जाता होगा	तुम देखी जाती होगी, देखे जाते होगे
अ०	वह देखी जाती होगी, देखा जाता होगा	वे देखी जाती होंगी, देखे जाते होंगे

सम्भाव्य भविष्यत्

उ०	मैं देखी जाऊँ	देखा जाऊँ	हम देखी जायँ	देखे जायँ
म०	तू देखी जाय	देखा जाय	तुम देखी जाओ	देखे जाओ
अ०	वह देखी जाय	देखा जाय	वे देखी जायँ	देखे जायँ

सामान्य भविष्यत्

उ०	मैं देखी जाऊँगी	देखा जाऊँगा	हम देखी जायँगी	देखे जायँगे
म०	तू देखी जायगी	देखा जायगा	तुम देखी जाओगी	देखे जाओगे
अ०	वह देखी जायगी	देखा जायगा	वे देखी जायँगी	देखे जायँगे

आज्ञा

म० तू देखी जा   तू देखा जा   तुम देखी जाओ   तुम देखे जाओ

पूर्वकालिक

देखा जाकर   देखा जाके

भाववाच्य

'आना' क्रिया

सामान्यभूत

	एकवचन	बहुवचन
उ०	मुझसे आया गया	हमसे आया गया
म०	तुझसे ,, ,,	तुमसे ,, ,,
अ०	उससे ,, ,,	उनसे ,, ,,

आसन्नभूत

मुझसे तुझसे उससे	आया गया है	हमसे तुमसे उनसे	आया गया है

पूर्णभूत

मुझसे तुझसे उससे	आया गया था	हमसे तुमसे उनसे	आया गया था

अपूर्णभूत

मुझसे, तुझसे. उससे, हमसे, तुमसे, उनसे आया जाता था

सन्दिग्धभूत

मुझसे, तुझसे, उससे, हमसे, तुमसे, उनसे आया गया होगा

हेतुहेतुमद्भूत

मुझसे, तुझसे, उससे, हमसे, तुमसे, उनसे आया जाता

सामान्य वर्तमान

मुझसे, तुझसे, उससे, हमसे, तुमसे, उनसे आया जाता है

सन्दिग्ध वर्तमान

मुझसे, तुझसे, उससे, हमसे, तुमसे, उनसे आया जाता होगा

सम्भाव्य भविष्यत्

मुझसे, तुझसे, उससे, हमसे, तुमसे, उनसे आया जावे

सामान्य भविष्यत्

मुझसे, तुझसे, उससे, हमसे, तुमसे, उनसे आया जावेगा

आज्ञा

तुझसे या तुमसे आया जाय

पूर्वकालिक

आया जाकर

अभ्यास

१—निम्न वाक्यों में कोष्ठ में दी हुई क्रियाओं को उचित रूप में लिखो —

(१) वह आकाश के तारे (गिनना)
(२) रावण सीता को (चुराना)
(३) इस बढ़ई ने आज चार मन लकड़ी (चीरना)
(४) हम आज से दो दिन पीछे काशी को (जाना)

२—कुछ ऐसे वाक्य बनाओ, जिनमें नीचे लिखी क्रियाओं का प्रयोग होता हो :—

दौड़ना+सकना, आना+जाना, लिखना+पढ़ना, लेना+देना, खाना+लेना, पढ़ना+चुकना, गाना+लगना, हँसना+पढ़ना, सीना+रहना, होना+जाना, खाना+बैठना, बोलना+उठना, उठना+बैठना, खाना+डालना।

३—निम्नलिखित क्रियाओं के सामान्यभूत लिखो :—

खाना, जाना, पाना, जीना, पीना, रोना, होना, आना, देना, लेना।

४—नीचे लिखी क्रियाओं से सकर्मक और द्विकर्मक बनाओ :—

लूटना, फूटना, जागना, लेटना, बोलना, घूमना, मरना, कूदना, पलना।

५—नीचे लिखे वाक्यों की क्रियाओं में वाच्य-परिवर्त्तन करो :—

लड़के खेलते हैं। वह कुश्ती लड़ता है। बर्फ पिघलती है। हम पत्र पढ़ेंगे। परीक्षक महाशय पाठशाला में परीक्षा ले रहे थे। उनसे गाया नहीं जाता। इस लड़की से तो भली प्रकार गाया जाता है। मैंने रेलगाड़ी को आते हुए देखा। यदि आप मुझे ऐसा करते देखें तो मार डालें। पतङ्ग लूट लें। मैंने रोटी को जला हुआ पाया। हम लड़ते तो तुमको भी छठी की याद आ जाती। उसने हमारा दावात फोड़ डाली। चिट्ठी को डाक में डाल दो। क्यों, तुम मुझे पत्र भी नहीं लिख सकते?

पाठ ११

क्रियाविशेषण

(ADVERBS)

क्रियाविशेषण वे शब्द हैं, जो क्रिया के व्यापार के सम्बन्ध में कुछ विशेषताओं का बोध कराते हैं।

क्रियाविशेषणों के यह भेद हैं :—

(१) कालवाचक से क्रिया के व्यापार का समय ज्ञात होता है , जैसे—कब, जब, अब, तब, पहिले, पीछे, सदा, कभी, शीघ्र, आज, कल, बहुधा ।

(२) स्थानवाचक से स्थान का बोध होता है , जैसे—जहाँ, वहाँ, कहाँ, ऊपर, नीचे, भीतर, बाहर, पास, दूर।

(३) प्रयोजनवाचक से प्रयोजन का बोध होता है ; जैसे—इसलिये।

(४) कारणवाचक से कारण का बोध होता है; जैसे—क्यों, अतएव।

(५) विधिवाचक से विधि का बोध होता है , जैसे—क्यों, यथा।

(६) परिमाणवाचक से परिमाण जाना जाता है , जैसे—इतना, उतना, कुछ, थोड़ा, अति।

(७) स्वीकारवाचक; जैसे—अवश्य, तो, ही।

(८) निषेधवाचक; जैसे—नहीं, मत।

(९) प्रश्नवाचक; जैसे—क्यों, कहाँ, कब इत्यादि।

अभ्यास

१—क्रियाविशेषण किसे कहते हैं ?

२—क्रियाविशेषण से क्रियाओं में क्या क्या विशेषताएँ प्रकट होती हैं ?

३—निम्न वाक्यों में क्रियाविशेषण बताओ :—

हम यहाँ क्यों जाने लगे ? वह बहुत तेज़ दौड़ता है। आज वह बीमार है। वह कब तक आयेगा ? हम आपकी अवश्य सहायता करेंगे। इतना मत सोओ कि सुस्ती आने लगे। वह जितना हँसता है, उतना ही रोता है। मैं यथासम्भव आऊँगा। वह कुछ कुछ मुसकुराता है।

४—निम्नलिखित वाक्यों में क्रियाविशेषण लगाओ :—

वहाँ————जाओ।

राम————आता है।

उसने मुझे————मारा कि मैं कई दिन तक बीमार रहा।

वह यहाँ से————चला गया।

हम————खाना खायेंगे।

५—निम्न क्रियाविशेषणों को वाक्यों में प्रयुक्त करो :—

अति, वहाँ, अवश्य, तो, हां, क्यों, अतएव, ऐसा, उतना, जितना।

पाठ १२

सम्बन्धवाचक अव्यय

(POST POSITIONS)

सम्बन्धवाचक अव्यय वे शब्द हैं, जो संज्ञा या सर्वनाम के साथ आकर उनका सम्बन्ध वाक्य के अन्य शब्दों के साथ बतावें। इनको अव्यय कहने का कारण यह है कि इनमें रूप परिवर्तन नहीं होते ; जैसे—"मैं राम के साथ जाऊँगा।" यहाँ 'साथ' सम्बन्धवाचक अव्यय है।

सम्बन्धवाचक अव्यय प्रायः सम्बन्धकारक के साथ लगाये जाते हैं। कुछ शब्द हम यहाँ देते हैं :—

अनुकूल	जैसे राजा के अनुकूल।
अनुसार	जैसे गुरु की आज्ञा के अनुसार।
आगे	जैसे मकान के आगे।
आसपास	जैसे नदी के आसपास।
उपरान्त	जैसे इसके उपरान्त।
ऊपर	जैसे छत के ऊपर।
ओर	जैसे घर की ओर।
निमित्त	जैसे उसके निमित्त।
पहले	जैसे सोमवार के पहले।
पीछे	जैसे पिता के पीछे।
पूर्व	जैसे होली के पूर्व।
पूर्वक	जैसे विधिपूर्वक।
सामने	जैसे आपके सामने।
समीप	जैसे घर के समीप।

समान	जैसे पशु के समान।
सदृश	जैसे हाथी के सदृश।
समेत	जैसे पुत्र समेत।
सहित	जैसे पुत्र सहित।

अभ्यास

१—निम्न वाक्यों में सम्बन्धवाचक अव्यय बताओ :—

उसने हमारे सङ्ग दगा की। मेरे पास मत बैठो। घर के भीतर कौन है? ऊँट पहाड़ के तले निकलता है तो जानता है कि मेरे समान कोई है। पेड़ के ऊपर मोर बैठा है। घोंसले के भीतर बच्चे हैं। आपके प्रति मुझे श्रद्धा है। परीक्षा के पूर्व वह बीमार पड़ गया। सराय के निकट एक कुआँ था। उसने अपने भाई को मकान के बाहर निकाल दिया। रोटी के बिना किसी की नहीं बनती। उसकी भौंहें कमान के समान टेढ़ी थीं। सौ के लगभग रुपये ख़र्च हो गये।

२—निम्न वाक्यों में रिक्त स्थानों पर सम्बन्धवाचक अव्यय लगाओ :—

युद्ध के———देश बरबाद हो गया।

तालाब के———एक मन्दिर है।

हम मित्रों———पहाड़ का दृश्य देखने गये।

कलकत्ते की———एक जाति बसती है।

बम्बई के———बहुत से रुई के कारख़ाने हैं।

किस———आपकी यह गत हुई?

तुम्हारे———उसका क्या काम निकल सकेगा?

३—निम्न सम्बन्धवाचक अव्ययों को वाक्यों में प्रयुक्त करो :—

रहित, बीच, परे, बदले, साथ, विरुद्ध, पीछे, ऊपर, आगे।

पाठ १३

समुच्चयबोधक अव्यय

(CONJUNCTIONS)

समुच्चयबोधक अव्यय वे शब्द हैं, जो दो शब्दों या वाक्यों या वाक्यांशों के आशय को एक दूसरे के साथ जोड़ते हैं ; जैसे— 'राम और लक्ष्मण वन को गये'। 'उसने कहा कि मैं घर जाऊँगा'।

यहाँ पहले वाक्य में 'और' 'राम' और 'लक्ष्मण' को जोड़ता है। दूसरे वाक्य में 'कि' दो वाक्यों को, पहला 'उसने कहा' दूसरा 'मैं घर जाऊँगा।'

यह कई श्रेणियों मे बाँटे जा सकते हैं, जैसे—

(१) संयोजक—जो दो शब्दों या वाक्यों के अर्थों को जोड़ते हैं, यह है—और, व, तथा, तथैव, एवम्, भी।

(२) वियोजक—जो दो शब्दों के अर्थों को एक दूसरे से अलग करते हैं ; जैसे—या, वा, अथवा, किंवा, चाहे, चाहे, न, न कि, नहीं तो।

(३) विरोधदर्शक—जब पिछले वाक्य से पहले वाक्य के अर्थों का निषेध करना होता है तो विरोधदर्शक अव्यय लगाये जाते हैं, जैसे—पर, परन्तु, किन्तु, लेकिन, मगर, वरन्, बल्कि।

अभ्यास

१—निम्न वाक्यों में समुच्चयबोधक शब्द बताओ :—

(१) हम अभी कह आये हैं कि पांडु के पाँच पुत्र थे।

(२) कौरव सौ भाई थे और महाराज धृतराष्ट्र के पुत्र थे।

(३) पांडवों ने यही नहीं किया, वरन् एक राजसूय यज्ञ भी ठाना।
(४) द्रौपदी के स्वरूप को देखकर सारे राजकुमार मोहित हो गये, पर वह जयमाल किसको मिलै?

२—निम्न वाक्यों में उचित समुच्चयबोधक शब्दों का प्रयोग करो :—

(१) बादल आये———पानी बरसा।
(२) बादल आये———पानी न बरसा।
(३) ———सूर्य्य न हो——सब चीज़ें ठण्ड के मारे ठिठुर जायँ।
(४) सीता———मोहन, कोई एक चला जाय।
(५) ———हमने बहुत परिश्रम किया———सफल न हुए।
(६) ———नाम———गुण।
(७) ———पढ़ो———न पढ़ो, मुझे तुमसे क्या मतलब?
(८) मैंने कहा———तुम बैठ जाओ।
(९) वह बहुत बीमार रहा,———बड़ा दुर्बल हो गया।
(१०) जो तू सच्चा है ———तेरे लिये आँच नहीं।

३—निम्न अव्ययों को वाक्यों में प्रयुक्त करो :—

वा, किन्तु, या, और, क्योंकि, अतएव, तो, परन्तु।

पाठ १४

विस्मयादिबोधक अव्यय

(INTERJECTIONS)

जो अव्यय हर्ष, शोक, विस्मय आदि भावों को प्रकट करने के लिये आते हैं और जिनका विशेष सम्बन्ध वाक्य के अन्य शब्दों से नहीं होता, उनको विस्मयादिबोधक अव्यय कहते हैं; जैसे—धिक्! हाय!

(!) विस्मयादिबोधक चिह्न है। इसको शब्द के अन्त में या कभी कभी वाक्य के अन्त में लगाते हैं।

भिन्न भिन्न भावों को सूचित करने के लिये भिन्न भिन्न विस्मयादिबोधक अव्यय आते हैं ; जैसे—

(१) विस्मयबोधक—हैं ! क्या ! अरे ! ओहो !

(२) हर्षबोधक—आहा ! धन्य धन्य ! वाहवा ! शाबाश !

(३) शोकबोधक—हाय हाय ! हा हा ! आह ! बाप रे ! दय्या रे ! राम राम !

(४) घृणाबोधक—छी छी ! धिक् धिक् !

(५) स्वीकारबोधक—हाँ हाँ !

(६) आशीर्वाद—जीते रहो ! जय हो !

अभ्यास

१—निम्न अव्ययों के अर्थ बताओ —

छी छी ! हाय हाय ! बाप रे ! हा हा ! ओहो ! हे ! अच्छा अच्छा !

२—ऊपर दिये हुए अव्ययों को वाक्यों में प्रयोग करके दिखाओ।

पाठ १५
उपसर्ग और प्रत्यय

(PREFIXES AND SUFFIXES)

अब तक हमने शब्दों के प्रकार बताये। उपसर्ग और प्रत्यय शब्द तो नहीं हैं, किन्तु शब्दांश अवश्य हैं। यह अकेले प्रयुक्त

नही होते ; परन्तु संज्ञा, सर्वनाम, क्रिया आदि में जुड़कर नये शब्द बना देते हैं।

[उपसर्ग और प्रत्यय को अक्षर नहीं कहना चाहिये, इनका शब्दों के समान ही अर्थ होता है, परन्तु भेद केवल इतना है कि यह अकेले नहीं आते।]

उपसर्ग (Prefixes) वे शब्दांश है, जो किसी शब्द के पहले लगते हैं, जैसे—'अत्युक्ति' में 'अति'।

प्रत्यय (Suffixes) वह शब्दांश है, जो किसी शब्द के अन्त में लगाये जाते है, जैसे—'भलाई' में 'ई'।

उपसर्ग और प्रत्ययों का वर्णन पिछले अध्यायों में प्रसंगानुसार आ चुका है, परन्तु यहाँ मूल रूप से अलग अलग वर्णन करना अधिक उपयोगी होगा।

कुछ उपसर्ग ये हैं :—

उपसर्ग	अर्थ	उदाहरण
अ	निषेध	अकारण, अधर्म
अति	आधिक्य	अत्युक्ति, अत्यन्त
अधि	प्रधानत्व	अधिराज, अधिकार
अन्	निषेध	अनधिकार
अनु	पश्चात्	अनुसरण, अनुताप
नि	निषेध	निवारण
सम्	संयोग	सम्बन्ध

हम ऊपर कह चुके हैं कि प्रत्यय वह शब्दांश हैं, जो कुछ शब्दों के पीछे इसलिये लगाये जाते है कि नये शब्द बन जायँ।

प्रत्ययों के दो मुख्य वर्ग हैं :—कृत्-प्रत्यय और तद्धित-प्रत्यय।

कृत्-प्रत्यय वे हैं, जो क्रियाओं के पीछे लगाये जाते हैं और जो शब्द इस प्रकार बनते हैं, उनको कृदन्त कहते हैं।

कृदन्त शब्दों के पाँच मुख्य प्रकार हैं :—

(१) कर्तृवाचक शब्द

(२) कर्मवाचक शब्द

(३) करणवाचक शब्द

(४) भाववाचक शब्द

(५) क्रियाद्योतक शब्द

कर्तृवाचक शब्द वह कृदन्त है, जो क्रिया के करनेवाले का द्योतक है। इसके मुख्य प्रत्यय ये हैं :—

(१) वाला; जैसे—चाहनेवाला, गानेवाला

(२) हारा; जैसे—सीखनेहारा, पढ़नेहारा

(३) क; जैसे—गायक, पूजक

(४) इया; जैसे—जड़िया

कर्मवाचक वे हैं, जो सकर्मक क्रिया के सामान्यभूत में 'हुआ' या 'हुई' प्रत्यय लगाने से बनते हैं; जैसे—पीटा हुआ, देखी हुई।

कुछ संस्कृत क्रियाओं में संस्कृत प्रत्यय 'त' भी लगाकर कर्मवाचक शब्द बनते हैं, जैसे—आविष्कृत, थकित, कथित, वर्णित, सर्जित।

करणवाचक शब्द 'ना' या 'नी' लगाने से बनते हैं ; जैसे—कतरनी, चलनी, धौंकनी।

भाववाचक शब्द भाववाचक संज्ञाओं के बनाने की रीति के साथ दिये जा चुके हैं।

क्रिया-द्योतक शब्द के बनाने की यह रीतियाँ हैं कि धातु में :—

(१) 'ते हुए' लगाते हैं ; जैसे—आते हुए, खाते हुए ।

(२) केवल 'ते' लगाते हैं ; जैसे—जाते समय, सोते समय ।

(३) क्रिया का सामान्य रूप भी इस अर्थ में आता है; जैसे—सोना अच्छा है ।

तद्धित

संज्ञाओं में प्रत्यय लगाकर जो शब्द बनते हैं; उनको तद्धित कहते हैं ।

उनके भी छः मुख्य प्रकार हैं :—

(१) अपत्यवाचक शब्द, अर्थात् वह शब्द, जिनसे सन्तानत्व का अर्थ पाया जाय, उनके प्रत्यय विशेषणों के साथ दिये गये हैं ; जैसे—दयानन्द से दयानन्दी, सुमित्रा से सौमित्र, शरीर से शारीरिक आदि ।

(२) कर्तृवाचक 'हारा' या 'वाला' लगाने से बनते हैं ; जैसे—लकड़हारा, गाड़ीवाला ।

(३) भाववाचक (देखो भाववाचक संज्ञायें)

(४) गुणवाचक (विशेषण); जैसे—बुद्धिमान्, दुखदाई ।

(५) ऊनवाचक में लघुत्व पाया जाता है । इनके प्रत्यय हैं, 'आ', 'इया' इत्यादि ; जैसे—खटिया, लठिया ।

(६) स्त्रीवाचक; जैसे—पति से पत्नी, शिव से शिवा ।

अभ्यास

१—उपसर्ग किसे कहते हैं ?

२—नीचे लिखे शब्दों में कौन कौन उपसर्ग हैं और उनका क्या अर्थ है ?

अभिमान, अतिकाल, परिजन, विज्ञान, संग्रह, सुकर्म, दुराचार, उपदेश, अवतार, अनुचर, पराजय।

३—कृदन्त और तद्धित का भेद उदाहरण देकर समझाओ।

४—नीचे लिखे शब्दों में कृदन्त और तद्धित को अलग कर बताओः—

मिठास, प्यास, पिसाई, लुगाई, कड़वाहट, घबराहट, सजावट, फुड़िया, खुलिया, हँसी, लम्बान, उड़ान, लठैत, रेती, चलनी, पनहारिन, लकड़हारा।

५—नीचे दिये शब्दों से भाववाचक शब्द बनाओ :—

लम्बा, बल, मनुष्य, सोना, बच्चा, धोना, पीना, दूध, टो, बचना, हँसना।

६—नीचे लिखे शब्दों से ऊनवाचक शब्द बनाओ :—

घोड़ी, बच्चा, बाबू, लाठी, घर।

७—नीचे लिखे शब्दों से अपत्यवाचक शब्द बनाओ :—

दशरथ, सुमित्रा, शरीर, मूल, मन, आत्मा।

८—नीचे लिखे शब्दों से कर्तृवाचक शब्द बनाओ :—

बड़ी, रंग, चलना, दूध, पीना।

९—नीचे लिखे शब्दों से करणवाचक शब्द बनाओ :—

कतरना, चालना, फेरना, सीना, लिखना।

पाठ १६

समास

(COMPOUNDS)

जिस प्रकार किसी शब्द मे उपसर्ग और प्रत्यय लगाकर नया शब्द बन जाता है, इसी प्रकार दो या अधिक शब्द मिलकर भी अन्य शब्द बनते हैं, इनको समास कहते हैं, परन्तु यहाँ स्मरण रखना चाहिये कि उपसर्ग या प्रत्यय से बने शब्द समास नहीं हैं; जैसे परिपूर्ण शब्द 'परि' और 'पूर्ण' से बना है, परन्तु 'परि' उपसर्ग है, इसलिये 'परिपूर्ण' समास नहीं है। 'जल-भरे बादल' 'जल-भरे' समास है, क्योंकि यह 'जल' और 'भरा' दो शब्दों से मिलकर बना है।

समास छः प्रकार के होते हैं :—

(१) तत्पुरुष
(२) कर्मधारय
(३) बहुव्रीहि
(४) अव्ययीभाव
(५) द्विगु
(६) द्वन्द्व

तत्पुरुष समास

यदि एक शब्द दूसरे शब्द से इस प्रकार मिलाया जाय कि पहला शब्द कर्त्ता कारक को छोड़कर अन्य किसी कारक का अर्थ दे; परन्तु उस कारक की विभक्ति न लगाई जाय तो इस समास को तत्पुरुष समास कहेंगे। इस समास मे पिछला शब्द प्रधान होता है; जैसे—रामानुज (राम का अनुज)।

कर्मधारय समास

कर्मधारय वह समास है, जो विशेषण और विशेष्य या उपमा और उपमेय से मिलकर बनता है।

विशेषण कभी पहले आता है और कभी पीछे; जैसे—पीताम्बर (यहाँ 'पीत' पहले आया है), नराधम (यहाँ 'अधम' पीछे आया है।)

महापाप, महाराज, महाजन, परमेश्वर, परमात्मा, वीरवर, मुनिवर, रघुवर आदि शब्द कर्मधारय हैं।

कु, दु और सु से बननेवाले शब्द भी कर्मधारय हैं; जैसे—कुसङ्ग, कुपुत्र, दुर्यन्त्र, सुसमाचार, इत्यादि।

घनश्याम, चन्द्रमुख, प्राणप्रिय, चरणकमल आदि शब्द भी कर्मधारय हैं, क्योंकि इनका पहला शब्द उपमा है।

बहुव्रीहि

बहुव्रीहि वह समास है, जो अपने शब्दों को छोड़कर किसी भिन्न अर्थ का बोधक हो। वह प्रायः किसी अन्य वस्तु का विशेषण होता है।

दशानन (दश हैं मुँह जिसके), प्रसन्नवदन (प्रसन्न है मुँह जिसका)

अव्ययीभाव समास

अव्ययीभाव समास वह है, जिसका पहला शब्द अव्यय हो और दूसरा संज्ञा। अव्ययीभाव समास क्रियाविशेषण होते हैं। कुछ उदाहरण नीचे दिये जाते हैं :—

|| (| |—|)

यथाविधि; जैसे—वह यथाविधि हवन करता है।

प्रतिदिन; जैसे—वह प्रतिदिन पढ़ता है।

आजन्म; जैसे—वह आजन्म ब्रह्मचारी रहा।

द्विगु समास

द्विगु समास वह है, जिसमें पहला शब्द संख्यावाचक होता है; जैसे—त्रिभुवन, नवग्रह।

द्वन्द्व समास

द्वन्द्व समास वे हैं, जिनके शब्दों के बीच में समुच्चयबोधक 'और' लुप्त रहता है; जैसे—सीताराम, माँ-बाप, भाई-बहिन, पाप-पुण्य, दाल-रोटी।

कठिन समासों के उदाहरण

कुछ समास ऐसे हैं, जो अर्थ-भेद से भिन्न भिन्न प्रकारों से सम्बन्ध रखते हैं, उनके उदाहरण नीचे दिये जाते हैं :—

पीताम्बर अर्थात् पीला है वस्त्र—कर्मधारय।

पीताम्बर अर्थात् पीला है वस्त्र जिसका ऐसा पुरुष—बहुब्रीहि।

चतुरानन अर्थात् चारों मुख—द्विगु।

चतुरानन अर्थात् चार हैं मुख जिसके—बहुब्रीहि।

अकारण अर्थात् बिना कारण के; जैसे—मुझे तुम बिना कारण सताते हो—अव्ययीभाव।

अकारण अर्थात् "नहीं है कारण जिसका" जैसे—ईश्वर सृष्टि का तो कारण है, परन्तु स्वयं अकारण है—बहुब्रीहि।

अभ्यास

१—समास किसको कहते हैं ?

२—समासों के कै भेद हैं ? उदाहरण सहित लिखो ।

३—नीचे लिखे शब्दों को समास कह सकते हो या नहीं ? यदि कह सकते हो तो क्यों और नहीं कह सकते तो क्यों ?

उत्पत्ति, दोड़दौड़, रंगढंग, त्रिकोण, शासनपद्धति, तुकोला, भद्रपुरुष, सीताराम, रामेश्वर, नीलाम्बर, ईशोपासना, परिश्रम, मनुष्यादि, मृत्युपर्य्यन्त ।

४—तत्पुरुष समास किसे कहते हैं ? उदाहरण भी दो ।

५—बहुव्रीहि समास की परिभाषा बताओ ।

६—द्विगु और द्वन्द्व में क्या भेद है ?

७—'यथाविधि' और 'प्रत्यहम्' कैसे समास हैं ?

८—'सहस्ररश्मीश्वरिम' कौन सा समास है ? विग्रह करके समझाओ ।

९—कर्मधारय समास किसे कहते हैं ? कुछ ऐसे उदाहरण दो, जो कर्मधारय और बहुव्रीहि दोनों हो सकते हैं ।

१०—बहुव्रीहि और तत्पुरुष समासों में क्या अन्तर है ? दो ऐसे शब्द बताओ, जो बहुव्रीहि और तत्पुरुष दोनों हों और यह भी बताओ कि समास-भेद से शब्दों के अर्थों में क्या भेद हो गया ?

११—नीचे लिखे संदर्भों में समासों को छाँटो और उनका विग्रह करके उनके प्रकार बताओ :—

(अ) जब मुनि यज्ञ-स्थान के निकट पहुँचे तब आकाशवाणी छन्द में कह गई ।

(आ) मनोरथ का तुरन्त सिद्ध होना तो कठिन नहीं ।

पाठ १७

शब्दनिरुक्ति

(PARSING)

किसी वाक्य के किसी शब्द के प्रकार, रूप आदि तथा अन्य शब्दों के साथ उसके सम्बन्ध का वर्णन करना शब्द-निरुक्ति कहलाता है।

शब्दनिरुक्ति कठिन नहीं है, जिस विद्यार्थी ने शब्दविभाग का भली भाँति अध्ययन कर लिया है, वह भली भाँति शब्दनिरुक्ति कर सकता है। यहाँ हम कुछ नियम देते हैं।

यदि संज्ञा की शब्दनिरुक्ति करनी हो तो निम्न बातें बतानी चाहिये :—

(१) प्रकार, (२) लिङ्ग, (३) वचन, (४) कारक, (५) किस शब्द या क्रिया से सम्बन्ध रखता है।

यदि सर्वनाम की शब्दनिरुक्ति करनी हो तो संज्ञा के सम्बन्ध में बताई हुई पाँच बातों के अतिरिक्त 'पुरुष' और बताना चाहिये।

विशेषण की शब्दनिरुक्ति करने में विशेषण का प्रकार, लिङ्ग, वचन और विशेष्य देना पर्य्याप्त होगा।

क्रिया की शब्दनिरुक्ति मे (१) प्रकार, (२) वाच्य, (३) काल, (४) लिङ्ग, (५) वचन, (६) कर्त्ता का नाम अवश्य बताना चाहिये।

क्रियाविशेषण में प्रकार और उस क्रिया को भी बताना होगा, जिसमें विशेषता उत्पन्न होती है।

सम्बन्धवाचक अव्यय की शब्दनिरुक्ति करने में उन संज्ञा या सर्वनामों के बताने की भी आवश्यकता है, जिनके लिये वे आते हैं।

समुच्चयबोधक अव्ययों की शब्दनिरुक्ति करने में उन शब्दों को भी बताना चाहिये, जिनको वे जोड़ते हैं।

विस्मयादिबोधक शब्दों की शब्दनिरुक्ति केवल यही है कि इन शब्दों का प्रकार बता दिया जाय।

यहाँ हम कुछ वाक्य देते हैं :—

(१) मोहन ! तुम मुझे आज क्यों तङ्ग करते हो ?

मोहन—व्यक्तिवाचक संज्ञा, एकवचन, पुंलिङ्ग, सम्बोधन-कारक।

तुम—पुरुषवाचक सर्वनाम, मध्यम पुरुष, बहुवचन, पुंलिङ्ग, कर्त्ता कारक, 'करते हो' क्रिया का कर्त्ता।

मुझे—पुरुषवाचक सर्वनाम, उत्तम पुरुष, एकवचन, पुंलिङ्ग, कर्म कारक, 'करते हो' क्रिया का कर्म।

आज—क्रियाविशेषण, समयबोधक 'करते हो' क्रिया का विशेषण है।

क्यों—क्रियाविशेषण, 'करते हो' क्रिया का विशेषण है।

तङ्ग—विशेषण 'करते हो' क्रिया का पूरक।

करते हो—सकर्मक क्रिया, कर्तृवाचक, सामान्य वर्तमान काल, बहुवचन, मध्यम पुरुष, पुंलिङ्ग, इसका कर्त्ता 'तुम' है।

(२) इस सन्दूक़ के भीतर चार पुस्तकें और दो पत्र हैं।

इस—संकेतबोधक विशेषण, एकवचन, पुंलिङ्ग, इसका विशेष्य 'सन्दूक़' है।

सन्दूक़ के—जातिवाचक संज्ञा, एकवचन, पुंलिङ्ग, सम्बन्ध कारक, इसका सम्बन्ध 'भीतर' से है।

भीतर—सम्बन्धवाचक अव्यय, इसका सम्बन्ध 'सन्दूक़' से है।

चार—संख्याबोधक विशेषण, इसका विशेष्य 'पुस्तकें' है।

पुस्तकें—जातिवाचक संज्ञा, बहुवचन. स्त्रीलिङ्ग, कर्त्ताकारक, क्रिया 'हैं' का कर्त्ता है।

और—समुच्चयबोधक अव्यय 'चार पुस्तकें' और 'दो पत्र' को जोड़ता है।

दो—संख्याबोधक विशेषण, इसका विशेष्य 'पत्र' है।

पत्र—जातिवाचक संज्ञा, बहुवचन. पुंलिङ्ग, कर्त्ताकारक, क्रिया 'हैं' का कर्त्ता है।

हैं—अपूर्ण अकर्मक क्रिया, बहुवचन, पुंलिङ्ग, अन्य पुरुष, कर्तृवाच्य, सामान्य वर्तमान काल, इसका कर्त्ता 'पुस्तकें' और 'पत्र' है।

(३) पहिले हर एक घराने का बड़ा बूढ़ा उस घराने का शासनकर्त्ता होता था।

पहले—समयवाचक क्रियाविशेषण क्रिया 'होता था' का विशेषण है।

हर एक—संख्याबोधक विशेषण, 'घराने' संज्ञा का विशेषण।

घराने का—जातिवाचक संज्ञा, एकवचन, पुंलिङ्ग, सम्बन्ध कारक, इसका सम्बन्ध बड़ा बूढ़ा से है।

बड़ा बूढ़ा—विशेषण (संज्ञा का अर्थ देता है), एकवचन, पुंलिङ्ग, कर्त्ता कारक 'होता था' क्रिया का कर्त्ता है।

उस—संकेतवाचक विशेषण, 'घराने' संज्ञा का विशेषण।

घराने का—जातिवाचक संज्ञा, एकवचन, पुंलिङ्ग, सम्बन्ध कारक, इसका सम्बन्ध है 'शासनकर्त्ता' से।

शासनकर्त्ता—जातिवाचक संज्ञा, एकवचन, पुंलिङ्ग, कर्त्ता कारक 'होता था' क्रिया का पूरक।

होता था—अपूर्ण अकर्मक क्रिया, एकवचन, पुंलिङ्ग, अन्य पुरुष, अपूर्ण भूतकाल, कर्तृवाच्य, इसका कर्त्ता है 'बड़ा बूढ़ा'।

अभ्यास

नीचे लिखे वाक्यों में मोटे अक्षरों में छपे हुए शब्दों की शब्दनिरुक्ति करो :—

(१) मैं किताब लाता हूँ।
(२) वे गेंद खेलते हैं।
(३) उसकी क़लम टूट गई।
(४) हे भाई, तुम क्या कहते हो।
(५) काला कम्बल मेरा नहीं है।
(६) राजा ने शत्रु का तलवार से सिर काट लिया।
(७) उसने कहा कि मेरे पास कुछ नहीं है।

पाठ १८

वाक्य-विग्रह

(ANALYSIS)

वाक्य के मुख्य मुख्य भागों को पृथक् करके दिखलाने को वाक्य-विग्रह (Analysis) कहते है।

वाक्य (Sentence) शब्दों का समूह है, जिससे कहनेवाले का पूरा आशय समझ में आ सके।

वाक्य के दो भाग होते हैं—एक उद्देश्य (Subject) और दूसरा विधेय (Predicate)।

उद्देश्य (Subject) वाक्य का वह भाग है, जिसके विषय में कुछ कहा जाय।

विधेय (Predicate) वाक्य का वह भाग है, जो उद्देश्य के विषय में कहा जाय। 'कृष्ण चला गया' इस वाक्य में 'कृष्ण' के विषय मे यह कहा गया है कि वह "चला गया", अतः 'कृष्ण' उद्देश्य और 'चला गया' विधेय है।

उद्देश्य का मुख्य अंश कर्त्ता है, जैसे ऊपर के वाक्य में 'कृष्ण' कर्त्ता है। किसी उद्देश्य में केवल कर्त्ता ही होता है और किसी उद्देश्य मे कर्त्ता के साथ एक या अधिक कर्तृविशेषण (Adjuncts to Subject) भी होते हैं।

निम्न प्रकार के शब्द कर्त्ता हो सकते हैं :—

(१) संज्ञा (Noun); जैसे—कृष्ण चला गया।

(२) विशेषण (Adjective); जैसे—हत्यारे मर जायँ। यहाँ 'हत्यारे' के पीछे 'मनुष्य' लुप्त है।

(३) सर्वनाम (Pronoun); जैसे—हम सोते हैं।

(४) क्रियार्थक संज्ञा (Infinitive); अर्थात् क्रिया का सामान्य रूप; जैसे—खेलना अच्छा है।

(५) वाक्यांश (Phrase); जैसे—भाई का भाई से लड़ना अच्छा नहीं है।

(६) वे शब्द जो रूप में तो कर्मकारक हैं; परन्तु अर्थ देते हैं कर्त्ताकारक का; जैसे—राम को वन जाना चाहिये।

प्रायः निम्नलिखित शब्द पूरक (Complement) होते हैं :—

(१) संज्ञा (Noun); जैसे—मेरे पुत्र का नाम सत्यप्रकाश है।

(२) विशेषण (Adjective); जैसे—वह धनी है।

प्रायः क्रियाविशेषण (Adverbs) ही वाक्य में क्रियाविशेषण का काम देते हैं, परन्तु पूर्वकालिक क्रियायें तथा करण, अपादान, सम्प्रदान और अधिकरण कारकों में आई हुई संज्ञायें अपने विशेषणों तथा भेदकों के साथ क्रियाविशेषण का काम देती हैं।

इस प्रकार वाक्य में कम से कम दो भाग होते हैं अर्थात् उद्देश्य और विधेय और अधिक से अधिक छः भाग होते हैं :—

(१) कर्त्ता (२) कर्तृविशेषण	उद्देश्य
(३) क्रिया (४) कर्म (५) पूरक (६) क्रियाविशेषण	विधेय

यहाँ हम कुछ वाक्यों का विग्रह देते हैं :—

(१) बच्चा रोया।

(२) छोटे लड़के बहुत रोते हैं।

(३) घर चलो।

(४) यूनान का राजा सिकन्दर बड़ा वीर था।

(५) कौरवों के सेनापति भीष्मपितामह ने अर्जुन पर तीर न चलाया।

(६) वेद-मंत्रों के पढ़ने से आनन्द होता है।

(७) बालकों को सदा अपने माता-पिता की आज्ञा माननी चाहिये।

(८) हमसे यहाँ सोया नहीं जाता।

(९) मुझसे उसका दुःख देखा नहीं जाता।

(१०) उसका बाप घर में नहीं है।

(११) कलकत्ते से लौटकर स्वामी जी प्रयाग आये।

सं०	उद्देश्य		विधेय			
	कर्ता	कर्तृ-विशेषण	क्रिया	पूरक	कर्म	क्रियाविशेषण
१	बच्चा .		रोता	..	.	... बहुत
२	लड़के	छोटे	रोते हैं		.	
३	(तुम) .		चलो		.	घर ...
४	सिकन्दर ..	यूनान का राजा	था	बड़ा वीर		
५	भीष्म पितामह ने .	कौरवों के सेनापति	न चलाया		तीर	अर्जुन पर
६	आनन्द	..	होता है		.	वेद-मन्त्रों के पढ़ने से
७	बालकों को		माननी चाहिये		अपने माता पिता की आज्ञा	सदा
८	हमसे .	...	सोया नहीं जाता		..	यहाँ
९	दुःख ...	उसका	देखा नहीं जाता			मुझसे
१०	बाप	उसका	नहीं (है)			घर में
११	स्वामी को ..	.	आये			(१) प्रभात (२) कलकत्ता से लौटकर

अभ्यास

नीचे लिखे वाक्यों का विग्रह करो :—

(१) पिता की आज्ञा पाते ही स्त्री तथा छोटे भाई को साथ लेकर धर्मधुरन्धर श्रीराम जी तुरन्त ही वन को चले गये।

(२) इस देश के प्रसिद्ध नेता गोखले महाशय दूसरों के दुःख हरण करने के लिये सदा उद्योग किया करते थे।

(३) श्री पं० गुरुदत्त जी बहुधा रात्रि के समय तारों का अवलोकन किया करते थे।

(४) इस पाठशाला के विद्यार्थी पढ़ने में जी नहीं लगाते।

(५) आपकी सहायता से ही मेरे प्राण की रक्षा होगी।

(६) धारसंस्थान के पँवारवंश में यशवन्त नाम के एक प्रसिद्ध राजा हुए।

(७) इस वीरबाप की बेटी और वीर पति की पत्नी पर कैसे संकट पड़े।

(८) ऐसे धीरज के समय पर अपने पुत्र की रक्षा करके उस मैना रूप सिंहनी ने मुरारिराव के कपट रूपी मृग को भक्षण कर लिया।

(९) बाई साहिबा ने उनका विवाह महाराजा दौलतराव सिंधिया की बेटी अन्नपूर्णा बाई से करा दिया।

(१०) ठण्ड के कारण शरीर के अस्वस्थ होने से चतुर्दशी की रात को वह केवल दुग्धपान करके सो गये।

(११) धूपादि की सुगन्ध से वहाँ का दुर्गन्ध दूर हो गया।

(१२) निन्द्य व्यक्ति को उसकी निन्दा सुना देने से ही काम नहीं निकलता।

(१३) आदमी को अपनी समझ या अपने स्वभाव के ही अनुसार बर्ताव न करना चाहिये।

पाठ १६

वाक्य-संग्रह

(SYNTHESIS)

वाक्य के भिन्न भिन्न भागों को मिलाकर पूरा वाक्य बना देने को वाक्य-संग्रह कहते हैं।

वाक्य के भिन्न भिन्न भाग पिछले पाठ में दिये जा चुके हैं।

वाक्य बनाने के लिये नीचे लिखे कुछ नियमों को जानना उपयोगी होगा :—

(१) सब अकर्मक क्रियायें लिङ्ग, वचन और पुरुष में कर्त्ता के समान होती हैं—अर्थात् यदि कर्त्ता एकवचन में होगा तो क्रिया भी एकवचन में होगी, यदि कर्त्ता पुंलिङ्ग होगा तो क्रिया भी पुंलिङ्ग होगी, यदि कर्त्ता मध्यम पुरुष होगा तो क्रिया भी मध्यम पुरुष होगी इत्यादि इत्यादि; जैसे—मैं आता हूँ, लड़के जाते हैं, लड़की आती है, लड़कियाँ सोती हैं।

(२) सकर्मक क्रियाओं के उन रूपों के लिङ्ग, वचन और पुरुष कर्त्ता के लिङ्ग, वचन और पुरुष के अनुकूल होते हैं, जिनके कर्त्ताओं के साथ 'ने' नहीं लगता, जैसे—वह रोटी खाता है, हम रोटी खाते हैं, स्त्री रोटी खाती है, स्त्रियाँ रोटी खाती हैं, बच्चा रोटी खाता है।

(३) जिन क्रियाओं के कर्त्ताओं के साथ 'ने' आता है, परन्तु 'कर्म' के साथ 'को' नहीं आता, उन क्रियाओं के लिङ्ग, वचन कर्म के लिङ्ग, वचन के अनुकूल होते हैं ; जैसे—

मैंने एक चीज़ देखी।

मैंने एक कुत्ता देखा।

मैंने दो कुत्ते देखे।

मैंने चार स्त्रियाँ देखीं।

[इस अवस्था में क्रियायें अन्य पुरुष में ही आती हैं।]

(४) जिन क्रियाओं के कर्त्ताओं के साथ चिह्न 'ने' हो और कर्म के साथ चिह्न 'को', वे क्रियायें एकवचन, अन्य पुरुष, पुंलिङ्ग में ही होती हैं; जैसे—

हमने उस स्त्री को देखा।

हमने उस पुरुष को देखा।

हमने उनको देखा।

(५) सम्बन्ध कारक के विषय में यह बताया जा चुका है कि जो संज्ञा या सर्वनाम सम्बन्धकारक में आता है, उसे भेदक कहते हैं और जिस वस्तु से सम्बन्ध प्रकट करना होता है, उसके नाम को भेद्य कहते हैं; जैसे—'राम का भाई' में 'राम' भेदक और 'भाई' भेद्य और 'का' भेदक का चिह्न है। भेदक का चिह्न उसी लिङ्ग, वचन में होगा, जिसमें भेद्य होगा; जैसे—

राम का भाई। यहाँ 'भाई' एकवचन पुंलिङ्ग है, इसलिये 'का' प्रयुक्त हुआ है। राम के लड़के (यहाँ 'लड़के' पुं० बहुवचन है, इसलिये 'के' शब्द प्रयुक्त हुआ।

'राम की लड़की'

'राम की लड़कियाँ'

इसी प्रकार 'मेरा भाई', 'मेरी लड़की', "मेरे मित्र" इत्यादि।

(६) विशेषण का लिङ्ग और वचन विशेष्य के अनुसार होता है, जैसे—काला घोड़ा, काली घोड़ी, काले घोड़े, काली घोड़ियाँ।

(७) कुछ विशेषणों के एक वचन पुंलिङ्ग में 'आ' होता है। इनके बहुवचन पुंलिङ्ग में 'ए' और स्त्रीलिङ्ग दोनों वचनों में 'ई' हो जाती है; जैसे—

खोटा लड़का, खोटे लड़के, खोटी लड़की, खोटी लड़कियाँ (यहाँ 'खोटियाँ लड़कियाँ' नहीं कहेंगे)

(८) सर्वनामों का लिङ्ग तथा वचन उस संज्ञा के लिङ्ग और वचन के अनुकूल होता है, जिसके वह प्रतिनिधि होते हैं। जैसे—

जो किताब आपने मोल ली, वह खो गई।

जो आदमी आपने भेजा, वह यहाँ से चला गया।

(९) क्रिया सदा वाक्य के अन्त में आती है; जैसे—मैं रोटी खाता हूँ।

(१०) उद्देश्य बहुधा वाक्य के आदि मे आता है, परन्तु कभी कभी क्रियाविशेषण को भी उद्देश्य से पहले रख देते हैं; जैसे—

'वह कल कलकत्ते जायगा'

या 'कल वह कलकत्ते जायगा'

(११) सम्बोधन को प्रायः वाक्य के पहले और कभी कभी वाक्य के अन्त में रखते हैं; जैसे—

राम! तुम कहाँ गये?

चलो न दोस्त!

बैठो, यार!

(१२) अन्य कारकों को बहुधा उद्देश्य और क्रिया के बीच में लाते हैं ; जैसे—

'राम ने रावण को प्रजा-हित के लिये तीर से लंका में मारा'

परन्तु कभी कभी इनमें से किसी को वाक्य के आरम्भ में भी रख देते हैं ; जैसे—

देश के लिये तो मैं प्राण भी दे दूँगा।

(१३) भेदक सदा भेद्य से पहिले आता है ; जैसे—

मेरा घोड़ा, लड़के की पुस्तक

(१४) विशेषण विशेष्य से पहले उसके समीप ही आता है ; जैसे—

काला कुत्ता, भूरी गाय।

अभ्यास

नीचे लिखे वाक्यांशों को नियमानुकूल जोड़कर वाक्य बनाओ :—

	कर्ता	कर्म	क्रिया	क्रियाविशेषण
(१)	राम का भाई	मेघनाद	मारना	लङ्का में
(२)	अध्यापक	पाठ	पढ़ना	इस समय
(३)	हम	फूल	चुनना	पेड़ से, कल
(४)	राजा	मन्त्री	बुलाना	चपरासी के द्वारा
(५)	रेल	—	जाना	{ अयोध्या को { प्रयाग से सीधी
(६)	कुएँ का	—	सूखना	गरमी में

व्यञ्जन ३६ हैं :—क, ख, ग, घ, ङ को कवर्ग कहते हैं।

च, छ, ज, झ, ञ „ चवर्ग „
ट, ठ, ड, ढ, ण „ टवर्ग „
त, थ, द, ध, न „ तवर्ग „
प, फ, ब, भ, म „ पवर्ग „
य, र, ल, व „ अन्तःस्थ „
श, ष, स, ह „ ऊष्म „
क़, ख़, ग़, ज़, ड़, ढ़, फ़ अवशिष्ट वर्ण कहलाते हैं।

इनके अतिरिक्त तीन और वर्ण हैं :—अनुस्वार (ं), चन्द्रबिन्दु (ँ), विसर्ग (:), यह अकेले प्रयुक्त नहीं होते, किन्तु स्वरों के पीछे आते हैं ; जैसे—कं=क्+अ+ं, किं=क्+इ+ं, हाँ=ह्+आ+ँ। इसी प्रकार कः=क्+अ+ः और कुः=क्+उ+ः। अनुस्वार नाक से बोला जाता है और विसर्ग में कुछ कुछ 'ह' की सी ध्वनि पाई जाती है।

अभ्यास

१—वर्ण-विभाग का विषय क्या है ?
२—वर्ण किसे कहते हैं ?
३—वर्ण और अक्षर में क्या भेद है ?
४—स्वर और व्यञ्जन की परिभाषा बताओ।
५—यदि स्वर न हो तो भाषा में क्या हानि हो ?
६—ऊष्म अक्षर कौन हैं ?
७—अन्तःस्थ अक्षरों के नाम लो।
८—ट, ब, ज, ग के सवर्गीय अक्षर लिखो।

पाठ २१

वर्णों के उच्चारण

वर्णों का उच्चारण स्थान और प्रयत्न पर निर्भर है। मुख के जिस भाग से जो वर्ण बोला जाता है, उसे उस वर्ण का स्थान कहते हैं। प्रत्येक वर्ण का स्थान नीचे दिया जाता है:—

स्थान	वर्ण
कण्ठ से	अ, आ, क, ख, ग, घ, ङ, ह और विसर्ग।
कण्ठ और जिह्वा-मूल से	क़, ख़, ग़।
तालु	" इ, ई, च, छ, ज, झ, ञ, य, श।
मूर्द्धा	" ऋ, ट, ठ, ड, ड़, ढ, ढ़, ण, र, ष।
दन्त	" त, थ, द, ध, न, ल, स।
ओष्ठ	" उ, ऊ, प, फ, ब, भ, म।
कण्ठ-तालु	" ए, ऐ।
कण्ठ-ओष्ठ	" ओ, औ।
दन्त-ओष्ठ	" व, फ़।
दन्त-तालु	" ज़।
नासिका से भी	ङ, ञ, ण, न, म।
नासिका से	अनुस्वार और चन्द्रबिन्दु

अभ्यास

१—स्थान किसे कहते हैं ?

२—निम्न अक्षरों का स्थान लिखो :—

क, त, थ, स, म, प, ज, र, ह, ङ, ओ, छ, उ, ठ, ए।

पाठ २२

लिखने के नियम

जिस प्रकार से अक्षर लिखे जाते हैं, उसको लिपि कहते हैं। आज कल हिन्दी भाषा जिस लिपि में लिखी जाती है, उसको देवनागरी या नागरीलिपि कहते हैं।

अक्षरों के मिलने से शब्द बनते हैं।

स्वर जब किसी व्यञ्जन के पीछे आते हैं तो उनका रूप बदल जाता है। इस बदले हुए रूप को मात्रा कहते हैं। प्रत्येक स्वर की मात्रायें नीचे दी जाती हैं :—

स्वर— अ आ इ ई उ ऊ ऋ ए ऐ ओ औ

मात्रायें— ा ि ी ु ू ृ े ै ो ौ

'अ' की कोई मात्रा नहीं है। प्रत्येक व्यञ्जन में 'अ' तो वर्तमान ही रहता है ; जैसे—'क' मे क् व्यञ्जन और 'अ' स्वर है। यदि व्यञ्जन को बिना 'अ' के दिखलाना हो तो उसके नीचे (्) लगा देते हैं ; जैसे—क्, ख्।

आ, ई, ओ, औ को मात्राये (ा, ी, ो, ौ) व्यञ्जन के पीछे लगती हैं ; जैसे—का, गी, जो, सौ।

इ की मात्रा (ि) व्यञ्जन के पहिले लगती है ; जैसे—'कि'; परन्तु यह नहीं समझना चाहिये कि 'कि' में क् के पहिले इ है। वस्तुतः क् के पीछे इ लगने से ही उसका रूप 'कि' हो जाता है।

उ, ऊ और ऋ की मात्रायें (ु ू ृ) व्यञ्जनों के नीचे लगता है ; जैसे—कु, तू, सृ।

र में उ या ऊ मिलता है तो उसका रूप 'रु' और रू हो जाता है। र में ऋ मिलती है तो उसका रूप 'ऋ' हो जाता है।

अनुस्वार और चंद्रविन्दु स्वरों के ऊपर और विसर्ग स्वरों के पीछे आते हैं ; जैसे—किं, हुँ, कः ।

स्वर यदि किसी व्यञ्जन के पहले आते हैं तो उनका रूप नहीं बदलता ; जैसे—अल, इक, उत, ऋतु, एक, ऐन, ओस ।

जब एक व्यञ्जन दूसरे व्यञ्जन से संयुक्त होता है तो प्रायः पहले अक्षर के आगे की पाई उड़ जाती है ; जैसे—न्+न=न्न, न्+त=न्त, ल्+स=ल्स ।

जिन व्यञ्जनों के अन्त में पाई नहीं है अर्थात् क, क़, ङ, छ, झ, ट, ठ, ड, ड़, ढ, ढ़, द, फ, फ़, ह इनसे यदि कोई अन्य व्यञ्जन संयुक्त हो तो इनका रूप प्रायः नहीं बदलता, किन्तु पीछेवाले व्यञ्जन के ऊपर की पाई उड़ जाती है, जैसे—क्क, छ्र, ङ्क, ह्म, ह्ल, ह्व ।

'र' जब किसी व्यञ्जन के पहले संयुक्त होता है तो उसका रूप (^) हो जाता है और वह उस व्यञ्जन के सिर पर चढ़ जाता है। यदि 'र' किसी अन्य व्यञ्जन के पीछे सयुक्त होता है तो उसका रूप (्र) हो जाता है ; जैसे—र्+क=र्क, क्+र=क्र, ड्+र=ड्र, ह्+र=ह्र इसी प्रकार :—

क् और ष मिलकर क्ष हो जाते हैं ।

त् और त मिलकर त्त होता है ।

त् और र मिलकर त्र होता है ।

क् और ष मिलकर क्ष होता है ।

ज् और ञ मिलकर ज्ञ होता है ।

(ज्ञ का उच्चारण लोग भूल से ग्यँ करते हैं । ञ के साथ उच्चारण होना चाहिये ।)

लिखने में निम्नलिखित नियमों पर ध्यान रखना चाहिये :—

(१) एक शब्दों के अक्षरों को अलग न लिखो ।

(२) कई शब्द के अक्षर को मत मिला दो। दो शब्दों के बीच में कुछ स्थान रहना चाहिये।

(३) यदि पंक्ति के अंत में पूरा शब्द लिखने के लिये स्थान न हो तो कुछ अक्षर एक ओर लिखकर उनके आगे पड़ी पाई (-) लगा दो और शेष अक्षर दूसरी पंक्ति में लिखो।

(४) जितना स्थान एक शब्द और दूसरे शब्द के बीच में हो, उससे कुछ अधिक स्थान एक वाक्य और दूसरे वाक्य के बीच में होना चाहिये।

अभ्यास

नीचे लिखे अक्षर मिलाकर लिखो :—

(१) र, च, य
(२) त, थ
(३) क्ष, म
(४) क, व
(५) स, न
(६) ह, र
(७) न, ऋ
(८) त, ओ
(९) ह, म
(१०) ख, ड
(११) श, व
(१२) श, र
(१३) स, इ
(१४) र, र
(१५) र, उ
(१६) ट, ट
(१७) ङ, ग, आ
(१८) द, र, ए

पाठ २३
सन्धि

संस्कृत शब्दों में जब एक अक्षर दूसरे अक्षर से मिलता है तो उच्चारण की सुगमता के लिये एक अक्षर के स्थान में दूसरा अक्षर हो जाता है। इस प्रकार के मेल को सन्धि कहते हैं। हिन्दी भाषा में सन्धि करने की प्रथा नहीं है; परन्तु जो संस्कृत शब्द हिन्दी भाषा में प्रयुक्त होते हैं, उनके बनाने की

रीति समझने के लिये सन्धि के नियमों का ज्ञान आवश्यक है, अतः यहाँ सन्धि के मुख्य नियम दिये जाते हैं। ये नियम मुख्यतः दो प्रकार के हैं :—

(१) स्वर-सन्धि अर्थात् जब एक स्वर दूसरे स्वर से मिले तो उनमें क्या परिवर्त्तन हो?

(२) व्यञ्जन-सन्धि अर्थात् जब एक व्यञ्जन दूसरे व्यञ्जन या स्वर से मिले तो उनमें क्या परिवर्त्तन हो?

स्वर-सन्धि

(१) ह्रस्व या दीर्घ अकार के पश्चात् यदि ह्रस्व या दीर्घ अकार आवे तो उन दोनों के स्थान में दीर्घ अकार (आ) हो जाता है; जैसे—

अ+अ=आ जैसे—परम+अर्थ=परम्+अ+अ+र्थ=परम्+आ+र्थ=परमार्थ

अ+आ=आ " परम+आत्मा=परम्+अ+आ+त्मा=परम्+आ+त्मा=परमात्मा

आ+अ=आ " विद्या+अभ्यास=विद्+आ+अ+भ्यास=विद्+आ+भ्यास=विद्याभ्यास

आ+आ=आ जैसे—विद्या+आलय=विद्+आ+आ+लय=विद्+आ+लय=विद्यालय

(२) ह्रस्व या दीर्घ इकार के पश्चात् यदि ह्रस्व या दीर्घ इकार आवे तो उन दोनों के स्थान में दीर्घ इकार (ई) हो जाता है; जैसे—

इ+इ=ई जैसे— क्षिति+इन्द्र=क्षित्+इ+इ+न्द्र=क्षित्+ई+न्द्र=क्षितीन्द्र

इ+ई=ई " क्षिति+ईश=क्षित्+इ+ई+श=क्षित्+ई+श=क्षितीश

ई+इ=ई जैसे मही+इन्द्र=मह्+ई+इ+न्द्र=
मह्+ई+न्द्र=महीन्द्र
ई+ई=ई " मही+ईश=मह्+ई+ई+श=
मह्+ई+श=महीश

(३) ह्रस्व या दीर्घ उकार के पश्चात् यदि ह्रस्व या दीर्घ उकार हो तो उन दोनों के स्थान मे दीर्घ उकार (ऊ) हो जाता है; जैसे—

उ+उ=ऊ जैसे—गुरु+उपदेश=गुर्+उ+उ+
पदेश=गुरूपदेश
उ+ऊ=ऊ " लघु+ऊर्मि=लघूर्मि
ऊ+उ=ऊ जैसे—वधू+उत्सव=वधूत्सव
ऊ+ऊ=ऊ " भू+ऊर्द्ध=भूर्द्ध

(४) यदि ह्रस्व या दीर्घ अकार के पश्चात ह्रस्व या दीर्घ इकार हो तो उन दोनों के स्थान मे ए हो जाता है; जैसे—

अ+इ=ए जैसे—भारत+इन्दु=भारतेन्दु
अ+ई=ए " सुर+ईश=सुरेश
आ+इ=ए " महा+इन्द्र=महेन्द्र
आ+ई=ए " रमा+ईश=रमेश

(५) यदि ह्रस्व या दीर्घ अकार के पश्चात ह्रस्व या दीर्घ उकार हो तो उन दोनों के स्थान में ओ हो जाता है; जैसे—

अ+उ=ओ जैसे—भारत+उदय=भारतोदय
अ+ऊ=ओ " समुद्र+ऊर्मि=समुद्रोर्मि
आ+उ=ओ " गंगा+उदक=गंगोदक
आ+ऊ=ओ " गंगा+ऊर्मि=गंगोर्मि

(६) यदि ह्रस्व या दीर्घ अकार के पश्चात् ऋ आये तो उन दोनो के स्थान मे 'अर्' हो जाता है; जैसे—

अ+ऋ=अर् जैसे—शीत+ऋतु=शीत्+अ+ऋ+तु=शीत्+अर्+तु=शीततुं

आ+ऋ=अर् " महा+ऋषि=मह्+आ+ऋ+षि=मह्+अर्+षि=महर्षि

(७) यदि ह्रस्व या दीर्घ अकार के पश्चात् ए या ऐ आवे तो उन दोनों के स्थान में ऐ हो जाता है, जैसे—

अ+ए=ऐ जैसे—एक+एक=एकैक

अ+ऐ=ऐ " मत+ऐक्य=मतैक्य

आ+ए=ऐ " मा+एवम्=मैवम्

आ+ऐ=ऐ " महा+ऐश्वर्य=महैश्वर्य

(८) यदि ह्रस्व या दीर्घ अकार के पश्चात् ओ या औ आवे तो उन दोनों के स्थान में औ हो जाता है; जैसे—

अ+ओ=औ जैसे—उष्ण+ओदन=उष्णौदन

अ+औ=औ " वन+औषधि=वनौषधि

आ+ओ=औ " महा+ओज=महौज

आ+औ=औ " महा+औषधि=महौषधि

(९) यदि इ या ई के पश्चात् इ या ई को छोड़कर कोई अन्य स्वर हो तो इ या ई के स्थान में य् हो जाता है; जैसे—

अभि+उदय=अभ्+इ+उदय=अभ्+य्+उदय=अभ्युदय

प्रति+एक=प्रत्येक

रीति+अनुसार=रीत्यनुसार

देवी+अर्पण=देव्यर्पण

(१०) यदि उ या ऊ के पश्चात् उ या ऊ को छोड़कर अन्य

कोई स्वर हो तो उ या ऊ के स्थान में व् हो जाता है; जैसे—

सु+आगत=स्वागत

वधू+आगमन=वध्वागमन

(११) यदि ऋ के पश्चात् ऋ के अतिरिक्त कोई अन्य स्वर हो तो ऋ के स्थान में र् हो जाता है; जैसे—

मातृ+आनन्द=मात्+ऋ+आनन्द=मात्+र्+आनन्द=मात्रानन्द।

(१२) ए के पश्चात् कोई स्वर आवे तो ए का अय् हो जाता है ; जैसे—

ने+अन=न्+ए+अन=न्+अय्+अन=नयन।

(१३) ऐ के पश्चात् कोई स्वर आवे तो ऐ का आय् हो जाता है ; जैसे—

गै+अक=ग्+ऐ+अक=ग्+आय्+अक=गायक।

(१४) ओ के पश्चात् कोई स्वर आवे तो ओ का अव् हो जाता है ; जैसे—

पो+अन=प्+ओ+अन=प्+अव्+अन=पवन।

(१५) औ के पश्चात कोई स्वर आवे तो औ का आव् हो जाता है ; जैसे—

नौ+इक=न्+औ+इक=न्+आव्+इक=नाविक।

[कहीं कहीं इन नियमों का अपवाद भी पाया जाता है, परन्तु उनका वर्णन इस छोटी पुस्तक में नहीं दिया जा सकता।]

व्यञ्जन-सन्धि

(१) सकार या तवर्गीय अक्षर से शकार या चवर्गीय अक्षर मिले तो सकार का शकार और तवर्गीय का चवर्गीय अक्षर हो जाता है ; जैसे—उत्+चारण=उच्चारण।

(२) तवर्गीय अक्षर टवर्गीय अक्षर से मिले तो टवर्गीय हो जाता है ; जैसे—उत्+डयन=उड्डयन।

(३) त् और श मिलकर च्छ हो जाते हैं ; जैसे—

तत + शिव = तच्छिव ।

(४) त् और ल मिले तो त् का ल् हो जाता है ; जैसे—

उत् + लास = उल्लास ।

(५) त् और ह मिलकर द्ध हो जाता है ; जैसे—

उत् + हार = उद्धार ।

(६) ह्रस्व स्वर के पीछे छ हो तो स्वर और छ के बीच में च् जुड़ जाता है ; जैसे—

परि + छेद = परिच्छेद ।

(७) पाँचों वर्गों में से किसी वर्ग के प्रथम, द्वितीय या चतुर्थ अक्षर के पीछे कोई स्वर, अन्तःस्थ वर्ण या उसी वर्ग का तृतीय अक्षर आवे तो इस प्रथम, द्वितीय या चतुर्थ अक्षर के स्थान में उस वर्ग का तृतीय अक्षर हो जाता है , जैसे—

दिक् + अम्बर = दिगम्बर

दिक् + गज = दिग्गज

अच् + अन्त = अजन्त

षट् + आनन = षडानन

कृत् + अन्त = कृदन्त

सुप् + अन्त = सुबन्त

(८) यदि वर्गों के प्रथम, द्वितीय, चतुर्थ वर्ण के पीछे कोई सानुनासिक अक्षर हो तो इस प्रथम, द्वितीय या चतुर्थ वर्ण के स्थान में उसी वर्ग का पंचम अक्षर हो जाता है और पीछे आने-वाला सानुनासिक वर्ण वैसा ही रहता है ; जैसे—

उत् + नत = उन्नत ।

(९) अनुस्वार के पीछे स्वर हो तो अनुस्वार का म् हो जाता है ; जैसे—सं + आचार = समाचार ।

(१०) अनुस्वार के पीछे कोई स्पर्श हो तो अनुस्वार के स्थान में उस स्पर्श वर्ण के वर्ग का पंचम अक्षर हो जाता है ; जैसे—

हृदयं+गम=हृदयङ्गम
सं +चय=सञ्चय
सं +तोष=सन्तोष
सं +बन्ध=सम्बन्ध

(११) यदि ऋ, र या ष के आगे 'न' हो और इसके बीच में कोई स्वर, कवर्ग, पवर्ग, अनुस्वार, य, व, ह आवे तो न का ण हो जाता है ; जैसे—

राम+अयन=रामायण
प्र +मान=प्रमाण
तृष्+ना=तृष्णा

(१२) यदि किसी शब्द का पहला अक्षर स हो और इसके पहले अ और आ को छोड़कर कोई स्वर आवे तो स के स्थान में ष हो जाता है ; जैसे—

अभि+सेक=अभिषेक
वि+सम=विषम

अभ्यास

१—नीचे लिखी सन्धियाँ तोड़ो और वह नियम भी बताओ, जिनके कारण यह संधियाँ हुई :—

स्वेच्छा, देवालय, अत्यावश्यक, प्रत्येक, उद्धार, सच्छास्त्र, अन्वित, अभ्युदय, परमैश्वर्य, रमेश, परोपकार, दिग्गज, जगन्नाथ, उज्ज्वल, सच्चिदानन्द, कवीन्द्र, देवर्षि, प्रत्युत्तर, राजर्षि, पवित्र, नायक, स्वागत, भारतोदय, महोत्सव, दिगम्बर, उच्चारण ।

२—नीचे लिखे शब्दों को सन्धि-नियमानुसार जोड़ो :—

परम+अपि, इति+आदि, मनु+अन्तर, दिक्+विजय, निस्+संदेह, हित+उपदेश, एक+एक, तथा+एव, यदि+अपि, सु+आगत, वाक्+ईश, चित्+मय, तत्+शिष्ट, जगत्+ईश।

पाठ २४

विराम

बोलनेवाला किसी वाक्य या वाक्यांश को बोलने के पश्चात् कुछ ठहर जाता है, उसको विराम कहते हैं। लिखने में ऐसे स्थानों में कुछ चिह्न लगा देते हैं, जिससे ज्ञात हो सके कि बोलनेवाला कहाँ पर कितना ठहरता है। इन चिह्नों का नाम भी विराम है। मुख्य मुख्य विराम यह हैं :—

(१) पूर्ण विराम (।) या (॥)—यह वाक्य के अन्त में ही आता है।

(२) अल्प विराम (,)—यह उस स्थान पर आता है, जहाँ बोलनेवाला बहुत ही थोड़ा रुके; जैसे—राम, मोहन और कृष्ण आ रहे हैं। यहाँ राम के पश्चात् एक शब्द 'और' का प्रयोग करने के स्थान में बोलनेवाला कुछ ठहर गया; इसलिये यहाँ अल्प विराम होना चाहिये।

(३) प्रश्नसूचक चिह्न (?)—यह प्रश्नसूचक वाक्यों के अन्त में पूर्ण विराम के स्थान में आता है; जैसे—तुम्हारे हाथ में क्या है ?

(४) विस्मयसूचक चिह्न (!)—यह विस्मयसूचक शब्दों या वाक्यों के अन्त में आता है; जैसे—हे वह मर गया !

अभ्यास

नीचे लिखे सन्दर्भ में यथास्थान विराम लगाओ :—

(१) उड़ीसा में एक रजवाड़ा बौद्ध नाम का है उसमें गोला सोंगा नाम का एक गाँव है उस गाँव को भगवान् बुद्ध ने श्रेय दिया उस समय श्री जगन्नाथ जी नीलाचल को छोड़कर बुद्ध के दर्शन को आये और प्रश्न किया किसकी आज्ञा से और किस निमित्त आप यहाँ पधारे भगवान् ने उत्तर दिया मैं निराकार अलेख की आज्ञा से यहाँ आया हूँ वही महाशून्य स्वरूप अनादि गुरु स्वामी है कलिकाल में पाप बहुत बढ़ गया है उसके नाश करने के लिए आया हूँ

(२) प्यारे भाई मैं आज एक अद्भुत घटना का उल्लेख करता हूँ कल मैं आपके पुत्र के पास गया और उनसे प्रार्थना की कि मुझे अपने दोनों डेरे चार दिन के लिये दे दीजिये उन्होंने उत्तर दिया कि पिता जी की आज्ञा नहीं कि आपको कोई चीज़ दी जावे मैं क्या करता भला आया मेरी आपकी पीढ़ियों से रस्म चली आती है इसमें न केवल मेरी हानि ही हुई किन्तु बदनामी भी कुछ कम नहीं हुई नगर के लोग समझ गये कि मेरा आपसे कोई सम्बन्ध नहीं है क्या आप अपने पुत्र महाशय को समझा देंगे

पाठ २५

तत्सम और तद्भव शब्द

हिन्दी भाषा में प्रायः तीन प्रकार के शब्द पाये जाते हैं :—

(१) शुद्ध संस्कृत शब्द, जिनको तत्सम कहते हैं; जैसे—गृह, वत्स ।

(२) अपभ्रंश अर्थात् संस्कृत शब्दों के बिगड़े हुए रूप, जिनको तद्भव कहते हैं ; जैसे—घर, बच्चा ।

(३) विदेशी शब्द अर्थात् अर्बी, फ़ारसी, अंग्रेज़ी आदि विदेशी भाषाओं के शब्द ; जैसे—हज़रत, क़लम, कोट ।

यहाँ कुछ तत्सम और तद्भव शब्दों की सूची दी जाती है :—

अपभ्रंश	शुद्ध संस्कृत	अपभ्रंश	शुद्ध संस्कृत
अजान	अज्ञ	आठ	अष्ट
अंधा	अंध	आज	अद्य
अनाड़ी	अनार्य	आधा	अर्ध
अजस	अयश	आस	आशा
अछूत	अक्षत	आसरा	आश्रय
आग	अग्नि	आम	आम्र
आँसू	अश्रु	तिय, तिरिया	स्त्री
उमस	उष्म		
उल्लू	उलूक	तुरन्त	त्वरित
उछाह	उत्साह	थल	स्थल
ऊँट	उष्ट्र	थन	स्तन
किवाड़	कपाट	दूध	दुग्ध
कुल्हाड़ी	कुठार	दही	दधि
कुँआ	कूप	दिया	दीपक
काठ	काष्ठ	धुआँ	धूम्र
कहन	कथन	नोन	लवण
खार	क्षार	पत्ता, पात	पत्र
गदहा	गर्दभ	पाती	पत्री
गाभिन या ग्याबन	गर्भिणी	पूरा	पूर्ण
		पिय, पिया	प्रिय
घर	गृह	पत्थर	प्रस्तर

अपभ्रंश	शुद्ध संस्कृत	अपभ्रंश	शुद्ध संस्कृत
घाउ	घात	पहाड़	पर्वत
घी	घृत	पूत	पुत्र
चाँद	चन्द्र	बहिन	भगिनी
चून चूरन	चूर्ण	ब्याह बहू	विवाह वधू
छोह	क्षोभ	भाई	भ्राता
जस	यश	माथा	मस्तक
जीभ	जिह्वा	मूरत	मूर्ति
जेठा	ज्येष्ठ	रूखा	रुक्ष
सपना	स्वप्न	रिस	रोष
साँवला	श्यामल	सौ	शत
सेत	सित, श्वेत	सौत	सपत्नी
सेज	शय्या	सीख	शिक्षा
सुहाग	सौभाग्य	सहालग	शुभलग्न
साईं	स्वामी	हाथ	हस्त
सच	सत्य	हिय	हृदय

PRINTED BY K B AGARWALA AT THE SHANTI PRESS, ALLAHABAD